आचार्य श्री प्रवचन

(28.01.2018 से 30.04.2018 तक)

भाग-9

गुरुवर की वाणी,

बने सबकी कल्याणी

अन्य भाग हेतु : aagamdata.blogspot.in

"रुआ बांधा"

28-1-18 "लक्ष्य को याद दिलाती बिम्ब स्थापना" प्रातः 9.20

सभी कार्यकर्ताओं को श्वांस लेने का अवसर प्राप्त हो गया है। अभी तक भीड़ निरन्तर बढ़ती जाती थी कार्यकर्ता भी कार्य में व्यस्त थे। पुजारी भी पूजन की व्यवस्था संभाल रहे थे। इस प्रकार सभी कार्य समयपर सम्पन्न हो गये। मुझे 3-4 दिन तो मन्दिर में जगह नहीं मिलती थी। पाण्डाल में जो तात्कालिक वेदी में भगवान विराजमान किये थे उसी से काम चला लिया सुबह भी और शाम को भी। इतना अवश्य है, जब मनुष्य अच्छे कार्य में समय देता है तो सबसे ज्यादा कर्म निर्जरा होती है।

उसका ध्यान उसी में लगा रहता है। इसी को समाधी अथवा ध्यान कहते हैं। हाथ पे हाथ धरकर बैठना ही ध्यान मानते हैं, वे बड़ी भूल में हैं। इसी प्रकार वे इधर-उधर की बातों पर से ध्यान हटाते ही नहीं। पूर्ण ध्यान नहीं होता तब तक इस ध्यान को मत छोड़ो। ड्राइवर हजारो किमी. तक गाड़ी चलाता है। इस कोने से उस कोने तक पहुँच जाता है। उससे पुछो क्यों कहाँ-कहाँ होके आये? वह एक ही जवाब देता है. मुझे ध्यान नहीं।

सीधा रास्ता था। मैं तो हॉर्न बजाता जाता था और रास्ता मिलता जाता था। जो घुमने वाला होता है, उसे रास्ता नहीं मिलता किन्तु जो सीधा जाता है, लोग भी कहते हैं- इसे जाने दो। मैं भी जब चलता जाता हूं तो रास्ता मिलता जाता है किन्तु यदि रुक जाता हूं तो सभी लोग पैरों पर

चिपक जाते हैं।

मैं आपकी ओर देखूंगा तो मैं नहीं दिख पाऊँगा। [हम तो आपको ही देखेंगे] ठीक, बहुत अच्छा लगता है। पहले के लोग इसी प्रकार के बड़े-बड़े धार्मिक अनुष्ठान करके ध्यान करते थे। आज "तत्त्व चर्चा को तो बहुत महत्त्व देते हैं परन्तु तत्त्व की अर्चा नहीं करते हैं।" तत्त्व की अर्चा अलग ही ढंग से हुआ करती है। लोभ के कारण अन्यत्र ही ध्यान चला जाता है, जो अयोग्यता की ओर ले जाता है। पहले के लोग अपने आकर्षण में कार्य को ही मुख्य आकर्षण मानते थे तब कार्य होता था।

आज छोटे बच्चे से भी पूछो-क्यों क्या हो रहा है? वह कहता है - "बहुत टेंशन में हूँ।" इधर-उधर की बातों में ध्यान देंगे तो टेंशन होगा ही। "आपका इंटेंशन सदैव कोर्स की ओर हो तो कभी भी टेंशन होगा ही नहीं।" सबको बता देना। अब भीड़ तो प्रायः छँट गयी है। रुका बाँधा वालों का ही राज्य है, आपका ही साम्राज्य है। कल जब सब इधर-उधर चले गये थे, तब मैं मन्दिर जी में ऊपर तक चला गया था। भगवान अकेले ही बैठे थे।

यहाँ के कार्यकर्ताओं का श्रमदान बहुत ही अच्छा है। इसके कारण यह पंचकल्याणक सानंद पूरा हो गया। अब आप सभी को प्रभु चरणों में समय देना होगा। इन क्षणों को स्मरण में रखेंगे। इतना विशाल अक्षय जिनालय हो गया कि हजारों व्यक्ति भी आ जायें तो सभी मिलकर/रहकर कार्यक्रम को सम्पन्न कर सकते हैं। करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति

को अपने जीवन काल में ऐसे अवसर मिलते हैं।

उस अवसर का लाभ तभी जब आपका कोई लक्ष्य हो। कोई भी कार्य को करने हेतु लक्ष्य का होना जरूरी है। लक्ष्य के लिए अवसर नहीं भी हो तो निकाल लिया जाता है। लक्ष्य को कभी भी भूला नहीं जाता है। लक्ष्य को ध्यान में रखने वाला ड्राइवर ही सही समय पर पहुँच जाता है, अन्यथा इधर-उधर ही घुमता रहता है। आपके भीतर भी एक ऐसा ही ड्राइवर / आत्म तत्व बैठा है। यदि उस भीतरी आत्म तत्व को देखेंगे तो कभी भी गाफिल नहीं होंगे।

इस आत्म तत्व की प्रतीति हेतु ही बिम्बों की स्थापना की जाती है। जो वितरागता का मार्ग सदैव बताते रहते हैं। हमारा लक्ष्य हमेशा-हमेशा उसी आत्म तत्व को देखने का होना चाहिए। दिपक में तेल भी है और बाती भी जल रही है। हमें बीच-बीच में उस तेल को देखते रहना चाहिए कि अब कितना बचा है अथवा पहले स्याही से लिखते थे उस स्याही के पैन में जब स्याही खत्म होने वाली होती थी तो एक संकेत मिलता था। जैसे कम तेल में बाती फफक जाती है, वैसे ही कम स्याही बचने पर वह पैन धब्बा छोड़ने लगता है।

जैसे ही धब्बा पड़ने लगता है अथवा दीपक फफकने लगता है मतलब स्याही / तेल खत्म होने वाला है। इसलिए संभलना चाहिए। बस! आपके भी धब्बे उस प्रभु को विशेष रूप से याद करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

उरला [मंगलम्]
२१-१-१४ "परिणामों पर दृष्टि रखता मंगल" प्रातः ९.२०

इस स्थान का नाम रखा है- मंगलम्। आप लोग समझते होंगे मंगल क्या वस्तु है? हमारे संतो ने मंगल की दो प्रकार से परीभाषा की है। पहला तो जो पापों को गलाये वह मंगल कहलाता है-"मलं गालयति इति मंगलम्" दूसरा जो पुण्य को लाये वह मंगल है-"अमसं लयति इति मंगलम्।" हमआपसभी प्रतिक्षण जो परिणाम करते है वह मल को नष्ट करने के लिए ही करते है।

इसलिए हमे परिणामों में कषाय को स्थान नहीं देना चाहिए। कषायों को नष्ट करने पर ही हम इस प्रकार के परिणामों को प्राप्त कर सकते हैं। कषायों से दूर हटने के लिए अर्थात ऊपर उठने के लिए अपने परिणामों की ओर दृष्टि किजिये। ये कषाय ही संसार वृद्धि में मूल कारण है। संत लोग प्रतिक्षण अपने परिणामों की ओर ही [दृष्टि] ध्यान देते रहते है। जिनका संसार में कम रुझान होता है, उनका चित्त अवश्य शांत होता है। यही साधना का लक्ष्य है। संत उस मंगल पाठ को अपने अनुभव मे ले आये।

जिसमें हमारा सुख निहित है, हमें उसी का चयन करना चाहिये। यह दुर्लभ मनुष्य जीवन मिला है, इसका मूल्य पहचानकर सही दिशा मे पुरुषार्थ करना चाहिए। इतना ही पर्याप्त कहता हुआ पुनः उस मंगल की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

मालवीय रोड़- रायपुर

30-1-18 "एक - दूसरे को जोड़ते हैं जिनालय" प्रातः 9.20

—— जब अत्यन्त जरूरी काम से कोई जा रहा हो और वह कहीं स्टेशन पर पहुँचता हो और गाड़ी छूटने वाली ही है। टिकिट अभी खरीदा ही नहीं। अब जो कुछ होगा - होगा। क्या परिस्थिति होगी बात में बतायेंगे। चढ़ गये। चढ़ने के उपरान्त देखा कहीं भी बैठने के लिए तो जगह है ही नहीं फिर भी चल जायेगा। वैसे जमीन पर भी चल जायेगा। क्या कहे उसमें कोई मित्र / जानकार भी नहीं था। ——————

—————— अब गाड़ी चालु होगयी। धक्का- मुक्का। अब क्या करें। ये सब मैं इसलिए बता रहा हूँ। आप लोग हमें रायपुर तो बुलाते हो किन्तु यहाँ अब न ही बैठ सकते हो- न ही खड़े हो सकते हो अर्थात यदि बैठ गये तो खड़े नहीं हो सकते और खड़े हो गये तो बैठ नहीं सकते। बार- बार निवेदन करते हो- महाराज रायपुर चलो - 2, अब क्या करें। फिर भी किसी को परेशानी नहीं है। अभी हम सुन रहे थे - महाराज रायपुर आ गये तो अब हमारो - हमारो या मोरो- मोरो कह रहे हैं। ——————

—————— सब लोगो को अपने - अपने जन्मस्थान प्रिय होते हैं, किन्तु ध्यान रहे जो वस्तु स्वरूप को जानता है वह जहाँ - कहीं भी चला जाये आनंद का अनुभव करता है। आप सभी सौभाग्यशाली हो जो यह मनुष्य जीवन मिला। उससे भी अधिक सौभाग्यशाली है जो देव गुरु शास्त्र

का सान्निध्य मिला।

गुरुओं के समागम से उनके द्वारा आपको मार्ग मिला। यह सब देवालय में बैठकर ही पा सकते हैं, घर पर इस ढंग से नहीं कर पाते हैं। इसलिये मन्दिर/देवालय में ही एक-दूसरे से सम्पर्क में आकर, पूजा-अर्चा-जाप आदि करते हैं। अन्य कोई साधन नहीं जो आपस में मिला सके। फिर महिलायें अथवा बच्चों को तो पास के जिनालय में ही जा सकते हैं, दूर जाने में कठिनाई होगी।

इतना अवश्य है कि पहले के लोगों ने बना दिया तो आज हमें दर्शन हो रहे हैं अब आपका क्या कर्त्तव्य है। यदि वे नहीं बनाकर जाते तो आज आपको कुछ भी नहीं मिल पाता फिर तो बस मोरी रायपुर (मोर रायपुर) ही कहते। दूर-रहकर कुछ नहीं हो पाता शहर बढ़ गया है। अब जिनालय तो नीचा रह गया और आजु-बाजु की इमारत ऊँची हो गयी। नागपुर में भी ऐसा ही था। रोड़ भी वही है। नागपुर- रायपुर। हम भी वहीं से आ रहे हैं।

बच्चों के लिये यह अच्छा होगा। इसप्रकार का दिशा बोध मिले। इतना ही। आगे की योजना तो ज्ञात ही है। पहले विधान (सिद्धचक्र) हेतु आये थे इसबार पंचकल्याणक होने जा रहा। ऐसा बताते हैं। हमने भी सुना तो हम आ गये। अभी अन्यत्र भी हुआ। कल नहीं परसों पात्रों का चयन होना है। देखो- देखो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

भाण्डी - रायपुर
31-1-18 "पारलौकिक उड़ान" प्रातः 7.20

आप लोग ध्यान दे रहे हैं कि एक-एक दिन, एक-एक घड़ी, एक-एक सेकण्ड समय खिसक रहा है। और आप लोग उस समय की प्रतिक्षा कर रहे हैं। जब एक-एक दिन खिसकता ही है तो जिसकी प्रतिक्षा कर रहे हो वह दिन भी जरूर आयेगा और वह भी खिसकेगा। यह अनादि निधन स्वभाव प्रत्येक द्रव्य का है। हम सभी लोग छद्मस्थ होने से प्रतिकूलता में आकुलता का अनुभव करते है। हर व्यक्ति किसी न किसी समय की प्रतिक्षा करता रहता है।

वह प्रतिक्षित पुराना हो जाता है तथा पुनः और-और नये की खोज करता है। नहीं हो पाता तो चहेरे पर उदासी आ जाती है। ऐसा भी कोई व्यक्ति होगा जो पुरा का पुरा प्राप्त कर लेता है। ऐसा वह जीव जिसको सब कुछ हस्तकमलवत् हो जाता है। फिर भी कोई आकांक्षा नहीं है। यह क्या है? एक धृति गुण होता है-धैर्य। धैर्य गुण ज्ञानी को ही होता है, अज्ञानी को नहीं। आज तक हार गये, आगे भी हारे ऐसा कोई नियम नहीं। मन का स्वभाव है।

हारना पुनः जीतने की सम्भावना बताता है। संयमी जो भी होता है वह जो कुछ भी मिलेगा उसकी आकुलता से दूर होता है। यह भी नहीं कि कल मिलेगा - परसो मिलेगा? ये हमारी भूल है। दूसरा कल होने वाला काम आज ही हो जाये

ये भी हमारी कमी है।

संयम का निर्दोष पालन करने वाला ही ज्ञानी - संयमी - ध्यानी - दृढ़संकल्पी ही ऐसा कर पाता है। वह मन से कह देता है - हे मन! तुम आकुलता पैदा कर रहे हो, पर मेरी आत्मा में/भीतर में कोई आकुलता नहीं। "मोक्षमार्ग में रहकर मोक्ष की आकांक्षा नहीं करना यह साधक की कठीन तपस्या है।" इस कठीन तपस्या में कई लोग विजयी भी होते हैं। उनकी जय-जयकार होती है किन्तु उन्हें इस जय-जयकार से कोई प्रयोजन नहीं।

आप लोगों ने भी इस प्रकार की कई घड़ियों को लौटाया होगा। अब धीरे-धीरे समझदारी आ रही होगी। आपके बच्चों के बारे में मेरा यही कहना है। इतनी उम्र में मेरी क्या स्थिति थी यह बार-बार स्मरण में रहना चाहिए। बच्चे आपसे बहुत अच्छे हैं। आप इस उम्र में थे तब क्या करते थे। अतित के उस चित्र को याद करेंगे तो आपको लगेगा की आज के बच्चे तो बहुत अच्छे हैं। उनमें आकुलता भी कम है।

दादा जी को संतोष नहीं और नाती-पोते सोचते हैं - जिन्दगी का क्या भरोसा जो पुण्य कार्य हैं कर लो। दादा जी टालते रहते हैं। ये सब धर्म की आराधना का ही परिणाम है। इन संस्कारों को और दृढ़-और दृढ़ करते जायें। उनमें यह परिवर्तन तेजी से हो रहा है। कहीं ऐसा न हो कि जानकारी के अभाव में वह फिसल जायें, पैर

मजबूत न रख पाये।

मजबूत पैर नहीं होते तभी व्यक्ति फिसल जाता है। हाँ! पंख लगा ले तो फिर आसमान में भी उड़ सकते हो। सही पिता यही कहता है- बेटा मैंने तो नहीं किया तुम्हें उड़ना है। मैं समझता तो हूँ किन्तु कर नहीं पाया अब तुम कर सकते हो। मेरा कहना यह है कि लौकिक उड़ानकी अपेक्षा पारलौकिक उड़ान भी होती है। मैं वह उड़ान नहीं ले पाया तुम ले लो।

ये ऐसी उड़ान है जो शाश्वत सुख को देती है। पर बिना पेट्रोल गाड़ी को उड़ाना कैसे सम्भव है? ये संस्कार हैं दीजिये फिर देखो क्या होता है? अतीत काल को देखने से, पुराणों के माध्यम से ही हम ऐसा सोच सकते हैं। पहले धार्मिक वातावरण सदैव ही बना रहता था, आज यह कम होता जा रहा है। पहले मिट्टी कम और मणीयाँ ज्यादा निकलती थी अब मिट्टी ज्यादा मणीयाँ एक-आध निकल पाती है।

पहले मणी से प्रभावित नहीं होते थे, आज मिट्टी को ही मणी मानकर संतोष कर रहे हैं। आर्टिफिशियल सोना-चांदी-हीरे-मोती सब आर्टिफिशियल आ गये। इसतुफान में असली को पहचानना ही मुश्किल है। अच्छे-2 लोग भी गाफिल हो रहे हैं। कोई बात नहीं असली भी मिट्टी ही है। आप समझते हैं तो अच्छा इन बच्चों के कान में भी यह बात डाल दो। अहिंसा परमो धर्म की जय।

1-2-18 — — "भारतीय लौह विज्ञान" — — — प्रातः 9.20

— — हमें दिशा बोध मिल जाये। इस प्रकार समय-समय पर उद्‌बोधन हमें उनसे प्राप्त होता रहता है। ऐसे उस उद्‌बोधन के द्वारा उस रहस्य को समझ सकें। समझना जब कठिन सा लगने लगता है तो उसे उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है। हमारे संतों ने समय-समय पर यही पुरुषार्थ किया। जैसे अपने बच्चों को समझाने का आप लोग प्रयास करते हैं फिर भी यदि समझ में नहीं आ पाता है तो आप उसे प्रोत्साहित करते हैं। प्रोत्साहन में कभी इनाम दे देते हो तो कभी दो शब्द बोल देते हो ताकि वह समझ सके। — — —

— — — — — — — — छोटे बच्चे अभी नहीं समझ पाये कोई बात नहीं जब उसके बच्चे हो जायेंगे तो सोचता है। हाँ! हमें भी ऐसे ही समझाया गया था। हम उस समय टाल देते थे। अब समझ में आ रहा है कि टालने से क्या हानि है और मानने से क्या लाभ? एक स्थान पर आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने बहुत अच्छा उदाहरण देकर कहा है जैसे स्वर्ण है उसे किचड़दार मिट्टी में डाल दिया। आधुनिक ढंग से उसको सिल्ली (बिस्किट) बोलते हैं। छोटी हो या बड़ी हो, कम समय हो या दीर्घ समय हो तो भी वह उस किचड़ से प्रभावित नहीं होती। — — — — — — — — — —

— — — — — — सोना भी तो पुद्‌गल है। तो क्यों लगा रहे हो? सोना भी पुद्‌गल है किन्तु उसकी चमक अलग है। इतना अवश्य है लोहा-कंकड़-पत्थर से तो वह मूल्यवान है। हमने सुना है कि रायपुर में लोहे का काफी मात्रा में उत्पादन होता है। ये

बात अलग है कि वह लोहा अपना पाउडर फोकट में ही आपके घर में आ रहा है। कितना भी कर लो इस पाउडर से आप बच नहीं सकते। धूल नहीं यह तो मकरंद है। ले लो। अब क्या करें?

जो कॉलोनी बना रहे हैं - हमारे एरिया में मकरंद न आये ऐसी पूछताछ कर लो। कॉलोनी डवलपमेंट करने में कितना धन लगाया? वस्त्र इतने महंगे पहनकर आते हैं। आपको भेदभाव नहीं है, इसलिए नीचे अच्छे ढंग से बैठते हैं। साफ तो है ही नहीं। आज का वह लोहा कम समय में ही जंग खा जाता है। जंग क्या खा जाता है, मिट्टी खा जाता है। कहने में आता है। जंग चढ़ जाता है। वह भी पुद्गल है और यह भी पुद्गल है।

आचार्य बताते हैं पानी और हवा का प्रभाव बहुत जल्दी उस लोहे पर लगता है, फलस्वरूप वह जंग चढ़ जाता है। अब देखो सोने को यदि वर्षों गाड़ भी देते थे तो भी कुछ नहीं होता आप पर प्रभाव पड़ सकता है। आप कपड़े पहनते हैं अथवा हाथ पर घड़ी का पट्टा पहनते हो तो क्या होता है? निशान नहीं - त्वचा को सुरक्षित रखता है। बाकी पर प्रभाव यह पट्टा रक्षा करता है। इसका अर्थ यह है सोना ज्यों का त्यों बना रहता है, लोहा का स्वभाव अलग ही है। सोने का भी पट्टा क्यों न हो भीतर का वह रंग अलग ही होता है।

उस स्थान का रक्त संचार अलग ढंग से होता है। सुन रहे हो। आजकल रक्त संचार के कारण गड़बड़ियाँ हो रही है। जब वह रक्त इधर से उधर नहीं

होता तो अस्वस्थ हो जाते हैं। रक्त का संचार ठीक होना जरूरी है, वैसे ही धन का संचार (सरक्युलेशन) भी जरूरी है। रक्त का संचार यदि ठीक ढंग से नहीं होगा तो लीवर पर भी हार्ट पर भी प्रभाव पड़ेगा। हार्ट पर प्रभाव तो फिर मेन पार्ट पर भी प्रभाव पड़ेगा। — — —

— फिर कहते हैं ये तो निर्विकल्प समाधी में चले गये। ऐसा भी सुनते हैं - बीसों वर्ष से बैठे हैं तो बैठे ही हैं। कोई आये, कोई भी जाये कोई मतलब नहीं। कोई काम नहीं न ही भूख - न ही प्यास, न मेरा - न तेरा इसी का नाम तो निर्विकल्प समाधी / सामायिक / समता है। आप ही लोगों के घर का वह मेम्बर (सदस्य) है। आप आकर कहते हैं - महाराज आशीर्वाद दें ये कितना कष्ट में है? जब की उसे कोई मतलब नहीं। आप ताला भी लगाकर चले जायें तो कुछ नहीं बोलते। कुछ भी मांगते नहीं। रक्त संचार पर प्रभाव पड़ने से होता है। —

— — सोने पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह ज्यों का त्यों बना रहता है। लोहा एक-दो दिन भी क्यों नहीं हुआ हो उसके रंग में अन्तर आ जाता है। काला से लाल - पीला - गेरुआ जैसा हो जाता है। आज के विज्ञान ने बहुत प्रयास करने के बाद एवं बहुत खर्च करके उस लोह तत्व पर जंग न आये इस प्रकार की खोज की है। आज का ज्ञान भले ही परिष्कृत कहा जाता हो किन्तु वर्षों पूर्व ऐसे लोहे का निर्माण किया गया था। आपने सुना होगा? नहीं - नहीं महाराज। आज तक विज्ञान के सामने वह हमारा प्राचीन इतिहास आया

ही नहीं। क्यों? विचार करो।

ऐसे कौन से तत्व के द्वारा वह लोहा निर्मित किया। ज्ञानियों ने उस लोहे में जंग का प्रभाव न हो इस प्रकार के तत्त्वों का सम्मिश्रण करके बनाया। इस प्रकार लोहे जैसा मत बनो- सोने जैसा बनो। सोना चाहे बाहर रखो या भीतर रखो, चाहे बरसात में रखो, चाहे हवा में रखो कहीं भी रखो। आग पर भी रखो तो भी अपना धर्म नहीं छोड़ता है। बल्कि यूं कहो आग पर रखने के बाद तो रसायन प्रक्रिया से घनत्व में आकर ज्यों का त्यों बना रहता है।

इस प्रकार कोई परिवर्तन नहीं हुआ। ज्ञानी के लिए सोने का तथा अज्ञानी के लिए लोहे का उदाहरण दिया गया है। संतो की दृष्टि में हम सभी अभी लोहे हैं। कोई बात नहीं। अब कम से कम यह सोचो कि किस प्रकार विज्ञान के माध्यम से हम जंग से बच सकते हैं। इस हेतु विदेशी माध्यम को नहीं लाओ, भारतीय संस्कृति से ही सब करना है। विदेशी माध्यम लिया तो गया। लोहा कमरा बंद भी क्यों न हो, हवा जायेगी और प्रभावित होगा। ये उदाहरण समयसार में दिया गया है। लोग कहते हैं समयसार बहुत कठिन है। कठिन नहीं है।

बस आपके स्वास्थ्य के ऊपर निर्भर है, कौनसा तत्व भीतर जाकर स्वस्थ करेगा और कौनसा तत्व कबाड़ा कर रहा है। कबाड़ा जानते हो? कबाड़ा का मतलब क्या? निलाम होता है। ये काम कर रहे हैं। गुरुजी के साथ अजमेर के केसरगंज

में चातुर्मास कर रहे थे। वहाँ के सब लोग कबाड़ा का ही काम करने वाले हैं। कबाड़ा में भी कई अच्छी चीजें मिल जाती हैं। है तो व्यापार कमाई का।

इस प्रकार हमारा मन जो है वह कबाड़ा करने वाला है, उससे बचे। विज्ञान को इसी काम में लाओ। वह लोहा जंग से बच जाता है। उस समय के भारतीय विज्ञान ने सबको चमकृत कर दिया था। आज लोग कहते हैं कि भारत में कोई विज्ञान नहीं, यह गलत धारणा है। इसी कारण विदेशी संस्कृति के पिछलग्गु बन गये हो। सब एक से ही हो गये यह कह देने में मुझे कोई बाधा नहीं है।

जैसे एक कक्षा में एक बच्चा पास हुआ बाकी सब फेल हो गये। सभी फेल होने वाले विद्यार्थियों ने चाय की पार्टी दी और कहने लगे हम सभी के विचार एक है, आचार एक है। सरकार वर्षों में एक आचार संहिता नहीं ला पाई। हम सभी पास हो गये। एक-आध भिन्न आचार-विचार वाला हो गया है तो कोई बात नहीं। यह नहीं बता रहे कि हम सब फेल हो गये। इसलिए भारतीय संस्कृति अद्भुत है, जो सोच लो कर सकता है। उन लोगों इस देश के बारे में लिखने हेतु बाध्य होना पड़ा (धर्मपाल साहित्य)। इस प्रकार

भारतीय लोह तत्त्व बहुत परिष्कृत था।

उस समय जो औजार काम में लिये जाते थे, शल्य चिकित्सा हेतु। वे क्या-क्या रसायन से बने थे, आज तक ज्ञात नहीं कर पाये। अब आप ही सोच लो भारत आगे था या पीछे। कोई बात नहीं ज्ञानी जिधर होता है, वह आगे ही माना जाता है। रेल चलती है, उसमें सभी आगे की तरफ होते हैं किन्तु गार्ड सदैव पीछे की तरफ होता है। ऐसा नहीं है। वह जब तक हरी झण्डी नहीं बतायेगा रेल चल नहीं सकती। ड्राइवर भले ही आगे बैठा है परन्तु गार्ड के प्रत्येक इशारे को देखता रहता है।

भारत विदेश का जो पिछलग्गु बन गया है। अब इस विदेशी धारणा को बंद कर दो। लोह तत्व में जंग लगे ही यह जरूरी नहीं। क्या-क्या तत्व उसमें है इसे पहचाने। इसी तरह आत्मा को किस प्रकार उन्नत कर सकते हैं, इसी तरह की संगति करो। इसी संगति के लिए यहाँ के लोगों ने यह जिनालय बनाकर पंचकल्याणक का आयोजन किया है। दूर-दूर से लोग आ रहे हैं, हम भी पहले से यहाँ आ गये।

अब देख लो लोहे का व्यापार गरम है या सोने का। अध्यात्म से ही यह ज्ञान मिलेगा। यह विदेश में नहीं। अध्यात्म मात्र भारत में ही मिलेगा। इसी कारण अब ज्यादा लोभ नहीं करना। विदेश

का लोभ भी बंद करो।

भारत गरीब नहीं है, भारत तो दाता है, उदार है। उन लोगो के पास बाहरी ही आ रहा है। अपने पास ऐसी गरीबी नहीं किन्तु आज भारत भी उसी Line में खड़ा हो गया है। यदि इस भूल को सुधार दिया जाये तो पुनः नेता बन सकता है। चाहते हो या नहीं? चाहते हैं। तो नेता को भी आनंद तब जब मण्डली हो। मण्डली की कला भारत के पास है। गुणवत्ता होनी चाहिए।

इतिहास को पढ़ने का यह पंचकल्याणक माध्यम मिला है। भले ही 40 Km. दूर भिलाई में हुआ पर पढ़ना है। नूतन ही है। इस प्रकार भक्त भगवान के पास नूतन-नूतन सुख और शान्ति का अनुभव करता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण-आ.श्री.

"बात उन दिनों की है, जब मैं (आ० श्री) मुनिअवस्था में गुरुजी के साथ आहार में जाता था। गुरुजी का एक चौके में अन्तराय हो गया। उनके बाद मेरा पड़गाहन हुआ। मैं पहचान नहीं पाया और जिस चौके में गुरुजी का अन्तराय हुआ था वे ही लोग मुझे पड़गाह कर ले गये। शुद्धि बोल दी। हमने अच्छे से आहार कर लिया। इसलिए कभी भी चौके में विकल्प नहीं करना चाहिए। सामने वाले ने शुद्धि बोल दी अब आप कुछ मत सोचिये।"

"पात-चेयन"

1-2-18 "आओ करें निर्वाह परम्परा का" मध्याह्न 4.15

प्राचीन काल 100-150 वर्ष पूर्व में यदि पंचकल्याणक होते थे, वो परम्परा लगभग अब टूट सी गयी है। पूरी नहीं टूटी है लगभग जीवित है। एक प्रकार से मन्दिर बनाया जाता था वह पूरा मन्दिर एक व्यक्ति द्वारा बनाया जाता था, उसको यजमान की संज्ञा दी जाती थी। बनाने के उपरान्त सबको बुलाता। 7-8 दिन लगातार वह महोत्सव चलता। वह सभी से निवेदन करता आपको इन 7-8 दिन में चूल नहीं जलाना है। मुझे इस पंचकल्याणक में सहयोग करना है।

इस प्रकार अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग कर **मन्दिर** का निर्माण करता और सब कुछ हो जाने पर समाज को समर्पित कर देता। निवेदन करता कि यह सब पूरा का पूरा आपका है, अब मेरे बस की बात नहीं है। ऐसा चलता था। यह परम्परा अब लगभग नहीं है। यहां के श्रीमान् इसके अपवाद हैं। बिलासपुर में भी इसी प्रकार हुआ है। भिलाई में प्रतिष्ठा हुई और साथ-साथ श्रीजी यहां तक लाये। उनका ये संकल्प है कि बिलासपुर तक श्री जी के साथ सभी चले। हमारे लिए भी आग्रह है कि आप भी चलें।

वर्तमान में कुछ मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कराकर ले आये। यह भी संयोग ही समझो पंचकल्याणक हेतु पुराने श्री जी को तात्कालिक लाते एवं उन्हें पुनः यथास्थान पहुंचाते किन्तु यहां ऐसा नहीं है। यहां पंचकल्याणक में बड़ी-बड़ी

सुन्दर मुर्तियाँ प्रतिष्ठित करके रथोत्सव के साथ लेकर आये। हैं। पंचकल्याणक के उपरान्त अब बिलासपुर हेतु जाने दो। — — — — — — — — — —

जब कोई व्यक्ति पूर्ण लगन से काम करता है तो ऐसे सुयोग जीवन में घटित अपने आप ही होते हैं। यहाँ के सज्जन के परिचय की तो कोई आवश्यकता ही नहीं हैं। जो चाहता है वह इस परम्परा को अटूट चालु रख सकता है। भरत एवं ऐरावत क्षेत्र में २४ तीर्थंकरों की परम्परा छिन्न-भिन्न हो जाती है, केवलीयों की परम्परा भी टूट जाती है। मात्र आचार्यों की परम्परा चलती है। मुमुक्षु लोगों का जब भीतरी भाव बाहर आता है तब ये महोत्सव होते चले जाते हैं। — — — —

भरत चक्रवर्ती ने भी सुना और त्रिकाल चौबीसी की स्थापना कर दी। पुराण ग्रन्थों के अध्ययन में ऐसा मिलता है। उन जिनालयों की रक्षा हेतु भी क्या किया? देख सकते हो। सनत कुमार चक्रवर्ती के काल में यह हुआ जो चिंतन का विषय अपने आप ही बन जाता है। इस हुण्डावसर्पिणी काल में भी जब चिंतन करते है तो भीतर लहर सी उठती है। परोक्ष में भी इस प्रकार होता है। एक हजार वर्ष बाद कल्की एवं ५०० वर्ष बाद उपकल्की होते हैं। यह तीर्थंकरों के आगम प्रभाव से जाना जाता है। — — — —

इन सबको जानने से ही अहिंसा के प्रति, आत्मोत्थान के प्रति ज्वार-भाटा जैसे समुद्र में उठते है, उसी प्रकार

के भाव होते हैं। ऐसा पंचम काल के अन्तिम समय तक चलेगा। फिर बाद में सब गायब हो जायेगा।

इसमें कोई संदेह नहीं है, पात्रों का चयन होना सौभाग्य है। यह पात्र चयन का कार्य सानंद सम्पन्न हुआ। पात्र के चयन के बिना यह महोत्सव आगे नहीं बढ़ सकता। पण्डित जी अब आगे के लिए गतिविधियाँ प्रारम्भ करेंगे। तीन दिन बाद 11 तारीख तक यह महोत्सव चलेगा। अब आप सभी लोग संकल्प में बंध गये हैं। बीच में बाधायें भी अब उस संकल्प में बाधा नहीं आने देगी। बाधा आ जाये तो अब हार का त्याग तो हो ही चुका है। इसी प्रकार सब मिलकर काम करेंगे।

जो संकल्प किया है उसको मूर्त रूप मिले। सभी उत्कृष्टता की ओर बढ़े। ध्यान रखो! पूरे नगर के आकर बैठे हैं तभी उत्साह है। भले ही ये मंच पर है और आप दरी पर हैं। ये मत भूलो मंच पर उन्हीं के कारण बैठे हो। हम तो दरी पर बैठने वालों के लिए विशेष आशीर्वाद देते हैं। कोई भी नहीं कहता, हम तो उन्हीं का पक्ष लेते हैं। कारण यह है कि आज तो लोकतंत्र है। राजा को बनाने वाली प्रजा ही होती है। प्रजा का समर्थन जरूरी है। सौधर्म इन्द्र को भी तभी समाधान मिलता है। कोई भी पात्र हो चाहे कुबेर हो या अन्य, इनका वर्धन इसी प्रकार होगा। 5-6 दिन तक करते रहेंगे, जितना मिलेगा मैं भी समय दूंगा। यह अनुष्ठान सानंद सम्पन्न हो इसी भावना के साथ। अहिंसा परमो धर्म की जय।

२-२-१८ "एक ही राह - बस संयम की" प्रातः ९.२०

मानों आपको कोई ऐसी शिकायत हो गयी शरीर एवं मन में। तो आप शरीर को न पुछकर मन को पुछकर दूसरों की शरण में चले जाते हैं। वे है डाक्टर - वैद्य लोग। कुछ बातें आपसे पुछते है और उनसे सलाह लेकर उसीसे आप चिकित्सा करवाते हैं। ये तो सब लोगों की धारणा रहती है शरीर को चलाने के लिए इतनी - इतनी वस्तुओं की आवश्यकता होती है। वस्तुओं की आवश्यकता होना गलत नहीं किन्तु अतिमात्रा में होना गलत है। हम मनचाहा करने को तैयार हो जाते हैं, ये हम मानने को तैयार ही नहीं हैं।

मन के वश होकर बस जो चाहे, जितना चाहें, जब चाहें, जहाँ चाहे वहाँ तैयार रखते है। सब हमारे ही हाथ में है। पश्चिमी हवा है ही ये सब बातें आपके मन में लाने की चेष्टा करती रहती हैं। बहुत समझाते हैं फिर भी मन को कार्यकारी नहीं होता। वही हवा जब आपके मन पर आवेगी तब क्या करोगे? महापुरुषों द्वारा सुनने में आया था, पुराण ग्रन्थों में भी यही लिखा है, मित्र ने भी यही बात कही थी, माता-पिता तो कहते-कहते थक गये। कहाँ गये? ढूंढ लो कहाँ गये। अकेले बैठे-बैठे सोचते हैं। पूर्व में आपको सचेत किया गया था किन्तु सचेत नहीं हो पाये।

आप चेतन तो है ही फिर सचेत की क्या बात? आप चेतन है या अचेतन है? सचेत भी और अचेत भी है। मिश्र भाव नहीं मिश्र देश है। मतलब हम चेतन तो है, अब सचेत (जाग्रत) होने हेतु कहा है। यह दशा है हमारी।

हम सचेत उस दिशा में नहीं हो रहे जिसमें कहा जा रहा है। मन प्रायःकर उसी दिशा में जाता है, जिस दिशा में नहीं जाना चाहिए। जिस दिशा में जाने पर भयंकर कठनाई आने वाली है। चिकित्सक ने कहा- अब आपको नपा-तुला लेना है। मतलब जानते हो नपा-तुला का? इस नपा-तुला को सर्वत्र लगाना है - आहार - पानी - हवा आदि सब में लगाना है। जिसके बारे में सोचना नहीं उसे तो छोड़ ही देना है/उसमें नपा तुला नहीं करना है। दिशा बोध के अनुसार भी आप खाने-पीने के बारे में तो व्यवस्थित हो जाते हैं पर सोचने के बारे में नहीं हो पाते।

ये तो हम कर लेंगे पर वो नहीं कर पाते हैं। उन्होंने कहा अब आपको एक ही बार भोजन करना है। सुन रहे हैं आप। जिन्दा रहना है तो एक ही बार खाना है। महाराज अभी तो बहुत जिन्दगी है। १२ आना तो चली गयी। चतुर्थांश बचा है। अब जो चिकित्सक ने बताया वो नहीं किया फिर कहा ऊनोदर करना है। ऊनोदर केवल महाराज के लिए ही नहीं बताया। भूख से कम करना है। बस, इतना ही डालना है। औषध के बारे में कहा जा रहा है।

आहार लेने की बात है तो उसके बारे में भी सोचो। शरीर - बुद्धि - मन तीनों सही दिशा में हो जाते हैं। बच्चे अपने माता-पिता के पद चिन्हों पर चलते जाते हैं। पद चिन्ह का मतलब जो चले गये

है, हमें भी उस दिशा में जाना है।

ये सब बातें याद रखना आवश्यक है। तोल-माप करके, समय देखकरके, उचित-अनुचित देख करके लेना है। किन्तु आप लोग अनुचित को उचित बना लेते है। समय देखकर क्या लेना था इसका विवेक होना जरूरी है। भीतर लेना था उसे बाहर लगा दिया। बाहर लगाना था उसे भीतर ले लिया। पहले लेना था उसे बाद में ले लिया, बाद में लेना था उसे पहले ले लिया। थोड़ा लेना था उसे ज्यादा ले लिया, ज्यादा लेना था उसे थोड़ा ले लिया। सब बात एक ही है।

भीतर जाकर व्यवस्थित हो जायेगा। मिलाकर लेना था उसे अलग-अलग ले लिया, मिल जायेगा। सुन रहे हो या नहीं? मनचलापन हो गया। रसे अचेत होकर नहीं सचेत होकर सही दिशा में पुरुषार्थ द्वारा करना है। इसीलिये बार-बार ग्रन्थकारो ने हमें सचेत किया है। वो चले क्यों गये? अभी तो रहना था। उन्होने अपनी उम्र में जितना ग्रहण किया सबका सब आपको दे दिया। ये पक्का है घर में माता-पिता रहते है तो दिमाग ठीक रहता है। किन्तु ये ध्यान रहें वे कुछ ही दिनों के है।

हम वैज्ञानिक युग में है। माता-पिता का कर्तव्य है हमारे मार्गदर्शन करने का। अभी अवकाश नहीं प्राप्त कर सकते। ये सोच है आज के नवयुवको की। कैसे तालमेल होगा? इस हेतु आपसे भोजन-पानी के लिए कहा जा रहा है।

स्वस्थ व्यक्ति आगे भी स्वस्थ बना रहे इस हेतु आपको रास्ता दिया जा रहा है।

इसी का नाम संयम है। "असंयम होते हुये भी संयम की राह पर चले तभी मंजील मिलने वाली है।" वे चले तो हैं, रास्ता बनाकर चले हैं। लिफ्ट व्यवस्था से नहीं। दूसरा पैसा दे तो बिठायेंगे नहीं तो नहीं बिठायेंगे ये गलत है। सीढ़ियाँ/जीना से भी ऊपर वे ज्यों का त्यों रहती हैं। सिर पर लेकर जाओ। आज का विज्ञान रास्ता बनाना भी जानता है और रास्ता मिटाना भी जानता है। ये बहुत बड़ा खतरा है। साथ किसी को नहीं देता। उन्होनें दिशा भी बनायी, दिशा-बोध भी दिया।

ऐसे-ऐसे संकेत पट्ट लगा दिये जिससे आप जान सको कि अब इतना रह गया - अब इतना रह गया। पढ़ते जाओ - चलते जाओ। हाँ! सावधानी रखना जब चौपात पे पहुँचो तो वहाँ एक रास्ता नहीं रहता। आठ-आठ रास्ते भी होते हैं। जब उस संकेत पट्ट पर सामने गया तो गया मिलेगा इधर आयेंगे तो आ गया मिलेगा। किधर गया गया गया। आ गया - गया और हो गया। [गया वालों के लिए]

जिंदगी यूं ही निकल जाती है। सोचना है आपको सचेत होकर के। पढ़ लिखकर विद्वान तो बना दिया किन्तु चले तभी तो। उन्होने जो उपकार हम पर किया है वह

तभी काम का होगा जब ग्रहण करेंगे।

उनको पढ़ेंगे - सोचेंगे - मानेंगे तब उन पर उपकार होगा और उनका लिखना भी तभी सार्थक होगा। इस प्रकार उनके उद्‌बोधन को देखते हैं, तब लगता है कि उन्होंने हम सब कुछ व्यवस्थित दिया फिर भी सोच नहीं पा रहे हैं। जो पथ्य के रूप में बताया उसे ग्रहण करें। पथ्य का अर्थ पथ से है। जो चल रहे हैं उन्हें देखकर पथ पर आगे बढ़ना है। जो चल ही नहीं रहा उसके लिए पथ का क्या मतलब। न पथ है, न पथ्य है, न पाथेय है बल्कि कुपथ्य को ओर ले रखा है।

सुन भी रहे हो या नहीं? कैसे? ऊँघते हुये। जैसे ऊँघते हुये बच्चे को ले ले बेटा-लेलो वह भी-हूँऽऽ। हव तो कहता है पर मालुम कुछ नहीं। ऐसी दशा लगभग आप लोगों की है। आप मानो या न मानो। आपकी हव को स्वीकार करने हेतु तैयार नहीं। हाँ-हाँ, हूँ-हूँ न सचेत है, न अचेत है। ऊसई-ऊसई। वो तो बुंदेलखण्ड की बात है। विचार किजिये भविष्य के विषय में जो किया है वह वर्तमान में प्राप्त हो रहा है। कितनी उदारता से हमारा दिग्दर्शन किया।

उन्होंने अपना कर्त्तव्य किया। हम कर्त्तव्य कर रहे हैं दूसरे पर उधार/उधार हो कर। उन्होंने संकेत तो दिया था पर हम सचेत नहीं थे,

अब क्या करें। अब सचेत होना है आपको। शब्द को देखकर के क्या अर्थ होता है उसकी ओर गंभीरता से सोचिये। तभी वह उपयोगी है नहीं तो वह मात्र शब्द है। जब गौर से सुना हो तभी तो अर्थ देगा। सुना ही नहीं तो क्या अर्थ लगायेंगे। एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया तो भी कुछ होने वाला नहीं। ध्यान से सुना है। रुचि के साथ सुना है तो विस्मरण भी हो जाये तो भी कालान्तर में काम आ सकता है। संसार की बातें तो याद रखते हो, मतलब की बातें भूल जाते हो। हमने तो आपको याद दिलाया / सुनाया भी / ध्यान भी दिलाया, आपका ध्यान किधर-क्या पता? आप लोग mobile रखते हो जितना सुनना होता है वही सुनते हो बाकी दुनिया से कोई मतलब रखते। इस मोबाइल में दुनिया की बाते रखोगे तो क्या करोगे? [डिलीट] पहले PhD हो तो अभी हो। सारे के सारे डिपार्टमेन्ट लगा रखे है पर वह काम में आये तब तो सुविधा है अन्यथा दुविधा। शास्त्र हमें उस यथार्थ को बताने वाले है। उसी के बारे में हम सोचें - समझें एवं श्रद्धान करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

- "उत्तर गुणों के पालन करते रहने से चर्या में शिथिलता नहीं आती। अतः प्रतिदिन कुछ न कुछ नियम लेते रहना चाहिए।"

3-2-18 को "कृषि विश्व विद्यालय" गये। प्रातः

"अब खेती भी विदेशी" 8.30

परम पूज्य आ० श्री बार-बार निवेदन से कृषि विश्वविद्यालय गये। हम 4-5 महाराज भी साथ थे। वहाँ के वैज्ञानिकों ने कृषि उपज के बारे में बताया। 500 एकड़ में फैले इस विश्वविद्यालय में विदेशी तकनीक से यहाँ भी नये-नये अनुसंधान करके खेती हो रही है। पूर्णतः कम्प्यूटराइज्ड कितना तापमान रखना कितना पानी कितना प्रकाश-हवा आदि सब मशीनों के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है। एक-एक एकड़ के लगभग 10-12 टैंटनुमा घर बने होते हैं।

आ० श्री ने वैज्ञानिक महोदय से खूब प्रश्न पूछे। उनके प्रश्नों के आगे वे निरुत्तर हो गये। क्यों की भारतीय कृषि विज्ञान सर्वोत्तम कृषि विज्ञान रहा है। आ० श्री ने कहा जो खेती जमीन से जुड़ी न हो, प्रकाश-हवा (वायु) प्राकृतिक न हो, जल भी अप्राकृतिक हो तो वह उपज न आरोग्यप्रद होगी और न ही स्वादिष्ट। फूलों के बागान में ले गये-वहाँ आ० श्री ने कहा ये तो कागजी फूल की तरह सुगन्ध से रहित हैं। मात्र अर्थ को ही प्राथमिकता देने से यह दशा बन गयी है। श्रम से जी चुराने के कारण आज इस विदेशी संस्कृति का प्रभाव कृषिक्षेत्र में भी तेजी से देखने को मिल रहा है। यह सब ठीक नहीं है।

4-2-18 "आओ उतारे भीतरी एक्सरा" प्रातः 9.20

आप लोगो ने अभी एक व्यक्ति को यहाँ देखा होगा जिसको आपने फोटू/छायचित्र जिसे बोलते है।उसे नियुक्त किया होगा। वह कहता है मैं भी सोले में हूँ। अब हम आपके सामने दूसरे प्रकार का कैमरा लाना चाहते हैं। वह आपको कहता है-उनके पास जाओ उनके पास मत जाओ। लेने से पूर्व (चित्र) आप भी अच्छे से तैयार होकर जाते हैं। अब दादा जी नहीं भी रहे तो उस चित्र को देखकर ये वो है-ऽ। भले ही उन्होने पुनः इसी घर में जन्म भी ले लिया पर मरने के उपरान्त तो ये हमारे दद्दा हैं-ऽ अतः सही स्मृति होना चाहिए।

अब इसके उपरान्त कुछ पेट में दर्द हुआ, माथे में दर्द, आंखो में दर्द, पैर में दर्द आदि अनेक प्रकार के दर्द प्रारम्भ हो गये। आपने सोचा चित्र लेना है अतः इसे नहाओ-धुलाओ फिर अलंकार/आभूषण पहनाओ। किन्तु ये भूल जाते है कि चित्र पेट का नहीं पेटी का लेना है।बाहर का फोटो नहीं भीतर का X-Ray उतारना है। उस X-Ray को पढ़ना हरेक व्यक्ति के बस की बात नहीं। यहाँ तो कुछ दिखता ही नहीं।

इसलिये दांये कौन? बांये कौन? उलटा क्या और सुलटा क्या? यह बताना आवश्यक होता है। यह वही व्यक्ति है जो लिया था और वह आज लिया जा रहा है। ये बाहरी पता है-उसे इतना भी पता नहीं हैं। भीतर पता तो किसी को ज्ञात है ही नहीं। बाहरी

पता तो बाजार में खूब मिल जाता है।
दोनों आपके सामने हैं कौन,
असली और कौन नकली, ये आपको देखना है। इसके उपरान्त भी, ये तो X-Ray की बात हुयी अब Deep X-Ray भी होते हैं। आप जानते हैं? हाँ! आप सुनो तो। सुनते हैं Deep X-Ray का मतलब बहुत गहराई-3, ये मशीन केवल हमारे पास ही। और किसी के पास नहीं लेना है तो ले लो। क्या करें उसको देखना है। व्यवहार नय एक प्रकार से फोटोग्राफी में लगा है, निश्चय नय X-Ray, Deep X-Ray में लगा है।
परम शुद्ध निश्चय नय तो और-और। प्रभु हमें बताते हैं तुम्हारा ये स्वरूप है, इसको कब समझोगे। जिन्होंने इसे समझ लिया उनके जीवन में कैसी क्रान्ति आ गयी? इसे ही समझने के लिए यहाँ एक हफ्ते (7 दिन) में यह पंचकल्याणक का आयोजन किया गया है। आज रविवार है अगले रविवार तक पूर्ण हो जायेगा। आपको निश्चय नय - परम शुद्ध निश्चय नय तब समझ में आ जायेगा। जो जागेगा वही भागेगा। जो भागेगा वही पायेगा/पहुँचेगा। दवाई भीतर है यह जानकारी नहीं है।
यह बाहर कहीं भी नहीं। यह दृढ़ श्रद्धान का विषय है। इसे ही आगे-आगे बढ़ाते हुये चले जायें। जैसा आगम (जिनवाणी) में लिखा है, मुनियों/ऋषियों ने कहा है वैसा करेंगो तभी प्राप्त कर पायेंगो। सात दिन बाद क्या रहेगा। मात्र स्मृति।

स्मारिका बन जायेगी।

स्मृति-स्मारिका में अन्तर नहीं है। याददाश्त जिसको बोलते हैं। memory सारे के सारे एकार्थवाची हैं। इन सब में कुछ नहीं आयेगा। एक स्वरूप जो है उसी ओर मात्र दृष्टि रखोगे तभी इन सब में पैसा खर्च करना सार्थक होगा। स्वरूप कि ओर देखने में कोई भी खर्च नहीं मात्र आमदनी ही आमदनी है। आमदनी भी कैसी? मल्टी-3। मल्टी का मतलब समझते हो? ठेकेदार समझते हैं। मल्टी, जल्दी-जल्दी पल्टी। ऐसी है वह मल्टी। ये गुणित क्रम से चलता है।

एक-आध भी यदि इस ओर (धर्म) आ जाता है तो उन्हें गर्व होता है। बाकी सब तो ऊपर-नीचे होते रहते हैं। अब जाग्रत हो जाये। इससे ही कार्यक्रम प्रारम्भ है। पण्डित जी बतायेंगे, क्या-क्या कार्यक्रम हैं? आप सभी प्रतिष्ठित हैं। इस प्रकार यह संक्षेप में आप सबके सामने रखा। अभी एक महोदय बोल रहे थे कि महाराज क्षणिक-प्रवचन दे दें। क्षण-क्षण जब मिल जाता है तभी घण्टा बनता है। अतः प्रति क्षण काम का है यह सूत्र गांठ बांध लो।

हमारी भाव भंगिमा को संकलित कर लें। याद रखें कि हमने ये पढ़ा था, ये कहा था। यह संकलन आपके अगले भव में भी काम करेगा। यह स्मारिका भी तब तक काम करेगी जब तक पूर्ण उत्थान नहीं होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

भोभाण्डी - रायपुर पंचकल्याणक [5 से 11 जनवरी तक]

ध्वजारोहण "हम भी करें अपूर्व की प्राप्ति" प्रातः 9.00

5-2-18

जब समोशरण की यात्रा के लिए लोग जाते हैं। अपने - अपने वाहन पर बैठकर जाते हैं। दूरी काफी रहती है। वे लोग यह सावधानी रखते हैं, ज्यों ही ध्वजायें फहराती हुयी दिखती हैं त्यों ही वे अपने - अपने हाथी - घोड़ों से उतरकर भाव - भक्ति से प्रभु को नमस्कार कर लेते हैं। पैदल चलकरके ही जाते हैं। यहाँ पर भी आज इस समोशरण का ध्वजारोहण हो गया। समोशरण की रचना तो केवलज्ञान के दिन होगी। इस पंचकल्याणक का यह प्रथम मांगलिक कार्यक्रम समय पर सम्पन्न हो गया।

आज का यह अपूर्व अवसर था। अपूर्व का मतलब जानते हो? जो पूर्व में न हो पश्चिम में हो उसका नाम अपूर्व / नहीं। जब ध्वजा का उत्तोलन किया गया तो वह ध्वजा पश्चिम से पूरब की ओर गयी इसका नाम है अपूर्व। कुछ लोग जो धनपती कुबेर बनना चाहते हैं, वे उत्तर की ओर ध्वजा जाये ऐसी भावना रखते हैं। किन्तु यह पश्चिम से पूरब की ओर जाना अपूर्व वैभव का द्योतक है। मांगलिक कार्य में ध्वजारोहण अपूर्व हुआ।

यह ऐसा ही अवसर है, हमारे जीवन में वह अवसर कब आये जब हम भी अपने उस अपूर्व, अद्वितीय स्वरूप केवलज्ञान को प्राप्त करेंगे। अभी तो

मति-श्रुत ज्ञान के माध्यम से भक्ति भाव कर रहे हैं। इस समय जिस समय पूर्व की कोई क्रिया नहीं होगी। संसार अवस्था में होता है, अब मन-वचन-काय की कोई चेष्टा नहीं। शास्त्रकारों ने कहा है- वह संवेदन हमेशा एक सा बना रहता है।

प्रश्न यह उठता है कि मुक्त होने के बाद में भी क्या अपूर्व बना रहता है? हाँ! सागरोपम काल तक ही नहीं अनंत काल तक अब उनका स्वरूप अपूर्व-अपूर्व ही संवेदन में आयेगा। ज्ञान भले ही पूर्व (पहले) वाला हो सकता है परन्तु संवेदन तो अपूर्व ही होगा। पहले की अपेक्षा प्रत्येक समय अपूर्व-अपूर्व। ऐसी युक्ति आचार्य कुन्दकुन्द ने अपने अपूर्व ग्रन्थ पंचास्तिकाय में दी है। उसकी हम प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप कौनसी प्रतिक्षा कर रहे हो? देख लो।

पूर्व में योग्यता होना अनिवार्य है। उसी योग्यता के उद्घाटन के लिए पंचकल्याण का यह महाअनुष्ठान आज से प्रारम्भ हो गया। भक्तिभाव से इसे आनंद का अनुभव तो आयेगा ही। मंच पर कोई भी दृश्य आने से पूर्व उसकी झलक आप देख लेते हैं। कैसा लगेगा यह दृश्य इस प्रकार विचार करते हैं। उसी प्रकार मुक्ति अवस्था के पूर्व इन सारे के सारे दृश्यों को हम अपने मति-श्रुत ज्ञान के माध्यम से देखते हैं तब क्या आह्लाद की अनुभूति होती है। यह मात्र

अनुमान लाने से होता है फिर साक्षात् उस मुक्त अवस्थाके अनुभव की क्या बात?

मुक्त अवस्था का वह आनंद केवली भगवान को भी नहीं हैं। वे भी अभी लाइन में खड़े हैं, हम उनके पीछे खड़े हैं बस इतना ही अन्तर हैं। [हम आपके पीछे हैं] हमारे पीछे तो अनंत सिद्ध परमेष्ठी का नम्बर आयेगा। अनन्त तीर्थंकर हमारे बाद लाइन में हैं। यह धारा कहीं रुकने वाली नहीं है। अनादि से चली आ रही है और अनंतकाल तक चलती रहेगी। कहाँ से चालु हुयी उस ओर मात्र दृष्टि पात करें।

उसे देखने के लिये कषायों को पहले कम किजिये। सुन रहे हो या नहीं? क्योंकी कषाय की बात आते ही आप सुनते ही नहीं। इसीलिये हमने एकदम खत्म करने का नहीं कहा, कम जरुर कर सकते हो। यह अपूर्व अवसर इसीलिये आपको प्राप्त हुआ है। मोक्षमार्ग की और जाने का यह भी सोपान है। ऐसा आनंद आपको भी आये। बस इतना ही पर्याप्त समझता हूं। आज परिश्रम से शर्व की ओर ध्वजारोहण हुआ है।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

मर्म-व्याख्यान-पू.

6-2-18 "भूल में भूल" प्रातः9-20

आप लोगों के सामने चार प्रकार के जीव है, जो पृथ्वी को ही अपनी काया बना दे वह पृथ्वीकायिक है, जो जल को ही अपनी काया बना दे वह जलकायिक जो अग्नि को अपनी काया बनाये वह अग्निकायिक तथा जो वायु को ही अपनी काया बना दे वह वायुकायिक है। वनस्पति में ये चारों समाविष्ट हो जाते हैं। उसकी अपनी काया नहीं किन्तु इन चारों को समाविष्ट कर काया बनाये उसे वनस्पतिकायिक कहते हैं।

आज का विज्ञान विकसित हो चुका है। उसके सामने ये शंकायें/प्रश्न उठते हैं। उसके पीछे सिद्धान्त होना जरूरी है। युक्तिपूर्वक कभी भी प्रश्न नहीं होता और न ही ऐसे प्रश्न का उत्तर होता है। हाँ! उत्तर देने में युक्तियाँ अवश्य प्रयोग होती हैं। युक्ति अपने आप में कोई प्रश्न नहीं। जिसका उत्तर नहीं मिले ऐसा कोई प्रश्न नहीं। हम भले ही उत्तर न दे पायें ये अलग बात है। किन्तु प्रश्न तो प्रश्न होता है। [बिच में ये फोटो क्यों ले रहे हैं- इन्द्राणी। स्वर्ग में फोटो नहीं खेंचते।]

अब जल तत्व को ही लें, इसमें विज्ञान भी है एवं सिद्धान्त भी है। जैसे मेघ से जल नीचे गिरा उसे जलकण कहते हैं वे जलकण सीप के मुख में गिरे और मोती बन गये। मोती पृथ्वी रूप में है। जल, जल के रूप में था किन्तु अब सीप के आधार से वही जल मोती के रूप में आ गया। मुक्ता/मणीयाँ जो बनी

है, वे पृथ्वी कायिक का रूप है।

अब आप ही देख लिजिये किस तरह से जल पृथ्वीकाय बनने का सौभाग्य प्राप्त करता है। वही जल यदि समुद्र में गिरता तो जल ही बना रहता किन्तु यदि सीप में गिरा तो मुक्ता बनने का अवसर मिल गया। इस प्रकार अब यह नहीं कहना चाहिये कि जल ही पृथ्वी था। जब उपादान ही परिवर्तित हो गया तो नामकरण भी Change हो गया। अब वह पृथ्वी रूप में जन्म लेगा। वर्तमान में विज्ञान द्वारा हो ये रहा है कि हम पृथ्वी - जल आदि को बना सकते हैं।

यहाँ बनाने की बात ही नहीं है। मूल सिद्धान्त में भूल है। नामकरण (नामकर्म) जल होना पहले आवश्यक है। सिद्धान्त के अभाव में वर्तमान विज्ञान आगे बढ़ रहा है और आप लोगों का उस विज्ञान को समर्थन प्राप्त हो रहा है। जब की हमारे आचार्यों की वाणी आज भी उसी सिद्धान्त से आगे बढ़ रही है। वह कैसे आगे बढ़ता है? अब देखिये - जल नामकर्म अब नहीं रहा क्यों की उपादान में पृथ्वी नामकर्म आ गया।

उसकी उम्र, उसके प्रदेश, उसका स्वभाव आदि-आदि सब निश्चित है। इस ओर भी वर्तमान के विज्ञान को सोचना अनिवार्य है। अब आगे और सोचना है। जल से पृथ्वी तो बन गया। अब उस जल को गरम किया, तपाया गया। तपाने से वह जल अचित हो गया। उसमें

चित नहीं रहा।

त्रस जीव तो पहले ही छानकर अलग कर दिये थे। अब जलत्व भी समाप्त कर दिया अचित्त हो गया। अब उसे कौनसा जीव कहेंगे। विज्ञान की भाषा में वह भौतिकी हो गया और ज्यादा गरम किया तो वह उड़ गया/ गैस फोम में हो गया / वायु बन गया। गैस रूप में वायुकायिक तब तक नहीं जब तक कि वायुकायिक नामकर्म से दूसरा जीव नहीं आता है। ये बात अलग है कि मात्र अन्तर्मुहूर्त में वही जीव उस वायु में उत्पन्न हो सकता है। ये फार्मूला है।

आप लोग जो रूपान्तरित मानते हो, उसमें कर्म सिद्धान्त को स्वीकार करना आवश्यक है। अब देखो वह वायु बनकर ऊपर गया वहाँ बादल बन जाता है। जब उन बादलों में संघर्ष (घर्षण) होता है तो बिजली उत्पन्न होती है। अग्निरूप में हो गया। अन्तर्मुहूर्त तक वह शुद्ध अग्नि / भौतिकी अग्नि रूप में रहेगा। जब तक जीव उत्पन्न नहीं होता तब तक अग्निकायिक नहीं होगा। इसी तरह अन्य तत्वों में भी लगाना।

जब तक पृथ्वी को अपनी काया न बनाये तब तक पृथ्वी कायिक नहीं मात्र भौतिकी पृथ्वी है। अब देखो आपके सामने 10 मीनिट के भीतर में हमने बता दिया कि एक ही जीव किस प्रकार परिवर्तित होकर आ रहा है। इसी का नाम जैन सिद्धान्त है। हमारे आचार्यों

ने इसे वितराग विज्ञान के रूप में प्ररूपणा किया है।

इस सिद्धान्त पर विश्वास होना चाहिये। युक्ति - तर्कणा - आग्रह से प्रश्न कर रहे हो। इसीलिये आज का विज्ञान उन सिद्धान्तों को गौण कर रहा है। गौण का मतलब उसके पास कोई उत्तर नहीं है। यूं कहे अपने घरेलु नियम बना रहा है। वितराग विज्ञान / आगम आपको पुरा स्पष्टीकरण दे रहा है। आपको वह स्पष्ट नहीं हो रहा है ये आपकी समस्या है। आप समझ नहीं पाये अथवा आपको पुरा समझा नहीं पाये इसमें गलत कौन है?

युक्ति से नहीं ~~प्रश्न~~ कर सकते हो। प्रश्न भी आधारभूत होना चाहिये तभी आधारसहित उत्तर होता है। इसप्रकार एक-एक मिनिट में क्या-क्या योग्यता होती है? किस प्रकार से पर्याय से पर्यायान्तर होता है यह बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। इसी तरह वर्तमान में जिसे करंट बोलते है इसके विषय में भी कोई लोग ऊहापोह में पड़े है। हमारे पास कुछ आर्टिकल रखे है। हम उन्हें भी देखते रहते है। कोई रख जाता है। उनकी अपनी युक्तियाँ हो सकती है पर मैं उसे सिद्धान्त के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता।

"जब तक हम आगम के उस सिद्धान्त को दोषपूर्ण साबित नहीं कर देते तब तक हम इन सबको निर्णित नहीं मान सकते।" इसप्रकार यह

गर्भकल्याणक के पूर्वार्ध का दिन है।

इसी प्रकार एक और जीव जो स्थावर होते हुये भी इसमें स्वीकार नहीं किया गया। न ही वह पृथ्वीकायिक है, न ही वह अग्निकायिक है, न ही जलकायिक है, न ही वायुकायिक है और न ही वह वनस्पतिकायिक है। जिसको निगोद बोलते हैं। समय तो नहीं है फिर भी विषय को पूर्ण करेंगे। आपका समय तो नहीं हो गया। [नहीं] तो वह निगोद पांचो स्थावर नहीं है। उसे कहीं भी कायिक नहीं कहा। निगोदकायिक ऐसा नहीं।

आचार्यों ने उसे किसी में भी शामिल नहीं किया है इसीलिये निगोद कहा है। आधार- आधेय की विवक्षा में उसे अनंतकायिक कहा है। दूसरे के शरीर को ही वह अपना आधार बनाता है। दूसरे जो पृथ्वी आदि बादर शरीर हैं उनके अपने नामकर्म हैं और इन जीवों का अपना नामकर्म अलग है। वह अपना शरीर बना नहीं सकता पर औदारिक शरीर की अपेक्षा बिल्कुल पृथक है। उसका अपना स्वतंत्र कर्म है। इन सब बातों में आज का विज्ञान बिल्कुल ही अलग है। बाल बोध के अनुरूप कह सकते हैं। इतना ही कहना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

गर्भकल्याणक उ.

7-2-18 आओ जाने-कहाँ रहता है मन? प्रातः 9.2.

कल आपके सामने एकेन्द्रियों की विवक्षा को लेकर किस प्रकार कायिक में परिवर्तन होता है? किस अपेक्षा से ऐसा होता है? कितनी जल्दी-जल्दी उनकी पर्याय बदलती है, फिर भी एक दूसरे में समाहित नहीं होते हैं। अब इसके उपरान्त जीव का विकास किस ढंग से होता है। यह अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण है। संक्षेप में आप लोगों से कहूँगा। द्विइन्द्रिय से पंचेन्द्रिय सभी जीव त्रस कहलाते हैं। इनमें एकेन्द्रिय से ऊपर उठने पर एक-एक इन्द्रियाँ बढ़ती जाती हैं।

द्वीन्द्रिय में रसना, त्रिन्द्रिय में घ्राण चतुरिन्द्रिय में चक्षु तथा पंचेन्द्रिय में कर्ण जो श्रोत को अपना विषय बनाती है। मन के लिए इन पांचों इन्द्रिय का होना अति आवश्यक है। अन्तिम पांचवी इन्द्रिय हो और मन हो ही ऐसा अनिवार्य नहीं। इस आधार से पंचेन्द्रिय के दो भेद हो जाते हैं एक मन सहित दूसरा मन रहित। मन सहित को संज्ञी तथा मन रहित को असंज्ञी कहते हैं। इस प्रकार पंचेन्द्रिय मन वाला तथा मन से रहित भी हो सकता है। यह इतना सूक्ष्म विषय है।

अध्ययन करो तो वर्षों लग जाते हैं और समझ में आ जाये तो कुछ ही घण्टों में क्या मिनिट में समझ सकते हैं। इसी ज्ञान के माध्यम से हम आस्रव एवं बंध से बच सकते हैं तथा संवर एवं निर्जरा की ओर जा सकते हैं, जिसके द्वारा हमें मुक्ति की

प्राप्ति होगी।

ये ध्यान में रखना है ये मन भी दो प्रकार का होता है एक द्रव्य मन - दूसरा भाव मन। जहाँ संज्ञी होता है वहाँ मन रहता भी है और नहीं भी रहता। क्या कहा मैंने? ध्यान से सुनो। जैसे - अरहंत भगवान हैं, उनमें संज्ञीपना नहीं है किन्तु मन है। अच्छे-अच्छे इसमें उलझ जाते हैं। यह उलझन नहीं उलझन को सुलझाने का साधन है। मन रहकर भी संज्ञी नहीं हो सकता ये समझने की बात है। उससे पूर्व तक ही संज्ञीपना रहता है। संज्ञी का मतलब है - 12 वें गुणस्थान तक ही है।

13 वाँ गुणस्थान में न संज्ञी - न असंज्ञी किन्तु मन रहता है। इसीलिये वह सयोगकेवली नामक गुणस्थान है। 14 वें में अयोगकेवली हो जाता है मतलब अब मन भी नहीं रहा, मन से रहित हो गये। उससे पहले उलझन होती है। हमारे यहाँ श्रुतज्ञान होता है, वह भी मन की तरह ही काम करता रहता है। एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक मन नहीं रहता किन्तु श्रुतज्ञान के आधार पर वे अपना काम करते हैं। कल एकेन्द्रिय का उदाहरण दिया था। वृक्ष भी अपने जड़ उसी ओर फैलाता है, जिस ओर राशन (पानी) हो। यह श्रुतज्ञान का विषय है।

मतिज्ञान अलग वस्तु है और मन का ज्ञान अलग वस्तु है। इस प्रकार मन वालों को भी हेय-उपादेय तथा मन से रहित वालों को भी ये भेद हमारे ज्ञान में नहीं आ पाता। इस विषय को स्पष्टीकरण हेतु बताना आवश्यक समझा।

उदाहरण के लिए द्रव्य मन एवं भाव मन को समझने हेतु यह अच्छा रहेगा।

आप सब लाइट हेतु वायर फिटिंग करते हैं। उसके साथ लट्टू - पंखा इत्यादि भी लगाते हैं। ये द्रव्य मन की व्यवस्था है। जो ज्ञानात्मक सहयोगी होता है वह द्रव्यमन है। यदि वायर फिटिंग नहीं कराते तो कभी भी लाइट नहीं आ सकती। किन्तु ये ध्यान रखो कि वायर फिटिंग - लट्टू आदि लगाने मात्र से लाइट नहीं आ सकती। जो उसमें करंट है उसके बिना नहीं हो सकता। द्रव्य मन की व्यवस्था बाहर और करंट की व्यवस्था क्षयोपशम पर आधारित है।

सूक्ष्म विषय है। वर्तमान में जानना चाहते हैं तो इन उपकरणों के माध्यम से कह देते हैं कि लाइट चली गयी/लट्टू बंद है - करंट नहीं है। दूसरा कहता है करंट तो है, ये देखो! पंखा चल रहा है। करंट भीतर है वह देखने को उपलब्ध नहीं देखने में तो लट्टू-पंखा ही आते हैं। पंखा घूम रहा है अथवा प्रकाश आ रहा है मतलब करंट है। हमारे भी ज्ञान की अभिव्यक्ति भिन्न - भिन्न रूप में है।

कहीं स्पर्शन इन्द्रिय के माध्यम से, कहीं रसना, कहीं घ्राण, कहीं चक्षु और कहीं कर्ण इन्द्रिय के माध्यम से और कहीं मन के माध्यम से यह अभिव्यक्ति होती है। इन साधनों की रचना भी दो प्रकार से होती है। ऊपर की इन्द्रिय द्रव्येन्द्रिय है जब कि भावेन्द्रिय की अलग से वही रचना

नहीं होती है। जैसे-जैसे उपकरण मिलते हैं, उसी अनुरूप काम करते हैं।

यह हमने आपके सामने शास्त्रोक्त रखा। द्रव्य मन का स्थान निश्चित नहीं किया जाता है। पाँचों इन्द्रिय के लिए स्थान नियुक्त हैं मन के लिए कोई स्थान नियुक्त नहीं हैं। सुनने में तो आता है, आठ पांखुड़ी वाला कमल होता है। ये हमें उदाहरण के लिए बताया जाता है। यह एक मत है। इससे भी अच्छा दूसरा मत है। इसके लिए मैं स्लेट का उदाहरण देता हूँ। उस स्लेट पर लिखा और पोंछ (मिटा) दिया। इस प्रकार बार-बार लिखा और पोंछा।

दूसरी जादू की स्लेट होती है, उसे ले लो। उसमें कार्बन की व्यवस्था रहती है। उसमें लिखने हेतु कार्बन की व्यवस्था रहती है। लिखने हेतु पेंसिल की आवश्यकता नहीं लकड़ी से भी लिख सकते हो। पोंछना भी हाथ से नहीं बस थोड़ा सा उठा दिया और हो गया गायब (अब दुबारा फिर लिख सकते हो। इसी प्रकार आत्मा में जादू की स्लेट की भांति करंट प्रवाहित, जहाँ विकल्प उत्पन्न होता है वहाँ आत्मा के प्रदेश उस रूप परिणत हो जाते हैं, फिर दूसरी जगह विकल्प तो वहाँ वह परिणति इसी प्रकार से हजारों बार वह मन काम करता रहता है।

इसमें वह मिल्कियत/धारा में बना भी रहता है और नहीं भी रहता है। इस प्रकार

यह मन काम करता रहता है।

श्रुतज्ञान का काम भी कुछ इसी प्रकार का है। हेय का त्याग एवं उपादेय का ग्रहण होता रहता है। चलना चाहते हैं तो पैर को मन संकेत देता है तब विचार आता है पाँव उठाऊँ, नहीं तो खेंचना पड़ेगा। चलना चाहते हैं और मस्तिष्क काम नहीं कर रहा तो फिर खिंचा-तानी होती है। जब तक मन में तरंग उत्पन्न नहीं होती बाहरी कोई काम नहीं होता। ये सारा का सारा यंत्र रूप कार्य बुद्धिपूर्वक होता है। महाराज ये रात में बड़बड़ा रहा था। क्या बोल रहा था? दिन में जो भक्तामर याद किया। अभ्यास किया वही रात में बड़बड़ाने लगता है।

इसे कहते हैं पूर्वप्रयोगात्-- अचेतन दशा मानते हैं इसे। यह बुद्धिपूर्वक नहीं है- सूक्ष्म दशा हो जाती है। ज्ञान के माध्यम से इतना अभ्यास हो जाता है। मन वाला होने पर भी यह संज्ञीपने से ऊपर उठ जाता है वे अरिहंत कहलाते हैं। जब तीनों योग काम करना बंद कर देते हैं तब अयोग केवली हो जाता है। अब मन नहीं है किन्तु अभी सिद्धत्व भी नहीं है। अभी ध्यानी है। इस प्रकार ध्यान हेतु मन की आवश्यकता हो यह भी नियम नहीं है। योग के अभाव में भी ध्यान है। योगातीत है, ध्यानी हैं हाँ योगी नहीं हैं अब। इस तरह योग के साथ अलग, मन के साथ अलग, इन्द्रियों के साथ अलग विवक्षा है। संक्षेप में यह आपके समक्ष रखा। इसमें अच्छे-अच्छे लोग भी गाफिल हो जाते हैं। आप और अधिक अध्ययन करना चाहते हैं तो तत्त्वार्थसूत्र/गोम्मटसार आदि ग्रन्थों से पढ़ सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

तपकल्याणक

9-2-18 "मनमाना न करें - महामना बने" प्रातः 9.20

एक व्यक्ति को सर्प ने काट लिया। उसको काटते हुये कई व्यक्तियों ने देखा किन्तु जिसको काटा उसने सर्प को नहीं देखा। हाँ! कुछ काटा ऐसा जरूर लगा लेकिन होगा क्या पता? वह आगे बढ़ गया। पीछे से जिन्होंने देखा था सोचने लगे आगे जाकर बेहोश होगा चलो जाकर बताते हैं। उन्होंने पूछा क्यों तुम्हें किसी ने काटा है? काटा होगा। उन्होंने सोचा- नहीं बताया जाये क्यों की इसे मालूम नहीं है। लेकिन 2-3 लोगो ने सोचा - इसे बताना चाहिए।

आपका क्या विचार है?

कालान्तर में जब ज्ञात होगा तब होगा। जिस समय काटा उस समय बतायेंगे तो हार्ट भी फेल हो सकता है। क्योंकी सर्प वह भी बहुत बड़ा था- नाग बाबा। अब क्या करें? तो कि ये ढंग का था - कहाँ काटा सब बातें वैद्य जी को बतायी। वैद्य जी ने कहा - नीम ले आओ। इसे नीम की पत्ती खाने को देना है। वह जितना भी दिया सब खा लिया जैसे आप लोग मिठाई खाते हो। वैद्य जी ने कहा- यही पहचान है कि यदि सर्प ने काटा है तो वह मीठाई की तरह नीम को खाने लग जाता है।

अब दूसरी दवाई (औषध) देता हूं, लेकिन इसे सोने नहीं देना। सो गया तो... गया। ऐसा ही किया उसका जहर पुरा का पुरा उतर गया। सर्प के काटने पर जहर चढ़ जाता है। अब उसे उतारना कठिन होता है,

चढ़ जाना आसान होता है।

ये तो वैद्य जी के माध्यम से ठीक हो गया। इस उदाहरण के माध्यम से हम यह बताना चाहते हैं कि विष से भी अधिक हालाहल की तरह होते हैं ये पंचेन्द्रिय विषय। पहली स्पर्शन इन्द्रिय होती है फिर एक-एक इन्द्रिय बढ़ाते जाओ आप कौनसी इन्द्रिय हैं, पुरुषार्थ कर लो। पंचेन्द्रिय के उपरान्त आप मन वाले भी हैं। ये सारी की सारी विषैली सामग्री है। वह मन के विषय में रहते हैं। मन पागल होता है, इन्द्रियाँ कभी पागल नहीं होती। मन मतवाला होता है। इन्द्रियाँ तो बेचारी सयानी होती हैं।

मनमानी करने वाले को कितना भी पढ़ा-लिखा दो कुछ नहीं कर पाता जब कि देव-गुरु-शास्त्र की बात का पालन करने "मनमाना नहीं महामना बन जाता है। जो मनस्वी होता है वही महामना बन पाता है। पांचों इन्द्रिय के विषय जल्दी-जल्दी छूट जायेंगे किन्तु मन को समझायें तब। मन कभी नियन्त्रण में नहीं रहता, बल्कि सबको ये नियन्त्रण में रखता है। मन एक बार कहकर भी पलट जाता है। क्यों? अब महाराज के सामने क्या करते, हमने तो "हव" कह दी।

घर वाले पूछते हैं-ऐसा कैसे कह दिया। उन्होंने इतना जरूर कहा था-पहले सोच लो-समझ लो फिर उसे दृढ़ता के साथ पालन करना। इस प्रकार दो के बीच वह (संकल्प) गठबंधन हो जाता है किन्तु कालान्तर

में विश्वास डगमगाने लगता है।

विश्वास नहीं रह पाता तभी गड़बड़ होता है। मन इसी प्रकार का दगाबाज है। हर क्षेत्र में वह ऐसा ही काम करता है न दिन में - न रात में चैन से रह सकते हो। सही बताओ, होता है या नहीं ? कभी अध्ययन किया मन का ? तो पंचेन्द्रिय के विषयों को देख मन दगाबाज धोखा देने वाला है। कब ? एन वक्त पर धोखा देता है। जैसे दशरथ ने स्वयंवर में देख लिया सब हो गया। (कैकयी) अन्य योद्धा लोग पीछे पड़ गये युद्ध में धुरी की कील का कार्य अपनी अंगुली से किया। समय पर मांग लिया वर।

इसको बोलते हैं दगाबाज। वैसे अपना रहकर रहेगा किन्तु अन्तसमय में दगा दे देता है। उसके Under में हो ये Under Standing होना जरूरी है। पंचेन्द्रिय के विषयों में साथ मन के बिना आ ही नहीं सकती। इसलिए जो पंचगुरु चरण शरण में रहता है, उसे ये मीठे नहीं लगते। जब ऐसी दृष्टि हो जाती है तो कितना खाओगे जो खाया है वह भी चला जाये ऐसी भावना होने लगती है।

इसलिये पंचेन्द्रिय विषयों पर लगाम लगाओ। एक तरफ से नहीं चारों तरफ से लगाओ। नहीं तो प्रातः अलग - मध्याह्न में अलग और शाम को अलग चाहिए। यदि इसी दगाबाज मन को अपने Under (वश) में कर लो तो यही मुक्ति तक काम आयेगा। कोई भी इन्द्रिय इतनी निपरा

का कारण नहीं जितना की मन है।

मन पर जो नियन्त्रण कर लेता है वह कभी भी दुनिया से डरता नहीं है। जो डरता है वह निश्चित मन का दास है। जहर तभी चढ़ता है जब विषयों का जहर अच्छा लग रहा है। पंचेन्द्रिय विषय अच्छे लगे तो समझ लेना अभी मंजील बहुत दूर है। कितनी दूर- बहुत दूर है। बार-बार हो गया तो यह निश्चित हो जाता है। धन्य है वे लोग जिन्होंने अपने मन पर लगाम दी है। लक्ष्मी चंचल होती है। उस चंचल लक्ष्मी पर लगाम लगा देते हैं।

तभी तो जब दान देते हो तो हाथ को दुःख नहीं होता। मन को दुःख होता है। देना पड़ रहा है क्या करें? हाथ कभी मना नहीं करता और मन हाँ नहीं करता। न जाने वह कहाँ बैठा है? राजा बन गया है। आप उसके सामने उठक-बैठक करते रहते हो। एक बार इस मन को अंदर में रखना ही होगा। लगाम लगाना पड़ेगा। ऊपर से चाबुक लगाना पड़ेगा। एक सेकेण्ड भी इधर-उधर ध्यान गया कि आपको वह गुलाटी खिला देता है।

इसलिए बहुत सावधानी रखनी पड़ती है। आपने देखा होगा उस पर बैठकर दोनो पांव दोनो तरफ उसमें रखकर खड़ा हो जाता है तब जाकर वह वश में रहता है। बहुत होशियार रहना है। वे धन्य है जिन्होंने मन एवं पांच इन्द्रियों को जीत लिया है। अब मंजील दूर नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय ॐ

नेवरा - तिल्दा,

रविवार
18-2-18 "रवि कभी छुट्टी नहीं मनाता" प्रातः 9.20

किस - किस को रवि देखता, पूछे जग के लोग।
जब - जब देखूँ देखता, रवि तो मेरी ओर॥

आज रविवार का ही दिन है। किन्तु यदि एक दिन भी रवि अपना काम करना बंद कर दे। अपना वार मना ले तो क्या होगा? सब विश्राम करते हैं पर वह विश्राम नहीं करता। वह कहता है पुरुषार्थ करना ही प्रत्येक जीव का स्वभाव है। आत्मा सक्रिय है परन्तु अभी निष्क्रिय होकर काम कर रहा है। यदि सही दिशा में काम करले तो उस आत्मा का भी सही प्रताप प्राप्त होगा।

इसलिये लोग पूछते हैं कि रवि अकेला है; किस - किस को देखेगा? क्या पता मेरे पर दृष्टि है या नहीं? इसलिये वह जवाब देता है - "जब - जब देखुं देखता रवि तो मेरी ओर"। रवि को कभी भी देखो वह अपनी ही ओर देखते हुये लगेगा। जिसका पुरुषार्थ सही दिशा में होता है उसके लिए उपदेश की आवश्यकता नहीं है। आज रविवार है, ऐसा याद दिलाने पर हमने भी आपके सामने रख दिया है।

"अहिंसा परमो धर्म की जय" ॐ

5नको) करें अध्ययन - 1. व्याकरण, 2. साहित्य एवं कला
3. आयुर्वेद एवं 4. न्याय एवं दर्शन 5.अध्यात्म

0 व्याकरण तो एक ही है फिर अलग - अलग नामों से क्यों?
[जैनेन्द्र व्याकरण के नये सम्पादन पर]

भाटापारा

20-2-18 "शिक्षा देती चावल की मिलें" प्रातः 9.20

पहले भी एक बार यहाँ से अमरकंटक की ओर जाना हुआ था। योग की बात थी आने के उपरान्त वर्षा की झड़ी लग गयी थी। जहाँ आँगन पर सब कुछ व्यवस्थित था वहीं वर्षा इतनी की बैठने की जगह सबको खड़ा होना पड़ रहा था। कोई कार्यक्रम नहीं था फिर भी एक-आध मुकाम करके आगे चले गये। वर्षा जरूरी है पर समय पर ही। समय पर वर्षा हो तभी सुभिक्ष होता है अन्यथा दुर्भिक्ष। अकाल में वर्षा होने पर फसल नष्ट हो जाती है।

इस शहर का नाम भाटापारा है। भाटा अर्थात पत्थर होने चाहिए पर वो नहीं यहाँ तो चारों ओर मिल ही मिल है। चावल की मिल खूब है यहाँ से चावल बाहर भेजा जाता है। देखो! 200-250 मिल है। इससे भी आप लोग शिक्षा ग्रहण कर सकते हो। चावल की खेती नहीं होती, खेती तो धान की होती है। धान पैदा होता है पर खाने में नहीं आता। साफ होकर जब छिलका अलग हो जाता है तब खाने में आता है। चावल की उत्पत्ति धान से ही होती है।

आपने देखा होगा मन्दिर में चावल चढ़ाते है। क्यों की वह बोने योग्य नहीं। पुनः उगता नहीं। आत्मा भी इसी तरह का पुरुषार्थ कर ले तो उसे पुनः नहीं जनम लेना पड़ेगा। आप इस रहस्य से दूर

रहने के कारण पुनः-पुनः जनम लेते रहते हैं।

आप इस चावल के रहस्य को याद रखना। चावल खाते तो रहते हैं पर रहस्य को जानो। शरीर भूसे की तरह है और आत्मा चावल के रूप में, इतना समझना आवश्यक है। अभी इतना ही पर्याप्त है। आत्मत्व को भीतर उतारना ही मानव जीवन की सार्थकता है।

(अहिंसा परमो धर्म की जय।)

संस्मरण -

1. बिलासपुर से अमरकंटक का विहार चल रहा था। अचानकमार टाइगर रिजर्व के रास्ते से जा रहे थे। रोड बिल्कुल खराब था। ब्र. दीपक भैया ने कहा - आ. श्री रोड तो कांटे की तरह चुभ रही होगी। आ. श्री ने तुरंत कहा - नहीं, जो कांटे लगे हैं उन्हें निकाल रही है। कर्मों के कांटे जो अनादि से लगे हैं उन्हें दीक्षा कर एक-एक को बाहर कर रही है और ऐसा निकाल रही है कि फिर कभी कोई कांटा लगेगा ही नहीं। ये है गुरुवर की सोच।

2. उसी मार्ग में एक बार ब्र. दिपक भैया, ब्र. सुनील भैया एवं कोयला परिवार के मनीष (संघपति) तीनों ने कहा आ. श्री कल मध्याह्न में रास्ता बहुत खराब था, हमने सोचा आज गुरुजी कुछ कहेंगे, अतः शाम को हम तीनों आये ही नहीं। गुरुजी ने बिल्कुल सहज भाव में कहा - अंग भी जाते तो हम पहचानते नहीं। अर्थात आपको कुछ नहीं कहते।

" त्रिवेणी डेन्टल संस्थान"

बिलासपुर

22-2-18 "कहानी दांतो की" प्रातः 10.30

सुनते हैं यहाँ पर दूर-दूर से बच्चे पढ़ने आते हैं चिकित्सक बनने के लिए यहाँ अध्ययन करने के लिए आते हैं। यह चिकित्सा के क्षेत्र को लेकर खोला गया है। अंग्रेजी चिकित्सा प्रणाली से चिकित्सा करना सीखाया जाता है। भारतीय चिकित्सा प्रणाली की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। जो कार्यकर्ता है उनकी भी चिकित्सा होती है? कैसे हो जायेगी। विशेष रूप से दांतों का यहां उपचार कैसे होता है यह अध्ययन करते हैं।

जब कोई भी जन्म लेता है तो उसके बाद दांत आते हैं। उन दांतो का भी अपना अलग प्रभाव होता है। दूध के दांत कहलाते हैं। दूध पीया जाता है खाया तो जाता नहीं। किन्तु दांतों के माध्यम से ही हमारा जीवन आगे बढ़ता है। वे दूध के दांत बिल्कुल अलग होते हुये भी जीवन में अनन्य संबंध रखते हैं और उन्हीं के माध्यम से जो कुछ भी खाया हुआ है वह रस रूप में परिणत होता है। इसी से वह धातु-उपधातु में बनना प्रारम्भ होता है। दांतों के बिना इस पाचन प्रक्रिया पर भी असर पड़ता है।

इसीलिए चिकित्सा के लिए इस ओर भी ध्यान दिया जाता है। सुनते हैं दूध के दांत के बाद जो दांत आते हैं वे जीवन पर्यन्त रहते हैं। उन्हीं को यहाँ दुरुस्त तंदुरस्त करते हैं। पुरे के पुरे पुनः भी लगा देते हैं। हमें भी

कई बार दाँतो में दर्द हुआ।

आहार के लिए गये। वहाँ जाकर लगा चबाया ही नहीं गया। तब लगा कि यह तो बहुत अनिवार्य तत्व है। इनकी चिकित्सा कब तक करेंगे। डाक्टर को बुला लें? कब तक? फिर पैसे भी माँग ले तो कहाँ से देंगे? जब छोटे थे उस समय यदि अभ्यास कर ले तो अपने ही हाथों से भी दांत निकाल सकते हैं। हमने प्रयोग किया। कम से कम 10-15 दांतों को स्वयं अपने ही हाथो से निकाल दिया। सीख लेना चाहिए अपनी ही चीज है। प्रयोग से सफलता मिलती है, ऐसा भी होता है?

आधुनिक चिकित्सक हत्था बना देते है। हाँ! व्यवस्थित होना चाहिए। मैं इतना कहना चाहता हूँ शरीर की प्रकृति का आपको स्वयं समझना आवश्यक है। यह दूसरे पर आश्रित नहीं। बहुत महत्वपूर्ण है अपने स्वयं की शारीरिक प्रकृति को जानना।" अब दो बार दाँत आते है तीसरी बार नहीं किन्तु सुनते हैं किन्हीं-किन्हीं शताब्दी आयु वालों को तीसरी बार भी दांत आ जाते है। वे छोटे-छोटे होते हैं।

इन सब बातों के साथ एक बात और आती है। वह अक्ल दांत कहलाती है। यह Science का विषय नहीं दार्शनिक विषय है। अकल दांत नाम क्यों रखा? बुद्धि का दांतो से संबंध होता है। 20-25 साल तक अपनी इच्छा अनुसार रहने वाला वह युवक ज्ञान के विकास में

अधुरा था लेकिन ३० वर्ष में आने पर ज्ञान संबंधी विकास होता है।

अक्ल दांत आने पर सबसे ज्यादा वेदना होती है। तो दांतों के बारे में मुझे तो ज्यादा ज्ञात नहीं आप सब तो Science के अनुसार बहुत कुछ जानते होंगे। Science के साथ-साथ हमें व्यवहारिकता पर भी ध्यान देना चाहिए। अक्ल दांत आने पर दर्शन का जीवन में प्रारम्भ हो जाता है। इस आयु में आने पर संघर्ष भी प्रारम्भ हो जाता है किन्तु हमें इस बुद्धि का प्रयोग संघर्ष में नहीं बल्कि नीर-क्षीर-विवेक की ओर ध्यान देना चाहिए।

उम्र के अनुसार भी इसका विभाजन सुनते हैं। इसके लिए अब हमें अपनी इच्छाओं पर नियन्त्रण रखना चाहिए। इच्छा पर नियन्त्रण नहीं होने से भोजन पर नियन्त्रण नहीं रख पाता। जब अक्ल आती है तब विवेक दृष्टि जागृत होती है। इसीलिये ३० के लगभग यह उम्र बतायी गयी है। देख लो! यहाँ चिकित्सक बैठे हैं अथवा जो चिकित्सक बनने वाले हैं वे बैठे हैं। ३० तक हैं तो उनका नम्बर आ गया नहीं तो आने वाला है देख लो क्या स्थिति है?

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

मंगला-बिलासपुर वेदी प्रतिष्ठा समारोह (23-25 फरवरी)
23-2-18 "पहुँच गये श्री जी विहार करते हुए" प्रातः 9.20

कई स्थानों पर आप लोगों ने देखा होगा पंचकल्याणक की शुरुआत हो रही है। विधीवत् सारे के सारे कार्य होंगे। किन्तु आपने देखा होगा 10-15 दिन हो गये श्री जी की प्रतिष्ठा हुये, अभी तक वेदी में विराजमान नहीं हुये। अभी तो वे भी विहार में ही लगे हुये हैं। जब से केवलज्ञान आदि होकर विहार का कार्य प्रारम्भ हुआ तो साथ रहने वाले व्यक्ति भी उनके साथ ही चल रहे हैं। बैठ ही नहीं पा रहे हैं।

शास्त्रों के अनुसार सुनते हैं केवलज्ञान 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त में हुआ अब पूर्व कोटी काल तक विहार में रह सकते हैं। इतना लम्बा काल विहार का बताया। साथ रहने वाले थक जायेंगे। नहीं समोशरण में रहने वाले कभी थकते नहीं। न ही तन से थकते हैं और न ही मन से थकते हैं, न ही वचन से थकावट अनुभव करते हैं। वह समोशरण निरन्तर चलता रहता है। आज वह हमें प्राप्त नहीं। इतना पुण्य नहीं कि हम उसे आँखो से देख सके। मात्र जिनवाणी से ज्ञात होता है। पढ़कर लगता है कितना अद्भूत होता होगा वह दृश्य। विदेह क्षेत्र में ऐसा आज भी हो रहा है।

जब हम हेय तत्व के प्रति शान्त हो जाते हैं। उपादेय मूर्त रूप से आँखो के सामने आ जाता है। आज उसी के प्रतिरूप समान हम

पंचकल्याणक का आयोजन करते हैं। खवा बांधा में पंचकल्याणक तो सम्पन्न हो गया। स्थापना निक्षेप की अपेक्षा भगवान की प्रतिष्ठा हो गयी। यहां मन्दिर बन चुका है। पहले वहाँ भी इन्द्रो की प्रतिष्ठा हुयी। आज पुनः यहाँ भी शाम को पात्र बन गये।

उनके साथ हमारा भी विहार चल रहा है। श्री जी की स्थापना हो जाये तो हमारा भी कहीं निश्चित हो जाये, लेकिन अभी निश्चित नहीं हो पा रहा है। कल तो जहाँ सामायिक की थी (LCFT) उसके बाद तुरन्त विहार कर दिया। गर्मी तेज थी। लोगों ने कहा- हमने कहा- आप रह जाओ बाद में आ जाना हमें तो पांच- सवा पांच तक पहुंचना है। जिससे सब कार्यक्रम व्यवस्थित हो जाये। हमें यहाँ रुकना है- समोशरण यहीं लगेगा। आधा घण्टे में सब व्यवस्थित हो गये।

अभी सुबह-सुबह ध्वजारोहण भी कर लिया। वे भी साथ ही चल रहे हैं। नहीं आते तो ध्वजारोहण कर्ता तो पहले चाहिए। साथ रहेंगे तो यह अवसर मिल गया। अब अन्य इन्द्रो की बारी आती हैं। इन सब अनुष्ठानों का यही प्रयोजन होता है कि जो धन इकट्ठा किया उसका सही उपयोग हो। मैं हमेशा कहता हूँ की कभी भी कंजुसी करना नहीं किन्तु अपव्यय भी नहीं हो। दोनों बात करते हैं। मंगल वातावरण प्रारम्भ हो चुका है आज और कल में सम्पन्न करना है फिर आगे देखते हैं क्या कार्यक्रम है?

अहिंसा परमोधर्म की जय।

23-2-18 "आओ देखें थर्मामीटर भीतर का" मध्याह्न 3.30

आचार्यो ने हम लोगो के ऊपर बड़ी कृपा की ऐसा अनुग्रह किया ताकि अपने भीतर की आंख को खोल सके। बाहरी आँखे तो प्रतिदिन खुलती हैं, झपकीयाँ भी आती हैं परन्तु भीतरी आँखो को खोलने हेतु पुरुषार्थ की आवश्यकता है। आज से धुप भी अपने ढंग से तेज हो गयी है। पिछले वर्ष एक कम (50 में) रहा। गर्मी आते ही पुरे भारत वर्ष की दृष्टि बिलासपुर की ओर रहती है। कैसे कार्यक्रम में भाग ले रहे होंगे।

प्रतिकूल वातावरण हो तो भी भाग लिया जाता है। कल हमने कहा था - सामायिक के तुरन्त बाद विहार हो गया। बिना पांव में पहले ही भाग रहे थे। कहीं पीछे न रह जाये? ये स्वाद कैसा है? अन्यत्र भी ऐसा ही होना चाहिए। किसी निमित्त से ही सही जब भी तपस्या करेंगे सोचना पड़ेगा। बाहर से कर ही रहे हैं तो फिर भीतर से भी करें। उस भीतर की भी पहचान होना चाहिए। देवों से भी क्या तुलना करना। पशुओं में भी धारणा/भावना होती हैं, उनमें भी इस तरह का स्वरूप देखने को उपलब्ध होता है।

आवश्यकता बस बाहर के थर्मामीटर की नहीं भीतर के थर्मामीटर को देखना है। बाहरी तापमान को तो फिर भी गौण कर सकते है और भीतरी ...। भीतरी तापमान होता ही नहीं वह तो शान्त रहता है। यदि हमारा ध्यान भीतरी ओर रहेगा तो बाहर भी शान्त बना रहेगा। आप

ही देखलो भगवान कैसे शान्त बैठे रहते हैं।

आप लोगो की भीतरी आँख खोलने हेतु यह पुरुषार्थ किया गया है। उदाहरण आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने भी तिर्यञ्च का दिया। वह समोशरण का दृश्य सभी अपने-अपने हाथो में सामग्री ले उसी ओर जा रहे हैं। देव भी आ रहे है। इधर देखो तो-उधर देखो तो बस पुजारी जा रहे हैं-पुजारी आ रहे हैं। उनके आभुषण - आभरण आदि की तुलना कभी नहीं कर पायेंगे। जब फल मिलेगा तो सोचने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। हमने तो सौ टंच सोने की झारी से शांतीधारा की थी।

किसी के पास सोने की किसी के पास चाँदी की किसी के पास पीतल आदि की झारी होगी। ये सब बाहर की झारी हो गयी भीतर की झारी तो तिर्यञ्च की भी हो सकती है। इसी फोटोग्राफी को जो तिर्यञ्च के ऊपर बनी थी आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने दो हजार वर्ष पूर्व तैयार कर ली थी। समय-समय पर आज भी सुनाया जाता है। श्रावको को सुनते ही पसीना आने लग जाता है। जब अपने भावों की तुलना उस मेंढक के साथ करते हैं तो समझ में आ जाता है।

जो अपनी अवधारणा में मात्र प्रयोजन/सिद्धि को ही धर्म-कर्म मानने लग जाते हैं वे मेंढक के बारे में सुनते हैं तो माथा ठनक जाता है। हे प्रभु! हमें पहले ये सुनाओ। हे गौतम! हम दो हाथ-दो पैर वाले हैं हमारा उच्च स्थान है पर ये क्या कर रहा है। ये कौन है? जो अपने

मुकुट में मेंढक का चिन्ह लगाये हुये हैं?

देव लोक से विमान उतर कर आ गया पर ये कौनसा ब्राण्ड आ गया? पहले से ही स्थान आरक्षित है आप लोग तो पहले बोली बोलते हैं। एक पांखुड़ी लेकर चलने वाला, क्यारी कहाँ थी उसके पास? अब देखो दिव्येही गंधेही, दिव्येही पुष्पेही .... सब दिव्य-दिव्य पदार्थों को सजाकर लाया है। जब पूजन प्रारम्भ होती है तो श्रेणिक राजा ने साठ हजार प्रश्नो में सर्वप्रथम प्रश्न येंयेही . पूजन का प्रथम अधिकारी किसने बनाया? आप कहने लगते हो हमने तो बोली ली थी।

गौतम स्वामी कहते हैं- आज का यही तो उच्च पात्र है। पुरा प्रसंग याद दिलाया राजगृही के राजा को। जब आप हाथी पर बैठकर आ रहे थे ये भी फूदकता हुआ मुंह में पांखुड़ी का झण्डा लिए आ रहा था। आप सुन रहे हो? कैसा लग रहा है? [अच्छा] पुछने पर अच्छा या ....। तुलना करना चाहिए। हमने सोचा गर्मी उतारने का इससे अच्छा साधन और कोई नहीं है। स्वामी समन्तभद्र ने कहा जब कभी गर्मी लगे इस मेंढक को याद कर लेना कूलर का काम करेगा। मस्तिष्क ठण्डा हो जायेगा। . . . . .

सम्राट को भी समझ में आ गयी। एक सैकण्ड भी नहीं लगा आपके लिए तो कौन विमान भेजेगा, कौन क्या करेगा? सौधर्म इन्द्र भी क्या करेगा? तुलना भी नहीं कर सकते। ऐरावत हाथी वह भी काला नहीं सफेद 7-7 सूंडवाला, उस पर बैठकर

आ जाते हैं। आपको तो इतने सस्ते में बना दिया (ब्रह्म) ने दो-तीन बार कहा। आप भी कम नहीं- फोकट में मिल जाये तो ठीक है।

महाराज को तो विहार करना ही है, क्यों बनाया जाय? जब सुना-पुरा समोशरण खचाखच भरा है पर उस इन्द्र का अलग ही स्थान था। ये है धर्म का स्वरूप। भले ही तिर्यञ्च - गरीब- दानव भी क्यों न हो जिसके घट (हृदय) में धर्म का स्वरूप होता है, वह अनेक व्यक्तियों के आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। हमारे भी पूजन के भाव उस मेंढक तुल्य हो ताकि हम भी अपने भावों को सजाकर उत्थान कर सके। हम लोग भी विदेह से भटककर आ गये, रास्ता मिला नहीं, पगडंडी जो पकड़ ली थी।

भगवान समोशरण में ऐसे विराजमान होते हैं, चारों ओर मुख दिखता है। मन्द-मन्द पुष्पवृष्टि होती है। सौधर्म इन्द्र ने तो पहले से ही ठेका ले रखा है। आपको बुलाना पड़ता है। आप सोचते हैं जब तक दो-तीन बार नहीं बुलायेंगे तो पहचान कैसे होगी? बोली ली है तो सामने आना ही होता है। अर्हच्चरण सपर्या...... भेकः प्रमोदमत्तः ... इस पाठ के पढ़ते ही श्रावकाचार में समन्तभद्र स्वामी की पैनी दृष्टि की ओर ध्यान जाता है, जिन्होंने एक मेंढक की तुलना मनुष्य से की, तभी हमारा मान का दण्ड नीचे आ सकता है। राम और रावण दोनों पात्रों

की ओर देखो।

अन्त-अन्त समय तक रावण मान को नहीं छोड़ा। मान की ओर दृष्टि ही नहीं जाती। इसे गलाने के लिए सदैव त्रिलोकीनाथ के चरणों में झुकते रहे। धन्य हो गया हूँ जो आपका स्वरूप समझ में आ गया है। चार-चार बार प्रवचन सुनने के उपरान्त भी नया-नया ही लगे। अहोभाग्य हूँ जो जिनवाणी सुनकर मेरे दोनो कान सार्थक हो गये। ऐसा अवसर मुझे हमेशा मिलता रहे। दुनिया में दुर्लभ तो यही है। देवशास्त्रगुरु का समागम प्राप्त होना।

आज का ये ऐसा ही दृश्य है। जब भगवान को साक्षात् पायेंगे तो दोनों आंखो से पानी बहायेंगे। अपने घमण्ड/मान को/कषाय को कम करेंगे तभी उस पद को पा सकते हैं। ये घड़ियाँ इसी प्रकार की होती हैं। यदि मेंढक की तरह पूजक बनेंगे तो कल्याण कभी भी हो सकता है। अहंकार न करें। कूप में तो मात्र जलसिंचने वाला था पर देव बन समोशरण में पहुँच गया। मेंढक क्यों बना? इस ओर भी ध्यान देना चाहिए। आचार्यों ने बताया पूर्व में वह सेठ-साहूकार था। सामायिक का नियम था। शुद्ध घी का दिपक सामने रखकर बैठा है। सेठानी ने देखा आरती मंद पड़ रही है तुरन्त ताजा घी डाल दिया। सोचा अब सामायिक अच्छी हो जायेगी।

हम जो कार्य कर रहे हैं उससे सामने वाला का अच्छा ही हो रहा है यह कोई जरूरी नहीं।

विपरित भी हो सकता है।

आते-जाते समय उसमें घी डालती गयी ताकि सामायिक का आधा हिस्सा मिल जाये। इतनी सस्ती सामायिक नहीं है। प्यास के कारण सेठ जी का कण्ठ अवरुद्ध हो गया। अपने ही घर के कुँये में मरकर मेंढक हो गया। सेठ का अच्छा पद छोड़ आर्तध्यान से मेंढक हुआ और जब सुना की भगवान महावीर स्वामी का समोशरण आया है। कुयें से बाहर निकलकर मुख में पांखुड़ी लेकर चल पड़ा। इस प्रकार दोनों बातें रखी।

और भी विस्तारपूर्वक सुनना-सुनाना है तो रत्नकरण्ड श्रावकाचार को खोलकर पढ़िये। ऐसे उत्तम पात्र बनने का भाव किजिये। जो करते हैं उनकी अनुमोदना भी किया करो। उनकी प्रशंसा करना चाहिए। दूसरे की प्रशंसा करो अपनी प्रशंसा नहीं सुनना चाहिए। यदि नोट्स ले रहे हो तो इसको जरूर ले लें। "अप्पाणं निंदाणं-गर्हाणं" अपनी आत्मा की निन्दा-गर्हा करता हूँ। तब आधा नम्बर मिलता है। ऐसा नहीं कि 100 नं. ले लें। अपना ही विद्यालय, अपना ही Result (परिणाम) हो रहा है। घर का विद्यालय है।

प्रिंसीपल को कह दो 105 दे देगा। दोनों तरफ से लाभ ही लाभ। सेठ जी का काम हो गया एवं विद्यालय का भी नाम हो गया। इसीलिये दूसरों के द्वारा किये गये मूल्यांकन को ही स्वीकार किया गया

है। इसी प्रकार बड़ो को भी समझना चाहिये। अपने को उच्च एवं छोटो को तुच्छ नहीं समझना चाहिये।

इतना ही पर्याप्त समझता हूँ।

सुबह से लगे है। कसक छोड़ना ही नहीं है। ३ दिन में ही ५-६ दिन का सब करना चाहते है। [होली बिलासपुर में हो] बिलासपुर की होली इतनी अच्छी नहीं मनती है। देखो-देखो। बहुत जल्दी तालियाँ बजा देते हो। होली का रंग अलग होता है, अभी का रंग अलग है। हमारे सान्निध्य में मनाने हेतु तैयार होते हो तो आप भी निमन्त्रित है। आ सकते है सपरिवार। हमारे पास तो होली को वैसे भी सभी लोग आते है। आप देख लो। कौन-कौनसे देव - सेठ- साहूकार आते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

प्रवचन - अमरकंटक - 4-3-18

एक सज्जन आये और कहा - महाराज! ये सारे के सारे लोग जो ले रहे हैं, मैं भी इसी प्रकार प्रतिमा लेना चाहता हूँ। समझ में आ रहा है? हमने सोचा ये ग्राहक हमारा है या इन लोगों का है? आप कहेंगे हमारा है। लेकिन लग तो नहीं रहा। क्योंकी उसने बोला मुझे भी पाँच प्रतिमा लेना है) हमारे ग्राहक को छिना-झपटी तो कर नहीं सकते।

मन के परिणामों में इतना अन्तर हो जाता है। जैसे - दुकान पर बच्चो के भाव हो जाते है उसी तरह यहाँ आने पर भाव हो जाते है। वैसे आज रविवार है फिर भी इसने अपनी प्रतिमा की बात कर ली। अहिंसा परमोधर्म की जय। ॐ

25-2-18 "शिखर शुद्धि - भाव पवित्र का साधन" प्रातः 9.20

आज का यह मांगलिक कार्यक्रम वेदी प्रतिष्ठा के अन्तर्गत प्रारम्भ हुआ है। और एक बार की बात ऐसी ही थी, वेदी प्रतिष्ठा हो रही थी। एक-दो दिन में भूमिका पूरी बना ले। महाराज गांव में श्री जी को विराजमान करायेंगे। उस दिन की तरह आज भी वह प्रसंग है। श्री जी के ऊपर शिखर का भी अभिषेक होता है। मैं सोचता था उसका कैसे अभिषेक करते होंगे?

इतना पानी कहाँ से लायेंगे? इसका शास्त्र में अच्छा समाधान प्राप्त हुआ। उस शिखर के सामने एक दर्पण रख देते हैं। उस दर्पण में शिखर का जो प्रतिबिम्ब पड़ता है उस पर धारा छोड़ी जाती है। शिखर बहुत उत्तुंग है, कौन चढ़ेगा? पर इसी विधी से सब आसानी से हो जाता है। आप लोगों ने भी देखा होगा कि आज शिखर का भी अभिषेक हुआ। यह भी मन्दिर का एक अंग है, जिसे पवित्र करना जरूरी है।

इसके उपरान्त कलशा लगायेंगे, ध्वजा बांधेंगे। प्रत्येक अंग पवित्र होना जरूरी है। इसे देखकर ही सब अपने पवित्र भावों को जाग्रत कर लेते हैं। इसी प्रकार पूर्वजों ने भी विशाल-विशाल मन्दिरों की स्थापना की। जब हमारा अमरकंटक की ओर विहार हो रहा था उस

समय मात्र एक-दो घण्टे में ही मन्दिर का शिलान्यास हो गया था।

कॉलोनी में कुछ लोग धार्मिक जीवन यापन के साथ आराधना करना चाहते थे। जिन्होंने संकल्प लेकर शिलान्यास किया था आज वे ही लोग इस पवित्र आँगन में बैठकर देख रहे हैं। संकल्प के कारण साकार रूप ले लिया। एक-दो-तीन प्रतिमा नहीं कई प्रतिमाओं (17) के साथ यह संकल्प पूर्ण हो रहा है। योग की बात है- पंचकल्याणक हो रहा था- श्री जी को प्रतिष्ठित करा लिया। वहाँ से सीधे नहीं लाये विहार कराके लाये।

ये भी एक कार्यक्रम था। मीलों दूर से यथावत् कार्यक्रम के साथ लाये। अब वेदी प्रतिष्ठा भी करने जा रहे हैं। जो अगली भूमिका यानि कर्मों की निर्जरा का स्थान बन गया है। शहरों में मन्दिर बनाना कठिन फिर भी यह स्थान आप लोगों ने बनाया। साधुओं के लिए भी यह मन्दिर की स्थापना जरूरी है, तभी आपको उनका सान्निध्य मिल पाता है। तन-मन-धन का उपयोग करके समय पर यह धर्मायतन बनाया।

जिन्होंने पवित्र किये उनके लिये सारा का सारा श्रेय चला जाता है। मन में भावों का आना फिर उन्हें साकार करना बड़ा कठिन होता है। आज शिखरशुद्धि के साथ यह दैनन्दनी कार्यक्रम हो गया। इतना ही कहना है पवित्र बनाने के साधन हैं इन्हें इसी रूप में स्वीकार कर लेना।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"हथकरघा पर"

२५-२-१४ "वातानुकूल वस्त्र हों - वातानुकूल नहीं" महुवाल उ.उ.

आज का यह यागमंडल विधान सम्पन्न होने जा रहा है। याग का अर्थ होता है - होम। होम का क्या अर्थ होता है? होम मतलब अपने स्वार्थ की आहुती देना। स्वार्थ के साथ जो कर्म किये है, पाप बंधा है उससे छुटकारा पाने हेतु सात्विक-अहिंसा-परोपकार का जीवन जीता है। मांगता कुछ भी नहीं, यदि मांगता भी है तो वह मिले जिससे मेरे एवं दूसरों के काम आ सके। मैं अपने दुर्लभ जीवन को सार्थक बना सकूं।

इस रहस्य को स्वयं समझे, दूसरो को न समझाकर के। अभी एक छोटी सी किताब हाथ लगी। पलटकर देखा तो इतिहास क्या था पता चलता है। आज मात्र पढ़ना-लिखना ही शिक्षा का स्वरूप रह गया है। जब की वास्तव में यह शिक्षा का स्वरूप है ही नहीं। कार्य करें वही शिक्षा है। हाथ को बुद्धि आ जाये अन्यथा वह शैतान का औजार होता है। दिमाग से कार्य सम्पन्न नहीं - हाथ से सम्पन्न होता है। अपने हाथों का - अपनी आँखों का प्रयोग करीये।

कान से सुन लेते हैं फिर दिमाग में बैठ जाती है। अन्यत्र जा रहे हों तो उन्हें खेंच लेते हैं। "हम कुछ करें परन्तु कुछ का कुछ न करें।" दिमाग से कुछ का कुछ होता रहता है। हाथ से कुछ होता है। सत्कार्य को इसीलिए पुरुषार्थ की संज्ञा दी गयी

है। "पुरुषार्थ का अर्थ पौरुष का प्रयोग।"

आत्मा प्रयोगशील बने। सक्रिय बने। आत्मा मुक्त होने के बाद भी सक्रिय रहती है। तत्त्वार्थ सूत्र में इसके लिए एक सूत्र आता है- "निष्क्रियाणि च" मतलब आत्मा को छोड़कर शेष द्रव्य निष्क्रिय है। सुनने में आता है आत्मा को निष्कर्मा कहा है। ज्ञानावरणादि आठ कर्मों से रहित है इसलिये निष्कर्मा है परन्तु निष्क्रिय नहीं। कार्य किये बिना बैठ जाना - उसे निकम्मा कहा जाता है। बैठे-बैठे मुफ्त में मिल जाये। ध्यान रखो! भोजन थाली में लेने के उपरान्त बैठे रहेंगे तो वह स्वयं मुख में उठकर नहीं आयेगा। दूसरा बैठे रहेंगे तो पेट में जो डाला है वह पचेगा नहीं।

[लाइट जाने पर] पढ़े-लिखे थे, सो बैठ गये। इतना ही अपने उपयोग को विशेष दिशा में लगाने की आवश्यकता है। सावधान होकर आप मेरी बात सुन रहे थे तो सुनाई दिया बिना माइक के भी। स्टेशन पर हा-हुल्ला भी क्यों न हो आपका mobile बजने पर सुनाई देता है, जो सामने वाला बोलता है वह भी सुन लेते हो। यदि उपयोग न हो तो चिल्लाने पर भी सुनाई नहीं देता।

सुनना ही नहीं चाहते हैं तो क्या होगा? पहले के लोग सावधानी से सुनते थे। आज तो लाइट/हैलोजन दिन में भी जलाकर रखते हैं। अब सूर्यनारायण

की क्या आवश्यकता । सूर्यनारायण तीन-चार दिन नहीं भी आये तो चल जायेगा ? तो सावधानी से सुनेंगे तो सुनाई देगा । दिखाई देगा ।

राम की प्रतिक्षा करने वाली सबरी को हमेशा याद करता हूँ । उसकी यह मुद्रा (आँखों पर हाथ) बाहर की रोशनी को कम कर अपनी रोशनी से देख लेती है । इसी प्रकार सुनना चाहते हो तो अपने भोंपू को यूं कर दो । [कान को] इधर-उधर न जाये, कान में वह शब्द आ जाये । वहाँ अपने प्रतिनिधी को बैठा दो । सावधानी से सुना करो । इसीलिये मैं बार-बार पूछता रहता हूँ । क्यों सुन रहे हो ? हव । आप सो रहे हो । हव । सावधानी है जहाँ उपयोग सक्रिय हो जाता है ।

सम्यग्दृष्टि कभी भी निकम्मा नहीं होता । सम्यग्दर्शन तो हमेशा सक्रिय ही होता है । उसके पास आठ अंग होते हैं । 8 अंग है तो फिर निकम्मा कैसे ? अतः जिन्होंने सम्यग्दर्शन को प्राप्त किया है अथवा प्राप्त करने की ओर पुरुषार्थ कर रहे हैं तो वह निकम्मा नहीं हो सकता । अभी-अभी एक ब्रह्मचारिणी बहन ने बता दिया । पुरुषार्थ को सही दिशा में लगा दे तो पानी को नीचे से ऊपर आना ही पड़ेगा । पानी को खोजने की आवश्यकता नहीं । मिट्टी को खोदो तो पानी स्वतः ही ऊपर आ जाता है । ऐसा खोदो कि पानी सर्वत्र फैल जाये । सक्रिय

सम्यग्दर्शन से ही यह सम्भव है।

उसके पास 8 अंग हैं, इन आठों अंगों को काम में लेना होगा। हम किसी काम के नहीं यह गलत धारणा है। पढ़े-लिखे लोगों की वस्तुतः ऐसी ही धारणा बनायी गयी है। हम यदि इस प्रकार से प्रशिक्षण लेकर सक्रिय हो जाते हैं तो निष्क्रिय को भी सक्रिय कर सकते हैं। होता कुछ नहीं - किया जाता है। विलम्ब तो हो ही जाता है, जीवन भी तमाम हो जाता है। क्रियापद "करना" को ध्यान में लाना आवश्यक है। ऐसा भी एक बहुत बड़ा वर्ग है कि हम कुछ चाहते नहीं केवल धंधा मिल जाये/काम मिल जायें।

काम-धंधा करने वाला कषायों से बच जाता है, संघर्ष (विवाद) से बच जाता है और इधर-उधर की बातों से भी बच जाता है। जो पुरुषार्थ करना चाहते हैं, उन्हें काम दे दो उनका जीवन अपने आप ही संवर जाता है। सुना है- मुसलमान तक भी आ रहे हैं। वे जो चाहते हैं वह मिलने लग जाता है। ऐसे-ऐसे लोग भी मात्र ५-५ माह में ही इतना सीख लिया कि हजार रु. प्रतिदिन मिलने लग गया।

हम सही बोल रहे हैं। कहाँ पढ़े-लिखे Em. Bsc., B.A वाला बस पांच हजार भी मिल जाये। ये क्यों हो गया। उन्होंने ठान लिया कि हम श्रम नहीं कर सकते। माँग करके पूर्ति करने में लगा है।

लोन पर जिन्दगी चला रहा है।

बार-बार यह विषय रखता है। सही दिशा में पुरुषार्थ की आवश्यकता है। अपढ़ होते हुये भी घर में दो-तीन व्यक्ति ऐसे होंगे/हो गये तो क्या होगा? स्वयं का ही उद्योग होगा- उद्योगपति कहलायेगा। लखपति होते देर नहीं लगेगी। जिन्हें काम नहीं मिल रहा है, उन्हें काम देंगे। श्रम के अनुसार वेतन भी बढ़ा देंगे। आप दे नहीं रहे, वह श्रम करके स्वयं आपसे ले रहा है। आत्मा सदैव पुरुषार्थ शील होता है।

राग-द्वेष करना मेरा स्वभाव नहीं है। निकम्मा बनना भी स्वभाव नहीं है। सुबह-शाम में भी काम कर रहा है, घर के भी काम कर रहा है। इसके लिए शपथ लेने की जरूरत नहीं है। "गलत कुछ नहीं- गलत धारणा को हटाना जरूरी है।" इतिहास के पन्नो में काम का नाम ही लिखा है। सारे के सारे लोग इसी तरह के थे। दिन में काम रात में भगवान भजन करते थे। मोक्षमार्ग में यही सम्यग्दर्शन काम में आता है। दूसरे का भी उपकार करो- उपगूहन - स्थितिकरण- प्रभावना अंग तभी पलेगा।

शरीर की आशंका को छोड़ निडरता से वह आगे बढ़ दूसरे को भी उठाने का काम कर रहा है। आप अहिंसक वस्त्र पहने है या हिंसक वस्त्र। आपको स्वयं ही मालुम नहीं। मशीन से बने वस्त्रों में धागे

पर मटनटेलो की परत लगी होती है, जब की हथकरघा में धागे पर मांड़ लगा होता है जो अशुद्ध नहीं होता।

कुछ लोगों का कहना है - इन वस्त्रों में गर्मी नहीं लग रही है। मैं कहता हूँ ये गर्मी में ठण्डे एवं सर्दी में गरम रहते हैं। मतलब गर्मी में भी ठण्डा-ठुण्डा कूल-कूल। वातानुकूल है - वातानुकूल नहीं। जिनवाणी का आधार, पानी का छन्ना इसी का प्रयोग हो। कहीं जा रहे हैं, गिर गये। चोट लग गयी। अब विदेशी कपड़े की पट्टी काम में नहीं इसी हथकरघे की पट्टी काम में आयेगी। विशेष यह है कि इससे बने वस्त्र इन्द्रियों को उत्तेजित नहीं अपितु संयत करते हैं।

इसीकारण प्राचीनकाल की मानसिकता और आज की मानसिकता में अन्तर है। स्वास्थ्य पर भी वस्त्रों का गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि विदेशी वस्त्र ही खरीदते रहोगे तो आपको हर चीज उनसे ही मांगनी पड़ेगी। वे समृद्ध होते चले जायेंगे और आप...। अतः आप सभी अब इस विद्या को पुनः लोकप्रिय बना दिजिये जो प्राचीनकाल से चली आ रही है। महिलाओं की 64 कलाओं में एक कला यह भी है।

आपका विधान चल रहा था, थोड़ा सा हमने उसी में से समय ले लिया। इसका प्रभाव जेलों में भी चालु हो गया। सागर के केन्द्रीय जेलों में हजारों कैदियों ने इसे शुरु किया और कह रहे हैं अब जब

यहाँ से छूट जायेंगे तो भी इस काम को चालु रखेंगे। यह काम कौन ने किया? जो पुलिस डिपार्टमेन्ट में थी। उसने दण्डित नहीं किया अपितु इस तरह से उन्हे प्रेरित किया कि जीवन ही बदल दिया।

बुद्धि का सही दिशा में प्रयोग करना यही कहलाता है। इसे देख पुलिस महा निदेशक जैसे भी बार-बार आग्रह करने लगे है कि आप जो चाहो - जितना चाहो - जैसा चाहो - जब चाहो वैसे ही करेंगे। वे सभी शर्ते मानने को सहज में तैयार हो जाते हैं क्यों कि उन्हें भी परिणाम अच्छे प्राप्त हो रहे हैं। और-और मांग आ रही है, सुनकर लगता है अब भारत पुनः लौट रहा है।

सभी लोग यदि ऐसे हो जायेंगे तो स्वर्ग भी धरती पर आने को तैयार रहेगा। उस समय आप कह सकते हो, हमें स्वर्ग नहीं जाना जो मार्ग बता रहे है, उन्हीं के पीछे-पीछे चलकर उस परम पद को पा लेंगे। कल सुबह समय पर श्री जी अपने मूल आसन पर स्थापित हो जायेंगे। पाँच दिन का कार्य तीन दिन में ही निपटा दिया। कम खर्चे में सारा काम कर लिया। इतना ही कहना है जिस उद्देश्य को लेकर स्थापना की गयी उसे याद रखना है। व्यसन आदि से बचते हुये, संस्कार आने वाली पीढ़ी को दें ऐसी भावना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

"कलशारोहण"

25-2-18 साधना का कलश। प्रातः 9.00

एक साधु वैराग्य भाव धारण करते हुये अपने जीवन को व्यतीत करता है और प्रतिदिन की आराधना के फलस्वरूप वह संसार-शरीर-भोगों से तो निवृत्त है ही, भविष्य में भी भोगों को न धारण करने का संकल्प ले लेता है। इसी भाव के साथ अपने आत्म स्वरूप को याद कर वितरागता के स्वरूप को ही ही ध्यान में रखता है। इसके बाद भी कहीं न कहीं से उसके ऐसे कर्मों का उदय आता है कि अपने परिणामों में शैथिल्य आ जाता है। परिणामों में शैथिल्य मतलब अपने भावों को जागृत नहीं रख पाता है।

बार-बार चिंतन करता है, मैंने अपने जीवन काल में ऐसे आदर्श को स्वीकारा, आप जैसा बनना ही प्रयोजन है। दुनिया की कोई वस्तु से इष्ट नहीं न ही अनिष्टकर। अपना-अपना स्वभाव है। वहाँ उदाहरण दिया यह सब कुछ होते हुये भी अंत में संलेखना बहुत ही कठीन होती है। आज लगभग 2½ वर्ष से समय निकालते हुये यहाँ जिनालय की स्थापना की। जिनालय की स्थापना, जिनबिम्ब की स्थापना होते हुये भी जब तक कलश की स्थापना नहीं तो अधुरा ही माना जाता है।

इसी की उपमा साधुओं के लिये शास्त्रों में दी है, मन्दिर बना है तो जब तक कलश नहीं चढ़ता तब तक अधुरा ही है। भक्त लोगों ने आज इस कार्य को यहाँ पूर्ण कर दिया और भक्त लोगों ने अपनी आँखों से देख लिया।

वहाँ पर ले जाते (अन्दर पाण्डाल में) तो गुप्प हो जाता। गुफा की तरह, यहाँ सब निभ्रावकाश के नीचे बैठे हैं। यहाँ से कलश भी दिख रहा है।

धरती के इस देवता को देखते हैं। लोगों के लिए भी यह आकर्षण का केन्द्र बन गया है। आज का यह अन्तिम कार्यक्रम कलशारोहण ध्वजदण्ड के साथ सम्पन्न हुआ। अब आप भी स्वतंत्र हैं, हम भी स्वतंत्र हैं। [होली यहीं] हम लोग तो जीवन पर्यन्त होली ही खेल रहे हैं। इसलिये भजनकार ने दिवाली के साथ-साथ होली को भी याद किया। ये भी बताया कि रंग कौनसा होता है? पिचकारी कौनसी होती है? यह रोचक लगता है।

एक स्थान विशेष, व्यक्ति विशेष से न बंधकर के केवल वितराग भावों को ही बनाता रहता है। चार-पाँच माह से छत्तीसगढ़ में यह देखते-देखते कहीं कलशारोहण, कहीं पंचकल्याणक, कहीं वेदी प्रतिष्ठा अब सामने क्या दिख रहा है देखना है। विशेष बात 150 किमी. तक तीनों भगवान का मंगल विहार हुआ। उनके साथ आहार भी हुआ। लाखों की जनता ने तृप्ति का अनुभव हुआ, हमें भी आनंद का अनुभव हुआ है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

- हिंसा की हत्या करना अहिंसा है।
- सत्य की घोषणा में यदि विलम्ब हो तो वह भी असत्य कहलाता है।

अमरकंटक प्रवेश समय
[होली]।

सर्वोदय तीर्थ
अमरकंटक

2-3-18 "कंटक दूर करता अमरकंटक" मध्याह्न 4.00

आज का यह शुभ अवसर इस अमरकंटक क्षेत्र में आप सब लोग एकत्रित हुये हैं, कारण तो कुछ होगा ही न। कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता। समय पर कारण यदि उपस्थित हो तो होली में भी दिवाली आ जाती है। एक बार विदिशा में बहुत प्रतिक्षा के बाद हमारा जाना हुआ लेकिन योग देखो न ही दशहरा था न ही दिवाली योग मिला तो होली का। हमने सोचा वह भी त्योंहार है यह भी त्योंहार है।

ऐसी स्थिति में जितने भी पुराण पुरुषों के चित्र लगाये गये थे, उन्हें देखकर आप यह नहीं कह सकते थे क्यों कि होली के दिन तो होली होती है। मनोरंजन के रूप में रंग डालना नहीं एकदम दिवाली के रूप में परिवर्तन कर दिया। आज भी लगभग ऐसा ही हुआ। ये लोग 3 तारीख कह रहे थे हमने कहा हम तारीख के अनुसार नहीं तिथी के अनुसार काम करते है। और उसी अनुसार काम हुआ। एकम्-शुक्रवार के अनुसार ही आना हुआ। पंचांग का कहना है कि एकम्-शुक्रवार है तो तो सर्वार्थ सिद्धि योग तो होगा ही नहीं।

ये सर्वोदय तीर्थ है। सभी वर्गों के लिए यह तीर्थ पावन संदेश देता है। इस धरा पर युगों-युगों से शुद्ध आत्मा की साधना

की गयी है, जो अभी भी जारी है। पवित्र भावों के साथ नर्मदा का प्रवाह यहीं से चलता है।

ऐसे स्थान पर - इस प्राकृतिक वातावरण में रहकर न जाने कितने साधुओं ने साधना की होगी। जनता आकर अपने आपको उन महान आत्माओं के अतीत से बांध देती है। और यहां से जाकर भी स्मृति रूप याद को रख अपने जीवन को सार्थक समझती है। हम लोगों का आज यहाँ आना हुआ। आने से पूर्व कई लोगों का कहना था - महाराज! ज्यादा हो जायेगा हमने कहना अब चढ़ना तो है ही। अभी से प्रयास कर लें तभी तो सिद्धालय की यात्रा पर चढ़ पायेंगे।

पैरों में गढ़ेंगे तो गढ़ने दो तभी तो जो घुसकर पाप बैठा है वह बाहर निकलेगा। यही नुकीले कंकड़ गढ़ेंगे तभी कर्म रूपी कांटों से मुक्त हो जायेंगे। अमरकंटक कहते हैं। यहाँ जो भी आयेगा कंटकों से मुक्त हो अमर हो जायेगा। चलेंगे तभी गढ़ेंगे और गढ़ेंगे तभी भीतर के कांटे बाहर आ जायेंगे। इन्हीं पवित्र भावों के साथ जीवन की यात्रा करनी चाहिए।

अभी इतना ही पर्याप्त है। अभी त्योंहार की बात आयी। आगे क्या करना है, आपको

करना है, हमको तो करना नहीं। जो करना है उसे अच्छे ढंग से करना चाहिए क्यों कि ये काम बार-बार तो होते नहीं है।

लोग इतना गदगद हो रहे हैं, इसका मतलब भीतर कुछ घटित हो रहा है तभी तो गदगद हो रहे हैं। कैसा लग रहा है? (अच्छा) अच्छा या बहुत अच्छा? आपको अच्छा लगता है तो हमें तो बहुत ही दूर तक अच्छा लगता है। हजारों/लाखों की प्रशंसा देख मुझे तो प्रशंसा होगी ही, बुराई तो कभी देख ही नहीं सकता। इन्हीं भावों के साथ आपकी यह प्रशंसा हमेशा बनी रहे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

Notes -

- वैय्यावृत्ति करते समय वैय्यावृत्ति करने वाला हिले कोई बाधा नहीं, किन्तु जिसकी वैय्यावृत्ति की जा रही है वह बिल्कुल न हिले तभी सही वैय्यावृत्ति मानी जाती है।

संस्मरण -

बात ग्राम की है। हम सभी को Guest हाऊस में रुकना था। परन्तु एक यादव की भावना गुरुजी मेरे घर रुक जाये। आ० श्री उसके घर में बैठे। घर परिवार के सभी लोगों ने आजीवन मांस-मछली-अण्डा-शराब का त्याग कर दिया। दादाजी ने कहा - आज मेरे घर पर भगवान पधारे हैं।

3-3-18 "अमरकंटक में लगता सहज ध्यान" प्रात: 9.20

प्राय: आज विश्व में इस बात को भली भाँति स्वीकारा जा रहा है कि आत्मा की उन्नति - क्रान्ति के लिए एक मात्र और किसी को न जानकर के अपने आपको जाने! अपने आपको जानने के लिए किसी की भी आवश्यकता नहीं। यदि आप पढ़ना चाहते हैं तो प्रकाश की - पुस्तक की - निर्देशक की आवश्यकता पड़ती है किन्तु यदि अपने को जानना चाहते हो तो...। किसी की भी जरूरत नहीं पड़ती।

अपने को जानने के लिए कई संस्थायें ध्यान के केन्द्र खोलकर काम कर रही हैं। परन्तु यह बहुत स्थूल रूप से उसका परिचय करा सकती हैं। फिर ये सब व्यय साध्य भी होता है। आपको इन ध्यान केन्द्रों में Under Ground में बैठा दिया जाता है तब जाकर आपका मन आपके Under में होता है / आपके वशीभूत हो जाता है। लगता है कुछ शांति मिल गयी।

पर मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ क्या वास्तव में आपका मन आपके वशीभूत हुआ। ठीक है कुछ ध्यान करने हेतु आपका मन मुड़ गया है। सहज ध्यान करना है तो आप जरूर अमरकंटक आ जाइये। यहाँ आने के बाद ध्यान सीखने की आवश्यकता नहीं, ध्यान अपने-आप लग जाता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

रविवार-"शिक्षाभ्यास"

4-3-18 प्रवचनांश मध्याह्न 3.30

- यदि लक्ष्य की ओर ध्यान रहेगा तो कठिनाइयों का समय अपने आप ही विलुप्त हो जायेगा।
- जब छोटा था तो बोलीयाँ सुनता एक सौ एक, एक हजार एक। सबमें एक क्यों लगाते हैं? पूछा तो पता चला दूसरा कुछ भी न दे तो हम एक तो दे ही देंगे।
- देवों को भी उतना सुख नहीं जितना संतोष धारण करने वाले मनुष्यों में होता है। देवों में वैभव है पर संतोष नहीं। देवों के पास मन पर अंकुश लगाने की कोई सामग्री उपलब्ध नहीं।
- मन पर अंकुश लगते ही संयम धारण करने में देर नहीं लगती।
- महावत हाथी पर तो अंकुश लगा सकता है पर अपने मन पर अंकुश लगाना बहुत ही कठीन है।
- एक क्षण में प्राप्त वैभव समाप्त हो जाता है तो एक ही क्षण में प्राप्त भी हो जाता है, अतः अहंकार किसका करते हो?
- सुखी - दुखी होना मन का उतावलापन है।
- धैर्य धारण करने से निर्जरा होती है वही विद्वान-पण्डित कहलाता है।
- बच्चों में ऐसे संस्कार डालें जिससे संसार में वह घायल अथवा किंकर्त्तव्यमूढ़ न हो।
- जिसका साहस मजबूत होता है वह टूटने को भी हो तो भी कभी टूटता नहीं।

- सहस्त्रकूट जिनालय में संहस्त्र पीठ पर जब भगवान विराजमान होंगे तो सहस्त्र लोग/व्यक्ति इस क्षेत्र से जुड़ेंगे। जुड़ गये।
- रहली को छोटा मत समझो रैली निकाल दी।
- फास्ट फूड का तो त्याग करना किन्तु पास्ट फूट को अपनाना है।

ॐ

संस्मरण - 4-3-18, अमरकंटक

- बात अमरकंटक की है। आ० श्री के आहार धर्मेशजी पेण्ड्रा वालों के यहाँ हुये। कोयला परिवार के एक सज्जन ने कहा महाराज आज तो ये धन्य हो गये। गुरुजी उसका मतलब समझ गये थे तुरन्त कहा सुनो! आप तो दिल्ली में रहते हो और ये भगवान की देहली पर रहते हैं अतः क्षेत्र को प्रतिदिन सेवा देते रहते है उसी का इनको प्रतिफल मिल गया।"

तत्त्वचर्चा का सार- 5-3-18 प्रातः

- भट्टारकों का आचरण जैसा होना चाहिये वैसा नहीं फिर भी इनसे सामाजिक व्यवस्था बन जाती है। आ० श्री ने बार-बार कहा कि वे न ही श्रावकाचार का पालन कर रहे है तथा न ही श्रमणाचार का। उनका स्वरूप निर्धारित होना चाहिये। पिच्छी नहीं रखना चाहिये। भट्टारक एक नहीं हजार बनें लेकिन स्वरूप निर्धारण पहले आवश्यक है।

5-3-18 "प्रकृति अस्थिर हो मन नहीं" प्रातः 9.20

कोई व्यक्ति गरम मुल्क से आता है तो यहाँ पर आकर वह व्यवस्थित महसूस करता है किन्तु कोई यदि शीत प्रकृति वाला है तो उसे प्रबन्ध के साथ आना चाहिए। नहीं तो यहाँ पर देखलो... [वर्षा चालु थी] । गर्मी में थे तब भी कोई भी व्यक्ति शाम की सामायिक छत पर नहीं कर पाया इतनी शीत प्रकृति है। गर्मी में हीन (चद्दर) के नीचे सामायिक करें तो भी महसूस नहीं होती लेकिन आत्मा की स्थिरता पहले चाहिए।

अस्थिर प्रकृति की तरह यदि अस्थिर मन स्थिति हो तो धर्म ध्यान नहीं हो पायेगा। 3-4 दिन तो हो गया है, कश्मीर सा वातावरण मिल रहा है। कल कहा था यहाँ पर ध्यान लगाना नहीं पड़ता सहज में ही लग जाता है। बस बाहरी संबंध से दूर रहे। आपने अपने मोबाइल को ही अपना मित्र बना रखा है। जिस प्रकार घर छोड़कर क्षेत्र पर आये हो उसी प्रकार मोबाइल भी छोड़कर आयें तो अच्छा होगा।

अभी अचानक मार वाले रास्ते में 3 दिन तक कोई भी मोबाइल काम नहीं करेगा। ऐसा हो गया। अच्छा रहा। इस प्रकार निर्विकल्प रहोगे तो अपने आप ही आनंद अलग ही आयेगा। शाम के बाद तो अपूर्व-अपूर्व आनंद, सोने की भी जरूरत नहीं, थकावट अपने आप ही दूर हो जाती है। जितने क्षण मिले हैं उन्हें धर्मध्यान में उपयोग करते जाओ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

6-3-18 "सत्य की अवधारणा" प्रातः 9.20

कई लोग इस प्रकार की प्रकृति के परिवर्तन का अध्ययन करने में लगे हैं। उनका कहना है जो उष्णता अथवा तापमान बढ़ रहा है या हिमयुग आ जाता है। सूर्य के गतिमान होने से ऐसा होता है। यद्यपि यह कालमान के अनुसार होता है तथापि प्रकृति के अनुसार ही होता है। यह तापमान का बढ़ जाना या हिमपात का होना कुछ भी हो उस सूर्य में उष्मा बनी रहती है वह उष्मा कभी समाप्त नहीं होती है।

यह जीव जन्तु है उसका प्रतीक है। श्वांस-प्रश्वांस चलती रहती है। इसी प्रकार अनंतकाल हो गया चाहे हिमयुग हो या तापयुग हो श्वसन क्रिया चलती रहती है। आत्मा भी इसी तरह है, उसका स्वभाव जानना-देखना है वह कभी समाप्त नहीं होता। अभी वह विषमता के साथ जानता-देखता है, जो अपना नहीं उसे अपना मानता है। उसी के लिए रात-दिन पुरुषार्थ करता है यह उसका अज्ञान है। यदि जानना-देखना जो जीव का स्वभाव है, उसे छोड़ देगा तो लक्कड़ की भांति हो जायेगा।

जैसे यदि शरीर में श्वांस-प्रश्वांस नहीं है तो फिर उसे जीव नहीं कह सकेंगे। किन्तु श्वासोच्छ्वास के बिना आत्म तत्त्व जीवित रहता है। शरीर के बिना भी जीव रहता है। हम शरीर के बिना नहीं रह सकते यह धारणा ठीक नहीं है। रात-दिन उस शरीर को ही पुष्ट करने में लगा है, ये अज्ञान दशा है। शरीर के बिना जिस दिन यह जीव हो जाता है,

वह उसकी शुद्ध दशा होती है।

प्रकृति में भी सूर्यताप - हिमपात आदि गुण हैं तो आत्मा में भी गुण है। स्वभाव आज तक पकड़ में नहीं आया। पांच इन्द्रियों के माध्यम से इसे नहीं पकड़ सकते। जानना - देखना अनिवार्य है तो उसी ओर जानता - देखता रहता है जिस ओर नहीं देखना/उसी ओर सोचता रहता है, सोचने का क्रम बंद नहीं होता। सूर्य तपता है कभी विषम तो कभी सम। पृथ्वी के पास आ जाता है तो अलग और दूर रहता है तो अलग/उसका अपना पथ बना रहता है, उसका प्रभाव पड़ता है।

आत्मा का भी यही हाल है। जैसा संयोग मिलता है उसी अनुसार परिणमन करने लग जाता है। आप जिसे अपना मानते हैं उसे तो छोड़ ही सकते हैं, इसमें सिर दर्द क्यों होता है? यह शरीर भी कर्मों के उदय से प्राप्त हुआ है तो अन्य सभी कर्म उदय का फल मानें। जब इससे ऊपर उठ जाते हैं तो इसे भी छोड़ सकते हो। मांगने की कोई जरूरत नहीं, भगवान के सामने आप भी भगवान बन सकते हो। यही अवधारणा मोक्षमार्ग में उत्साहित करती है। सत् समागम इसी धारणा को मजबूत करता है। इस उदाहरण को याद रखें। जानने - देखने रूप जो घटित हो रहा है वह हमेशा - हमेशा बना रहता है। क्षयोपशम के आधार पर - आयु कर्म के आधार पर कम - बेशी होता रहता है किन्तु कभी मिटता नहीं। आत्मा का अस्तित्व सदैव बना रहता है, यही हमारे चिंतन का विषय/अवधारणा बने इन्हीं भावों के साथ। अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

[केशलोंच]
7-3-18

" छोटे लोग - बड़ी भावना "

प्रातः 9.40

कोई भी व्यक्ति अपने गृहस्थ आश्रम से निकलकर कुछ समय कोई भी तीर्थ क्षेत्र को जाता है। तीर्थ क्षेत्र जाने से पूर्व वह विचार करता है, सोचता है कि इस क्षेत्र पर कितने लोगों ने तपस्या और साधना की है। ऐसा यह पवित्र स्थान है। इस विचार से भी कर्मों की निर्जरा होती है। वह उस क्षेत्र के साथ अनन्य (एकमेक) हो जाता है। भक्ति की भावना के साथ वह वंदना करता है और पुनः लौटकर चला जाता है क्योंकि वह व्यस्त है।

आज का दिन बड़ा ही पावन/शुभ दिन है। आप सभी लोग तो यहीं पर रहने के लिए आये हैं। ये आप सभी का पुण्य है। सभी ने पवित्र भावों के साथ यहाँ बनने वाले सहस्त्रकूट के लिए प्रतिमायें दान में दी। मैं देखता रहा आप सभी तालीयाँ बजाते रहे। यही भावनाओं का महत्व है। "अभिव्यक्ति भले ही छोटी हो किन्तु भावना बड़ी होना चाहिए।"

इसीलिए संतो ने भावना को भव नाशनी कहा है। इन सबका उद्देश्य संसार को छोटा करना है। जो मोह - माया - लोभ को किनारे कर देते हैं, वे ही यह काम करते हैं। भक्ति भावना:

से संसार का धीरे-धीरे विच्छेद होता चला जाता है।

अनंत काल से संसार चला आ रहा है। जीव भी संसार से मुक्त हो रहे हैं। इतनी संख्या तो कम हो गयी होगी। नहीं। यही तो संसार का बड़ा वैचित्र्य है। अनंतानंत जीव हैं उनमें से विरले जीवों का ही भाव मुक्त होने का होता है। यह भाव बहुत दुर्लभ है। कल यहाँ आदिवासी विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय आये थे। गदगद हो गये हमारे से समय मिल गया। पहले भी एक आध बार चन्द्रगिरी आदि में आये थे।

उन्होंने अपनी भावना रखी कि यहाँ एक आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय की स्थापना कर सकूं ऐसा आशीर्वाद दें। उसमें पंचकर्म के साथ यहाँ के लोगों को आहार-पानी का भी ज्ञान कराया जाये। इससे न केवल यहाँ की जनता का शारीरिक दुख दूर होगा अपितु मानसिक रूप से भी स्वस्थ होंगे। उन्होंने हमसे कहा महाराज! आप आशीर्वाद दे दो यहाँ के व्यक्तियों की शराब आदि भी छूट जाये। लोगों का जीवन स्तर अच्छा हो। आजीविका के साधन भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो जाये।

मैं ऐसे संस्कार डाल सकूं। मैंने भी कहा मैं आदिवासियों से किस प्रकार जुड़ सकता हूं ऐसी मेरी भी भावना थी। यह एक अच्छा अवसर है।

भावना हो तो सब कार्य होते हैं।

उन्हें हथकरघा के बारे में बताया। इससे लोगों की आय का स्रोत भी होगा। साथ ही अभक्ष्य भक्षण रुक जायेगा। अमरकंटक नाम सार्थक हो जायेगा। हमेशा के लिए ही कांटा निकल जायेगा। ऐसे पवित्र स्थानों पर ही ऐसे पवित्र भाव होते हैं।

लोग-दूर-दूर से पैसा खर्च करके आते हैं, आप लोग तो यहीं पर रहते हुये पूरा लाभ ले रहे हैं। हाँ! इतना अवश्य है कि विशेष कमाने का लोभ जो होता है उसे छोड़ दिया है। संतोष धारण किया तभी यहाँ आये हैं। अपने मोह-एवं लोभ पर प्रहार किया है। इसी प्रकार के भाव सदैव बने रहे। सुबह उठकर पूजन-अभिषेक करो बाद में अपनी-अपनी दुकानदारी में लग जाओ। क्यों? ऐसा तो कर ही सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

संस्मरण- वैय्यावृत्ति चल रही थी। सम्राट जो बम्बई में रहते हैं वे भी बैठे थे। आ.श्री श्वेताम्बर मत का खण्डन कर रहे थे कि इन्होंने किस तरह साहित्य आदि में भी मिलावट कर दी। सम्राट ने कहा- किन्तु आ.श्री ये लोग बड़े ही समृद्ध हैं। बाम्बे में तो इनका एकतरफा राज है। गुरुजी ने तुरन्त कहा- इसीलिए तो कह रहे हैं "हमें लक्ष्मी की नहीं सरस्वती की आराधना करना है।"

लोभाण्डी, रायपुर - 3-2-18

8-3-18 "कैसी करनी करें" प्रातः 9.20

प्रथम चक्रवर्ती इतना धनाढ्य है। होकर के भी रो रहा है। चक्रवर्ती होकर भी रो रहा है? हरेक व्यक्ति के समझ में नहीं आयेगी यह बात। जिसको समझ में आये तो ठिक ही रो रहा है, ऐसा सोचेगा। कई व्यक्तियों ने पुछा क्यों क्या हो गया? वह कहता है- पक्का हो गया कि अपने जीवन में तो अब कोई तीर्थंकर आयेंगे ही नहीं।

जब आये थे तो खुब शंका-समाधान कर लिया। उनकी दिव्य ध्वनि का श्रवण किया। आगे-पीछे के भवों का ज्ञान हो गया। वैराग्य की बात हो गयी। सब कुछ हो गया फिर भी रो रहा है? उन्हीं ने बताया मुझे भी इसी भव में मुक्ति मिलना है परन्तु अब इस प्रकार का समोशरण भरत क्षेत्र (भारत) में तो नहीं, जाओ विदेह क्षेत्र इत्यादि में जाओ। उन्हे तो निर्वाण हो गया। जब तक वे थे आनंद का स्रोत था।

छद्मस्थ अवस्था है, अज्ञान दशा है, मन बड़ा चंचल है, शरीर के साथ रहता है। तीर्थंकर थे वे चले गये ऐसी दशा में रहना कठीन हो गया है। अब उनका समोशरण नहीं मिल पायेगा। बाकी जो भी है सब नश्वर है, सब पराया है। अब अपना कौन मिलेगा? जो अपने थे वे तो चले गये। चले जाने के उपरान्त अब साक्षात देखने का आनंद नहीं मिलेगा। इस प्रकार का

वर्णन पुराण ग्रन्थों में उल्लेख किया है।

जीवन पर्यन्त तक उनका उपदेश श्रवण किया। एक दो नहीं 60-60 हजार प्रश्न उनके सामने रखें, जिससे सभी लाभान्वित हुये। वह समोशरण अब नहीं- वह आवाज अब नहीं। इसलिये मैं रो रहा हूँ। अपने आपको रोक नहीं पा रहा हूँ। रोने से भी कर्मों की निर्जरा होती है किन्तु अपने स्वार्थ के लिए नहीं। इतने लोग उनकी वाणी सुनते। यह अब जीवन में घटित नहीं होगा।

इसलिये बन्धुओं! जब तक उपलब्ध है तो लेते जाओ। लेते जाओ फिर देने वाला कोई नहीं। उपादान को संभालकर रखो। जब तक बुद्धि सही काम कर रही है तब तक तो ठिक है। यदि शरीर (बुद्धि) काम नहीं कर रहा तो क्या करोगे? कोमा में चले गये - बेहोश हो गये तो इस प्रकार के जीवन को लेकर क्या करोगे? 100 साल में से इसप्रकार यदि 20 वर्ष गुजर गये तो क्या होगा। न ही भगवान का नाम ले पाये, न ही दान दे पाये, न ही दान ले पाये। मैं तो इससे अच्छा मृत्यु हो जाये तो ठिक मानता हूँ। ऐसी दशा में तो णमोकार मंत्र भी मुख से नहीं निकल रहा।

परिवार भी दुखी हो जाता है। वे लोग कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। जीवन के दुर्लभ एक-एक क्षण निकलते जा रहे हैं। जितना धर्मामृत का पान करना है करते चले जाओ। जितना समय मिला है उसे देख-

दर्शन, तीर्थयात्रा, साधु समागम एवं ऐसे कार्यों में लगाते रहो जिससे भविष्य उज्जवल बनता है।

युग के आदि में भरत चक्रवर्ती ने यह सबको बताया/उन्हें याद दिलाया। उन्होंने कहा ठीक है प्रभु को निर्वाण हो गया किन्तु अब जो उन्हीं के द्वारा हमें मिला है, उसी को बार-बार सुनो-सुनाओ, याद करते जाओ। उसी को पढ़ते-पढ़ते णमोकार मंत्र के साथ सद्गति के पात्र बन जायेंगे। बस इन्हीं भावों के साथ आज का यह छोटा सा वक्तव्य दिया।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

विशेष - अमरकंटक - 7-3-18
सांय - 6

"आज आ०श्री के दर्शनार्थ चण्डीगढ़ से सिक्ख समाज के प्रमुख सरदार प्रीत सिंह अपने अनुयायियों के साथ आये। प्रथम बार दर्शन करते ही कहा - इस धरती पर ये चलते-फिरते भगवान हैं। उपदेश हेतु निवेदन किया साथ वालों ने। उन्होंने तो कहा - मैं तो दर्शन करके ही सब पा रहा हूं। आ०श्री ने सबके अनुरोध पर बूंद-बूंद के मिलन से .... इस दोहे से अपनी बात प्रारम्भ की। सिन्धु का अस्तित्व बिन्दु से ही है। इस बात को सदैव ध्यान रखने वाला ही अपनी आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है। पंजाब में ड्रग की बिमारी को दूर करने का आशिर्वाद देते हुये सिख समाज के संतों को कहा कि इसको दूर करने हेतु युवक-युवतीयों को प्रेरित करें।"

करंजिया [डिंडोरी]
9-3-18 "लक्ष्मी का दान - सरस्वती का संग्रह" प्रात: 9.20

मैं सोच रहा था आज एकान्त होगा। अनेकान्त की उपासना इष्ट तो है फिर भी हम लोग एकान्त ढूंढते रहते हैं। किन्तु श्रावक इस कार्य को होने नहीं देते। बादलों का बरसना कहाँ होता है? मालूम नहीं रहता। समुद्र से पानी वाष्प बनकर बादल बन जाता है, बादल घूमते रहते हैं फिर बरस जाते हैं, किसान भी उन बादलों की प्रतिक्षा करता रहता है, देखता रहता है।

बादल वहाँ बरसते है जहां पर वन ज्यादा हो तथा धरती तपी हुयी हो। वहां टपक जाते हैं। राजस्थान मे कम वर्षा होती है किन्तु यहां बहुत गिरा है। [कल अमरकंटक मे भी पानी गिरा] हम तो बच गये। भक्त लोग है कि छोड़ते ही नहीं। शुरुआत से ही विज्ञापन करने लग जाते हैं। आजकल तो विज्ञापन का युग है। फोन आते रहते हैं। हम फोन का उत्तर नहीं देते। फिर भी यहाँ का वहाँ, वहाँ का यहाँ होता है, काम निकाल लेते है।

धर्म के प्रति लगन/आस्था का होना बहुत कठीन है। समुद्र में ज्वार-भाटा उठते रहते है। जहाँ जरूरत होती है वहाँ भी सुभिक्ष हो जाता है। इसी के माध्यम से (दान) अहिंसा धर्म की प्रभावना हो रही है। फल कितना मिलेगा मैं कह नहीं सकता। इतना अवश्य कह सकता हुं कि इसका फल प्रतिशत में नहीं मिलेगा गुणित क्रम से ही मिलेगा। आपको मन-वचन-काय की

अपेक्षा से मोह रखना ही नहीं है।

इसमें गुणित क्रम से मिलना Fix है। इसे अलौकिक गणित कहते हैं, जिसमें गिनती नहीं होती, असंख्यात-असंख्यात ही होता जाता है। आपको मालुम करने की जरूरत नहीं कि धन कैसे कमाना है? धन कैसे आता है? मांगने से धन नहीं आता। आप धन की चाह छोड़ भी देंगे तो भी आयेगा। जैसे- तीर्थंकर भगवान के समोशरण रूप लक्ष्मी बिछ जाती है। "लक्ष्मी का दान करो- संग्रह करना है तो सरस्वती का संग्रह करो।"

कुछ लोग कहते हैं, मैं संग्रह की बात नहीं करता। मैं भी संग्रह करता हूं- सरस्वती का। ये बात अलग है कि उसका वितरण हो जाता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जैं

गुरु-वचन →

- आइडिया ठिक हो तो आइडियल बनने में देर नहीं लगती।
- इंटेंशन सही रखो- टेंशन का कारण नहीं होगा।
- प्रतिभा प्रतिक्षा की एक बहन जो C.A. की पढाई एवं Job भी करती है। प्रश्न किया आ. श्री हमें छुट्टी नहीं मिलती झुठ बोलकर मेडिकल लीव लगाकर छुट्टी लेकर आये हैं। क्या हमें पाप लगेगा? आ. श्री ने जवाब दिया - इंटेंशन पर पाप लगता है। आपका उद्देश्य क्या है? यह मुख्य बात है।
-

संस्मरण -

1. खुशाल भाई [C.A] बम्बई के जवान पुत्र (25वर्ष) की जयपुर में मृत्यु हो गयी। कारण बताया - हार्ट अटैक। शादी में नाच रहा था तभी वह गिर गया। आ०श्री ने कहा चाहे सुख हो या दुःख उसमें ज्यादा गहल भाव न रहे। "नाचना अच्छा है परन्तु उसी में गाफिल हो जाना ठीक नहीं।" कोई भी कार्य ज्यादा तल्लीन होकर न करें, जिससे कि आप अपने स्वयं को ही भूल जायें। अवसाद के लिए भी यही निमित्त होता है। आ०श्री ने यह भी कहा कि मित्र भी सोच-समझकर बनाना चाहिए।

2. राजवार्तिक में आचार्य अकलंक देव ने ध्यान की खूब प्रशंसा की और कहा कि समीति से असंख्यात गुणी निर्जरा ध्यान (गुप्ति) में लीन साधक की होती है फिर तो सदैव उसी में लीन रहना चाहिए। आ०श्री ने कहा - नहीं। मानते हैं पकवान खाने से शरीर पुष्ट होता है शक्ति आती है, फिर तो पानी नहीं पीना चाहिए। उस पकवान को पचाने के लिए पानी भी अति आवश्यक है वैसे ही प्रत्येक क्रिया को ध्यान रखना चाहिए।

3. लुहाड़िया जी को मिला संलेखना का आशीर्वाद -

प्रसिद्ध विद्वान मूलचन्द जी लुहाड़िया - किशनगढ़ वाले गुरुजी के चरणों में समाधी हेतु आये। उनकी शारीरिक स्थिति देखते हुये आ०श्री ने उन्हे नेमावर आश्रम हेतु

आशिर्वाद प्रदान किया। लगभग 1 घण्टा तक संबोधन भी दिया। सुहाड़िया जी ने कहा - कर्म तो उदय में आयेन्गे ही। गुरुजी ने कहा - उदय में आये कर्मों को काटा भी जाता है। उन्होने कई उदाहरण दिये जो निम्न है -

A. ईसरी में जिनेन्द्र वर्णी संलेखना हेतु आये। उन्हे शौच एनिमा से ही होती थी। आ० श्री ने एनिमा के दुष्परिणामों को देखते हुये साफ मना कर दिया। लगभग ½ घण्टा तक गरम-ठण्डी पट्टी की गयी। जब शौच होकर आये तो कहा - आज जैसी आनंद/प्रसन्नता की अनुभूति पहले नहीं हुयी। उन्होने इसे "सफल प्रयोग" कहा।

B. एक आर्यिका माताजी हाथ-पांवो में सूजन आ गयी। उम्र 80 से ऊपर। पत्र में लिखा क्या करना है? जैसा आप कहें। हमने मात्र लौकी के लिए कहा। 7-8 दिन में ही सूजन उतर गयी। आज विहार कर रही है।

C. एक दूसरी आर्यिका जिनके प्लेटलेट्स (जो डेढ़ लाख से ऊपर होना चाहिये) वे मात्र 5-6 हजार रह गये। पिछले 4 माह से उतने ही चल रहे थे। ऐलोपैथी वाले तो इसे बहुत खतरे में मानते हैं। कुछ भी पकड़ में नहीं आ रहा था। फिर उन्हे मात्र अच्छा मीठा आम और दूध (आमरस) चलाया। अभी 7 दिन भी नहीं हुये। से 2 हजार प्लेटलेट्स बढ़ गये। योग सिद्धि - (योग शुद्धि) का यह प्रभाव होता है। सारी बिमारीयाँ दूर हो जाती है, पेट ठीक हो जाता है।

आ० श्री द्वारा संलेखना हेतु जो ।।6 दिये वे हैं-

- शरीर तो दगाबाज है। उससे काम ले लो।
- गुरुजी सदैव कहते थे - पंचपरमेष्ठी को ही याद रखें। पंचगुरु-चरणशरणो.... । ये ही सम्यग्दृष्टि का तत्व है।
- संसार शरीर भोगों से निर्विण्ण हो जाओ, सब ठीक हो जायेगा।
- कठिन है लेकिन असम्भव नहीं।
- घर को छोड़ना जरूरी है। अब अन्यत्र हो या घर रखे ही है। इसलिए "नेमावर आश्रम" में सब व्यवस्थित हो जायेगा।
- एक बार भोजन करें 24 घण्टे धर्मध्यान करें। याद भी नहीं रहेगा कैसे दिन बीत गया।
- जो गुरु वचनों को माने, जैसा कहें वैसा करें तभी क्षपक कहलाता है। धारणा में मात्र आज्ञा पालन को सर्वोपरि मानता है।
- समाधी के काल में ज्यादा सोचना नहीं चाहिए।
- अब जल्दबाजी में कुछ न करें। गड़बड़ हो सकता है। अपनी चर्या को स्वाश्रित रखें। पराश्रित नहीं होना है।
- उपवास की साधना करें। गरम पानी लेना है। गरम कर के ठण्डा भी नहीं लेना।
- भगवती-आराधना में इस अवस्था में माण्ड / लपसी / तक्र को ग्रहण हेतु कहा। ये निर्विकृति / अमृत है- ऐसा कहा।
- जो अग्निपक्व है वही लेना है। मावा, ड्राइफ्रूट्स आदि इस उम्र में लेने योग्य नहीं।
- धारणा पक्की बनायें - मुझे समाधीमरण करना ही है।
- रस परित्याग भी करना चाहिये।

अन्य बातें जो कही -

- आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने कहा - "अनपेक्षितार्थ वृत्ति कः पुरुषः सेवते नृपतीन" राजा की सेवा ऐसे ही नहीं करता इसी प्रकार चारित्र की सेवा भी ऐसे ही नहीं कर रहे। इससे हमें वह मिलने वाला है जो सर्वोत्तम होगा।
- "शुभस्य शीघ्रं" आ० श्री ने कहा - कल नहीं परसों शनिवार - नवमी है। अच्छा मुहूर्त/योग है। सर्वार्थसिद्धि अमृतसिद्धि योग है। आदिनाथ जयन्ती भी है। आपको इस मुहूर्त को छोड़ना नहीं है। अब किशनगढ़ जाने की कोई जरूरत नहीं है। एक बार छोड़कर आ गये पुनः नहीं जाना। जिसे मिलना होगा आपके पास आ जायेगा। सामान भी आ जायेगा। अब आप कायोत्सर्ग कर लें। मैं भी और आप सभी (हम लोगों से) भी कायोत्सर्ग करें।
- गुरुजी हमेशा कहते थे - "कालस्तु हेय" काल की प्रतिक्षा नहीं करना है। जिस समय भाव हो गये, बस कर लो। अपने को आगे बढ़ा दो।
- आ० श्री ने पण्डित जी को याद दिलाया आप गुरुजी के पास प्रतिदिन आते थे। नसीराबाद आना-जाना प्रतिदिन होता था। जो उन्होंने कहा उसे याद रखना, अन्तिम क्षण तक वे सूत्र आपके बहुत काम आयेंगे।

गोरखपुर

10-3-18 "गौ रक्षा करता गोरखपुर" प्रातः9.20

इस गाँव के पास से कितनी बार गये और आये इसकी संख्या ज्ञात नहीं। आते और जाते समय इस ग्राम को योग मिलता है और मुकाम हो जाता है। इसका नाम जानते हो? समझ लो अच्छा लगेगा। गोरखपुर = गो-रख गो यानि गाय की रक्षा करना इसका अर्थ होता है। आप लोग तो शहरवासी हैं पुरवासी नहीं। आप सब डिब्बे का दूध पीने वाले हैं। उसी के माध्यम से केवलज्ञान प्राप्त करेंगे। दूध पीने से केवलज्ञान की प्राप्ति मानते हो या नहीं?

गाँवो से सम्बन्ध जुड़ा रहे। गोरखपुर उत्तरप्रदेश में भी है, जहाँ पर प्राकृतिक चिकित्सा होती है। कई गोरखपुर हैं। यह अमरकंटक के रास्ते में है। यहाँ किसान गायों का एवं अन्य पशुओं का संरक्षण करते हैं। यह नाम आपको ठोस ज्ञान कराने वाला है। इस प्रकार गाय जहाँ रहेगी वहाँ रोगीयों का भी पालन-पोषण हो जायेगा। उसके दुग्ध से/घी से कई प्रकार की औषधी निर्मित होती है। मल-मूत्र भी उसका खेतीबाड़ी के लिए सर्वोत्तम माना गया है।

खेतीबाड़ी होगी तो सर्वप्रथम उससे भोजन-पानी मिलेगा। दूसरे नम्बर पर खेती होगी तो कपास उत्पन्न होगा। कपास से आपके लिए वस्त्र बनेंगे। चाहिये या नहीं, बोलो। खानपान

के लिए धान मिल गया और कपास से वस्त्र।

आप लोग विदेशी वस्त्र पहनने वाले हो गये हैं। इससे अनेक प्रकार के रोग होते है साथ ही पराश्रित भी हो रहे हो। विदेशी वस्त्र के कारण आज अहिंसक नहीं रह पाये। पानी छानना हो तो क्या करोगे? नाइलोन से छानोगे? भगवान का प्रक्षाल करना है तो भी यही वस्त्र काम में आयेंगे। अघार भी रुई का होता है। इन सब में अहिंसक वस्त्र की ही आवश्यकता है। अब आप ही देख लो एक "गोरखपुर" शब्द से सारा का सारा ज्ञान हो गया।

जहाँ कहीं से भी आये हैं, उन्हें भी सुना देना। बाकी सब सुनाने के साथ-महाराज ने क्या कहा यह भी सुनाना। हमारा प्रचार-प्रसार हो जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

संस्मरण -

1. "बात पालीताणा की है। जब आचार्य श्री जी गिरनार यात्रा हेतु गये तब वे पालीताणा पहुँचे। वहाँ वे दिगम्बर जैन धर्मशाला में रुके जो तलहटी से लगभग 3 K.M. दूर है। प्रतिदिन (पैदल) वे पहाड़ की वंदनार्थ जाते और पुनः लौटकर आते। पालीताणा में अधिकतम श्वेताम्बर मन्दिर है। धर्मशालाओं की तो भरमार जहाँ श्वेताम्बर साधु भी रुकते है किन्तु वे सब सुख-सुविधाओं का उपयोग करते थे। आ. श्री जब वन्दनार्थ जाते तो वहाँ के रिक्शे वाले-टैक्सी वाले तक कहते थे- "साधु तो ये है" इनके दर्शन से धन्य हो गये।"

२. अमरकंटक से डिंडौरी पंचकल्याणक हेतु विहार कर रहे थे, 11 मार्च 2018 को कुण्डलपुर कमेटी समयसागर जी महाराज के लिए श्रीफल भेंट करने आये। संतोष जी सिंघई अध्यक्ष एवं नवीन निराला मंत्री साथ चल रहे थे। बात ही बात में आ० श्री ने कहा बड़े बाबा का कार्य शीघ्र पूरा कर कुंकुम पत्रिका के साथ आओ। सिंघई जी बोले हम अध्यक्ष नहीं अध्यक्ष तो अमित शाह है। आ० श्री तुरन्त बोले हमारे अध्यक्ष तो बड़े बाबा हैं हम उन्हीं की सुनेंगे। उन्होंने कह रखा है कि श्रावकों की मत सुनना। वे इधर-उधर की बातें करेंगे।

३. अनुकूलता और उपयोगिता -

आचार्य गुरुवर विहार करते हुये अमरकंटक क्षेत्र पर पहुँचे। हम सभी ने यही सोचा था कि अब 1-1½ महिने तो यहीं रहेंगे इतना विहार करते हुये आये हैं। दूसरे दिन आ० श्री ने मन्दिर के कार्य का निरीक्षण किया। समिति से बातचीत हुई जैसा सोचा था उतना कार्य नहीं हुआ। मतलब पंचकल्याणक की स्थिति नहीं थी। आ० श्री की अनुकूलता तो थी पर उपयोगिता नहीं। डिंडौरी वालों का सोया भाग्य जागा और आ० श्री ने उन्हें पंचकल्याणक हेतु आशीर्वाद प्रदान कर दिया। मात्र 6 दिन प्रवास कर अमरकंटक से डिंडौरी के लिए विहार हो गया क्योंकि उपयोगिता और अनुकूलता गुरुजी को मुख्य है।

गाड़ासरई
11-3-18 "आस्था गाँवो की" प्रातः 9:20

इस नगर से कई बार डिंडोरी से अमरकंटक तथा अमरकंटक से डिंडोरी आना-जाना हुआ। यहाँ पर रात्रि विश्राम भी हुआ और चर्या भी हुयी है। एक बार की बात है अमरकंटक से रामटेक की ओर विहार हो रहा था। यहाँ से थोड़े ही आगे बढ़े तो वहाँ रुकना पड़ा। यहाँ के कुछ सज्जन बोले- महाराज! ऐसा नहीं चलेगा। हमने तो सोचा था यहाँ आहार चर्या होगी और आप आगे बढ़ रहे हैं। बढ़ो। आगे नाला है वह आपको जाने नहीं देगा। वर्षा हो रही है, कैसे जाओगे?

पूरा संघ उस ओर चला गया था। लगभग 1½ घंटे तक पाठ आदि करना पड़ा। गुरुजी आपको जाना है तो जा सकते हैं पर आगे इस प्रकार न करें, ऐसा इन्होंने कहा। यह है ग्रामवासियों का विश्वास - आस्था। ये लोग सात्विक जीवन यापन करते हैं। सात्विक व्यापार से आजीविका अर्जन करते है। विशेषकर साहू समाज से है। सभी का खान-पीन, व्यवहार आदि सात्विक रहता है। सात्विक जीवन वालो से व्यवहार बनाना चाहिए। ताकि एक- दूसरे को साथी- सनाथी बनाया जा सके।

जीवन में साथी- सनाथी का बहुत प्रभाव रहता है। संतभक्ति में लीन रहने वाला गाड़ासराई ऐसा यह ग्राम है। सभी से यही कहना है कि आगे भी बच्चों के संस्कार इसी प्रकार बनाये रखें। यहाँ के लोग खाड़ी बहुत अच्छी बनाते है। हथकरघा से भी आप परीचित है। आगे भी इसी प्रकार का जीवन व्यतीत हो, इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

महावीरा- डिग्रीकॉलेज

१२-३-१४ "विद्यालय बड़ा (महा) है पर विद्यार्थी नहीं" प्रातः१२०

आज का युग पढ़े-लिखों का युग है। जब मुझे दिखाया गया कि महाराज इसी विद्यालय में रुकना है। मैंने देखा आसपास कोई गाँव भी नहीं दिख रहा है। ये तो महाविद्यालय है। जब हम पढ़ते थे तो छोटे-छोटे विद्यालय होते थे. आगे पढ़ना हो तो दूर जाना पड़ता था। आज तो गली-गली में ऐसे बड़े-बड़े विद्यालय खड़े हो गये हैं किन्तु इन बड़े-बड़े विद्यालय में छोटे-छोटे विद्यार्थी भी क्यों नहीं निकल पा रहे हैं।

अभी दक्षिण से एक ब्रह्मचारी जी आये, उनसे खूब बातें हुयी। अब समझ में आ रहा है कि क्या सही है। [एकीकरण के सम्बन्ध में] पढ़े-लिखों को भी समझ में आ गया। मुझे अच्छा लगा कि आप घूम गये। युग वापस आ रहा है। उसका स्वागत कर लेना चाहिए। बच्चा वापस घर लौटे तो उसे डराना नहीं चाहिए। उसे पुचकार के कुशलतापूर्वक सब पूछ लेना चाहिए।

इसी प्रकार से अहिंसा का युग वापस आ जायेगा। हमें तो अहिंसा धर्म से मतलब है, लोग जुड़ते जा रहे हैं। इसप्रकार बड़े विद्यालय में छोटी सी बात कर दी गयी है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

वाणी आज्ञा देने वाले भावों से मंद हो तो आज्ञा पालन में आनंद आता है।

डिंडोरी

13-3-18 "आओ उड़ायें पतंग" प्रातः 9.20

अभी आपने पूजन की है। उसमें कई स्थानो पर कई शब्दो के माध्यम से पूजन के भाव अभिव्यक्त किये गये। उसमें एक स्थान पर जिस द्रव्य अथवा जिसव्यक्ति का उल्लेख किया गया आप लोगो का ध्यान उसी ओर आकृष्ट करता हूं ताकि उसे आप अच्छे से समझ सके। [गुरुजी मैं तेरी पतंग... भजन] बच्चे पतंग खेलते समय क्या-क्या करते है। पहले तो किसी ऊँचे भवन पर चढ़ जाते है। ऐसा नही कि किसी कमरे में उड़ा ले। उसके लिए तो खुली हवा आवश्यक होती है।

हवा थोड़ी कम भी हो तो भी खुली हवा ही चाहिए। उसी में आनंद आता है। सुन रहे है आप लोग। इस आनंद में वे लोग भूल जाते है। संक्षेप में कह रहा हूं। ये भूल जाते है कि हमारी पतंग ऊपर है या नीचे। समय कम है आपके पास भी और हमारे पास तो है ही नहीं। अतः इसे ध्यान से समझ ले। अब वह अपनी पतंग को फंसा देता है। उलझा देता है। छोड़ दे। छोड़ा भी नहीं जा सकता है। ऐसा उलझ गये कि नीचे गिरना निश्चित है।

अब जो आनंद था वह तो भूल गये। ऊपर है या नीचे देख नहीं पाते हैं। इतना कि कई बार बिल्डिंग के नीचे तक आ जाते हैं। नीचे से ऊपर, ऊपर से नीचे का आनंद अलग है। मोक्षमार्ग

में इसी प्रकार का खेल चलता है।

कुछ लोग हम भी आना चाहते हैं। हाँ-हाँ कोई बात नहीं। इस मार्ग में तो बहुत सारे व्यक्ति एक साथ आ सकते हैं। सर्व से अभ्यस्त हो चुके हैं। बड़ा कौन - छोटा कौन? भला कौन - बुरा कौन? पहले कौन - बाद में कौन? इसमें आनंद नहीं आवाता। दोनों ही झगड़ा नहीं कर सकते। डोर किसकी ज्यादा है यह महत्वपूर्ण नहीं। हमारे हाथ में भी डोर है? दोनो यही कहेंगे। अब तो सुलझन नहीं। हां! समझौता कर लेतो ठिक है।

जहाँ है वहीं से तोड़दी जो शेष है उसे ढिल देकर फंसाओ नहीं। आगे के लिए ध्यान रखना और फंसायें नहीं। पतंग का आनंद तो अकेले में ही लेओ। सौ-सौ पतंग उलझ जाये तो पक्का है क्या होगा? फिर भी सुलझना चाहते हो। कषाय बहुत जल्दी उलझा देती है। कषाय से बचें। ऊपरी नहीं भीतरी भाव हो तभी आनंद ले पाओगे। अथवा जो आदर्श सामने है उसकी ओर दृष्टि रखें। यही मात्सर्य भाव/अभिमान के भाव को भूलने के लिए है।

हमारे आदर्श इन सब से परे हैं। न ही बड़ा - न ही छोटा, न ही मूल्यवान - न ही कम मूल्यवाले ये सब नहीं। फिर कैसे हैं? तो अभी क्या बताया। वैरागी - सर्वस्व त्यागी हैं। बोलो,

आप ही ने बोला था ना।
आप तो विषय कषाय में उलझे हो, वैरागी कौन मानेगा? कोई भी नहीं मानेगा। आप भले ही रागी हो - वैरागी बनने का उद्देश्य हमेशा रखते हो, यह अच्छी बात है। और देखो, समय होगा तो लाभ मिलेगा। मेहमान वगैरह आयेंगे। महाराज तो आ ही गये हैं। मेहमान के साथ भी समय, महाराज को भी समय, व्यवस्था भी सामने है।
बहुत सारी बातें हैं। आपके यहाँ हम आये हैं, आप आये नहीं हैं। अच्छे ढंग से एकता के साथ कार्यक्रम को सम्पन्न करें अच्छे भावों के साथ।
अहिंसा परमो धर्म की जय।

Marketing Job =
रायपुर से बिलासपुर की ओर बिहार में हम सभी का कोयला परिवार द्वारा संचालित शिक्षा परिसरों (डेन्टल, इंजीनियरिंग कॉलेज आदि) में रुकना हुआ। काफी संख्या में छात्र-छात्रायें उनमें पढ़ते हैं। किन्तु शिक्षा के मूल उद्देश्य से कोसों दूर है। पढ़े-लिखे बेरोजगार तैयार हो रहे हैं। आ॰श्री ने ऐसी शिक्षा के स्थान पर जीवनोपयोगी शिक्षा की भावना रखी। सौम्यसागर जी महाराज ने बताया एक 12वीं पास लड़का जिससे पूछा क्या करते हो? बोला Marketing Job करता हूँ। उन्हें लगा कोई MBA होगा पर मात्र 12वीं

पास था। वह उन कॉलेज में गाँवो से विद्यार्थी लाने का काम करता था। जिसके लिए कॉलेजवाले उसे कमीशन प्रदान करते है। ये शुद्ध व्यापार नहीं तो क्या है? आ० श्री इस "मार्केटिंग जॉब" शब्द पर बहुत हँसे। पढ़ने वाला भी और पढ़ाने वाला भी दोनों ही अंधेरे में जा रहे हैं। इसलिए कहना पड़ा कि " 80% इंजीनियर कोई काम के नहीं है।" आ०श्री ने कहा- ये कॉलेज मात्र डिग्री बाँटकर पढ़े-लिखे बेरोजगार तैयार कर रहे हैं। इस प्रकार से भारत का उद्धार कैसे होगा?

विशेष -

संस्मरण सिलवानी का एक बच्चा विहार में खूब फोटो ले रहा था। आ० श्री ने उसे देख लिया होगा। जब मुकाम पर पहुँचे तो वह नेपकीन से गुरुजी के पाँव पोंछने लगा। गुरुजी ने तुरन्त कहा- फोटो के पाँव पोंछ लो इसकी क्या जरूरत है। वह शर्मिन्दासा हो गया।

अनुशासन -

० डिण्डोरी में तीन भवन रुकने हेतु बताये आ०श्री जी ने कहा पूरा संघ एक ही में रुकेगा। कमरे में महाराज इतने रहें कि श्रावक को घुसने की जगह ही न मिले वह बैठेगा नहीं - बात नहीं कर पायेगा। आप अपना-अपना धर्मध्यान अच्छे से करेंगे।

15-3-18 "भाग्य को फाड़ती फटी जिन्स" प्रात: 9.20

आप लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के हार गले में पहनते हैं किन्तु वह असली हो तो पहनते हैं और नकली हो तो.... नहीं पहनते ? फिर भी पहनते हैं। महाराज आजकल तो जमाना ही नकली का आ गया। असली है या नकली इसकी शिक्षा दी ही नहीं जाती। उसका जो प्रभाव पड़ता था वह नहीं पड़ेगा। आभरणों का प्रभाव पड़ता है। सोना पहना भी जाता है और खाया भी जाता है। बड़े-बड़े जो रईस लोग होते हैं, वे अपने भोजन में स्वर्ण को भी/रत्न को भी स्थान देते हैं। ये बात अलग है, ऐसे नहीं कि फांकी ले ली उसका विधी-विधान अलग रहता है।

इसी प्रकार क्या पहनना और क्या खाना है? ये दोनों जानना बहुत महत्वपूर्ण है। इनके माध्यम से तामसिक प्रवृत्ति को रोक सकते हैं एवं सात्विक प्रकृति/धार्मिक भाव जगाने में बहुत अच्छा कर सकते हैं। आज उस पहनावे के बारे में ध्यान नहीं। सीधे ही बाजार से लाया और पहन लेते हैं। बुरा नहीं मानना फिर भी कह रहा हूँ। बुरा लग जाये ताकि कल बुरा लग जाये। इसी प्रकार बहुत सारे लड़के आये।

नमोऽस्तु कर रहे थे, मेरी दृष्टि एक लड़के की ओर गयी। वह जिन्स पहने था। जिन्स पहनते हैं। जानते हो जिन्स का अर्थ क्या होता है। पेन्ट होता

है, इसमें 5-6 स्थानों पर फटा हुआ था और सुनते हैं उसका मूल्य सबसे ज्यादा है।

जो बड़े-बड़े रईस होते हैं, ज्यादा पैसा हो जाता है तो ऐसी ही दिमाग में बात आ जाती है। विद्यालय में पढ़ते थे थोड़ा सा भी फट गया तो अब कैसे जायेंगे? साफ-सुथरा तो ठीक है पर थोड़ा सा भी फटा हुआ कपड़ा नैमितिक (ज्योतिष) ज्ञान से भी ठीक नहीं। उस फटे को देख माता-पिता भी प्रसन्न रहते हैं। नगर/शहर में बहुत नाम है। कौनसा नाम है पता नहीं। ऐसा वह पहनावा फटते-फटते जब पैरों में आने लग जावे तो अच्छा माना जाता है।

अब बोलो ये कौनसी शिक्षा आ गयी? कौनसी दीक्षा आ गयी? ये कौनसी परम्परा आ गयी? ऐसे वस्त्र दरिद्रता के प्रतीक, रुग्णता (रोग) लाने वाले एवं बुद्धि को बुराई की ओर ही ले जाने वाले होते हैं। ऐसा निमित्त एवं ज्योतिष शास्त्रों में बताया। इस प्रकार के वस्त्र पहनकर आनेवाले का पहले से ही दिमाग कैसा होगा? यह जान लिया जाता है।

इनसे भारत के विकासोन्मुख की बात सोचने वालो! ऐसे वस्त्र तो भिखारी भी नहीं पहनता है। वह भी चिंदी मानकर छोड़ देता है।

शान्तिधारा का छिंदी-छिंदी, भिंदी-भिंदी दोनों ही आ गया इसमें। इसलिए कलात्मक एवं स्वास्थ्यवर्धक वस्त्रों को जो इस डिण्डोरी ग्राम में बनते हैं, आप उपयोग में लें।

ऐसे-ऐसे वस्त्र हैं जिनको बनाने वाले 40-40, 50-50 हजार तक कमा लेते हैं। इन मौलिक एवं अमूल्य वस्त्रों का निर्माण इस जिले में होता है। लोग कहते हैं- हमें दे दो - हमें दे दो। अब इनका सीधा व्यापार विदेश से भी हो सकता है। आप लोग हमें नौकरी दे दो। भीख मांग रहे हो। इसी प्रकार भोजन की बात है। हमारा प्राचीन भोजन जिसे Fast Food बोलते हैं उसे अपनायें। नई शिक्षा का संबंध इतिहास से जोड़ दो तो वस्त्र एवं प्राचीन भोजन अपने-आप ही आ जायेगा।

कई लोग जानते होंगे। किसान तो जानता ही है। एक बीज आया विदेश से नाम है- सोयाबीन। दो शब्दों से मिलकर बना है। सोया + बीन। जो सोकर के बीने उसे कहते हैं सोयाबीन। यह भारतीय बीज नहीं है। विदेश से ही बीज मंगाना होगा। भारत में तो इजात होगा ही नहीं। सुनते हैं विदेश में इसे जानवरों को खिलाया जाता है। सुन रहे हो? हाँ महाराज हम क्या कम हैं? हम भी तो जान वर हैं। कोई गुणवत्ता नहीं, न ही कोई औषधी। विदेश में सोयाबीन के बिस्किट बनते हैं, पर ध्यान रखें-

उसमें क्या-क्या मिलाते है?

भिखारीयों को भीख में दूरकारकर दे देते हैं। इन ब्रेड-बिस्किट से छोटे-छोटे बच्चों की बुद्धि का क्या होगा? अब गाय का दूध तो चला गया। जो सुअरो को ही खिलाया जाता है, वह इंसान खा रहे है। पहले ही कहा था- बुरा न लग जाये किन्तु बुरा लगेगा तभी बुरा बन पायेगा। केवल जयकारा लगाने से ही काम नहीं होगा। क्या खा रहे है? क्या पहन रहे है? इसका यदि ध्यान नहीं तो धर्म कैसे चलेगा?

यह भयंकर समस्या होती जा रही है। किसानो को तो समझ में आने लगा है। खेत की उर्वरा शक्ति ही खत्म होने लगी। विदेशी खाद-विदेशी बीज एवं प्रक्रिया भी विदेशी है। ऐसा परिणाम होगा जो भयानक होगा। भारत अपने विकास की बात कर रहा है, वह विकास के क्रम को ही भूल गया है। खानपान आदि सब भूल चुका है। आने वाले दिनों में "संस्कारो का विधान" यहाँ होने जा रहा है। बच्चों को भी समय निकालकर इससे शिक्षा ग्रहण करें जिससे इतिहास के पन्ने खुल जाये, यह सर्वोत्कृष्ट होगा।

उस बच्चे को हमने कहा कि इस प्रकार के वस्त्र नहीं पहनना चाहिए। उसने कहा-आगे से ऐसा नहीं होगा। बिल्कुल। वस्त्र जैसे पहनते है चिंतन की धारा भी वैसी ही होती है। प्राणवायु का प्रवेश होना

अतिआवश्यक है। आधुनिक वस्त्र पसीना सोखने में भी विपरित है।

आज स्वास्थ्य बिगड़ने का एक बड़ा कारण वस्त्र भी है। डा० बतायेंगे, हम क्या बोलें? अभी और क्या होगा मुझे मालुम नहीं आप ही जानते हो। "पैसा खर्च करना महत्वपूर्ण नहीं किसमें खर्च करना ये महत्वपूर्ण है।" दो प्रकार से खर्च करते है एक तो Vest और दूसरा Invest में होता है। मैं शिक्षा Invest की देता हूँ जब कि आप Vest करते है। कहाँ खर्च करना, कितना खर्च करना - कितना बचाना यह ज्ञान होना अति आवश्यक है।

आपने बचाया होगा तभी तो यह पावन कार्य करने जा रहे हो। सुन रहे हो या नहीं? आज बाहर से भी बहुत सारे लोग आये हैं। उनसे भी यही कहना है, मध्य-प्रदेश के माध्यम से यह कार्य आगे बढ़ाते जायें। नौकरी की ओर न ध्यान देकर ऐसी शिक्षा दे जो स्वाश्रित होने का मार्ग बतायें। उच्चकुलों में भी यह हथकरघा का कार्य होता था। ऐसी पंक्ति मिली "आर्य महिलायें भी मर्यादा में रहकर हथकरघा चलाती थी।" आज ये काम नहीं है।

मर्यादा में रहना है तो सात्विक वस्त्र उत्पन्न करना है। ऐसा 100 वर्ष पूर्व लिखा था। उसकी प्रस्तावना स्वयं गांधी जी ने लिखी। वो मुख्य कर्त्तव्य था। आज विदेशी वस्त्र

ही सब कुछ है।

मैं आलोचना नहीं कर रहा। जो अहिंसा का मूल तत्त्व है, वही गायब हो गया है। जल ही जीवन है यह बोल तो रहे हो पर कर क्या रहे हो? नर्मदा क्या कहेगी? अपने गुणधर्म, स्वास्थ्य, संस्कार की ओर ध्यान देना परम आवश्यक है। इससे मुख्य रूप से आप एक व्यक्ति को आजिविका दे सकते हैं बल्कि एक व्यक्ति 10-20 व्यक्तियों को भी खड़ा कर सकता है। श्रम का शोषण न हो इसका ध्यान रखें।

अब तो सिद्ध हो गया है 30-30 हजार पाने वाले हस्तशिल्प के माध्यम से, अपनी मेहनत के माध्यम से पाते हैं। अपनी Mistery देखो ज्ञात हो जायेगा। "Mistery को भूलने के कारण आज Misterymind हो गया है।" Mistery पढोगे Misterymind से जरूर बच पाओगे। इस बिमारी में खाना-पीना सब खत्म हो जाता है। त्वचा रोग/स्वास्थ्य ही चला गया।

आज आप लोगों को बुरा लगनेवाली बात आ सकती है किन्तु आपके हित की बात कह रहा हूं। धैर्य धारण करके सुना करो। ध्यान से सुनोगे तो वह बुरा भी बुरा बन जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

15-3-18 "उत्साह हो - उत्सुकता नहीं" प्रातः9.20

एक-एक दिन व्यतीत हो रहे हैं और एक-एक कदम आपके उस महोत्सव की ओर बढ़ रहे हैं। प्रतिक्षा की घड़ियाँ न हो तो उत्साह भी बढ़े नहीं। इसलिये प्रतिक्षा की घड़ियाँ आवश्यक है, इससे उत्सुकता बनी रहती है। "उत्साह होना चाहिए - उत्सुकता नहीं।" उत्सुकता गति में अवरोध पैदा कर देती है। छोटे बच्चे उत्सुकता से भरे रहते है, बड़े उत्साह से अपने कार्य में लगे रहते है। उत्सुकता बचपना जैसे है। उत्साह आगे बढ़ने के लिए बहुत बड़ा साधन है।

जिसे उत्साह के साथ आगे बढ़ना है, उसे कहाँ बढ़ना है/किस ओर बढ़ना है इसका ध्यान रखना चाहिये। किसी भी कार्य का एक उद्देश्य होता है। जो मूल कार्य होता है उसके सहयोग की अपेक्षा कुछ कार्य हमें करने पड़ते है। उस मूल उद्देश्य को भूल जाते है तो आकुलता होने लग जाती है। मैं कहना चाह रहा हूं कोई पूछता है आप कहाँ जा रहे हो? मैं कहता हूं मुझे तो मोक्ष जाना है - "मोक्ष जा रहा हूं।" बोलो! नहीं जाना है? जाना सबको है, हाँ आगे-पीछे हो सकते है यह अलग बात है।

जब इच्छा है, मोक्ष जाना है तो मोक्ष जा रहे है यह क्यों नहीं कह रहे हो? आँखो से हर्षांसु आयें, पानी नहीं आना चाहिए। हर्षोल्लास होता है तब उसमें बहुत प्रकार के कार्य करते है। उन सब कार्यों को करते

समय मूल उद्देश्य कौनसा है हृदय में याद रखेंगे तो उत्साह दिन-दुगना रात-चौगुना बढ़ता है।

ज्ञानार्णवकार ने कहा है- ध्यान सिद्धि के 5-6 साधनों में उत्साह भी एक साधन बताया, जनपद त्याग भी साधन बताया। उत्साह के साथ किये हुये कार्य में विशुद्धि होने के कारण बहुत गुणवत्ता को लेकर होता है। में कोई भी कार्य करना है तो गुणवत्ता को लेकर करें। गुणवत्ता से ही पहचान होती है। गुण ही गुणी का निर्माण करते हैं। गुणी का जय-जयकार उसके गुणों के कारण ही होता है। हम जय-जयकार की ओर तो देखते हैं पर गुण की ओर दृष्टि ही नहीं रखते।

एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता नहीं किन्तु गुणों में निखार-बढ़ोतरी-विकास होता चला जाता है। द्रव्य की पहचान नहीं, उसकी पहचान वह गुण ही होता है। हम यहाँ बैठे हैं। सुगन्धी आने लगी आपकी नाक ढुं-ढुं (एक्शन) होने लगती है। क्या लगाकर आये हो। फिर तो भीतर में भी क्यों न हो वह बाहर आये बिना नहीं रहता। वह सुगन्धी है, उस गुण को हम पहचाने। द्रव्य नहीं भी रह आवे उस गुण से ही उसकी पहचान है।

अपने कदम बढ़ाते जायें। इतना बड़ा कार्य करने जा रहे हो। आप रास्ते की ओर मत देखो जिस रास्ते में जाना चाहते हो उस रास्ते में सुगन्धी आती है कि नहीं। फिर तो नाच लो बेटे-3, आप भी

बेटे को नचाने हेतु खुद नाचने जैसा करने लग जाते हैं। सभी नाच रहे हैं। 80-85 साल के दद्दा थे वे भी उसमें आ गये। आ गये तो बस छा गये। मैं बुड्ढा हूँ भूल गये। नाचने लग गये, सभी देखने लगे।

उत्साह तभी जब भीतर से उल्लास होता है। ये शक्ति अपने आप आ जाती है। "आप केवल शारीरिक शक्ति ही देखते हो मोक्षमार्ग में तो मानसिक शक्ति अथवा जो श्रद्धा शक्ति है उसका उपयोग कर लेना चाहिए" मेरे पास वह शक्ति है तो अवश्य प्राप्त होगा। इस श्रद्धान से लक्ष्य जरूर प्राप्त हो जाता है। आप लोगों का भी कार्य धीरे-धीरे प्रारम्भ हो गया था। और जो प्रारम्भ कार्य होता है वह पूर्ण भी हो जाता है। हाँ! "करने से होता है बातों से नहीं।" करते जाओ।

कर्म निर्जरा मुक्ति प्राप्ति हेतु आवश्यक है। आप कर्म निर्जरा करते जाओ - क्यों नहीं मिलेगी मुक्ति? चुटकी बजाते-बजाते मुक्ति मिलेगी। मात्र अन्तर्मुहूर्त की ही तो बात है। छोटे बच्चे भी चुटकी बजाते हैं। चुटकी बजाने की पद्धति महत्त्वपूर्ण है। उम्र की ओर मत देखो। मनोदशा की ओर। लक्ष्य की ओर ध्यान दो। उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अनिवार्य है जो अन्य साधन हैं उन्हें भी मजबूती के साथ रखना/संभालना आवश्यक है। अब आपका यही कार्य है- रात में/स्वप्न में भी कोई पूछे तो क्या कहोगे? (मोक्ष जा रहे हैं) हम मरने की बात करते ही नहीं। हमें

अविनश्वर पद प्राप्त करना है।

जिसे प्राप्त करना है उसी के बारे में सोचते रहे तो स्वप्न में भी - चर्चा में भी सबके परिचय में वह बात आ जाती है। यह स्व एवं पर दोनों के कल्याण की विधी है। इसी प्रकार की साधन सामग्री शास्त्रों में लिखी है, उसे बीच- बीच में पढ़ा करो। संतों का समागम भी हमें उसी ओर ले जाता है। कदम उठाकर आगे बढ़ाओ। पीछे मुड़कर मत देखा करो।

इतना ही काफी है।

महाराज पहले तो एक-एक घण्टा प्रवचन करते थे अब 10 मिनिट ही बोलते हो। सुनो ! किसी भी चीज का जब क्वाथ बनकर तैयार हो जाता है तो वह बहुत असरकारक होता है। इसलिये हमारा यह प्रवचन भी 10 मीनिट में क्वाथ की तरह है। बहुत कुछ किया जाता है। घुटकी बजाना इसी को ही बोलते हैं। घण्टे की कालिशा क्यों करें जब मिनिटों में हो जाये तो...।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

साँचा →

कोई भी हो सांचे के अनुसार रहे तो अच्छा माना जाता है। दिगम्बर मुद्रा का भी साँचा है उसी साँचे अनुसार चर्या होना जरूरी है अन्यथा वह अप्रभावना का कारण बन सकती है। गुरुजी कहते है- "साँचे का ध्यान रखो।"

16-3-18 लोड ज्यादा हो तो क्या करें? प्रात: 9.20

यद्यपि माइक सामने रखा गया है, लेकिन उसकी भी एक दिशा होती है। वह यदि टेढ़ी है तो दिशा-बोध भी टेढ़ा ही प्राप्त होगा। पक्का है। प्रत्येक कार्य करते हैं करने से पूर्व एक योजना बनाते हैं। दिशा बोध प्राप्त करते हैं। दिशाओं के कारण बोध होगा ऐसा भी नहीं। पूर्व कौनसा है बताओ? सूर्य नारायण यदि नहीं उगते तो पूर्व कौनसा है ये नहीं बता पाते। जब पूर्व का पता नहीं तो पश्चिम भी नहीं। दक्षिण भी नहीं और दक्षिण नहीं तो उत्तर का उत्तर भी प्राप्त नहीं हो पायेगा।

चारों दिशाओं के पहचान का केन्द्र सूर्य हो गया। सूर्य होकर भी उगना अथवा अस्त होना न हो तो... । नहीं बनेगा। सूर्य तो है पर वह स्थिर रहता है। जो व्यक्ति स्थिर रहता है कोई काम नहीं कर पायेगा। अस्थिर है तो भी काम नहीं कर पायेगा। अब हमें स्थिर भी घटाना है-अस्थिर भी घटाना है। हम एक पैर तो स्थिर रखें, दूसरा... सुन रहे हो कि नहीं? एक स्थिर-दूसरा अस्थिर। पर कहाँ रखना है? रखने से पूर्व सोचना है।

जहाँ कहीं भी नहीं रखते। "दिमाग में स्थिरता रखो और पैरों में अस्थिरता।" पैर कहाँ रखना है? पता नहीं और उठा दिया। योजना नहीं बनायी। पैर कहाँ रखोगे। पीछे वाला पैर कहता है- कहाँ रखूँ? लड़खड़ा जायेगा ऐसी स्थिति में आप डगमगा जायेंगे फिर गिरना तो पक्का है। योजना-

बद्ध कार्यक्रम के लिए दिशा की ओर देखना आवश्यक है। दिशा हेतु दिशाबोध जरूरी है।

प्रवचन में और कुछ नहीं दिशा-बोध दिया जा रहा है। दिमाग यदि उस समय उलझ गया तो जो काम करना था वह नहीं होगा। एक सज्जन ने कहा महाराज लोड (Load) बहुत है। हमने कहा भैया रोड पर Load होता है, ट्रक है क्या? डिओरी में ट्रक की जरूरत नहीं है। नाम नहीं बताऊंगा उनका। मतलब लोड लेने की क्षमता भी व्यक्ति के पास आ जाती है। टनों माल ले जा रहे हैं।

एक बार एक ट्रक वाले को देखा। मेरे दर्शन कर रहा था स्टेरिंग छोड़ दोनों हाथ जोड़कर चला रहा था। ये कैसे हो सकता है? व्यक्ति भी बिल्कुल दुबला-पतला। उसका दिमाग स्थिर था - पैर स्थिर थे पीया नहीं था। भैया गाड़ी चलाते समय कितना भी लोड हो पीकर मत बैठा करो, चला लोगे। क्या पीकर? अनार का रस या दूध? ये सब स्थिर चित्त के लिए ठीक है। पीकर मतलब समझते हो।

दिशा बोध देके पीकर बैठो तो काम नहीं चलेगा। लोड को खेंचने के लिए समय पर काम करना है। समय पर पेट्रोल देना भी आवश्यक है। इसलिए दिशा और बोध, स्थिरता और अस्थिरता समय पर दोनों आवश्यक है। हम स्थिर चित्त होकर योजना

बनायें।

सुबह-शाम-मध्याह्न में ये-ये रहेगा। काल के विभाजन के साथ चलें यदि डबल लोड भी होगा तो खेंच सकेंगे। लोड है-चढ़ाव और है तो आवाज कैसी आती है? समझते हो, उसकी आवाज अलग ही होती है। इसलिए चढ़ाव में अलग और उतार में अलग व्यवस्था रहती है। किन्तु उतार में पेट्रोल बन्द नहीं कर सकते। पेट्रोल यदि बन्द करदोगे तो Break नहीं लगेंगे। फिर उतार में उतर नहीं-लुड़क जाओगे। लोड तो लोड है।

सबको स्थिर करने के लिए सब ओर ध्यान देना जरूरी है। हमारा यह कहना है-बुद्धि को स्थिर रखते हुये लोड को देखना है। अभी बाहर (जंगल) गये थे तो उधर जबलपुर के लिए जाने पर चढ़ना होता, इधर आये तो उतार होता है। अब ज्यादा समय नहीं है। ब्रह्मचारी जी से पुछ लो काम समय पर ही पुरा होगा। जो भी हो। मेहमान भी आ गये-परिवार भी है। कार्यकर्ता काम करते रहते है। काम बहुत है-कार्यकर्ताओं को सहयोग देने वाले भी पर्याप्त होने चाहिए, जिससे कार्य जैसा कहा वैसा समय पर हो।

यह डिण्डोरी अमरकंटक के निकट है, ध्यान रखना। वहाँ तुफान उठेगा, यहाँ भी असर होगा। हम देख रहे हैं अभी शाम को ठण्डी बढ़ जाती है। इस प्रकार दिशा-बोध, स्थिरता-अस्थिरता को जहाँ जैसा चाहिये अनुपात से होना चाहिए। एक व्यक्ति का नहीं यह तो

सामुहिक /सामाजिक कार्य है।

अपना निर्णय नही - निर्णय कमेटी का है। सबका सहयोग हो - शुभ घड़ी में शुभ भावों के साथ कार्य सम्पन्न हो। कल नहीं परसों पात्रों का चयन होना है। उसके बिना व्यवस्थित कार्यक्रम नहीं होता। आप ही को देखना है। आप ही को पात्र बनना एवं आपही को कार्य करना है। ऐसा नहीं अध्यक्ष भी है - और सौधर्म इन्द्र भी। [आपके आशीर्वाद से सब व्यवस्थित हो जायेगा]

हमारा आशीर्वाद में जोड़ लेने की शक्ति है। आपका संकल्प भर दृढ़ होना चाहिए फिर तो हमारा आशीर्वाद है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

सभी पेपर में पास होना जरूरी -

"मुनि महाराज के 28 मूलगुण होते हैं एवं उत्तरगुण भी होते है। आ० श्री हमेशा कहते हैं हमें इस प्रकार से अपनी चर्या अपनाना है जिससे सभी पेपर में अच्छे नम्बर आयें। ऐसा नहीं कि एक में डिस्टेंशन लाँचर आ रहे हैं तो दूसरे में Grace से पास हो रहे है। इसे वे अच्छा नहीं मानते। एक मुनिराज एक आहार - एक उपवास भी कर लेते थे पर केशलोंच में 12-15 घण्टे लगते थे। आ० श्री ने कहा इसमें कमी क्यों रखते हो। जो कमी है उसे सुधार करो - इतना समय लगाना ठीक नहीं। अन्य आवश्यक प्रभावित होते हैं।"

17-3-18 "मत छोड़ो राग-द्वेष रूपी लार" प्रातः 9.20

संसार के कीड़े-पतंगे बहुत होते हैं एवं बहुत प्रकार के होते हैं। इनको बहुत काल तक बहुत कष्ट भोगना पड़ता है। एक कीड़ा जिसे बोलते हैं-कोशागार। क्या करता है वह? उसका अज्ञान देखो। उस कीड़े को पाला जाता है। उसी समय पर प्रिय खाद्य (पत्ता) दिया जाता है। जब वह पेटभरकर खा लेता है तब अपने ही मुख से लार छोड़ता है। अपनी ही लार से अपने शरीर को वेष्टित कर लेता है। वह लार न छोड़े तो कभी न मरे, आयु कर्म पर ही वह मृत्यु को प्राप्त होगा।

वह लार कुछ ही घण्टों में सूक जाती है, तो उसे श्वांस लेने में कठनाई होती है। भीतर ही भीतर वह घुटकर मर जाता है। मरण होने के उपरान्त जो उसका पालक होता है वह जान जाता है और उसके ऊपर की लार को सूत के रूप में काम ले लेता है। इस प्रकार से दो प्रकार से यह प्राप्त करता है पहला तो बता दिया दूसरा गरम पानी में उबालकर रेशम को प्राप्त करते हैं।

इस उदाहरण को इसलिए आपके सामने रखा कि अपने ही कारण वह अपनी मृत्यु का कारण बन जाता है। आपसे भी यही कहना चाहता हूँ कोई दूसरा कष्ट-पीड़ा नहीं देता। उसमें आप स्वतंत्र हैं। स्वयं के रागद्वेष ही आपको कष्ट अथवा बंधन में डाल रहे हैं।

दुनिया में ऐसी कोई शक्ति नहीं जो आपको बंधन अथवा पीड़ा पहुँचा सके, आपको तड़पा सके।

महाराज ये हमें कब्र में डालते हैं, ये हमारा शोषण कर रहे हैं ऐसा कहते हैं। मैं कहता हूँ आपमें बदले की भावना नहीं हो तो आप कहीं भी जा रहे हो आपको कोई रोक नहीं सकता है। जैसे - पक्षी आसमान में कहीं भी उड़ता चला जाता है, कोई उसे रोकता नहीं। हम स्वयं को ही कष्ट का कारण बना देते हैं। वह पालक भी जानता है कि कौनसे कीड़े ने आर को खा लिया कौनसे ने नहीं/चुनचुनकर वह निकालता जाता है।

आप सुन रहे हैं ? बात समझ में आ रही है न ? इसलिए "अपने परिणामों को संभालने का नाम ही मोक्षमार्ग है।" आप स्वयं ही गाफिल हो गये हो तो दूसरा कोई भी सुधार नहीं सकता। महाराज आप हाथ रख दो। हाथ तो हमारा हाथ में है। हाँ! आश्वासन हो सकता है। जिससे काम करेंगे। जवानी में तेजी से काम करते है। महाराज आशीर्वाद छूट गया हिलना - डुलना ही छूट गया।

हम पूछना चाहते हैं आशीर्वाद देने वाले का भी होगा कि नहीं। एक सीमा तक ही हिलना - डुलना काम करता है, बाद में बंद हो जाता है, ये धर्म है। जब तक

आयु कर्म उदय में तब तक ही ये सब चलता है। शरीर में शक्ति भी तभी तक रहती है। ये सब निश्चित समय तक ही होता है।

बाद में रवाना होना ही पड़ेगा। कौन रवाना करेगा? प्राण निकल जायेन्गे तो रवाना करने वाले बहुत है। घर वाले नहीं हैं तो नगर पालिका की व्यवस्था है। श्मसान घाट तक नगरपालिका वालों द्वारा संस्कार कर दिये जायेन्गे यदि परिवार वाले न हो तो क्यों कि आप यहाँ के नागरिक थे। इस प्रकार अपने परिणाम ही काम आयेन्गे अन्तिम क्षण तक। कितना जीवन शेष बचा है पता नहीं क्यों कि आयु कर्म जब तक है तब तक जीवन है।

उस कीड़े की भांति राग-द्वेष करेन्गे पुनः आयु कर्म बंध होगा। आप स्वयं यदि टालना चाहो तो टाल सकते हो। भगवान का हाथ नहीं। तो क्या भगवान भी धोखा देते है? कोई भी धोखा देने वाला नहीं। इस शरीर के प्रति मोह मत रखो। कोई राग-द्वेष मत रखो। इसीलिये 5-6 दिन का यहाँ यह पंचकल्याणक का कार्यक्रम रखा है। लोग आना चालु हो गये हैं। फिर हो गया - गया। ये स्वप्न जैसा लगेगा।

बाद में याद रखेन्गे। हमने देखा था। हमने सुना था। सब आये थे। सब चले गये। अब तो स्मरण मात्र रह गया। एक-आध बार

स्वप्न में भी आ जायेगा।

"अच्छी चीज को स्मरण में रखने का प्रयास करना चाहिए और बुरी चीज को भूलने का प्रयास करना चाहिए।" क्या कहा मैंने? हां अच्छे कार्य को याद रखो। रील भरकर रख लो। महाराज विहार कर गये। ये सब कुछ होगा। आप यदि जाने वाले हो तो कौन रोकेगा? समय हो गया है आने का। बोलते हो ना - अपनी - अपनी बार....। कोई भी हो एक न एक दिन जाना ही होगा। बार के दो अर्थ है - आंगन एवं बारी। अपनी - अपनी बारी आने पर अपने - अपने आंगन से जायेन्गे।

शव को भीतर रखते है और अर्थी आंगन में सजती है। फिर राम - नाम सत्य है बोलते है। महावीर नाम सत्य है कोई नहीं बोलता। हम आराम को ही राम मानते रहे। उसी का ये परिणाम है। जो जाने की तैयारी में है उसे सबका मोह छोड़ देना चाहिए। नहीं तो दुनिया आपसे मोह छोड़ देगी। कौनसा चाहिए? दुनिया मोह छोड़े वह या आप दुनिया से मोह छोड़े वह।

दुनिया से मोह छोड़ने के लिए आँखे बंद कर लो अथवा नीचे देखते रहो। मोह करोगे तो तकलीफ में रहोगे और मोह नहीं करोगे तो सब लोग याद करेन्गे। कौनसा चाहते हो? दुनिया से

यदि पुरस्कार प्राप्त करना चाहते हो तो अब यही सोचो- मैंने सब कर लिया अब दुनिया से मुझे कोई मतलब नहीं रखना है।

अब जाने की तैयारी है। मुझे ये करना- मुझे वो करना जिसे संसार में ही रहना है वो लोगों को यही अच्छा लगता है। "प्रयोजन जिससे सिद्ध हो वही कर लेना चाहिए।" करना कठिन है- कहना सरल। सही है या नहीं? अब तैयारी करना है। बिना स्याही-बिना पेपर के भी लिखा जा सकता है। ऐसे लोग दुनिया में शत-प्रतिशत नम्बर प्राप्त करते हैं। अन्तिम कार्य अच्छे से करोगे तो लगेगा बहुत अच्छा हो गया।

कौन-कौन तैयार है? बुड्ढे का हाथ बाद में युवाओं का पहले उठा। युवा यदि तैयार है तो बुड्ढे तो तैयार हो ही जायेंगे। वृद्ध लोगों! क्यों करोगे? सब हो जायेगा। रास्ता clean होना चाहिए। युवा लोग भी भावना करें प्रभु से - दद्दा का भला हो। इन्होंने बहुत कष्ट उठाया। अब अंत समय में गाफिल न हो सके। उन्हें समझाना चाहिये, ये ही कर्त्तव्य है।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

Note- संभवसागर जी महाराज जी ने कहा ये मँहगा शहर नहीं है। पूज्य आ. श्री ने तुरंत कहा शहर ही मँहगा होता है फिर मँहगा शहर क्यों नहीं कह रहे। शहर का होना एवं शहर में रहना दोनों ही मँहगे॥

"जबलपुर वालों के लिए"
17-3-18 "तिगड्डा से चतुर्मुखी" मध्याह्न 2.15

कुछ कार्यकर्ता जबलपुर से आये थे, हमें बता दिया। जबलपुर की शिकायत आयी थी - जबलपुर के बन्धुओं द्वारा। सुनना है तो सुनो। कोई भी कार्य में सहयोग नहीं दे रहा है - शिकायत है। इसलिये हमने कहा - दूसरे से सहयोग आये अभी यहाँ हजारों की जनता है। सहस्कूट के बारे में सोचना नहीं करना है। आपको छाया भी मिली है - बैठने के लिए जगह भी मिली है।

शिकायत आयी क्यों? सहयोग क्यों नहीं देते? बताओ। उनको बहुत खुशी होगी कि हो गया? धीरे-धीरे उठते जाओ - करो और इधर से निकलते जाओ। खुशी-खुशी होना चाहिए। सबसे उत्तम धर्म श्रावक का दान और पूजा है। दान में देकर / धर्मकार्य में देकर उसे ज्यों का त्यों बनाये रख सकते हो। आप ज्यादा खेंचेंगे तो महाराज आयेंगे नहीं। ध्यान रखना।

जबलपुर वालों को जितना हम जानते हैं कोई नहीं जानता। सही बताओ। सही है या नहीं। जब लम्हेटा से आये। लम्हेटा का क्या हुआ? मुझे बताओ वहाँ बैठे हैं। शक्ल देखकर याद आ जाती है। उस समय तो इतना किया, कैसे होगा? ये सब कार्य धर्म को साथ रखने से ही होता है।

[दो चरणों में हुआ प्रवचन]

खाली घर शैतान का और भरा घर ..... । यह आधा-पौन घण्टा इस तिगड्डा पर, प्रभु से प्रार्थना करता हूँ ताकि चतुर्मुखी हो जाये। प्रभु के समोशरण में बैठे रहें। पौन घण्टा यह पवित्र काल सहस्त्रकूट की प्रतिमाओं के बारे में ही व्यतीत हो गया। आप लोगों ने प्रतिमा दी है द्रव्य की विवक्षा में, जिन्होने भाव किये उन्हें कभी भी कम नहीं आँक सकते हैं। भाव नहीं लगते तो द्रव्य-क्षेत्र-काल का कोई मूल्य नहीं हो सकता। हजारों व्यक्तियों के रूप में ज्वार-भाटा उठा। हमने भी सोचा सबको दर्शन दे दें।

जबलपुर वाले आये थे। हमारा भी काम हो गया। बैठे-बैठे संख्या बढ़ती गयी। कार्यकर्ता भी उत्साहित हो गये। एक-आध महिने में यूं ही करते जाइये। कुछ समय में पूरा हो जायेगा। आप लोग ऐसे ही आया करो। बिना मंगल के ही मंगल हो गया। [महंगा पड़ गया] महंगा नहीं आप ही लोगों का काम हो गया। इस तिगड्डा को याद रखीयो। डिंडोरी का तिगड्डा है। रास्ते में बैठे हैं, लगता नहीं।

आसपास के घरों की छाया में धर्मध्यान हो गया। लगभग ८५ प्रतिमा हो गयी। श्रावक धर्म में दान एवं पूजा ही प्रमुखता से है। इसके द्वारा कर्मों की निर्जरा होती है। कर्म निर्जरा करना है तो यही भाव किया करो। इसमें भी मोहनीय कर्म की निर्जरा प्रमुख रूप से होती है। आसान काम नहीं है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

रविवार

18-3-18 "काष्ठ बनें - कंकड़ नहीं" प्रातः 9.20

आप लोगों ने कई बार यह देखा होगा, अथवा सुना होगा अथवा पढ़े-लिखे होने के कारण पढ़ा होगा कि छोटा सा भी कंकड़ पानी में छोड़ दिया जाये तो वह डूब जाता है और यदि मनोमन - टनोटन एक काष्ठ का खण्ड उस पानी में छोड़ दिया जाये तो वह तैरता रहता है। जब कि उसका भार टनोटन मनोमन है। वह डूबता क्यों नहीं? भार होने मात्र से डूबता नहीं किन्तु जो व्यक्ति लघुत्व का भार उठाता है / स्वीकार करता है वह डूबता नहीं।

इसीलिए कंकड़ छोटा होते हुये भी डूब जाता है। महाराज इसका क्या अर्थ होता है, ऐसा कोई प्रसंग तो दिख नहीं रहा है। सुनो हम प्रासंगिक ही बोलते हैं, बिना प्रसंग के तो मैं कोई बात करता ही नहीं। धन यदि थोड़ा भी हो किन्तु उससे मोह होता है वह थोड़ा परिग्रह पुत्र-कलत्र-धनादि डूबो देता है और यदि वह परिग्रह बहुत मात्रा में भी रहता है पर उसके प्रति लगाव नहीं रहता, कहने को है कि उसके पास तो खूब भरा है किन्तु वह उससे पृथक रहता है तो कभी डूब नहीं सकता।

इसलिये थोड़ा परिग्रह वाला भी डूब सकता है, और बहुत परिग्रह रखने वाला भी तैर सकता है। तीनलोक के भी पार जा सकता है। इस संसार महासागर को भी पार कर सकता है। आपको कौनसा करना है? तैरना है? पार जाना है या गठरी साथ ले जाना है? समझ

में आ गया आपको?

अभी - अभी एक बात आपके कान में आयी। शब्द था - U.S.A.। U.S.A का मतलब जानते हो? युनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका। मतलब युनाइटेड है, संग्रह किया हुआ है। मूल नहीं है जबकी भारत मूल है - संग्रह किया हुआ नहीं है। जहाँ बहुत देश मिलकर एक हो गये वह है अमेरिका। अमेरिका की संस्कृति सबकी मिली हुयी है। ये बात अलग है कि अर्थ की अपेक्षा आज वह सबका अगुआ हो गया। भारत छोटा सा देश होते हुये भी इसका वैभव अलग है।

उस व्यक्ति ने यही बताया। अभी पिता-पुत्र दोनों आये हैं। 22 को शादी है और 23 से पंचकल्याणक शुरु हो रहे हैं। ये भी अद्भुत योग मिला है। पत्नि अभी कहाँ है पता नहीं। योग अच्छा मिला है। कितनी निरिहता है और कितना राग है, यह जानना आवश्यक है। गृहस्थ अवस्था में प्रवेश हेतु एक साधन है। इसकी लिमिट/सीमा होना आवश्यक है। यह लिमिट/सीमा तैरने के लिए ही हुआ करती है, डूब जाये ऐसा नहीं है।

कंकड़ का स्वभाव डूबना एवं काष्ठ का स्वभाव तैरना तथा दूसरो को भी तैराने का होता है। बड़ी-बड़ी नाव इसी काष्ठ से बनी होती है। दौलतराम जी ने उपल नाव की बात कही, वह स्वयं भी डूबती है और दूसरों को भी डूबो देती है। यह भारतीय संस्कृति का काम नहीं। भारतीय संस्कृति तो डूबने से बचाने वाली है। आज का यह प्रासंगिक उदाहरण याद रखोगे। अपने स्वभाव को काष्ठ के समान बनायें।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

18-3-18 "महापात्र के सान्निध्य में हुआ पात्रचयन" शाम - 5:00

सुनो! हम बोली नहीं बोल रहे हैं। अब सुनो, चातुर्मास समाप्त हो गया था। उस समय शरीर - आकस्मिक कुछ समय के लिए हड़ताल करेगें। करना है तो करलो - समय है। समय पूर्ण हो जायेगा हम देख लेंगे। हुआ ऐसा कि आकस्मिक पिच्छिका परिवर्तन रखा। परिवर्तन हो जाता है तो...। पुरानी पिच्छी लेली, नई पिच्छी देदी। संघ ने कहा- पुरानी देना है। नयी अभी है नहीं।

आ जायेगी तब विहार में लेते चले जाना। सामयिक किया नहीं कि नयी पिच्छिका आ गयी। श्रावक को देना है - ये सब औपचारिक कार्य है। तैयार हो गया प्रवचन भी थोड़ा सा हो गया और भगवान महावीर स्वामी की जय और विहार हो गया। विहार किस ओर हुआ? [डोंगरगाँव की ओर] डोंगरगांव डिण्डोरी की ओर ही पड़ता है। एक - एक पंचकल्याणक होते हुये यह लगभग पांचवा पंचकल्याणक है।

मध्यप्रदेश का पहला कह रहे हो। सीमान्त है। म.प्र. एवं छत्तीसगढ़ की सीमा पर है डीण्डोरी नगर। अमरकंटक जाते हैं, रास्ते में (कबीर - चबुतरा) 2-3 कदम नीचे चले कि छ.ग. लग जाता है। यहाँ तक हम आ गये। आ गये तभी तो होगा) लोग आते थे - महाराज कब होगा? होगा माला करते रहीयो। यह उस अखण्ड माला का ही परिणाम है। मुद्दुल

के अनुसार प्रथम मंगलाचरण हो गया।

इस पंचकल्याणक में मनेन्द्रगढ़ एवं विदेश (दुबई) से भी मूर्तियाँ प्रतिष्ठा हेतु लारहे हैं। और यह पात्रों का चयन भी सानन्द-सोत्साह सम्पन्न हो गया। माता-पिता की बोली तो होती नहीं। अब हमारे सामने बात आती है- हमें संकोच होता है। हमें बनाओ - हमें बनाओ।। व्यक्ति सबको बना दिया पर द्रव्य की अपेक्षा किसी एक को घोषित कर दिया। बना तो दिया पर खलबली मच गयी। अल्प समय में ही कोई पद बचा नहीं, ध्वजारोहण का भी पात्र चयन हो गया। अब ब्र० जी जैसा कहेंगे वैसा ही करेंगे।

कोई भी कार्य कठिनाई से ही सम्पन्न होता है, उसी का नाम है "श्रेयांसि बहु विघ्नानि" विघ्न आते हैं तो टल भी जाते हैं। सभी मिलकर कार्य करेंगे। इसे देखकर आगे की पीढ़ी भी अपने कर्त्तव्य पर नजर डाले इससे उनका भी भविष्य उज्जवल होगा। ये प्रवाह जैन धर्म का किसी का घरेलू नहीं है, अनादि से चला आ रहा है।

महापुरुषों का चयन भी किस ढंग से किया जाता है। विधी नायक का चयन भी आपने किया। हमारे सामने समस्या आ गयी थी। तीन-चार तैयार हो गये। हमने कहा थे तो सरकारी बोली में ही तय होगा।। बोली ही ऽऽ तक पहुंच गये। विधी

एक को ही अवसर मिल सकता है।

तीर्थंकर अपने परिवार में इकलौते ही होते हैं। ऐसे पुण्यशाली होते हैं जिनकी प्रत्येक क्रिया स्वर्ग के देव ही सम्पन्न करते हैं। आप लोग यहाँ के वासी होकर भी स्वर्गवासी बन गये और इस कार्य को सम्पन्न करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।ॐ

राष्ट्रीय पक्ष - 19-3-18

पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने आ० श्री के डिंडोरी में दर्शन किये। वे नर्मदा परिक्रमा में पैदल चलते हुये आये। आ० श्री ने कहा- चुनावों के समय पक्ष एवं विपक्ष हो बाद में जो भी पार्टी आ जाये दोनों मिलकर राष्ट्र के हित के बारे में ही सोचे। "पक्ष - विपक्ष का त्याग कर राष्ट्रीय पक्ष को ध्यान में रखकर काम करें।" युवा पीढ़ी को प्रोत्साहन एवं उत्साहित करने की बात दिग्विजयसिंह ने कही। हथकरघा के बारे में भी बहुत कुछ चर्चा हुयी। उन्होने कहा- गाँधी जी के विचारों को सबके सामने लाने एवं अपनाने की जरूरत है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाने हेतु इस तरह के स्वावलम्बन पूर्ण कार्य से जुड़कर/श्रम करके आगे बढ़ सकता है। वे स्वयं भी पोली खादी (उस-1ऊ) पहने थे जो हेण्डलूम से ही बने वस्त्र थे।

19-3-18 "आओ हँसाये भारत माता को" प्रातः 9:20

अभी आपके सामने कुछ विचार रखे। (जोगदलपुर के बाबाजी) वैसे प्रतिदिन की भांति प्रवचन के पश्चात् कुछ बातें करने की होती थी। उसके साथ आज मुख्यमंत्री महोदय (दिग्विजय) अभी वो अपने आपको मुख्यमंत्री नहीं मानते हैं। जो अपने कार्यकाल में कार्य किये उसे तो भूल नहीं सकते है। वह कार्य आपका था या नहीं, इतना तो याद रखना ही पड़ेगा। आपने कामना की कि महाराज जी को लम्बा जीवन मिले। इस जीवन में कितनी भी आयु क्यों न मिले वह शाश्वत नहीं।

हाँ! मैं उस लम्बी-चौड़ी अवस्था तक पहुँचने का प्रयास कर रहा हूँ। इससे ज्यादा जीवन का आनन्द नहीं। आपकी मांग पूर्ण होना चाहिए। हमारी लम्बी यात्रा की अपेक्षा छोटी यात्रा में भी वो काम कर सकते हैं। जैसे - कुशाग्र विद्यार्थी होता है उसे भी परीक्षा में 3 घण्टे ही प्राप्त होते हैं। आप सुन रहे हो? दोनों कान से सुन रहे हैं या एक कान से सुन रहे हैं? प्रत्येक व्यक्ति को अध्ययन के लिए भले ही एक वर्ष मिले किन्तु परिक्षा हेतु तो 3 घंटे ही मिलते हैं।

इन 3 घण्टों में ही प्रतिभाशाली छात्र के पास स्वर्णपदक जीतने की योग्यता होती है। बहुत से व्यक्ति आते हैं- आशीर्वाद की कामना से। ऐसे व्यक्ति आये। क्षमता होती है, पर बंधते नहीं।

लम्बा-चौड़ा बहुत जीवन मिल जावे पर यदि उपयोग नहीं किया तो क्या लाभ?

स्वर्ण पदक - रजत पदक हासिल करने की योग्यता है किन्तु प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं। इसलिये कि हम दूसरे से ज्यादा करें। इस अपेक्षा में वह तो 33 नम्बर में रुक गया आप 34 में उससे ज्यादा प्राप्त कर लिए। आज Top Ten की बात आ गयी उन 90 का क्या होगा। नहीं। मैं Top Ten से भी ज्यादा क्षमता उन नीचे वालों में मानता हूँ। आपके पास मात्र एक अंक है, उनके पास अखण्ड (9) संख्या है।

प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता विकसित हो। इसके लिए आप अपने आप को विकसित करते चले जाये। दुनिया से जुड़ने का प्रयास करें। प्रतिभा से प्रतिभा जुड़ती चली जाये फिर पहुँचाने की कोई आवश्यकता नहीं। कम समय में 100 को छुना हैं। हम एक-एक की बात नहीं 99 की भी बात नहीं वह भी अधुरी हैं। हमारे पास 100 को छुने की क्षमता है या नहीं? इसीलिए तो 100 रखा। इसीलिए जो परिश्रम करने वाला रहता है, एक और जोड़ देता है। इसकी प्रतिभा ने आँखे खोल दी।

हमें भी अपनी आँखे खोलने की आवश्यकता है। भारत में रहते हो यहाँ तो सभी खास है। भारतवासीयों आज न खास है - न हास है। सब रुदन कर रहे है। मैं एक छोटी सी बात कह रहा हूँ। छोटी

को भी मैं चोरी की समझता हूँ।

माँ काम कर रही है। बच्चे उद्यम करने लगे। माँ को काम नहीं करने दे रहे थे। माँ उठी वे सब बच्चे भागने लगे 2-3 भाग गये एक जो भाग नहीं पाया माँ ने पकड़ा और तमाचा लगा दिया वह रोने लगा। प्रतिभा प्रत्येक के पास, समझ प्रत्येक के पास, जीवन प्रत्येक के पास है। उद्यम वाले तो भाग गये। छोटा पकड़ में आया आवेश में तो थी ही। अब माँ अपने लड़के को चुप करती है। माँ की आँखों में पानी आ जाता है। वह बच्चा रोना बंद कर देता है।

भारतवासियों भारत माता भी ऐसे ही रोती है। माँ रोती कब है? जब बच्चे उसका कहना नहीं मानते हैं। ऐसे कार्य करो सामने वाला व्यक्ति के भी भीतर तक पहुँच जाये। फिर आपको बताने की आवश्यकता नहीं। भारत - प्रतिभारतः वह प्रतिभारत बने। प्रतिभा मतलब बुद्धि में लीन होना। कर्त्तव्य का बोध होना। बोध प्राप्त होने के उपरान्त चलना प्रारम्भ कर दें। चलना प्रारम्भ करेंगे तभी जीवन की यात्रा प्रारम्भ होगी।

मात्र गरीबी- गरीबी चिल्लाने से कुछ नहीं होगा। पेट के कारण रोना होता है। वो यदि अच्छे से भर जाये तो - - और कल के लिए विश्वास हो जाये तो चिन्ता किस बात की। प्रबन्ध यदि वर्षों का हो जाये तो चुहे वगैरह ही खा-पी कर

पुरा कर देंगे। क्या करोगे?

इसलिये उतना ही उत्पादन करो जितना आवश्यक है। ज्यादा है तो उसे दे दो जिसे आवश्यकता है। पहले तो विमान आदि का प्रयोग करते थे, इसबार हमारी जैसे पदयात्री बनकर आये हैं। ललाट पर टीका भी लगा है। अब भीतर की बात करने लगे हैं, पहले देश की बात करते थे। ध्वनि में प्रतिध्वनि अपने आप आती है। जब पैरों में छाले आयें फिर चलते हैं तो अपने आप ही उछाल आता है।

ज्यादा कुछ नहीं करना जहाँ रह रहे हो, वहाँ यदि कोई रो रहा है उसके लिए शुभ तरंगें/शुभ भावना प्रेषित करो। इसके लिए अपनी सोच को उसी तरह की बनाना आपेक्षित है। सब जीवों के प्रति हम वैसी भावना करें। सब में हम तो आ ही जाते हैं। हम तो बिन्दु एवं सिन्धु दोनों के उपासक हैं। सागर का अस्तित्व बिन्दु बिना नहीं। बूंद सूख जाती है किन्तु सागर (सिन्धु) कभी सूखता नहीं। बूंद-बूंद को मिलाने से ही सागर बनता है।

वर्तमान युवा शक्ति में यह अवधारणा आ गयी। आपकी कृपा से ही आ गयी होगी। (हथकरघा के सम्बंध में) आज युवा पीढ़ी की जिज्ञासा शान्त नहीं हो रही है। करने योग्य क्या है? ये संकेत दे दें तो गोद का लड़का भी रोता

हुआ चुप हो सकता है।

उसे शान्ति से पुचकारके सही दिशा में लगाने का प्रयास करो। जीवन छोटा भी बहुत महत्वपूर्ण है यदि कुछ कर सको तो। आप चले भी जाये तो, जा ही नही सकते जनता की पकड़ से, उनके हृदय में आपने यदि वास कर लिया तो फिर आप कहीं भी रहो, किसी भी दिशा में हो तीनकाल और तीन लोक में कहीं भी रहो। इसको याद जरूर रखीयेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

20-3-18 "जैन धर्म की व्यापकता" प्रात: 9.20

एक तो दूसरे के आश्रय से कुछ अच्छा लगता है, कुछ पुष्टि मिलती है और कुछ आगे कदम बढ़ जाते हैं। जैसे - घी के सेवन से बुद्धि बढ़ती है, तृप्ति होती है और भी कई परिणाम निकलते है लेकिन यह बहुत सीमित कार्य है - व्यापक कार्य नहीं। घी खाने से ही पहलवान बनते है, ये धारणा छोड़ दो। अकेले घी खाओगे बीमार पड़ जाओगे। पेड़े खा लो। अकेले पेड़े खाओ बीमार पड़ जाओगे। ऊपर से कोई पेयपदार्थ मत लेओ, वो पेड़ा नही रहेगा बेड़ापार हो जायेगा।

है वह भी भोजन का अंग लेकिन स्वास्थ्य का अंग नहीं। इसी प्रकार दही है। उसे प्राय रोटी के साथ मिलाकर ही लेते है,

तभी पोषक तत्व की प्राप्ति होती है, अन्यथा नहीं।

ये तीन अलग-अलग चीजें आपके सामने रखी। ये सारे के सारे गौ-रस के रूप में हैं। इन सभी को हम दूध के रूप में स्वीकार करते हैं। दूध अपने आप में पूर्ण भोजन है। इसे सभी लोगों ने शाकाहार के रूप में स्वीकार किया है तथा सभी वर्ग के व्यक्ति चाहे बालक हो - युवा हो अथवा वृद्ध हो, पहलवान भी सेवन कर लेता है। कोई बाधा नहीं। इसे लेने के बाद दूसरी किसी चीज की आवश्यकता नहीं होती। बस दूध पीया स्वस्थ कर लेते हो।

इस प्रकार आज का जन्मा बच्चा भी दूध रूपी गौ-रस का सेवन करके हष्ट-पुष्ट हो सकता है/होता है। किन्तु जिह्वा इन्द्रिय के वश होकर वह घी-पेड़ा-दही के रूप में उस दूध को लेता है। दूध से कोई बीमार नहीं होता अपितु उसकी विकासोन्मुखी यात्रा होती चली जाती है। ठीक धर्म भी ऐसा ही करो, जिससे स्व का भी और पर का भी कल्याण हो। इसीलिये धर्म को स्व-पर कल्याणकारी मानते हैं। व्यापक धर्म होता है। सभी के लिए होता है।

तीर्थंकरों ने ऐसा ही किया सबका कल्याण किया। ऐसा नहीं कि मैं तीर्थंकर बनूंगा और अपना ही कल्याण करूंगा। सुन रहे हो? स्वार्थ तो उनमें है ही नहीं। दूध पी रहा है, देख लिया। अच्छा लगता है। सभी करते हैं।

मुनिमहाराज भी इसी प्रकार से करते है।

आबालगोपाल सभी धर्म को धारण करते है। सामान्य व्यक्ति भी- विशेष व्यक्ति भी सब आ गये। उस अहिंसा के माध्यम से स्वयं का भी और पर का भी उपकार हो गया। "जैन धर्म व्यापक है, गोरस की भांति।" स्व की भी एवं पर भी पुष्टि करने वाला है। गोरस तुल्य वह स्वपर कल्याणकारी जैन धर्म होता है। अब आप हाथ में हाथ रखने से ही धर्म होता है- ऐसा नहीं मानना।

इस प्रकार के कल्याणकारी कार्य (हथकरघा आदि) से भी धर्म होता है। उन तीर्थंकर प्रभु की वर्षों तक विहार यात्रा चलती है। भले ही देव लोग बाजा बजाते हो। बाजा बजाने से ही धर्म हो ऐसा नहीं। पर बाजा बजाया जाता है, सब सावधान हो जाये। डीण्डोरी में भी डीण्डोरा पीटा जा रहा है। देखो! डीण्डोरी का नाम लेते ही तालीयाँ बज गयी। धर्म का डीण्डोरा कहो तो ठीक- कहीं अपना डीण्डोरा मत पीटने लग जाना। सुन रहे हो कि नहीं?

एक- आद्य वाक्य से भी पर्याप्त उपदेश मिल जाता है। तो दूध की भांति धर्म को भी व्यापक बनायेंगे ये ही मेरा उद्देश्य था। इतना ही पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

सुवचन- अपने- आपको हीन मानने वाला कभी आगे नहीं बढ़ सकता। अब हम गरीब है-ऽ की रट लगाना बंद कर देना चाहिए।"

ॐ

21-3-18 "हव कहना है आशा सम्यक्त्व" प्रात: 9.20

आप लोगों ने उस दृश्य को नहीं देखा होगा। किसी के मुख से सुना होगा। वह मैं बताता हूँ, हाथी को संभालने वाला उस हाथी को समय-समय पर भोजन और पानी देता रहता है। फिर भी दोनों के मध्य स्नेह बना रहे क्योंकि यदि वह नाराज हो गया तो सूंड में लपेट लेगा तो अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। इसलिये बीच-बीच में लड्डू बनाकर सामने रख देता है। वह हाथी उस लड्डू को उठाकर पीठ पर मिट्टी की भांति डाल देता है, इससे लड्डू पुरा का पुरा गिर जाता है।

महावत ने उसे लड्डू दिया, उसने देखा ही खाया नहीं इसलिए मिट्टी की भांति उसे गिरा देता है। जैसे छोटे बच्चे अपने सिर पर-जेब में मिट्टी भर लेते हैं। आपने तो अच्छे नये कपड़े पहनाये परन्तु उसे ज्ञान नहीं है वह मिट्टी से खेलने लग जाता है। उसे समझदार बनाना पड़ेगा। उस महावत ने भी सोचा इसे लड्डू तो खिलाना है। उसे हाथी के प्रति बहुत प्रेम था।

अबकी बार उसने घास में उस लड्डू को मिलाकर दिया। हाथी ने बड़े चाव से खा लिया। वह समझने लगा यह घास बहुत मीठी है। महावत ने पुरा खिला दिया। उसका उद्देश्य

पूर्ण हो गया।

स्वाद कहाँ से आ रहा है, यह ज्ञात नहीं। हाँ स्वाद तो आ गया, पेट में तो पहुँच गया। ठीक इसी प्रकार शास्त्रों की बातें यदि सीधी - सीधी आपको दें, तो आप कुछ नहीं ग्रहण कर सकते। आप कहने लगते हैं- महाराज! ये तो आपही के जाने हैं। इसलिये सब बता नहीं सकते। आपको भी घास में मिलाकर दे देते हैं। महाराज जी ने जो घास खिलायी वह तो बहुत ही मीठी है। और इसी श्रद्धान के आधार पर आज नहीं कल सम्यक्ज्ञान हो ही जाता है।

महाराज ने बताया उसी के अनुसार चलता है तो यह प्रारम्भ करना ही आज्ञा सम्यक्त्व कहलाता है। जैसे- छोटा बच्चा होता है उससे कहते हो- बेटा! जैसा हम कहें वैसा ही किया करो। बस इतना कहा करो। धीरे - धीरे जब बड़ा हो जाता है तब उसे समझ में आती है कि उस हव में कितना गहरा अर्थ छिपा था। बाद में जल्दी- जल्दी हव कहना प्रारम्भ कर देता है।

इसी प्रकार महाराज ने कहा है। अभी बात को पलटना थोड़े ही है, जो कहा है वही करना है। वे बदलते ही सब बदलने लग जायेंगे। फिर बादल ही बादल रह जायेंगे - बरसेंगे नहीं। "मोक्षमार्ग में आज्ञा सम्यक्त्व ही महत्त्वपूर्ण है।" क्या कहा।

जैसी प्रभु ने आज्ञा दी, हमे शक्ति दे दो, हम भी भाव करले।

मोक्षमार्ग परोक्ष देखने का विषय नहीं वह तो श्रद्धान का विषय है। बचपन में जो कहा आज माता-पिता नहीं भी है तो भी समझ में आ रहा है। पुरा समझ में पहले नहीं आयेगा। बाद में सब समझ में आ जायेगा। जब राम-नाम सत्य है। फिर ऊपर से देख लो तो बात अलग है। वह तो शव है - मैं तो जीवित हूँ। शरीर अलग है, आत्मा अलग है। आत्मा देखने में नहीं आता।

उसे तो मात-गुरु के वचनो पर, शास्त्रों पर अथवा बड़ो के ऊपर विश्वास करके ही पाया जा सकता है। यदि अपना हीत चाहते हो तो इसी प्रकार से आगे बढ़े। इतना ही पर्याप्त है। हाथी के लड्डू को याद रखीयो यही आज्ञा सम्यक्त्व है। चलो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

संस्मरण -

बात NDA की चल रही थी। सेना में भर्ती होने के पहले सम्पूर्ण शरीर की जाँच होती है। आ० श्री जी ने कहा - भाग्योदय में जब जाँच की गयी तो पाया हाइट के अनुसार बिल्कुल सही weight, Puls Rate, B.P, Sugar आदि सभी कुछ वह था जो एक सेना में भर्ती करने हेतु आवश्यक होता है। आ० श्री जी ने कहा - मुनिमहाराज को सदैव आर्मी के सैनिक की तरह फुर्तिला होना चाहिए।

ईर्या पथ में →

जितनी विशुद्धि के साथ पाक्षिक / चातुर्मासिक अथवा सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करते हैं, उतनी विशुद्धि रात्रिक / दैवसिक प्रतिक्रमण में नहीं होती। ऐसा क्यों? जब कि प्रतिक्रमण तो कोई सा भी हो समान है। कमाई का साधन है। अतः रात्रिक - दैवसिक प्रतिक्रमण भी उतनी ही विशुद्धि के साथ करें। इससे 365 दिन का डबल 730 दिन की विशुद्धि, कोई पार ही नहीं। कर्मनिर्जरा कितनी होगी कोई पता ही नहीं।

मन - वचन - काय, कृत - कारित और अनुमोदना, नव कोटि की विशुद्धि पूर्वक हमें प्रतिदिन प्रतिक्रमण करेंगे तो असंख्यात - असंख्यात गुण श्रेणी निर्जरा क्यों नहीं होगी। अवश्य होगी। आ० श्री जी ने उदाहरण दिया - जिस प्रकार बासे बर्तन प्रतिदिन मांजना अनिवार्य है उसी प्रकार प्रतिक्रमण समय पर करना आवश्यक है। बासे बर्तन में कभी भोजन नहीं परोस सकते फिर प्रतिक्रमण कैसे आज का कल हो सकता है? नहीं हो सकता।

"व्रतों का निर्दोष पालन करना ही शुद्धोपयोग है और व्रतों में दोष लगाना ही अशुद्धोपयोग"

22-3-18 "शिक्षा देता चश्मा" प्रातः 7.20

जब आप पढ़ते हैं अथवा जब सामने देखते हैं, उस समय आप अपनी आँखो का/उनसे देखने की क्षमता का उपयोग भिन्न-भिन्न प्रकार से करते हैं। करते हैं या नहीं? [करते हैं] अच्छी बात है समर्थन तो हो ही गया। अब आगे बताते हैं। जब आँखे कमजोर हो गयी तो आप आँखो पर चश्मा लगाते हैं। आपको एक चश्मा खरीदकर दे दिया जाता है इसको लगाओ काम पूर्ण हो जायेगा। आपने उसको प्रयोग करने हेतु लगाया। ये क्या? अब तो धुंधला-धुंधला भी नहीं दिखता।

पहले कुछ दिख तो रहा था। बार-बार चश्मे को उठाया। साफ किया। पानी लगाकर पोंछकर पुनः लगाया। ये क्या हुआ? गड़बड़ हो गया। नहीं। थोड़ा सा चश्मे का ऐंगल ऐसे किया (ऊपर) दिखने लग गया। बोलो? समर्थन हो गया। चश्मा वालों! फिर देखना है थोड़ी सी दृष्टि को नीचे कर लिया ताकि चश्मा काम में आ जाये। यदि नहीं देखना है तो आँखे बंद कर ली। ईटेंशन पूर्वक देखना नहीं-पढ़ना-लिखना नहीं चाहिए। मोक्षमार्ग में इसी प्रकार कार्य करना पड़ता है।

आपको दूर देखना है दूर का दिख जाता है, निकट देखना- निकट का दिख जाता है। इसी प्रकार आपके लिए कहा गया इधर-उधर न देखकर, कषायों से बचकर आँखो का प्रयोग कम करना चाहिए। करना है तो चश्मे का

प्रयोग कैसे और नहीं करना है तो ...?

आपने एक्शन देखा। [सिर पर चश्मा]

जब देखने का काम नहीं हो रहा तो निर्विकल्प हो जाओ। आप भी और आँखों को भी निर्विकल्प कर दो। आप देखते होंगे जब कभी हिसाब-किताब में गड़बड़ी होती है प्रायः कर दुकानदार इसी तरह से करते हैं। हमें भी करना पड़ता है। जिस ग्राहक से मान लो मिलना नहीं तो उससे ऐसे कर लेते हैं। प्रारम्भ में तो हम आँखों को नीचे कर लेते हैं। बाद में धीरे से उठे। वही सही दुकानदार माना जाता है जो ग्राहक की पहचान करना जानता है।

असली ग्राहक कौन? और केवल समय को निकाल देने वाले कौन हैं? कम समय में हम देखदाखकरके सौदा कर लेते हैं। नहीं है तो कह देते हैं-देखो! इसमें हम सभी बातों से बच गये। जिससे मिलना नहीं तो आप क्या करते हो। आप देख लेना। "ग्राहक को तोड़ना नहीं जाना चाहिए।" क्यों कि एक ग्राहक चार ग्राहक को लाता है और चार को तोड़ भी सकता है। जो 10 ग्राहक जोड़ सकता है वह उतने तोड़ भी सकता है।

मामला कठिन है किन्तु हमें दोनों में समीकरण बनाकर चलना चाहिए। जब उपयोग को बाहर ले जाना पड़े तो देखकर ले जाये। नहीं तो "सायवान" दोनों हैं- "सायवान भी और सावधान भी"। सायवान आपने घोड़े को देखा होगा। उसकी आँखों के दोनों तरफ लगाम

के साथ कुछ लेगा होता है। इससे उस घोड़े की दृष्टि इधर-उधर नहीं जाती और वह सीधे तेज दौड़ लेता है। कौंधी आगे बढ़ जाता है।

आप टेंशन में कब होते हैं? जब हमारा उपयोग / ध्यान बाहर की ओर जाता है। जब उपयोग का काम नहीं हो रहे तो बस आँखों को एवं मन को विश्राम दे दें। इससे कम समय में आप अधिक निर्जरा कर सकते हैं। यह आप सभी द्रव्य - सभी क्षेत्र - सभी काल सभी भाव के साथ कर सकते हैं। सामायिक के लिए भी यही बताया गया। समय का अपव्यय न करें। श्रावकों को चाहिए जिस प्रकार चश्मे को ऊपर चढ़ा देने से आँखों को अच्छा लगता है उसी प्रकार अपने विचारों को भी कुछ समय विराम दे दो।

थोड़ा-बहुत भी संघर्ष नहीं करना है बस सावधानी की आवश्यकता है। अब आप अपने-अपने चश्मे के नम्बर संभालकर रखें। या तो ऊपर या नीचे दोनों ही नहीं तो उतारकर रख दें। वो दिखने नहीं देता है। आजकल तो कुछ लोग सोते समय भी लगाये रखते हैं, ऐसा नहीं करना। चश्मा आपके पास है किन्तु प्रयोग करना भी आना चाहिए। कैसा लगा हमारा उदाहरण? पसंद आया? आया तो चश्मे से भी ज्यादा संभालकर रख लेना।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

कुछ विशेष →

▫ दृष्टान्त - "शहडोल के I.G. एवं DSP आदि बैठे थे। आ०श्री ने कहा पानी पीना है- काई आ गयी क्या करोगे? हाथ से थोड़ा सा यूं कर दो काई अलग हो जायेगी भीतर का स्वच्छ जल दिखने लगेगा। यही दशा भारत की है। भीतर अपार क्षमतायें विद्यमान हैं किन्तु अभी विदेशी संस्कृति की काई जमा हो गयी उसे थोड़े से पुरुषार्थ से हटा दो खजाना आपके सामने आ जायेगा। भारत पुनः सोने की चिड़िया पूरे विश्व की दृष्टि में कहलाने लग जायेगा।"

▫ जैन नहीं जैनत्व की बात करें- जैन हमें सीमित करता है तो जैनत्व व्यापकता का नाम है। आप जैनत्व को सामने रखें तो सभी लोग इससे प्रभावित हुये बिना नहीं रहेंगे। तब विश्व धर्म बनने में देर नहीं लगेगी।

▫ जीवानाम् कहा जैनानाम् नहीं -

आ० उमास्वामी महाराज ने परस्परोपग्रहो जीवानाम् कहा न कि परस्परोपग्रहो जैनानाम्। आ०श्री जी ने पं० रतनलाल बैनाड़ा जी से कहा- हमें मात्र सम्यग्दर्शन की नहीं सक्रिय सम्यग्दर्शन की बात करना चाहिए। सक्रिय सम्यग्दर्शन में शिल्पकला (हथकरघा) के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को आश्रयदान देना है। सेवा/करुणा/दया के होने पर ही यह आता है। हमें प्रत्येक प्राणी के बारे में सोचना चाहिए।

▫ अहिंसा भूतानाम्....

आ० श्री जी से किसी ने पूछा आप किसी देवता की आराधना नहीं करते। उन्होंने कहा क्यों नहीं करते हम "अहिंसा देवता" की आराधना करते हैं। सबसे बड़ा देवता है अहिंसा देवता। आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने भी स्वयंभू स्तोत्र में नमीनाथ भगवान की स्तुति करते हुए इस अहिंसा देवता को परम ब्रह्म की उपाधी दी है। अतः आओ सब मिलकर उस अहिंसा देवता का आह्वान करें।

▫ वायरलेस →

डिण्डोरी में जबलपुर प्रतिभास्थली की बड़ी दीदी आ० महाराज से चर्चा कर रही थी। बैनाड़ा जी एवं पं० शीतलप्रसाद जी भी कई विद्वानों के साथ उपस्थित थे। आ० श्री ने हथकरघा हेतु एक टीम आसपास के गाँवों में भेजी थी। गाँववासी (बुनकर) पूर्व से ही इनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। दीदी जी ने कहा आ० श्री आपका संदेश पहले ही पहुँच जाता है। पलटकर आ० श्री ने तुरन्त कहा वो "वायरलेस" है। हमने कहा इसी लिए राष्ट्रपति जी एवं प्रधानमंत्री जी भी आप श्री के चरणों की वंदना करने आये। गुरुजी का जो मिशन है भारत को भारत बनाना उस हेतु जो सोचते हैं वह बात ऊपर तक पहुँच जाती है, कैसे? एक ही कारण है- वायरलेस।

"विशेषप्रवचन"   संगम कॉलोनी के लिए

22-3-18   "संगम मिले देवशास्त्रगुरु का"   मध्याह्न 2.30

जब हम पहली बार आये थे तो यहाँ जगह तो मिलती ही नही थी। ऊपर चढ़ो- नीचे उतरो। आपके जबलपुर से भी अभी इस प्रवास में पहली बार आये भक्ति प्रदर्शित करने के लिए, दूसरी बार कुछ विशेष संख्या में और तीसरी बार में एक कॉलोनी मात्र आयी है। अभी बीच में बोला जा रहा था कि महिलायें भी इस ओर (दान) दृष्टि रखें। भक्ति करने में सौधर्म इन्द्र बहुत तेज होता है किन्तु तीर्थंकर प्रभु का प्रथम दर्शन अपनी आँखों से करने का सौभाग्य उनको नहीं मिलता। यह सौभाग्य उनकी पत्नि (शची) को मिल जाता है।

ऐसी एक नहीं सारी की सारी शची अपनी आयु को पूर्ण कर मनुष्य बन, दीक्षा ग्रहण करके भवसागर से पार हो जाती है। 1-2 नहीं, हजारों- करोड़ों भी नहीं, 40 नील की संख्या मात्र सौधर्म इन्द्र के सामने- सामने मुक्त हो जाती है। आप सब तो ऐसे ही बैठ जाओ। आप सोचो- विचार तो करो। ये ऐसे क्षण है जिनकी तुलना और किसी कार्य से नहीं कर सकते। ये सारा का सारा भावों का खेल है। पुरुष पीछे रह जाता है- महिलायें आगे निकल जाती है।

कुछ ऐसे निमित्त होते है जो पुण्य में कारण होते हैं। निमित्त ऐसा ही जो रत्नत्रय का कारण, सम्यग्ज्ञान का कारण, वैराग्य का भी कारण हो जाता है। ऐसा ही पुण्यार्जन करें जो विषयों से बचावे

में कारण बनें।

दो प्रकार का पुण्य होता है। एक पुण्य का संचय हमें विषयों की ओर ले जाकर नरक-निगोद में डालता है, जब कि एक पुण्य विषय मिलने पर भी उस कीचड़ से जल्दी-जल्दी बाहर आ जाता है। वह इस प्रकार के वैभव को प्राप्त कर लेता है। आप लोगों को इसी तरह का पुरुषार्थ करना चाहिए। ऐसा पुण्य बाँधो जब तक मुक्ति न मिले देव-शास्त्र-गुरु का समागम। देव-शास्त्र-गुरु का संगम प्राप्त होता रहे।

सुन रहे हो? आप लोगों की कॉलोनी का नाम ले लिया बिना पूछे। जबलपुर का प्रवेश द्वार है ये। किन्तु ऐसा न समझो कि यहीं से जाना पड़ता है। बहुत सारे मार्ग हैं। लगभग 20-25 वर्ष पूर्व में विशालकाय प्रतिमा एवं मन्दिर का निर्माण हुआ था। हमें भी जाने का लाभ मिला था। आशीर्वाद तो आपके लिये था। जाना हमारे स्वयं के लिए हो गया। बहुत अच्छी बात है। अच्छा नगर बन गया, धर्म ध्यान के लिए स्थान हो गया।

उसके बाद चातुर्मास कितने हुये? ये नहीं बोलते। चार चातुर्मास आर्यिकाओं के। बार-बार बोलना चाहिए ताकि औरों की भी भूख खुल जाये। क्रम-क्रम से मिलता है। पहले आर्यिका-क्षुल्लक हो गये फिर मुनिराज का नम्बर आयेगा। हमारा चातुर्मास? उसके लिए अलग क्वालीटी का पुण्य चाहिए। अभी आप सभी ने अच्छा किया। जबलपुर

का माल जबलपुर में ही रहरहा है।

इसमें स्वार्थ है। किन्तु स्वार्थ ही सही कम है कम इस निमित्त निकल तो आये। [सहस्त्रकूट जिनालय में 16 प्रतिमा हुयी] कुछ समय का लाभ मिला। मोह कम करके निर्मोही बनने का, भगवान विराजमान करने का लाभ मिला। इसी से कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ता है। उन्हीं लोगों ने प्रेरणा दी होगी, /-२ नहीं भीड़ लेकर जाया करो।

डिंडोरी का भी पुण्य है। सुन लेते है। भाव बनाना भी पुण्य अर्जन का साधन है। जैन धर्म भाव प्रधान धर्म है। द्रव्य - क्षेत्र - काल बाद में भाव पहले होना जरूरी है। फल भी इसी आधार पर प्राप्त होता है। आपने भाव किये, इसी प्रकार होते रहें। इन्हीं भावों के साथ!

अहिंसा परमो धर्म की जय।

इर्यापथ में - संज्ञीनः समनस्काः [२५] [अ०-२]

"जो-जो संज्ञी है वे सब मन वाले होते हैं किन्तु मन वाले सभी संज्ञी हो ये अनिवार्य नहीं।" आ० श्री ने इसे कुन्दकुन्दाचार्य के "परिणत एवं विद्धु००" से और स्पष्ट कर दिया। जैसे -

(1) मोह की अपेक्षा 12 वें में परिणत आगे चलकर विद्धु००।

(2) योग की अपेक्षा 13 वें में परिणत

(3) " 14 वें में विद्धु०० [योगाभावात्]

इसी प्रकार संज्ञी को घटाना है।

23-3-18 "प्रवाह से आती उज्जवलता" प्रातः 9.20

सर्वप्रथम एक बात ध्यान में रखना है, जनता बढ़ रही है। स्थान तो उतना ही है। हमने तो पहले ही कह दिया था किन्तु चिंता न करें बस सभी को व्यवस्थित होने की जरूरत है। एक विशेष बात वह यह कि कोई भी चर्चा - भक्ति - प्रवचन के दौरान मोबाइल की घण्टी बजती है तो व्यवधान होता है। इस मोबाइल की घण्टी को बन्द रखें अन्यथा हमें प्रवचन बंद करना पड़ेगा।

भीड़ अधिक है, सभी दर्शन करना चाहते हैं, अतः श्रीफल नीचे से ही चढ़ायें। ऊपर कोई भी न आयें। जनता आती है पर व्यवस्था तो आप लोगों को ही बनाना है। इसी तरह हम बताते जायेंगे, सुनना आपको है/करना आपको है। देखो! आज से कार्यक्रम प्रारम्भ हो रहा है। द्रव्य - क्षेत्र - काल अब आपके सामने है, किन्तु इतने मात्र से पंचकल्याणक सम्पन्न नहीं होगा। पंचकल्याणक तो तब सम्पन्न होगा जब इन सबके साथ आपके भाव हो। "भाव के अभाव में ये कार्य नहीं होगा।"

ऐसा नहीं कि भावों को तो भीतर रख रखा है। भावों में उज्जवलता होना चाहिए। उल्लास सदैव बिखरता रहे। तब देखो, फिर "द्रव्य घटिया भी रहे यदि भाव बढ़िया है तो कार्यक्रम भी बढ़िया सम्पन्न होगा।" इतना बड़ा आयोजन है सम्भव है कार्यकर्ताओं पर भीड़

तो पड़ेगा, हमने पहले ही कहा था।

आप अपना कार्य करते जाओ, जनता तो कहती रहती है। यह तो समीक्षा की पद्धति है। आप उस ओर न देखें। हाँ ऐसा काम करें कि सभी लोग प्रशंसा से देख सकें। प्रत्येक व्यक्ति इसमें योगदान दें। आनंद का अनुभव करें। कोई भी काम हो उसे आगे बढ़ाने की कोशिश करें। सभी जानते हैं भोजन बना है किन्तु तृप्ति अपने-अपने परिणामों पर आधारित है। आपके परिणाम ऐसे बनें कि इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का आनन्द ले सकें।

एक छोटा सा उदाहरण देकर बात पूरी करता हूँ। क्यों कि समय ज्यादा हो गया। समय तो उतना ही है। घड़ी को हम रोक नहीं सकते हैं। कुछ लोग समय ले लेते हैं, कुछ को समय देना भी पड़ता है। [आज शास्त्र भेंट नहीं हुआ] ये शास्त्र (मैं) ही तो बोल रहे हैं। जो है उसे समझ लो। कहाँ-कहाँ तक भेंट करेंगे। फिर भी, वो भी एक कड़ी है आप कार्यक्रम कर रहे हैं। आपके भावाभिव्यक्ति की एक कड़ी है।

तो कह रहा था धर्म का प्रवाह बहुत ही उत्तम प्रकार (ढंग) से बहकर आया है। उसका जीवन सौभाग्यशाली है, जो इसका उपयोग करें, नहीं तो बहकर निकल जायेगा। आज कार्यक्रम प्रारम्भ हो रहा है। अब तो ये दिन बहुत जल्दी-जल्दी निकल जायेंगे, आपको पता तक नहीं चलेगा। मात्र रील / कैसेट के रूप में स्मरण में

रह जायेंगे।

ये तो नदी का प्रवाह है। नदी प्रवाह का उपयोग कई प्रकार से होता है कोई स्नान करता है तो कोई गाय आदि जानवर पानी पीकर उपयोग कर रहे हैं, कोई कपड़े धो रहा है, कोई धानआदि धो रहा है। आपको लगता है इतना पवित्र/पावन जल है उसको गंदा कर रहे हैं। लेकिन 2-3 कदम आगे जाकर देखते हैं उसका वह उज्जवल प्रवाह ज्यों का त्यों है। प्रवाह होने के कारण उसका वह जल बिल्कुल साफ (धवल) बह रहा है। कोई उसे भर भी रहा/छानकर पी रहा है/जा रहे हैं।

हमारा भी यह प्रवाह यदि सब लोग बनाये रखेंगे तो सभी को लाभ मिलता चला जायेगा। एक-एक क्षण का जो लाभ ले रहे हैं। जितनी शान्ति से ग्रहण करके आगे बढ़ाते जायेंगे उतना ही आनन्द प्राप्त करते चले जायेंगे। नहीं तो कषाय के भाव तो चलते ही रहते हैं। प्रतिकूलता एवं अनुकूलता आप पर निर्भर है, आपको कहाँ तक गौण करना है। नदी के प्रवाह को याद रखना।

आगे का कार्यक्रम ब्र. जी ने बता दिया होगा अथवा बतायेंगे उसी अनुसार समय पर सम्पन्न करना है। एक ये भी ध्यान रखें- जिस व्यक्ति को मंच पर बुलाते हो उसे पहले ही पास में बैठाकर रखें अनावश्यक भीड़ न करें। इससे समय की बचत हो जायेगी। अन्यथा आप नाम बोल देते हैं वह अंत में बैठा है, अब कैसे कर पायेंगे? सब

मिलकर कार्य सम्पन्न करें।

उपयोगिता एवं अवसर का ध्यान रखें। अवसर के अनुसार करें तो कार्य अवश्य ही सम्पन्न होता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

संस्मरण -

(1) प्रतिभास्थली जबलपुर की दो बहनें प्रतिभास्थली के हथकरघा से बने वस्त्र आ०श्री जी को बता रही थी। बहुत बारीक काम किया गया और उन साड़ियों पर जरी का कार्य भी था। पं० बैनाड़ा जी एवं शीतल प्रसाद जी आदि उपस्थित लोगों ने भी बहुत प्रशंसा की। उन वस्त्रों को देख सभी आश्चर्यचकित थे। तभी दीदी जी ने बताया की ये वस्त्र किसी पढ़े-लिखे ने नहीं अपितु पिण्डरई की दो बहनें जो गूंगी एवं बहरी थी उन्होंने अपनी कला के माध्यम से तैयार किया। आ०श्री ने कहा इंजीनियर भी उनके सामने फेल है। उन्होंने कहा मैं शिक्षा इसी को मानता हूँ। सक्रिय सम्यग्दर्शन का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है हथकरघा। आश्रय दान देकर हजारों लोगों को अपने पैरों पर खड़ा कर रहा है। वे दोनों बहनें बहुत प्रसन्न है।

2. गाडासराई की बात है, आ०श्री जी का तख्त गलत दिशा में रखने से सूर्य की रोशनी पेट पर पड़ रही थी। तुरन्त तख्त दूसरी दिशा में रखने लगे तो गुरुजी ने कहा - "दिमाग चलता तो है, चलाने वाला चाहिए" सभी महाराज हँसने लगे गये।

ध्वजारोहण   डिण्डोरी पंचकल्याणक [23-29 मार्च]
23-3-18   "हवा बनो - ध्वजा नहीं"   मध्याह्न 4.00

समय पर मांगलिक दिवस को यह मांगलिक कार्यक्रम ध्वजारोहण हुआ। आप लोगों ने ध्वजा को देखा। ध्वजा किसके द्वारा फहराई जाती है? सोचकर जवाब देना। तो ध्वजारोहणकर्ता द्वारा कुछ नहीं होता? ब्र. जी ने कहा ध्वजा नैऋत्य दिशा की ओर गयी। नैऋत्य की ओर ही क्यों गयी? स्पष्ट है हवा के माध्यम से उसी ओर गयी। हवा को किसी ने देखा? किसी ने नहीं देखा। ध्वजा को देखा जा सकता है किन्तु हवा को आँखों का दृश्य नहीं बना सकते।

इसी प्रकार अब एक हफ्ता सबकुछ भूलकर कार्यकर्ता हवा की तरह काम करेंगे। उनका कार्य ध्वजा की तरह होगा। "कर्ता की ओर मत देखो कार्य की ओर देखो।" यह एक सप्ताह मिला है, जो भी कार्य आपको मिला है उसे पूर्ण निष्ठा से करें। अपने पद के अनुसार कार्य करें। बाद में करना चाहोगे तो कुछ नहीं करोगे मात्र हल्ला करोगे और कुछ नहीं। बहुत प्रतीक्षा के बाद ये घड़ियाँ मिली हैं। इस बात को भूलना नहीं।

भूलना आत्मा का स्वभाव है फिर भी इच्छा करें की भूलना नहीं हो। हमें समय से पूर्व ले आये, कहाँ बैठना है? जहाँ कहोगे बैठ जायेंगे। समय पर संकेत मिल जाये तो ठीक रहेगा। अपना समय को छोड़ना होता है, इस तरह से तो हमें मंहगा पड़ेगा। वहाँ से आना। R.M.

फेर जाना भी उसके लिए भी समय देना होगा।

समय पर प्रतिक्रमण - वंदना आदि भी करना है। आप लोगों की तरह हमें भी समय निकालना पड़ता है। जिस प्रकार हवा आजु-बाजु देखती नहीं, इसी प्रकार कार्यकर्ता भी कौन है - क्या है कुछ न देखकर काम करें। आज मंगल ध्वजारोहण हो गया। ब्रा. को भी कहेंगे - ज्यादा समय न लगायें। जितना आवश्यक उतना ही लगायें। शुद्धि के साथ मंत्रों का उच्चारण हो। अच्छे ढंग से हो। अशुद्ध पदार्थ के साथ न आयें, ठीक नहीं होता।

जो कुछ भी अमंगल घटनायें घटती है, वे सब अशुद्धि के कारण ही घटती है। अब ये मण्डप बन चुका है। आप भक्त बनकर ही बैठे और कुछ भी बनकर नहीं। भक्ति का प्रभाव युगो-युगों तक प्रभाव पड़ेगा। भाव पूर्वक किया कार्य जब तक मुक्ति नहीं तब तक कार्य करता है। संघ से भी कहुँगा कि वे भी समय निकालकर सबको अनुग्रहित करते रहें। संघ को निमन्त्रण मिला है, मुझ अकेले को नहीं, इसलिए सब से कहुन्गा।

इस डिण्डोरी में पहले भी बहुत बार आये और गये किन्तु इस बार विशेष रूप से हम डिण्डोरी के लिए ही आये। इतना ही!

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

गर्भकल्याणक[पूर्वार्ध]

२५-३-१४ "बीज बोओ मिट्टी में, पत्थर पर नहीं" प्रातः ९.२०

सब लोग अपनी-अपनी मांग करते हैं, महाराज हमारे यहाँ आ जायें। तो भगवान के लिए भी प्रार्थना करो ना। कि हे भगवन्! आप भी हमारे यहाँ आ जायें। इसमें रहस्य यह है कि हम भी वहीं पहुँच जायेंगे। यह सुविधा होगी तो/ऐसी भावना करते हैं तो सारे के सारे देश-विदेश के लोग आपके यहाँ आ जायेंगे। अभी इटारसी वालों ने मांग की। मैं उनसे यह पूछना चाहता हूँ कि क्या सारी की सारी गाड़ियाँ इटारसी रुकती हैं? नहीं रुकती। इसी तरह फिर हम क्या करें?

आप सब प्रार्थना करो, केन्द्र से अनुमती मिल जाये तो गाड़ी रुक सकती है। दूसरी बात सारी की सारी गाड़ी आ भी नहीं सकती। हाँ! विशेष प्रार्थना हो तो आ सकती है। भावना करना चाहिए। तपस्या करना सीखो। जल्दी-जल्दी खा लें, ऐसा नही होता है। जहाँ बहुत भूख लगी हुयी है। वे भी दाना-पानी के लिए अरिहंत-सिद्ध करते हैं। भगवान को बुलाना है तो क्या करना चाहिए? ये सीख लेना चाहिए। पहले से ही संयम की तैयारी करो।

शास्त्रों में हम लोगों के लिए आता है कि "साधु को वहीं जाना चाहिए जहाँ संयम का स्वागत हो।" नहीं तो ऊपर-ऊपर से विमान चले जाते हैं, वैसा ही होता है। अनादिकाल से ऐसा ही हो रहा है। आप बुलाना तो चाहते हैं पर उपयोग नहीं तो साथ होकर भी क्या करोगे? वर्षा होती है यदि मिट्टी हो तो वह फूलकर नम

बन जाती है किन्तु पाषाण होतो... ।

टौरिया होती है। जानते हो टौरिया क्या है? बुंदेलखण्डी शब्द है। सागर के पास है लाल टौरिया दूसरी दिशा में चना टौरिया। टेकरी भी कहते हैं। पहाड़ पर रहोगे तो खूब वर्षा भी हो तो भी एक दाना भी नहीं होगा और धरती पर यदि पानी बह भी जाये तो भी तपी हुयी धरती शान्त हो जाती है, फूल जाती है और उस फूली धरती में बीज अंकुरित हो भूखे-प्यासे लोगों को शान्त करने की क्षमता धारण कर लेती है। ऐसी ही धरती का निर्माण करना है। ऊपर से वर्षा होकर अंकुरित दानों से सबके भण्डार भर जाते हैं।

ऐसी ही तपस्या भगवान ने की। बरसातें चली जाते हैं, पूरी धरती शोभान्वित हो जाती है। कभी भी किसान फसल को ताला में बंद नहीं करता। बंद कर भी दे तो एक-दो साल तक तो ठीक रहती है, तीसरी साल उसमें इल्ली / घुन पड़ जाती है। अब न उसे खा सकते हैं न किसी भूखे को दे सकते हैं। आपके यहाँ महोत्सव हो रहा है, इसका उद्देश्य एक मात्र जो कर्म बंधे हुये हैं उनको काटने का होना चाहिए।

शरीर न मिले इसके लिए दोबारा अपराध नहीं करेंगे। शरीर तब तक मिलेगा जब तक विषयों की ओर ही दृष्टि रहेगी। अतः पंचेन्द्रियां विषयों से हटकर इस शरीर से खेती करो की दोबारा फिर कभी खेती करना ही न

पड़े।

आज यह गर्भकल्याणक का पूर्वार्ध है। मध्याह्न में यदि समय मिला तो अपनी बात को आपके सामने रखूंगा। अभी इतना ही कहना है, इन महत्त्वपूर्ण क्षणों में अपने आपको इतना संस्कारित करोगे तो एक दिन हमें भी अव्याबाध सुख की प्राप्ति होगी। समोशरण तो आता है और चला जाता है पर लाभ लेने वाले लाभ लेकर अपने जीवन को धन्य करते हैं। धन्य का मतलब पवित्र करते हैं।

धन्य का मतलब खाना-पीना-सोना नहीं। आप इसी प्रकार से इस क्षणिक शरीर का उपयोग करलें नहीं तो मिट्टी में मिल ही जाना है। इसका सदुपयोग करना ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है। आप सभी से कहना है इन पांच दिनों में एक-आध बार भोजन ले लिया और पूरा दिन भक्ति-भाव/संस्कारित करने में लगा दिया। कितनी बार लेते हैं [भोजन] ब्र. ने नियमावली तो बतायी होगी। शाम को अल्पाहार लेते हो या कल्पाहार। कल्पाहार में वो ही-वो ही होता है।

अभी दशलक्षण नहीं ये विलक्षण दिन हैं। इतनी मूर्तियाँ (पंच परम 5-6 महाराज) बैठी हैं। इनके पास हैं दशलक्षण तो आपके पास क्या है? बहुत दुर्लभ है ये रत्नत्रय का लाभ है। जिनको मिला है वे धन्य हैं। ऐसा ये रत्नत्रय मुक्ति में कारण हो, इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

रविवार [प्रा. क. उत्तरार्ध]
२5-3-18

मंच पर [illegible]
कक्षम चर्चा
प्रातः 7.15

"जेल महानिदेशक, जेल निरीक्षक (जेलर), जेल मंत्री एवं वित्तमंत्री से वार्ता"

श्री- सक्षम कारावास आप बोलते तो हैं किन्तु उसका अर्थ क्या होता है? यह जानना आवश्यक है। श्रम सहित है वह उस श्रम का सम्मान होना चाहिए। उन्हें इस तरीके से श्रम से जोड़ें जिससे देश-विदेश भी आकर्षित हो। श्रम में गुणवत्ता होनी चाहिए। सक्षम कारावास का अर्थ दण्ड नहीं - श्रम कराके शुद्ध बनाना है। मनोनुकूल कार्य करवायें। भरपुर पारिश्रमिक दें साथ ही पुरस्कृत भी करें। रिंग मास्टर की तरह बनो। वह रींग के आधार पर शेर को भी वश में रखता है और भोजन भी कराता है।

अर्थ का मूल्य होता ही नहीं - मूल्य हमेशा वस्तु का होता है। विश्राम की बात नहीं। बच्चों को खिलाओ-पीलाओ और दौड़ाओ।

महानिदेशक- इसका सबसे अधिक लाभ महिलाओं को होगा। हमारे यहाँ महिला कैदी भी बहुत हैं। कैदी 10-15-20 वर्ष जेल में रहता है खेती-बाड़ी सब चौपट हो जाती है। इस तरह का हुनर रहेगा तो वह अपने परिवार का पालन कर सकेगा। हम लोग खुली जेल का प्रयोग कर रहे हैं। दिनभर परिवार के साथ रहेगा पुनः जेल में आ जायेगा।

आ. श्री- आप इन लोगों से फूलों की खेती करवायें। एक फूल ही 50-50 रुपये का यदि एक एकड़ में भी करो तो लाखों कमा सकते हैं। पानी का स्रोत / जलाशय जहाँ हो / बांध हो वहाँ यह कार्य सुगमता से हो सकता है। पुनो! आप उनका

पालन नहीं कर रहें, वे आप सभी का पालन करेंगे।

अपना इतिहास पढ़ने की आवश्यकता है। विदेश के इतिहास को ही अपना मान बैठना बहुत बड़ी भूल है। चिकित्सा शास्त्र में यहाँ पर निघंटु चरक जैसे महान ग्रन्थ है किन्तु आज ऐलोपेथी को ही सब कुछ मानना भूल है। प्राणदंड दंड नहीं वह तो अंत में लाचारी का नाम है। ऐसा कार्य करों कि वह जीवन में कभी अपराध ही न करें। अपराध का बोध हो उसमें सुधार हो जाये।

जेलर- 1895 में अंग्रेज जो जेल नीति बना गये थे, आज भी वही चल रही है। क्यों?

आ.श्री- ऐसे-ऐसे काम करवायें कि देखकर लगे ही नहीं कि ये अपराधी है। कहीं भी रहें श्रम का महत्त्व होना चाहिए। "श्रमदान" नाम इसीलिए रखा है।

महानिदेशक- प्रथम चरण में हम चार केन्द्रिय कारागारों (जेल) से शुरुआत करेंगे। सागर- इन्दोर- भोपाल-जबलपुर 11 केन्द्रिय जेल है म॰ प्र॰ में जिनमें 45 हजार से अधिक कैदी रहते हैं। यहां आकर के मेरी हिम्मत बढ़ गयी। आपका आशीर्वाद है और इन सबकी मेहनत हो तो जरूर हम सफल होकर रहेंगे। [पुनर्संरचना" नामक Book दी] इस पुस्तक में हमने जेलों का कैसे उद्धार कर सकते हैं यह दिया है। इस हेतु हमें सरकारी सहायता की बहुत आवश्यकता है। आज वित्तमंत्री/जेलमंत्री सभी है। आप कहकर हमारा काम करवा दें।

आ॰श्री – आप जो चाहते हैं अभी तो यहीं से शुरुआत हो जायेगी। हमें कैदीयों को श्रम की शिक्षा देना है। उसके लिए अभी पहले आधार से शुरुआत करें। ये सब तो अपने आप ही हो जायेगा। मैं शिक्षा उसी को मानता हूँ जो जीवनोपयोगी हो। शासन-प्रशासन को सोचना चाहिए। आज डिफाल्टर घोषित हो रहे हैं। जब कि उसने आपकी शिक्षा ग्रहण की पास हुआ फिर अयोग्य क्यों? नौकरी नहीं इसलिए। आप उसे काम दे दो वह योग्य बन जायेगा। योग्यता उसमें है कहीं से लाना नहीं है। सोचो।

महानिदेशक- पहला संत जिसने जेल की तरफ ध्यान दिया है। मैं हजारों संतो से मिला पर किसी ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया। सभी जेल को हेय दृष्टि से देखते हैं। आपने बहुत बड़ी कृपा की है।

आ॰श्री – हम चिंता नहीं चिंतन करते हैं। चिंता से बिमारी आती है, चिंतन से बिमारी खत्म होती है। सभी बैठे हैं- आप लोग सब मिलकर इस कार्य को आगे बढ़ायें। दण्ड संहिता को समझना अनिवार्य है। दण्ड नहीं सुधार की प्रक्रिया अपनायें।

जेल अधीक्षक - आ॰श्री जी जेल के प्रति अच्छी दृष्टि नहीं रहती। मैं लंदन की जेल में भी देखकर आया। आज 30 वर्ष से मेरा परमोशन ही नहीं, जिस पद पर आया वही पद आज तक चल रहा है। दूसरा हिन्दुस्तान की जेलों में कैदी के छुटने के बाद की कोई व्यवस्था नहीं थी,

अब आपने यह विचार किया है। ये Report लागु हो तो सबसे अच्छा होगा। आप सरकार से करवा सकते हैं।

आ. श्री - मैं स्थान को उतना महत्व नहीं देता। ये विलासिता का साधन बन सकता है। श्रम रहना चाहिए। श्रम रहेगा तो स्थान तो बन ही जायेगा। श्रम की आराधना करना सीखो।

महानिदेशक - एक छोटा सा अनुरोध है - इन्दौर में मैंने अपने साधनों से एक पशु सेवा केन्द्र खोला है। Helping Hands for Animals। मैं मानता हूँ कि पशुओं के पालन से मानवों का पालन होता है।

आ. श्री - बिल्कुल सही। उनके पालन से वैश्यवृत्ति चलती है। "हम पशुओं का पालन नहीं वे हमारा पालन कर रहे हैं।" आपकी चिंता बहुत अच्छी है, दूसरे चरण में रखना है। प्रथम चरण में तो आपको ये करना है। तैरना अलग और गोता लगाना अलग है। तैरने वाला भाग जाता है, गोता लगाने वाला भागेगा नहीं। अब मैं कैदी हो या जेलर सबको इंजीनियर मानूंगा। वो भी डिप्लोमा नहीं योग्य इंजीनियर है ये सब। मार्केटिंग की बिल्कुल चिंता मत करो।

महानिदेशक - आ. श्री आप तो पारस हैं। जिस को छु देते हैं वह सोना हो जाता है। हाथो हाथ बिक जाता है। हम तो बैलगाड़ी के नीचे चलने

वाले कुत्ते की भांति है।

आ० श्री- सुनो! मालिक तो सो जाता है किन्तु वह जागता रहता है। रात्रिजागरण नाम भी है उसका। दूसरा वह अपने स्वामी के प्रति सदैव कृतज्ञ ही बना रहता है, उपकार को भूलता नहीं। कर्म करें कार्य पूर्ण हो जायेगा। जेल में हर विभाग से सम्बन्धित कैदी के रूप में हैं, उसका उपयोग होना चाहिये, प्रतिभा तो उसमें विद्यमान है ही। पहले राज्य स्तर पर करें फिर केन्द्रिय स्तर पर करना। मूल्यवान पदार्थ को सामने लाना जरूरी है, तभी उसका मूल्य समझ में आयेगा। श्रमिक है वह श्रम का शोषण नहीं होना चाहिए। जुडीशियल, (न्याय-पालिका), पुलिस, चिकित्सा और शिक्षा को मैं नौकरी नहीं मानता।

हमें दूसरा कोई पुरस्कार नहीं देता, गुण स्वयं में पुरस्कार है। मैं भी वहाँ हूँ। वह इसलिये क्यों कि वहाँ श्रम है जहाँ श्रम है वहां श्रमण है। अब भाग्योदय नहीं - सर्वोदय हो रहा है। इनका यह श्रम प्रतिष्ठान विकासोन्मुख हो। आपने शतरंज का खेल देखा है, उसमें सबकी चाल होती है किन्तु सैनिक कभी भी पीछे नहीं लौटता। ये बात अलग है कि लाहौर में लौटना पड़ा (व्यंग्य)।

देश का भूलना नहीं वह आधार है। इसलिये इसके नाम में भारत को न भूले। अहिंसा

से स्वावलम्बन की ओर" अच्छा है पर देश पहले है उसे भी जोड़े। कौशल उन्नयन के लिए तो किया जा रहा है।

आप लोग फूलों की खेती पर भी ध्यान दें। अभ्यारण्य की भांति। पानी जहाँ हो वहाँ इस तरह का प्रयोग करें। सफलता अवश्य मिलेगी।

लगभग 9 बजे जेलमंत्री - वित्तमंत्री का आगमन-

जेलमंत्री [अंतरसिंह जी] - मेरी महानिदेशक महोदय से पूरी बात हो गयी। ये जो भी कहेंगे हम करने के लिए तैयार हैं, बस आपका आशीर्वाद बना रहे। अभी जबलपुर जेल में भी कैदियों को इस योजना के बारे में बताकर आ रहा हूँ।

महानिदेशक - ये पीछले 3 बार से जेल मंत्री बन रहे हैं। बहुत ही सेवाभावी है। हमारे लिए बराबर सहयोग करते रहते हैं। बस कृपा बनी रहे।

आ०श्री - "लक्ष्मी कृपा की बात मत करो। जिसके सिर पर सरस्वती की कृपा हो उसको लक्ष्मी कृपा की क्या आवश्यकता। गुरुदेव का आशीर्वाद हमारे सिर पर है।

वित्तमंत्री (जयंत मलैया) - हथकरघा प्रत्येक दृष्टि से लाभप्रद है। रोजगार की समस्या खत्म होगी। समाज/देश का विकास हो। अपराधों की संख्या में कमी होगी। आ०श्री जी जैसा कहेंगे वैसा ही होगा। इनकी सोच बहुत दूरगामी है।

संस्मरण-1. "महानिदेशक ने बनाया शाकाहारी"

जेल महानिदेशक जब ट्रेनिंग में थे उसी समय से शाकाहारी हो गये थे। मांसाहार का सेवन नहीं करने से बहुत लोग चिढ़ते थे। एक बार हैदराबाद ट्रेनिंग में गये। वहाँ मुर्दाघर में ले गये, जहाँ अनेकों शव रखे थे। पोस्टमार्टम हेतु रखे थे। महानिदेशक महोदय ने देखा सभी मित्रगण नाकपर रुमाल रखकर हेय दृष्टि से ये सब देख रहे थे। उन्होंने कहा इस तरह क्यों कर रहे हो जब आप माँस खाते है तो इसी तरह शव को काटकर मांस में मसाला आदि मिलाकर दे देते है तो बड़े स्वाद से खाते हो। इतना सुनना था कि कई मित्रों ने माँस का हमेशा के लिए त्याग कर दिया।

2. रुकना और रोकना - वित्तमंत्री जी जब गुरुवरसे बात कर रहे थे तो पूछा गया आप कब तक रुकेंगे। उन्होंने कहा जैसा गुरुजी कहेंगे। अभी तो यहीं हैं। आचार्यश्री ने कहा दो बातें है एक तो रुकना दूसरी रोकना। सभी लोग तेजी से हँस पड़े।

3. रथकरधा की रूबी दीदी ने कहा। भैया जी मुंगावली आये थे, 1 लाख का दान भी दिया। भैया जी ने कहा-राशि बोलने की क्या जरूरत थी? आचार्यश्री ने कहा - हाँ राशि इतनी सी ही तो थी ज्यादा होती तो बताना था। वित्तमंत्री जी कुछ सोचते ही रह गये।

जन्मकल्याणक
26-3-18 "क्यों नहीं जला दीपक" प्रातः 9.20

आज वैसे जन्म कल्याणक है। आप लोगो को फुर्सत तो है नहीं। शोर लग गयी है, बधाई गाने में लगे है। फिर भी कुछ सुनना चाहते है तो सुना दें। अथवा आप सुनाना चाहते है क्या? तो फिर सुनो! दीपक को जलाना चाहते है। कौनसा दीपक? ये वाला दीपक नहीं घासलेट वाली चिमनी का जो दीपक होता है उसकी बात कर रहा हूँ। जब जलाने गये तो जला ही नहीं। हम कुछ नहीं जानते। तेल वगैरह है या नहीं, आपही देख लो।

इसमें तेल ही नहीं था, कैसे जलता। तेल डाल दिया। अब जलाओ! नहीं जला क्यों क्या बात हो गयी? बाती लो.... । सूतली चाहिए। पहले सूतली को आंजकर उसकी बाती बना लेते थे। अब बाती भी लगा दी। अब क्या हुआ? बस ऊपर से जली किन्तु पुनः बुझ गयी। सूतली का दूसरा छोर भीतर तेल में हो जाये। ये तीनो बातें पुरी हो तब बोलो-बधाई सा। इस प्रकार वह दीपक की बाती जल तो गयी पर प्रकाश नहीं दिख रही।

ऐसा भी होता है क्या? बाती तो जली किन्तु उस पर कुछ कालिमा-किट्टिमा जम गयी इसलिए प्रकाश उतना प्राप्त नहीं हो रहा, जितना कि चाहिए। अब क्या करना है? कुछ नहीं बच्चों के कान पकड़ते हो ना वैसे ही अंगुष्ठ और तर्जनी के मध्य उस बाती को लेकर मीड़ दो। उसके बाद फिर से जलायी गयी वह

पुनः जल गयी।

अब हवा आ रही है। कोई बात नहीं हाथ लगा लो। दीपक कहीं बुझ न जाये इसको ध्यान में रखते हुए वह हाथ को लगाकर दूसरे हाथ में लेकर आ रहा है। कहा गया इसे दिपाधार पर रख दो। दिपाधार मतलब एक कोने में दीपक रखने का स्थान होता है। जैसे ही रखा कि दीपक बुझ गया। कैसे बुझा? अपनी ही श्वांस के कारण वह बुझ गया। हमारी भी यही दशा है। "अंतोगत्वा अपने ही परिणामों के द्वारा आज तक दीपक नहीं जला पाये।"

अपने ही परिणाम बाधक हैं, अपने मोक्षमार्ग के बढ़ने में। क्यों सुन रहे हो दीपक [अमरकंटक क्षेत्र] यदि परिणाम टस से मस न हो तो कुछ नहीं होगा। आप जिनको शरीर मिला है, वह ऐसा ही है। अब आगे शरीर धारण नहीं करना पड़ेगा। मध्याह्न में यदि समय मिल जायेगा आपको भी और यदि हमें भी तो देख लेंगे। मुहूर्त से काम करना चाहिए, बड़ा कार्यकारी होता है। हम भी मुहूर्त देख लेंगे। आज का यह दिन आप लोगों के लिए व्यस्त दिन होना चाहिए।

नहीं तो अपने ही श्वांस से वह दीपक बुझ जाता है। इतने प्रयास करके यहाँ तक लाया गया किन्तु अंत में क्या हुआ? आचार्य समन्तभद्र स्वामी कहते हैं- "बंधश्च मोक्षश्च तयोश्च हेतू, बद्धश्च मुक्तश्च फलं च मुक्तेः।" मुक्ति के लिए कारण क्या है? निर्जरा एवं संवर। बंध क्या है? और

बद्ध क्या है?

वर्तमान में जो हो रहा है वह बंध है तथा सत्ता में पड़ गया वह बद्ध है। तो बंध क्या और मुक्ति क्या इन सबको देखो परन्तु एक ही बात सामने आती है कि हमारे अपने ही परिणाम संसार के कारण है तथा हमारे ही परिणाम मुक्ति के लिए भी कारण है। साफ-सुथरे परिणाम हो गये तो मुक्त हो सकते हैं। जो इस रहस्य को समझेगा फिर वह संसार में भटकेगा नहीं। "जिसको ये लेन-देन समझ में आ जाता है उसका मोक्षमार्ग प्रारम्भ होता है।"

इसमें दूसरे की दखलनबाजी है ही नहीं। हम दूसरे की दखलबाजी मान लेते हैं। बहक जाते हैं इसमें; यह क्या है? [out of Control] फितुरी है या ततुरी पता नहीं। अब ततुरी पड़ने वाली है फिर एक कदम की बजाय चार कदम रखता है। लू चलती है। फितुरी का मतलब दिमाग फिर जाता है। तूफान आ जाता है। इसको यदि ठीक नहीं करते तो हमारे पास भी ऐसी कोई औषध नहीं जिससे ठीक हो जाये।

पहले ही समझ लो। अभी कहा आपने out of Control हो जाये फिर महाराज का आशीर्वाद मिल जाये-ठीक हो जाये, ऐसा है ही नहीं। अब तो Control का जमाना आ गया है। Control का मतलब राशन वाला। सब आपका ही है राशन-पानी-भोजन,

हमारा है ही नहीं, यह [illegible] का जमाना।

आप सुन रहे हो। हमेशा आज पालना हो गया क्या? उसमें भी हथकरघा रखो। सब ठीक-ठाक हो जायेगा। आप ही लोगों के लिए है। यह वह जीव है जो आपके घर में आया है। देखो! यह रोता नहीं और आप बूढ़े भी हो गये तो रोते रहते हो। सीखो-उसकी भाषा। फिर ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं, दिन-दुनी-रात-चौगुनी विकास होता रहता है। वे तो जल्दी से जल्दी सबको लाभान्वित करने वाले हैं।

इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। हमारे [illegible] के उदाहरण को याद रखेंगे और जो अपने ही नाक [श्वांस] से हवा होती है वह भी उसके लिए बाधक होती है। कभी-कभी बाद में पुनः जलाना कठिन होता है। अच्छे परिणाम करने हेतु पुरुषार्थ करना होता है, बुरे परिणाम तो बहुत जल्दी हो जाते हैं। अच्छे परिणामों की रक्षा करना, उन्हीं की बात करना है/समझना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हूँ

"फोटो समान मन बने"

आज प्रवचनोपरान्त एक युवती ने बड़े बाबा का हाथ से बहुत सुन्दर चित्र बनाया था, इसका अनावरण हुआ। आ० श्री ने कहा - "मन से भी इसी प्रकार अपने आपको बनाना है। बनाकर दिखाओ तब देखेंगे।" जरूर वह युवती संकल्पित हुयी।

तप कल्याणक

27-3-18 "विवेक हीना पशुभिः समाना" प्रातः9.20

नमोऽस्तु करने का अर्थ हमने तो इतना समझा है पैर पड़ जाव। ढोक दो-ढोक दो कहते हो। किन्तु पैर पकड़ना पैर पड़ना नहीं होता। इसे थोड़ा सुधार लो। आप लोग पैर पड़ते नहीं पैर पकड़ते हैं। अब ब्रह्मचारी हो तो ऊपर नहीं तो पक्का है...। इसका अर्थ यह है कि दूर से ही लाइन बाँधिये और नमोऽस्तु कीजिये/दर्शन कीजिये। आप लोग कभी विद्यालय नहीं गये क्या? [नकल से पास हुए हैं] नकल तो करो - हम भी नकल करके ही आये हैं। विवेक से काम करना आवश्यक है।

विवेक आया है तो इसी की बात कर लेता हूं। श्रावक के (दाता) 7 गुण में विवेक आता है। विवेक नहीं तो शेष 6 गुण भी किस काम के, उनका महत्व नहीं। महत्व का मतलब काम तो करेंगे किन्तु वो बात नहीं। सबके पास विवेक विद्यमान रहता है। ऐसा नहीं समझना कि विवेक केवल हमारे ही पास होता है। गधा है उसमें विवेक मानते हैं कि नहीं? जब विद्यालय जाते थे तो कौनसे गधे को यहाँ भेजा है? मतलब वो भी गधा हो गया और ये भी गधा हो गया।

ये आपकी गलत धारणा है। इस धारणा को दूर करने के लिए ही विवेक रखा है। आपने बुलाया है - सुनना तो पड़ेगा। गधे का यहाँ यही अर्थ लगाते हैं कि कुछ आता-जाता है ही नहीं जब कि ऐसा वास्तव में नहीं है। छोटा था उस समय की बात है। सर्कस देखने जाते थे, आपने

भी देखा होगा।

उसमें कई मनुष्य तो काम करते ही हैं उन्हीं के साथ शेर - सिंह - हाथी - घोड़े इत्यादि भी काम करते हैं। मनुष्य की आकृति में अनेक प्रकार के अन्य मनुष्य भी काम करते हैं [चिंपांजी आदि]। वे सब के सब विवेक से काम करते हैं किन्तु आप लोगों में वह नहीं। व्यापक है यह धारणा 99% भी कहूं तो गलत नहीं होगा। अब उस सर्कस में गधा भी था। ये मत कहना कि सर्कस में गधे को कौन गधे ने रखा। सब मौन हो जाते हैं। भीतरी ताकत क्या है, यह गधा आपको बता देगा।

सामने 10 - 20 तक के अंक रखे हैं पर्दे से ढक दिया। किसी भी जानवर को कोई भी नम्बर दे सकते हैं। सर्वप्रथम एक परिक्रमा करना है फिर उस नम्बर को उद्घाटित करना है। गधे को 5 वाँ अंक हेतु कहा वह विधी पूर्वक उस अंक को निकाल देता है। आपमें से कोई ऐसा कर सकता है? कोई तैयार नहीं। आपको वर्षों प्रशिक्षण दे दें तो भी नहीं। उस गधे को किसने प्रशिक्षण दिया? और किस प्रकार उसने हासिल किया होगा।

ये बात अलग है प्रतिशत की अपेक्षा/अनुपात की अपेक्षा ग्रहण करने की क्षमता कम है। जैसे सिंह के गले में कभी पट्टा नहीं बांधते उसी तरह गधे के गले में भी कभी पट्टा नहीं बांधा जाता। वह कहता है हम स्वीकार नहीं करेंगे तो क्या? बस

हँक देते है, जैसे आपको भी हांकना पड़ता है।

इस प्रकार उस गधे ने 5वाँ नम्बर निकाल दिया। एक अंक वाला तो ठीक 2-3 अंक वाले को कहा तो उन्होंने भी निकाल दिया। एक बार भी वह गलत नहीं किया। उसको सारे विश्वविद्यालय की तरफ से पुरस्कृत करना चाहिए। आपके विद्यालय द्वारा नहीं हमारे अनुसार तो ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए। इसी प्रकार कुत्ते को भी तैयार किया जाता है। उसको प्रशिक्षित किया जाता है जिससे वह भी इसी तरह करके देता है।

और एक पक्षी तोता बोलते है। पिंजरे से बाहर आया, दाना दे दिया। उसे उसके नम्बर का संकेत दे दिया। इसी प्रकार जैसे गधे और कुत्ते ने निकाला इसने भी निकाल दिया। इस बार तोता को बुलाया उसने तो अपनी कला से सबका अभिवादन किया, निकाला एवं पुनः पिंजरे में चला गया। सोचने की बात है, उन्हें भी प्रशिक्षण देते हैं तो वे भी आपसे आगे बढ़ जाते है।

इतना अवश्य है कि वे आप लोगों की तरह विज्ञापन के आदि नहीं होते हैं। उनके पास ये विज्ञापन का भूत नहीं होता है। पता नहीं आज यह क्या भूत आ गया। गधे के पास एक भी गलती नहीं। आप किसी न किसी को जीवन में आदर्श बनाते है। इन 3-4 को अपने जीवन में आदर्श

बना लेना चाहिए।

ये सभी शत-प्रतिशत उत्तीर्ण हुये। कम समय में पकड़ लेते हैं। आप इधर-उधर की बहुत सारी बात पकड़ लेते हैं इसलिये हमारी बात को नहीं पकड़ पाते हैं। आपके पास दिमाग नहीं है- मैं यह नहीं कह रहा। आप अतिरेक करते हैं गधा अतिरेक नहीं करता। सही की पहचान करो। इसके लिए ज्यादा ज्ञान की आवश्यकता नहीं। न्याय के ग्रन्थों में बहुत सारे साध्य सिद्धि के लिये हेतु का सहारा लेते हैं। बहुत से उदाहरण भी लेते हैं किन्तु जिसका साध्य के साथ अन्वीति (व्याप्ति) होती है, वही अकाट्य होता है।

इसी प्रकार ज्ञान आवश्यक है किन्तु बहुत सारा ज्ञान प्रमाण की कोटि में नहीं आयेगा। किन्तु इस शताब्दी में ये हो रहा है। ऐसी स्थिति में कुछ भी निर्णित नहीं कर पायेंगे। ज्ञान की बहुत जानकारी होना जरूरी नहीं आज भारत में ये ही हो रहा है। इसके लिए शिक्षण- प्रशिक्षण चल रहा है। बस एक हेतु दे दो, न्यायालय में जीत निश्चित है। बहुत कुछ मिलाकर दे रहे हैं, उसकी जरूरत ही नहीं हैं। "कम शब्दों में उत्तर देओ पर निर्बाधक उत्तर देओ"।

इतना ही पर्याप्त है। आज आपके सुपुत्र घर से बाहर निकलने वाले हैं। बारात तो अभी उसके पश्चात् मध्याह्न में देखेंगे क्या होता है? आपके 2½ दिन हो गये। अब हमारे अढ़ाई दिन आ गये।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

मोक्ष कल्याणक/महावीर जयन्ती

29-3-18 शरीर है तो दिगम्बर कैसे? प्रातः 9:20

महावीर जयन्ती तो जन्म कल्याणक का प्रतीक है, अभी भगवान को निर्वाण की प्राप्ति हुयी। पंचकल्याणक चल रहा है, प्रासंगिक क्या है पहले इसे समझें। आदिनाथ भगवान को अभी मोक्ष हुआ शेष तो महयाल में देखेंगे आप सभी ने पुरे उत्साह से पंचकल्याणक किया। अभी बोलियाँ हो रही थी जो भगवान के श्रृंगार के आभूषण थे वे भी बंट गये।

यह जीव किस प्रकार सशरीर होने से संसार में घुमता है। आज उस आत्मा ने शरीर को निकालकर फेंक दिया जैसे आप वस्त्र उतारकर अलग कर देते हैं। पर ये पुनः नहीं पहनेंगे। आप सोचते होंगे बिना शरीर के जीवात्मा कैसे रहती है जब कि बिना शरीर के रहना ही उसका स्वभाव है। "कहने को हम दिगम्बर हो गये पर आज तक शरीर को ही वस्त्र बनाकर चल रहे हैं।" ऊपर का भले ही परिवर्तन हो जाये भीतर तो अनादि से वही चल रहा है। आचार्य उमास्वामी महाराज ने इसीलिए तत्वार्थ सूत्र में कहा - अनादि संबंधे च।

तैजस एवं कार्माण शरीर तो हमेशा साथ ही लगे रहते हैं। विग्रहगति में भी साथ नहीं छुटता। योग के माध्यम से इस प्रकार शरीर का मिलना होता ही रहता है। आप एक सैकेण्ड भी शरीर

के अतिरिक्त चिंतन नहीं कर सकते/नहीं कर पाते हैं।

अभी अग्निकुमार देवों ने अपने कीरिट (मुकुटों) के माध्यम से जो नख-केश शेष रह गये थे उनका अन्तिम संस्कार किया। 500 धनुष की काया वाला शरीर था-वह कहाँ गया - कैसे गये? विचार करो। जैसे ही प्रभु के आठ कर्मों का नाश हुआ, रागादि भाव कर्मों का अभाव हुआ और नोकर्म के रूप में शरीर का भी अभाव हो गया उसी समय वह कपुर की भाँति उड़ गया। वर्गणायें कैसे आती है है और चली जाती है।

ये सब आगम का विषय है, आप समझ नहीं पा रहे हो। वस्तुतः प्रति समय कुछ परमाणु हम गृहण कर रहे हैं इसे संघातन क्रिया कहते हैं और कुछ परमाणु छोड़ रहे हैं उसे परिसातन क्रिया कहते हैं। संघातन में आते हैं, परिसातन में बिखर जाते हैं। चिपके परमाणु बिखर जाते हैं। 14वें गुणस्थान में पहुँचते ही संघातन क्रिया समाप्त अब गृहण करना समाप्त हो जाता है और अन्तर्मुहूर्त भी नहीं लगता काम हो जाता है।

अन्तर्मुहूर्त भी कौनसा? अभी प्रतिष्ठाचार्य बता रहे थे। 5 ह्रस्व अक्षर बोलने में जितना समय लगे। वो भी आप नहीं ऋद्धिधारी मुनिमहाराज जो काय एवं वचन बल के धारी है। ऐसी क्षमता रहती है कि अन्तर्मुहूर्त में पूरे आगम को उच्चारण करने की क्षमता विद्यमान है। इतने से

समय में मुक्त हो जाते हैं।

"मुक्त हुये बिना अमूर्त स्वरूप प्राप्त नहीं होता।" वह अमूर्तत्व आँखों से पकड़ में नहीं आता। इसलिए सूक्ष्मत्व भाव को लेकर रहे तो कोई धब्बा नहीं लगेगा। इसी प्रकार अब वे अनन्त काल तक रहेंगे। आपका आना-जाना लगा हुआ है। कहाँ से आये-कहाँ जायेंगे? निगोद से आये- निगोद में जाना होगा। आज तक कोई भी गाड़ी छूटी नहीं/चूकी नहीं। स्टेशन पर जाते हैं और बस बैठ जाते हैं।

अब इसके बारे में आप सोचेंगे। आपको ऐसा ही यह 5-6 दिन का वातावरण मिला। सोचते रह जाओगे। अब आपको हमने मन्दिर बनाया, हमने कलश चढ़ाया, हमने भगवान विराजमान किये ये मन में भी नहीं आना चाहिए। हम तो इसी वेदी में पूजा करेंगे, क्यों कि ये हमने बनायी। दूसरी सोने की भी क्यों न हो, उसमें नहीं जायेंगे। "यह आलोचना नहीं समालोचना है।" भक्ति तो कहीं भी करें अच्छा है पर वितरागता की लिए हो। इसी से उद्धार होगा।

तेरा-मेरा किया नहीं कि वह कर्म आकर चिपकेगा ही। जो मुक्त हो गये, उन्हें आदर्श मानकर चलेंगे। मुक्ति में फेरी होना है- हवन भी अभी बाकी है। फेरी होने के बाद तो आप भी मुक्त हम भी मुक्त हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

हथकरघा स्थापना साकेत नगर (डिंडोरी)

30-3-18 अब सम्यग्दर्शन पोथी में ही नहीं जीवन्त दिखे। प्रातः 9.00

सारा का सारा कार्यक्रम सानंद सम्पन्न होने के उपरान्त आज प्रातःकाल कलशारोहण और ध्वजारोहण दोनो करकर नीचे उतरे, वहाँ से इधर इस कार्य हेतु आये। जो क्षेमं सर्व प्रजानाम् के लिए शुरु किया जा रहा है। जहाँ सारी प्रजा का क्षेम हो, सारी व्याधियाँ नाश हो, शारीरिक व्याधि के साथ मानसिक व्याधि भी दूर हो। ये सब तभी सम्भव है जब राजा धार्मिक हो। भूपालक हो। जनता पर कर का भार न लादें।

जितने नेता लोग हैं वे श्रम करने वालों के लिए प्रोत्साहित करें तो भारत में सोना बरसने लग जायेगा। जब छत्तीसगढ़ से इस चौकड़ी में पुनः आये तो देखा जनता श्रम करना चाहती है। बस यही भाव रहता है कि भरपूर श्रम मिलता रहे। बस हमें अपने पैरों पर खड़े होने का सौभाग्य प्राप्त हो जाये। चाहे पढ़े-लिखे हो या अपढ़ हो सर्वत्र ऐसा ही व्याप्त है। सार्वजनिक रूप से ऐसा कार्य हाथ में लिया है। प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि दिन दुनी और रात चौगुनी वृद्धि होती रहे।

दूर-दूर तक इसकी खुशबु पहुँच जाये, ऐसा कार्य करना है। हमने अपनी तरफ से ब्रह्मचारी जी को भी संकेत कर दिया है। बस अब सम्यग्दर्शन सक्रीय हो। "ऐसा सम्यग्दर्शन जो केवल पोथियों तक ही सीमित नहीं रहें, जीवन्त दिखना चाहिए।" जब

से यहाँ आयें तभी से भूमिका तैयार हो गयी थी। आज यह आप सभी के सामने आ गया।

अलग ही वातावरण बन गया है। जिन - जिन ने भी संकल्प लिये हैं, वे हमेशा याद रखेंगे। माँस - मटन - मछली - अण्डा का अपने जीवन में प्रयोग नहीं करेंगे। सभी जीव जीना चाहते है। आपके द्वारा यह त्याग अवश्य होना चाहिए। आज Fast-Food का जमाना आ गया। इन सबको जीवन से बाहर कर दो। हिंसक भी है और स्वास्थ्य के प्रतिकूल भी है। अब अहिंसक वस्त्र का आप उत्पादन करने जा रहे हो आप भी अहिंसक बनें।

दोनों मौलिक हो अहिंसक हो आहार भी एवं वस्त्र भी। ये दोनों संकल्प ले लिये हैं। जो भी आता है। उन सभी को प्रोत्साहित करें। जैनेतर लोग 4 माह तो कृषि करते हैं शेष 8 माह उन्हें अर्थ पुरुषार्थ हेतु घर छोड़कर परिवार, घर, बाल-बच्चे सबसे दूर जाना पड़ता है। माता-पिता को छोड़कर जाते हैं।

मैं कहना चाहता हूँ अब पूरे 12 महिने परिवार के साथ रहें। आप सभी पर यह भार है श्रम का कभी शोषण नहीं होना चाहिए। अपने जीवन को सभी उज्ज्वल बनाइये। ज्यादा तो नहीं कहना चाहता। संक्षेप में बहुत कह दिया। आज के आनंद की-जय।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

मुनखान — मछ्याल्ह मे विहार

31-3-18 "गुरुवाणी - गरम हो तो भी-कल्याणी" प्रातः 9.20

भगवान की वाणी मीठी भी होती है, स्वादिष्ट भी होती है और पुष्टि भी देती है। सब कुछ देती है किन्तु आपके लिए चलाकर, प्रेरक के रूप में काम नहीं करती है। इसका कार्य ये नहीं कि वो जबरदस्ती करें। गुरुओं की वाणी भी जबरदस्ती नहीं-प्रेरक के रूप में काम कर सकती है। हम बोल सकते हैं। कान नहीं पकड़ सकते।

एक उदाहरण से समझ में आ जायेगा। भगवान की वाणी ठण्डी होती है। शीतल होती है। वह आग को बुझा सकती है या नहीं? बोलो। गरम पानी हो तो? तो भी बुझा सकती है। बस इसी तरह समझ लेना गुरु महाराज यदि गरम भी हो जाये तो भी उनकी वह वाणी आपका कल्याण कर सकती है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण - डिंडोरी से जबलपुर की ओर विहार चल रहा था। हाँसी (हरीयाणा) से एक स्वाध्याय प्रेमी - गुरुभक्त परिवार आया। आ० श्री से कहा - हम अभी आपके प्रवचनों पर लिखित समयसार (समयोपदेश) का स्वाध्याय कर रहे हैं। फिर कहा अब आपका विहार हाँसी की ओर हो जाये, हमें पूरा लाभ मिलेगा। आ० श्री ने कहा - अभी भी लाभ तो मिल ही रहा है। कैसेट से प्रवचन सुनते ही हो। उन्होंने कहा वो तो Indirect लाभ मिल

रहा है, हमें तो Correct लाभ चाहिए। आ० श्री ने तुरंत जवाब दिया। "अंग्रेजी में Correct से अच्छा Indirect माना जाता है।"

"एक उदाहरण अनेक जगह Fit होता"

झाँसी के स्वाध्याय प्रेमी ने कहा - आपने समयोपदेश में बहुत ही अच्छा उदाहरण दिया स्फटिक मणी का। आ० श्री ने कहा - इसका उपयोग कई प्रकार से कर सकते हैं। ललितपुर वाचना में एक वरिष्ठ विद्वान ने कहा - गुरुवर ऐसे उदाहरण हमें क्यों नहीं याद आते हैं।

उदाहरण - स्फटिक मणी के सामने कोई भी पदार्थ रखो उसके भार (Weight), रंग (Colour), रूप (Size) एवं शुद्धाशुद्ध में कोई अन्तर नहीं होता है। इसी तरह हमें बनना है।

- मोटर साइकिल पर आप बैठे हैं पर चलती तो स्वयं ही है। आप हेण्डल हाथ में रखकर उसे संभाले भर हैं चला नहीं रहे।

- आधुनिक उदाहरण भी देते हैं आ० श्री -

हवाई जहाज उड़ने के पूर्व तीन पहियों पर दौड़ता है जब उड़ान ले लेता है तब तीनो पहियों को अपने पेट में समेटना आवश्यक है। इसी प्रकार रत्नत्रय के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं किन्तु रत्नत्रय को भी अभेद रूप में जाने पर ही मुक्ति मिलेगी। अभी तो चप्पल पहन कर चल रहे हो।

० प्रत्येक जवाब लाजवाब → हिंडोरी में पाक्षिक प्रायश्चित लेना था। प्रातःकाल प्रतिक्रमण हो गया मध्याह्न में विहार की संभावना थी। मैंने बड़े महाराज जी लोगों से ईर्यापथ के अन्त में कहा पाक्षिक प्रायश्चित अभी मांग लें तो ठीक होगा। सायंकाल की भक्ति सामूहिक हो या न हो। प्रसादसागर जी महाराज ने जैसे ही आचार्य श्री से कहा तो संभवसागर जी महाराज ने टोका की अभी क्यों शाम को ले लेंगे। आ० श्री ने बीच में ही कहा अभी लेने में क्या बाधा है? शाम को प्रतिक्रमण के चार कायोत्सर्ग अलग से करेंगे। उन्होंने उसी समय प्रायश्चित दे दिया।

० 7 राजु चलना है -- विहारकाल में एक व्यक्ति ने कहा कि आ० श्री० आप कितना विहार कर रहे हैं। आ० श्री ने कहा- अभ्यास तो करना ही है अभी तो चले ही कितना सा है अभी तो सात राजु चलना है।

० Slow Drive And Low Maintinance का सिद्धान्त रखो।

० सक्रिय सम्यग्दर्शन - "Active faith in God." अकेले faith से काम नहीं Active faith हो। भगवान भी उसी की सहायता करते है जो Active हो। निष्क्रिय की मदद वे भी नहीं करते।

□ □ □

अमेरा

1-4-18 "वास्तविक खुराक" प्रातः 9.20

कुण्डलपुर की बात है। गर्मियों का समय चल रहा था। महोत्सव भी चालु हो गया। यात्रियों का भी आना चालु हो गया था। कोई ऊपर पहाड़ पर जा रहा है तो कोई नीचे उतर रहा है। पीछे से / बाजु से मैं भी सब वृक्षों का निरीक्षण करता हुआ जा रहा था। इतनी भीषण / भयंकर गर्मी पड़ रही थी। वृक्ष जो लगाये जा रहे थे, वे इतने कोमल थे।

हमने कहा अरे-अरे व्यक्ति गमछा बांधकर चल रहे हैं। खाना-पीना आदि सब करते हैं। ये कोमल-कोमल वृक्ष जिनमें कोंपले फूट रही है सूर्य के उस घाम / प्रखर किरणों को कैसे सह पायेगी। किन्तु वे तो उन किरणों से बातें कर रही थी। वे कह रही हैं- आप लोग कितनी भी गर्मी पहुँचा दो तो भी वृक्ष कह रहा है- मैं तो ऊपर की ओर ही बढूंगा। ऐसा क्यों? तो उत्तर मिलता है एक बार पुराना छूट जाता है - नया आता है इसे कोई भी रोक नहीं सकता।

जो कुछ भी नयापन आ रहा है उस योग्य खुराक मिल रही है। उन कोंपलों को कुछ भी नहीं हुआ वे तो तीव्र गति से बढ़ रही थी। आप लोगों को देखना चाहिए। स्वभाव की ओर देखने पर वैभाविक परिणति ठीक-ठाक हो जाती है। वास्तविक खुराक क्या है? इसे पहचानना जरूरी है। हम हमेशा शरीर की ओर ही ध्यान देते हैं।

शरीर का स्वभाव तो ढलना ही है।

ढले या न ढले उस शरीर के भीतर जो आत्म तत्त्व बैठा है उसकी ओर दृष्टि देना है। उसके बारे में सोचते हैं तो सर्दी - गर्मी - वर्षा किसी का भी शरीर पर प्रभाव नहीं पड़ता। मन की परिणति को बदलना परम आवश्यक है। आप यदि चाहेंगे तो मन तो साथ हो ही जायेगा। आप मन को समझाते ही नहीं हैं किन्तु मन से समझ जाते हो। जैसा मन चाहता है - वैसा करते जाते हो। मन पुष्ट होता जाता है और आत्मा बिल्कुल कमजोर हो जाती है।

उस आत्मा को बलजोर कौन बनायें? कोई नहीं बना सकता। आप ही को करना है। स्वभाव का चिंतन करते रहना चाहिए। स्वभाव बिगड़ता क्यों है। कर्म के उदय को भी याद रखना चाहिए। मन के अनुसार नहीं। मन तो इस माइक की तरह सदैव चुं-चप करता ही रहेगा। उससे कह दो यह जो भी दे रहा हूँ वह तुम्हारी खुराक है - हमारी नहीं। इसी के लिए यह लेन-देन कर रहा हूँ।

सुबह वर्षा का मौसम अभी धूप निकल आई। छाता दोनों के लिए काम आता है - वर्षा में भी धूप में भी। विकृति देखने से विकृति एवं प्रकृति देखने से प्रकृति दिखती है। ऐसा आत्म विश्वास होना चाहिए। उस पौधे को देखकर शिक्षा ली कि गर्मी में पर्वत एवं वर्षा में वृक्ष के नीचे खड़े हो जाते हैं, इस तपस्या की आप जय-जयकार करते हैं अब थोड़ा सा चलने का प्रयास किया करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

शाहपुर
2-4-18 "संकल्प हो नदी जैसा" प्रातः 9.20

दुनिया में आप लोगों ने नदीयों के विषय में सुना होगा। नदी कोई तालाब से, कोई विशेष झीलों से, कोई पहाड़ से पानी गिरता है तो निकलती है। इस प्रकार भिन्न-भिन्न स्थानों से नदीयाँ निकलती है और उन सभी का जल समुद्र की ओर ही जाता है। पानी का संग्रह यदि डैम बनाकर करना भी चाहे तो उसके ऊपर से बहकर वह समुद्र की ओर ही चला जाता है।

आपने कभी भी सुना नहीं होगा अथवा पढ़ा नही होगा अथवा देखा नहीं होगा कि नदी कहती हो कि हम मैं बहुत थक गयी, अब मेरे से चला नहीं जाता। समुद्र कब मिलेगा ? मैं तो लौटकर चली जाती हूँ (ऐसा कभी नहीं हुआ। कलकत्ता में भी गंगा नदी है वह भी बहते-बहते समुद्र में समाहित हो जाती है। कभी थकती नहीं। इस प्रकार आप नदी से पाठ ले सकते हैं। आज तक बहुत सारे पाठ मिले यह एक और पाठ ले लेना।" जिसप्रकार नदी कभी लौटती नहीं उसी प्रकार भगवान की खोज में निकले हो, अब लौटो नहीं।

भगवान हमें नहीं खोजते, हमें ही भगवान को खोजना होगा। फिर लौटकर जायेंगे कहाँ? कोई ठोर-ठिकाना है ही नहीं। इसलिये नदी से पाठ लेना होगा। घूमते-घूमते कहीं से आ गये। आ तो गये खोजते-खोजते, अब आपकी आप जानो (कलकत्ता)

वालों से)

हमने तो बताया नहीं कि हम विहार करेंगे। आज तो विज्ञान का जमाना है। एक सेकेण्ड में दुनिया को पता लग जाता है। वाट्सअप हो या टेलीग्राम हो। सही दिशा में उपयोग करो तो काफी सदुपयोग हो सकता है। विषय-कषाय में उपयोग करोगे तो स्वयं को ही फल भोगना होगा। आप भी भगवान की खोज कर सकते हो। नदी भी मुड़ती हुयी, गिरती हुयी, पहाड़ों से टकराती हुयी, अपने मुख को मोड़ती नहीं। थोड़ी बहुत मुड़ जाय बात अलग किन्तु दिशा उसी ओर रखती है।

आपको भी सांसारिक कार्य करते हुये, भगवान की खोज करते रहना है। भूलना नहीं-बस बढ़ाते जाओ-बढ़ाते जाओ। नदी का यह पाठ बड़ा सुन्दर पाठ है। भगवान की खोज हेतु। किताबों में पढ़ोगे तो कई और भी बातें मिलेंगी किन्तु इस प्रकार से नहीं मिलेगा। इसे अच्छे-ढंग से दिमाग में सुरक्षित रखें। वितराग भगवान कब मिलेंगे? जब भी मिलें पाकर ही रहेंगे। इस प्रकार का संकल्प उज्ज्वल भविष्य का संकेत है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

औषधोपचार

0 आंव में विक्षिप्तता तक भी आ सकती है। बुखार आ जाता है। कभी जलन होती है। मल में खून भी आ जाता है। ज्यादा दिन रहें तो पायल्स की शिकायत हो जाती है। अतः दबाना नहीं चाहिये।

देवरी

3-5-18 भारती है तारती, उसी की उतारें आरती" प्रात: 9.20

सब लोग सुन लो/समझ लें हमारे संघ का निरन्तर प्रवास चल रहा है। किस ओर जाना है ये पता नहीं। बस निरन्तर हो रहा है। इतना अवश्य है। इसमें रुकने की कोई बात ही नहीं है। मार्ग में जो भी गांव-नगर आते हैं, हम आगे बढ़ जाते हैं। आज मंगल का दिन है, यहाँ जंगल में भी मंगल हो रहा है। आप लोगों ने सहस्कूट जिनालय की बात कर रहे थे। मैं देख रहा था-बाहरवाला दे हैं। जबलपुर वाले सब चुप थे। (आगे दे देंगे)

पहले जो देगा वही तो आगे आनेवाला है। कल क्या? मध्याह्न में क्या? कब क्या होगा, इसका पता है क्या? इसलिये "शुभस्य शीघ्रं" विश्वास होना चाहिए। इसलिए शुभ कार्य के लिए विशेष चिंतन की आवश्यकता नहीं है। चिंतन क्यों नहीं करें महाराज! लक्ष्मी देवी बहुत कठीनता से आती है। आप क्या जानों? ऐसे लोगों से मैं कहना चाहता हूं। लक्ष्मी तो सदैव बाहर जाना चाहती है पर आप तैयार नहीं हो पाते।

"लक्ष्मी का जितना त्याग करोगे उतना ही मोह का त्याग होगा और सरस्वती का जितना अध्ययन करोगे उतना ही केवलज्ञान पास होगा।" अब आप ही सोच लो, क्या चाहते हो? लक्ष्मी या सरस्वती? [दोनों] दोनों चाहते हो, कोई बात नहीं। उसमें भी सरस्वती

ज्यादा या लक्ष्मी ?

सरस्वती को विशेष चाहना थे

अच्छी बात है। लक्ष्मी को तो छोड़ना ही छोड़ना है, सरस्वती को तो जब तक केवलज्ञान नहीं होगा तब तक जोड़ते ही जाना है। केवलज्ञान नहीं होगा तब तक माँ की भाँति वह उपदेश का काम करता रहेगा। आपका सभी कार्य अड़चन के बिना पूर्ण होगा। आप लोगों को उसी सरस्वती की आराधना करना प्रारम्भ कर देना चाहिए। क्यों कि निवास तो छूटने वाला है।

"निवास छूटने से पहले प्रवास अपना लें अन्यथा कल्याण होने वाला नहीं है। इसलिये दो बातें कहीं। हमारा प्रवास निरन्तर चल रहा है। कहीं भी रुकने का काम नहीं। नदी पर बांध बांधते हैं किन्तु नदी कभी रुकती नहीं वह तो ऊपर से जाना शुरू कर देती है। हमारा भी वैसा ही है फिर साधु को तो एक जगह वैसे भी नहीं रोकना चाहिए। कहावत है न- बहता पानी और... रमता योगी। तभी वह साफ-सुथरा रहता है। योगी को भी पानी की तरह बहते रहना चाहिए।

रोकना चाहते हो? नदी को बांधोगे तो गड़बड़ हो जायेगा। जितना चाहिये लो लो, बहते हुये भी। हमें भी बांधो नहीं। वह लक्ष्मी कहती है कि मुझे अपनाओ बहुत अच्छी बात है किन्तु ज्यादा संग्रह करना हानिकारक है, किन्तु आप उसकी बात सुनते नहीं हैं। सरस्वती भी यही

कहती है कि आपको उस लक्ष्मी की ज्यादा आरती नहीं उतारना चाहिए।

"वह भारती ही हमें तारती है, जो तारती है उसी की आरती उतारना चाहिए।" उसी की सेवा करना चाहिए। नहीं तो कह दो लक्ष्मी बाई अब तो आप जाओ। कहाँ? तो तिलवारा घाट पर जाओ, जितना चाहे उतना लगाते जाइये -3। जितना देंगे उतना ही पायेंगे नहीं तो इस जीवन में भी और अगले जीवन में भी काम आने वाली नहीं है।

हमारी बात समझ में आ रही है या नहीं? आप सुन रहे हो या नहीं? जितना त्याग करोगे उतना ही आपका जीवन सार्थक होगा। नहीं तो वह चिपक गया है, निकलना कठिन है।

अहिंसा परमो धर्म की जयाँ

कुंडम
4-4-18

"कुण्डम से बना मैत्री-कुण्ड" प्रातः 9-20

इस नगर में संघ का दो-तीन बार आना-जाना हो गया है। जो नगर मुख्य मार्ग से लगा हुआ होता है, वह नगर भी पुण्यशाली होता है। और इसको जब कभी भी याद करते हैं तो तारंगा की स्मृति आ जाती है। वहां पर वन्य पशुओं का आना-जाना होता है। सिंह भी, चीता भी और भी वन्य पशु नील गाय आदि भी आते थे उनके लिए पानी पीने में कठिनाई होती थी। दिन में सामान्य पशु एवं रात में सिंह भी आकर पानी पी ले

ऐसा स्थान बनाया गया।

हमारे सामने नामकरण की समस्या आयी। हमने नाम रखा- "मैत्री-कुंड"। माँस खाने वाला भी एवं शाकाहारी भी एक ही जगह पानी पीने आते हैं। हमने आपके कुंडम का नाम चुरा लिया। सुना है यहाँ गौ-शाला के लिए सरकारी जमीन है। टीकमगढ़ के पास भी 3-3½ हजार एकड़ जमीन इसी प्रकार की है। यहाँ 530 एकड़ जमीन है। लगता है जबलपुर वाले सोये हुये हैं। रोड पर ही यह जमीन 20 किमी. दूरी ही है।

इतनी जमीन है कि अन्यत्र कहीं जाने की जरूरत ही नहीं है। सरकार के पास है तो रखो। सरकारी जमीन है ये टोपी वाले (सांसद लोग) क्या कर रहे हैं। आधे से भी ज्यादा टोपी वाले हैं। पानी की भी पूर्ति हो जायेगी। उपयोग होना चाहिए। उसका महत्त्व अपना लम्बा-चौड़ा है। पशुओं का पालन होगा तो सबसे उत्तम होगा। जिस उद्देश्य के लिए वह जमीन है वही होना चाहिए। अच्छे से पानी आदि की भी योजना हो।

कितने पशु-पक्षी वहाँ आकर पानी पी सकें, घास आदि खा सकें, इसकी योजना तैयार करके काम शुरु कर देना चाहिए। दूसरे लोग तो कब्जा कर ही लेंगे। सरकार लोभ में आ गयी होगी अथवा सरकार सो गई होगी। तभी तो इस प्रकार दूसरे ने नजर

डाली है, फिर क्या? कोर्ट में जाना होगा।

इसका सदुपयोग करना चाहिये, ये इसका तात्पर्य है। हमने सोचा- कुण्ड का अर्थ पानी होता है। नदी पर डेम भी बनाया हुआ बताते हैं। इसका उपयोग करते जाइये। जितना अहिंसा के क्षेत्र में उपयोग करोगे उतनी ही सर्वत्र शान्ति-सुख का विस्तार होगा। आना और जाना तो यूं ही लगा रहेगा। हमारा भी आगे भी एकआध बार यूं ही आना हो जायेगा।

अहिंसापरमो धर्म की जय। ॐ

पड़रिया
5-4-18 "किलाबंदी हो बाइपास नहीं" प्रातः 9.20

धीरे-धीरे छोटी सी नदी सागर की ओर पहुँच जाती है तो वह अपना विस्तार, अपना मुख-पात्र बढ़ाती जाती है। जैसे-जैसे हम जबलपुर के पास पहुँचते जा रहे हैं- विस्तार बढ़ता ही जा रहा है किन्तु ये ध्यान रखें! बढ़ते हुये भी नदी बहुत चतुर होती है। वह किस तरफ मुड़ जाये कोई पता नहीं रहता। आपको किसी प्रकार की आकुलता नहीं करना चाहिए। ये भी बात है बहुत प्रकार की गाड़ियाँ होती हैं, उनका अपना मार्ग होता है किन्तु विमान... । विमान के लिए इस प्रकार की कोई आवश्यकता नहीं वह ऊपर की ऊपर भी जा सकता है। आप समझ रहे हो तो देखो।

अखबार में बहुत सारी खबरें होती होती है। किन्तु आप थोड़े से भी पुरी बात को जान लेते हो।

मतलब की बात ले लेते हो।

हम भी जैसे-जैसे मौसम सुहावना होता जा रहा है, विहार के योग्य है, ऐसा जान रहे हैं। वैसे भी महानगरो के पास में एक मार्ग जिसे बाइपास कहते है, उस बाइपास को आप ही लोगो ने बनाया है। हम क्या करें। पहले किलाबंदी होती थी अब बाइपास हो गये हैं। जो काम आप घण्टों में भी नहीं कर पाते, हम मिनटों में कर लेते है ये बात अलग है कि आप वाहनधारी है। वाहन से एक स्थान से दूसरे स्थान कुछ ही समय में पहुँच जाते है। वाहन से नीचे उतरते ही नहीं।

नम्बर भी समाप्त हो जाता है। भगवान से प्रार्थना करो कुछ हो जाये। हनुमान ताल में भी बाबा है, शिवनगर - संगम कॉलोनी में भी बाबा है और एक बाबा - छोटे बाबा भी है। सब बाबा के लिए मंत्र है परन्तु छोटे बाबा का मंत्र सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

Note → "छद्मस्थ का ज्ञान किसी काम का नहीं। कर्मोदय में वह उलटा ही ज्ञान करायेगा। अपनी धारणा को विपरीत बनाता चला जाता है। इसलिए सदैव विपाक विचय धर्म-ध्यान करो अन्यथा अन्तिम समय पसीना आता है।"

शंभ्मी

6-5-18 "कर्तव्य ही सच्ची पूजा" प्रातः 9.20

सब लोगों ने अपनी - अपनी भावनाओं को रखी है। सब लोगों ने यहाँ 3-5 कलश भी रखें हैं, आपकी भावनायें उसमें भर जायें। आप विश्वास रखें कर्तव्य करने वाले के पास ही भगवान रहते हैं। ये प्रेरणाप्रद पंक्ति हैं। सब लोग चाहते है कि भगवान मेरे घर पर क्यों नहीं आ रहे हैं? भगवान कर्तव्य वाले को ही चाहते है। अभी आपको कहानी सुनाई (किसान की कहानी)। इतना बड़ा लोक है। इसमें व्यापक रूप से आलोक पुंज सूर्य को ही माना जाता है।

जो उस आलोक पुंज के आने के पूर्व उठकर उसका स्वागत नहीं करता वह कर्तव्य से विमुख रहता है, अहिंसा का पालन नहीं कर सकता है। मुझे भी प्रकाश दे दो ऐसी मांग करने वालो से वह सूर्य कहता है- अपना कर्तव्य करो। प्रभु से - भगवान से- गुरु से प्रार्थना करो फिर तो प्रभु -भगवान- गुरु हमेशा- हमेशा आपकी कुटिया में ही बने रहेंगे तो अच्छा लगेगा कि नहीं:.. (लगेगा)

सूर्य जब उगता है तो उसकी पूजा की जाती है, उसकी आरती उतारी जाती है, उसको अर्घ्य चढ़ाया जाता है। डूबते हुये को कभी अर्घ्य नहीं चढ़ाया जाता। सही कह रहा कि नहीं? तब तो आपकी बुद्धि सही काम कर रही है। उगते को सभी प्रणाम करते है जब वही सूर्य अस्ताचल की ओर होता है तो उसकी कोई भी

आरती नहीं उतारता ।

भगवान से प्रार्थना करता हूँ, आप सबकी बुद्धि इसी प्रकार अच्छे से काम करती रहे । एक क्षण भी आपका गलत कार्य में नहीं लगे । हमारा भी प्रत्येक क्षण का उपयोग हो । "एक क्षण का भी अपव्यय नहीं करना ।" गुरुजी ने यही कहा था । जब बहुत निवेदन करें तब हओ कह दें, नहीं तो हओ नहीं कहना । देखो अथवा देख लेंगे । हाँ कहने की अपेक्षा ना भी नहीं कहना । महाराज हम संदेह में पड़ जाते हैं । हम किसी को संदेह में नहीं रखना चाहते । ना कहने से किसी का भी दिल दुख जाता है । इसलिये मैं कभी भी ना नहीं कहता । हाँ कोई बुलवा नहीं सकता ।

फिर ये बताओ अब आप लोग प्रतिभास्थली की संख्या बढ़ाना चाहते हो या नहीं । मैं देख रहा हूँ इस पाण्डाल में भी पीछे तक प्रतिभास्थली की संख्या ही पहुँच रही है (ये लोग तो बाहर ही पहुँच गये (सामान्य) । मेरी यही भावना है इसी प्रकार आप लोगों की संख्या दिन दुनी-रात चौगुनी । गुणित क्रम से बढ़ते ही जाये । फिर यदि जबलपुर जैसे 10 नगर भी आ जायें तो कम नहीं पड़ेगी । अब देखो अमरकंटक से जब चले थे तब किसका नाम था ?

डिंडोरी - शाहपुर का नाम, रांझी का तो नाम ही नहीं था । फिर भी आज रांझी में बैठने की जगह ही नहीं बची । अच्छा ये बताओ जबलपुर वाले क्या रांझी को अलग मानते हैं । अरे पूरा का पूरा जबलपुर

आज रांझी में हैं।

हम भी इतै ही बैठे हैं। बुंदेलखण्डी शब्द है- इतै। भारतीय भाषा में बहुत मिठास होता है। इससे विकास भी बढ़ता जाता है। महाकौशल भी जबलपुर में आता है। ज्यादा तो नहीं कहना चाहता हूँ। हमेशा सर्वत्र प्रकाश पड़ता रहे, यह भावना सभी को रखना चाहिए।

पूर्वजों ने पाठ पढ़ाया उसे सार्थक करते रहना चाहिये। नाम की चाह मत रखो- बस कर्तव्य करते जाओ। प्रसिद्धि के लिए नहीं- सिद्धि के लिए कर्तव्य होना आवश्यक है। यही एक पाठ सुन्दर है।

बेलखाडू अहिंसा परमो धर्म की जय।
7-4-18 "अपव्यय से बचना है दान" प्रातः 9.20

आप लोग यहाँ पर अपने आप ही व्यवस्थित हो गये हैं। जगह नहीं होने के कारण आप बैठे हैं या खड़े हैं यह ज्ञात ही नहीं हो पा रहा है। जगह कम होती है तो सब खड़े हो जाते हैं। व्यवस्थित हो जाते हैं। आप लोग लय से भी चलते हैं। कभी- कभी प्रलय जैसा लगता है। दोनों बातें घटित हो जाती हैं।

आप लोगों के मन में आकुलता तो हो गयी होगी। (विहार से) लेकिन क्या करें? अभी विहार करना जरूरी था। इसमें मैं क्या कर सकता हूँ। जबलपुर में वैसे भी पर्याप्त दे चुका हूँ किन्तु आपके लिए पर्याप्त भी अपर्याप्त हो जाता है। जो मिल

है उसका सदुपयोग करेंगो।

जितना विलम्ब करेन्गे उतना ही काम विलम्ब से होगा। जैसे परीक्षा में 3 ही घण्टे मिलते हैं जो एक वर्ष में भी नहीं कर पाता है वह मात्र 3 घण्टे में कर लेता है। यह आपका परीक्षा काल है। अतः इस समय का अच्छे ढंग से उपयोग कर लेना चाहिए। कब किसका नम्बर आयेगा पता नहीं। इतना अवश्य है जब जिसका नम्बर आयेगा जाना होगा। मरना सबको एक दिन अपनी-अपनी बार।

यह सूत्र सबके लिए है मात्र जैनीयों के लिए ही नहीं है। सभी मजहब में इसी बात को कहा है। फिर आप टिकिट खरीदो या न खरीदो अब तो यहाँ से चलिए। कब चले गये-इसका पता भी नहीं लगेगा। जब तक जो क्षण अवशिष्ट है उनका उपयोग कर लो। एक बात ध्यान रखना- "धन का अपव्यय नहीं करना भी दान है।" क्या कहा। दोबारा कहूँ। दान की परिभाषा है। धन का अपव्यय करना दान की कोटी में नहीं आता।

जो धन किसी के काम आ सकता था, आपने अपव्यय करके उस धन का दुरुपयोग किया यह गलत हो गया। इसे अच्छे ढंग से समझ लो। "जो जितना विषयों में खर्च करेगा उतना ही पाप बंध करेगा।" मैं आपको पाप बंध से

बचाना चाहता हूँ।

आप पाप से बचना चाहते हो या नहीं? "जिस प्रकार दुःख से सभी बचते है उसी प्रकार पाप से भी बचना चाहिए।" हिंसा करना पाप है। झूठ नहीं बोलना चाहिए। चोरी को सभी निन्दनीय मानते हैं। कुशील पाप मानते हैं। किन्तु परिग्रह। परिग्रह का तो अम्बार लगाना चाहते हैं। वैभव का प्रतीक मानते है। महाराज आशिर्वाद दे दो। जाते-जाते एक फैक्ट्री और खोल लूँ। ५ फैक्ट्री पहले से चल रही है। ये मानसिकता है।

संक्षेप में आप लोगो से यही कहना है, जो पुण्य योग से प्राप्त हुआ है उसका उपयोग कर लो। आप लोग अति विश्वास में आ गये थे। महाराज तो आ ही गये अब जबलपुर से जा नहीं सकते। हम तो जानते नहीं आप ही में से कोई रास्ता बता देता हैं। आप लोग गाड़ी से चलते है क्यों की शहर में रहने वाले हो। हमें शहरों में नहीं गाँवो में आनन्द आता है इसलिए पाँव-पाँव और गाँव-गाँव विहार करते हैं।

अब शहर का वातावरण बंद कर दो और ग्रामीण जीवन यापन करना शुरु कर दो। ये ब्रह्मचारी लोग बहुत ही अच्छा काम कर रहे हैं। आज जो रोजगार की बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गयी है, उसका समाधान

है, इन लोगो के पास।

अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी इस क्षेत्र (हथकरघा) में काम कर रहे हैं। अनेको को रोजगार के साधन देकर रोजी-रोटी दे रहे हैं। मैं प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ। ग्रामीण लोगो को बहुत ही तेजी से इसका लाभ मिल रहा है। महिलायें हो या पढ़े लिखे नवयुवक सभी अपनी मेहनत से अहिंसक वस्त्रों का निर्माण कर रहे हैं। 400-500 तक तो आसानी से प्राप्त कर लेते हैं ज्यादा मेहनत करे तो 1000 भी पा रहे हैं।

वस्त्र हिंसक नही अहिंसक होना चाहिए। प्रक्षाल का छन्ना, अहार, पानी का छन्ना, चिकित्सालयों में आहार में, पूजन में अर्थात सभी क्षेत्रों में अहिंसक वस्त्रों का ही प्रयोग होना चाहिए। इन हेतुओं को लेकर यदि वस्त्रों के बारे में समझेंगे, अवश्य ही आप इस ओर कदम बढ़ायेंगे। भारत को पूर्व स्थिति में पहुँचाने का काम है ये। आजका यह दृश्य देखकर बहुत प्रशंसा होती है।

देखो! ताली बजाने लगे। ये ताली जिस प्रकार बजायी इसी प्रकार जो रोजगार से रहित है उनको दान दे दें तो दिन दुनी-रात चौगुनी आपको होता जायेगा। चिंता मत करो। ये आपका बैंक नहीं- हमारा बैंक ऐसा ही है। आपका पाई-पाई हजारों होकर मिलेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

कटंगी

8-4-18 "मत घुसाओ लोभतंत्र को लोकतंत्र में" प्रातः 9.20

सूर्यनारायण की ज्योति भी आपको कम लग रही है तो समझ लेना आँखो में कमी आ गयी है। [किसी के द्वारा mob. की लाइट जलाने पर]

शास्त्रों में उल्लेखित है, वस्त्रों को साफ करने के लिए नदी - तालाब पर जाते हैं और जो भी साधन सामग्री है उसका उपयोग करते हैं। आपको ध्यान होगा। आपके सामने समुद्र जितना पानी है किन्तु उसको न देख एक तसला पानी नाप - तौल से लेकर उसमें साबुन - सोड़ा जो कुछ भी है उसे डालकर धोना प्रारम्भ करते है। कब तक? जब तक कि साफ न हो जाये तब तक करते हैं।

कपड़ा गंधा भी न रह जाये और साबुन/सोड़ा खराब भी न हो दोनों बातों का आप ध्यान रखते हो। नाप-तौल कर ही पानी क्यों लेते हो? ज्यादा नहीं ले सकते। अन्यथा साबुन-सोड़ा कहाँ गया पता ही नहीं चलेगा। सीमित जल में ही अपना काम करते हो भले ही सामने जल का भण्डार हो। इसी प्रकार धन जितना आवश्यक है उतना ही रखें, ज्यादा धन मिल गया है तो...।

साबुन/सोड़ा की तरह उसका महत्व समाप्त हो जायेगा। उस सीमित में बहुत चमत्कार है। परिग्रह महापाप है। इसे अच्छे से

समझ लें।

गांधी जी की एक छोटी सी किताब थी। उसमें लिखा था - यह जो कुछ भी सम्पदा है वह तुम्हारी नहीं, वह सम्पदा समाज की है। किताब भले ही छोटी सी थी पर चोटी के विद्वानों के भी कान पकड़ने वाली है। [Recording पर] अखबार से कुछ नहीं होता। होता भी होगा तो पूरा नहीं होता।

तो मैं कह रहा था, सम्पदा के इकट्ठे करने के बहुत सारे तरीके होते हैं। बिड़ला जी के द्वारा अपने बच्चों के नाम लिखा पत्र पढ़ा बहुत ही अच्छा लगा। उस पत्र में भगवान महावीर के ही सूत्र मिल गये। हम सेठ/साहूकार बन गये - ऐसा नहीं है। जैसे - बाती जलाने हेतु तेल आवश्यक है किन्तु ज्यादा करोगे तो - बाती ही बुझ जायेगी। आप लोग भी "लोकतंत्र में लोभतंत्र को मत लाओ।" यह लोभतंत्र आपको कहाँ ले जायेगा पता नहीं।

लोकतंत्र का मतलब ही परिग्रह परिमाण व्रत है एक प्रकार से। किन्तु आज लोकतंत्र का मतलब न ही नेता समझते हैं न ही आप। नेता को चुनने वाले भी तो आप ही हैं। आप चाहे तो उसे हटा भी सकते हैं। पर मुझे न ही आप बुला सकते हैं, न ही मुझे भेज सकते हैं। लोकतंत्र को तभी सुरक्षित रख सकते हैं। यह परिग्रह परिमाण व्रत उसे सुरक्षित

रखने का अमोघ अस्त्र है।

आदिनाथ से महावीर तक सभी २४ तीर्थंकरो ने इसी का उपदेश दिया। इसी के पालन में जनता का कल्याण निहित है। जो इस सूत्र को नहीं पालता वही सुख से वंचित रह जाता है। आप जान लो आपको क्या करना है।

हमारा अभी प्रवास चल रहा है। लोग पूछते हैं, महाराज आप कहाँ से आ रहे हैं? मैं उनसे पूछना चाहता हूँ आप कहाँ से आ रहे हैं पहले ये बता दो। कहाँ जा रहे हो पहले आप बता दो आप कहाँ जा रहे हो? सरकार की लम्बी-चौड़ी सड़क बनी है। आप भी आते हैं और जाते हैं। हम भी आते-जाते हैं। नेता लोग भी आ जाते हैं, उनके लिए भी यही उपदेश है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

ईर्यापथ → एक राजा था, वह कभी बिमार नहीं पड़ा। राजवैद्य भी हैरान कि हमारा कोई काम ही नहीं है। एक दिन राजा को मट्ठा की इच्छा हुयी, वैद्यराज ने सोचा इस महिने में मट्ठा-जरूर बिमार करेगा। लेकिन जैसे ही मट्ठा हेतु जाने लगा तो राजा ने तुरंत पुकारा और कहा - उसमें जीरा मिला देना फिर कहा - उसमें कालीमिर्च फिर कहा - सौंठ फिर कहा - गटपट करके लाना। राजवैद्य अपना माथा पकड़ लिया। सोचने लगा राजा तो बड़े ही ज्ञानवान है, उन्होने बिमार होने के सभी कारणो को

दूर कर दिया। इसी प्रकार आचार्यश्री ने कहा अभी सीधे छाछ/मट्ठा नहीं लेना। विहार करके आते हैं बहुत अच्छा लगता है किन्तु वह नुकसान कर जायेगा। अतः उसमें जीरा-सोंठ-काली मिर्च मिलाकर गटपट करके लेने से कुछ नहीं होगा।

"यह कार्य एक-दूसरे महाराज आपस में बोलकर कर सकते हैं। श्रावक से कह सकते हैं उन महाराज जी को ऐसे चलाना। वे आपके लिए कह दें। काम हो जायेगा। मूलाचार ग्रन्थ में आया भी है कि दशधर्म में त्याग धर्म का पालन कैसे? दान कैसे? तो इसी तरह एक-दूसरे पर अनुग्रह करके उन्हें औषध/आहार व्यवस्थित चल जाये, ऐसा करना चाहिए। यह वैय्यावृत्ति भी हो जायेगी और दान भी।"

सिंग्रामपुर

9-4-18 "भक्ति करें वितराग की" प्रातः 9.20

अल्पकाल में ही इस सिंग्रामपुर में हमारा आना हो गया। लगता है देव लोग भी यहाँ की भक्ति के बारे में सोचते होंगे। हम भी तो वहीं से आये हैं। भक्ति अलग वस्तु होती है और विषयों की शक्ति अलग रूप से होती है। भोग-विलास में ही देव लोग लगे रहते हैं और भक्ति में धरती के पूत लगे रहते हैं। उन्हें देव लोग भी देखने के लिए तरसते रहते हैं। आप देव होना चाहेंगे कि नहीं? "हम

वितरागी बनें अथवा न बनें कोई बाधा नहीं, वितरागी की भक्ति तो अवश्य करें।

इससे बहुत बड़ा बल मिलता है। पूर्व में जितने भी संत हुये, उन्होने इसी प्रकार की भक्ति की जैसे तो दुनिया है ही नहीं। वे एकान्त में ही रहते हैं। भावों के माध्यम से शरीर से ऊपर उठकर एक मात्र आत्मस्वरूप में ही रमण करते है। वो मात्र देव-गुरु-शास्त्र के बारे में ही सोचते रहते हैं। एक-एक क्षण उसी में लगे रहते है। सदैव ऊपर ही उठने का पुरुषार्थ करते रहते हैं।

अभी एक कृषकाय शरीर है जिनका वे आये। कहने लगे - महाराज अब मुझे कुछ नहीं चाहिए बस जीवन में जो भी पाप कार्य किया उनका प्रायश्चित चाहिए। वृद्धावस्था है आप कल्याण कर दिजिये। हमने पूछा - क्यों रात्रि में चारों प्रकार के आहार का त्याग है। उन्होने कहा - बहुत दिन से है। अब परीक्षा ली जायेगी। वे कहते है - हम परीक्षा में पास होंगे। एक दूसरे दादा जी कल आये थे। असाध्य रोग से ग्रसित थे। हमने पूछा क्या चाहिए? रोग तो आपसे लग ही गया है तो रोग से आप लड़ो अपने आप ही ठीक हो जायेगा।

चारों प्रकार के आहार का त्याग कर दिजिये। जो लेना है दिन में ही लेना है। उन्होने कहा - आपने कहा है तो पक्का है, इस नियम का पालन करूंगा। रात में कुछ भी नहीं लेन्गे। व्रत को

कभी खण्डित नहीं करेंगे।

असाध्य रोग से पीड़ित भी है फिर भी धर्म के प्रति / देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्ति-श्रद्धा से ही ये होता है। जिसके पास इतना सम्बल है उसे दुनिया के बल की जरूरत ही नहीं है। ऐसी भक्ति आप सभी भी बनाये रखो। आने-जाने के रास्ते पर अपने गाँव को बसाये हुये है। पुण्य तो है। पुण्य बढ़ाने का और कोई साधन नहीं। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ, आपकी भक्ति "दिन दुनी-रात चौगुनी" बढ़ती ही जायें।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

जबेरा, 10-5-18 "श्रद्धान से अनुभव तक की यात्रा" प्रातः 9.20

आप जानते होंगे कि दूध में घी का स्वाद आता है कि नहीं? आता है? हाँ, दूध में घी का स्वाद आता है। वैद्य लोग भी घी के परहेज के लिए कह रहे हैं और दूध लेने के लिए कह रहे हैं। तो आपकी हेल्थ गलत हो गयी। उसमें घी होते हुये, उसका सेवन करते हुये भी उसका अनुभव नहीं होता। इसलिए नहीं होता क्यों की वर्तमान में वह दूध है, इसका प्रध्वंसाभाव होने पर ही घी का स्वाद आयेगा। कितना भी श्रद्धान कर लो अनुभव में तो नहीं आयेगा।

इसका मतलब है कुछ और करना बाकी है। इसलिए यदि इस दिशा में पुरुषार्थ नहीं करोगे तो श्रद्धान वही बना रहेगा आगे नहीं बढ़ेगा। ये कितना

अद्भुत सिद्धान्त है।

आत्मा का अनुभव तभी होगा जब शरीर के अनुभव से ऊपर उठेंगे। जब आत्मा का अनुभव होता है तब शरीर का अनुभव समाप्त हो जाता है। हमारे भीतर रागादि विद्यमान हैं, भगवान उन दोषों से परे हैं। हम श्री जी का दर्शन करते हैं तो हमारे ये दोष दूर क्यों नहीं होते। सब पर वस्तु होते हुये भी, हमने ये त्यागा - ये त्यागा यह श्रद्धान बना हुआ है इसका अर्थ अभी भी परदृष्टि ही बनी हुयी है।

बाहरी पदार्थों की ही याद आ रही है। आत्मा का तो त्याग किया नहीं फिर उसे क्यों भूल गये। मैंने एक वर्ष पूर्व त्याग किया मतलब आपकी परिक्रमा पर वस्तु के इर्द-गिर्द ही हो रही है। इसलिये आचार्यों ने कहा है कि आपको वितराग का अनुभव करना है तो जिन्होंने उस वितरागता का अनुभव किया उनके पास ही रहो। पर वस्तु का अनुभव न हो। केवल श्रद्धान में ही मत रहो। "अनुभूति के लिए श्रद्धान भूमिका है।"

ध्यान रखो। दूध नहीं रहेगा, तभी घी का अनुभव होगा। आज दूध के साथ घी का अनुभव हो रहा है। जो इस तरह की बात करता है उसके बहकावे में नहीं आना। ऐसा व्यक्ति आपके दूध को भी आपसे छुड़वा रहा है घी तो दूर-दूर तक नहीं। घी भी गया और दूध भी गया। ऐसा हम नहीं करवाना चाहते। एक बार

दूध को छोड़कर घी का स्वाद तो लेकर देखो।
ले लो, बाद में कहेंगे, ये तो बहुत अच्छा हो गया। मजा किसने लिया। जब दूध को जमायेंगे, दही बनायेंगे, मंथन करेंगे- नवनीत निकालकर - गरम करेंगे तब और कुछ नहीं मात्र घी रहता है। अभी तो आप उससे दूर हैं। परवस्तु को रखा है तो रागपूर्वक रखा है। वितराग विज्ञान के लिए यह सिद्धान्त अति आवश्यक है। इस प्रकार सिद्धान्त एवं अनुभव में अन्तर है। हमारे इस उदाहरण को याद रखेंगे।
घी का परहेज बताया है किन्तु दूध के साथ ले लो। देह में आत्मा है। उस आत्मा की प्राप्ति जब भी होगी देह से ही होगी। आत्मा का अनुभव तभी होगा जब मोह का त्याग करेंगे। वह भी जब पूरा त्याग करेंगे। थोड़े - बहुत त्याग करने से हो जाये, नहीं होगी। दही- नवनीत तक पहुँच जाता है उसमें घी तो रहता है किन्तु वह कहता है मैं अलग हूँ।
जब तक तपोगे नहीं तब तक वर्षा होनेवाली नहीं। वर्षा होगी तभी वह कठोर मिट्टी मृदु बन जायेगी सभी दरारें खत्म हो जायेगी। अभी शिविर लगाने की बात कही। हम भी शिविर लगाते हैं किन्तु आप जैसे नहीं हमारा शिविर निरन्तर चलता रहता है, कभी टूटता नहीं। उसका नाम है- "सक्रिय सम्यग्दर्शन प्रशिक्षण शिविर" इसके लिए पैसे- धेले की भी जरूरत नहीं है।
अहिंसा परमो धर्म की जय।

नौहटा

11-4-18 कमाई का साधन हैं- शुभ निमित्त प्रातः 9.00

गर्मी का समय चल रहा है। लेकिन दो-तीन दिन से 2-3 बजता है और काली-काली घटायें आसमान में छा जाती है। तरसों - परसों - कल भी ऐसा ही हुआ। मैंने सोचा बहुत जनता आयेगी - बैठेगी कहाँ? लेकिन आप देते हुये सभी बड़ी शान्ति से बैठे हैं। कल रात 12 बजे तो जहाँ रुके थे (ढाबा में) वहाँ A.C. में हो गये हो ऐसे लगनेलगा। बहुत ही ठंडा।

संसार है। इसमें जो भी द्रव्य/वस्तु है वह परिणमन करती रहती है। हम भी एक द्रव्य है। परिणमन हमारा भी अनिवार्य है। "जड़ का परिणमन राग-द्वेष नहीं, जीव द्रव्य का परिणमन है राग-द्वेष।" कर्म के उदय के कारण राग-द्वेष होता है। नहीं भी करना चाहे तोनिमित्त ऐसा मिल जाता है उससे प्रभावित हो जाते हैं। निमित्त दोनों तरह के होते हैं। शुभ निमित्त भी एवं अशुभ निमित्त भी। शुभ कर्म के निमित्त द्वारा सबसे ज्यादा आय भी आप ही लोगों की होती है। [तपोमति जी संघ सहित थी]

भाग्योदय में एक हफ्ता मिला वो नहीं कह रहे। परसों की बात भी वर्षों हो जाता है। तो दोनों प्रकार के निमित्त मिलते हैं। हमारा कहना है कि शुभ के निमित्त में और शुभ - और शुभ कर्म करें। आर्तध्यान (विकल्प) न करें। क्यों की दुर्लभ वस्तु एकदम मांगने से नहीं मिलती। एक बार मिल जाये तो वर्षों तक

नहीं मिलती।

देव बन गये अब सागरोपम आयु तक बैठे रहो उठते ही। ज्यादा मांग नहीं किया करो। ऐसी उच्च क्वालिटी का बंध करो एक-आध भव ही बीच में रह जाय और मुक्ति का लाभ हमें भी मिल जाय। आकुलता तो होती है, क्या करें। एक बार देखा था- सुना तो था ही। किसान नदी किनारे खरबूजा की खेती कर रहा था। बहुत सारे खरबूजा थे। वह किसान कुछ कर रहा है। एक को बीच में तथा अन्य सभी को उसके आजु-बाजु रख रहा है।

इसके पास-पास क्यों रख रहा है? समझ में नहीं आ रहा है। बीच में जो खरबूजा है, वह पक चुका है, सुगंधी भी फूट रही है। अन्य पके नहीं हैं, उनमें सुगंधी भी नहीं फूट रही है। इसका मतलब आप जान गये होंगे। खरबूजा को देखकर खरबूजा का रंग बदल ही जाता है। अपने को ज्यादा कसरत की जरूरत नहीं, बस थोड़ा सा खिसक गये। इसी प्रकार मोक्षमार्ग में भी युक्ति से काम होता है। (आप कैसे जानते हैं?)

आप लोग खाते हो तो देख लेता हूँ और हम आप ही के मुख से सुन भी लेते हैं। बुंदेलखण्ड वालों की बात प्रायः सुन लेते हैं। यह चालु शब्द है- सुन लेते हैं। जो खरबूजा अभी पका नहीं वह भी पकने के लिए तैयार हो जाता है। जो जल्दी पक जाता है, वह जल्दी संसार से मुक्त हो जाता है। ये ध्यान रखो! अपने परिणामों को हमेशा-हमेशा

शांत बनाये रखो।

जिनको समागम नहीं मिलता उनकी भी सोचा करो। अपने ही स्वार्थ की मत सोचा करो। धर्म स्वार्थ को सदैव गौण करता रहता है। इसीलिए वह किसान सबके लिए प्रार्थना करता है- बाबा पानी लाने है। समय पर वर्षा हो- अतिवृष्टि भी न हो- अल्पवृष्टि भी न हो। सभी जीवों का भला हो। उन्हें भी सत् समागम मिले। सभी निरोग बनें। दूसरों को भी सहयोग की भावना होनी चाहिए।

गरीब के बारें में भी सोचा करो। किसान है वह गाँवों में रहकर स्वयं का एवं पशुओं का पालन करता रहता है। ऐसा भाव करना सात्विक भाव है- शुभ भाव है- करुणा भाव है। शुभ भाव संसार को कम करने वाले है। विषयों की अपेक्षा तो रखना देंगे। मेरा भी मोह कम हो- संसार का भला तो हो ही जाता है। हमें याद आता है आपके इस मोहल्ला में 2-3 बार तो आ ही गये। आप नहीं थे तब आ गया तो क्या करोगे।

29 साल बाद आये हैं, ऐसा आप कह रहे हो। 50 साल तो बुंदेलखण्ड में ही हो गये। आप भूल जाते हैं। हम तो याद रखते हैं। बाद में समय पर बनजी के लिये आ जाते हैं। बनजी का मतलब घोड़े पर बैठकर कैसा- क्या चल रहा है?, कितना पुराना मामला हो गया आदि। इसी प्रकार समय- समय पर अपने दिक्षितों को भी भेज देते हैं। जाओ- बनजी

बनाकर ले आओ।

इस प्रकार हमारी दुकान बंद जाती है। आप लोग दुकान बढ़ाना नहीं चाहते हो। दुकानदारी हेतु कलकत्ता भेजने की कोई आवश्यकता नहीं। भगवान ने कहा- उधार भी देओ पर समय-समय पर उस उधारी को वसुल कर लिया करो। याद तो था हमें। हाँ! और कोई रास्ता भी नहीं था,ये अलग बात है। आपको कम रास्ता याद है,हमें सारे रास्ते मालुम है। इस गलतफहमी में मत रहा करो कि महाराज तो हमारे इतै ही ले जायेंगे। ये गाड़ी अभाना से इतै आ गयी। कब छुट जाये पता नहीं।

साल गिनते जायें, ये भी धर्म ध्यान हैं। महाराज का आहार नहीं हुआ-ऊ इस तरह से बोलते रहने से भी निर्जरा होती है। ये आर्तध्यान नहीं, धर्मध्यान है। हम कभी भी बुरा नहीं मानते। इतना अवश्य है- हमारे यहाँ हो, दूसरे के यहाँ न हो ऐसी भावना करना गलत है। इष्ट पदार्थ की भावना है, मिल नहीं रहा तब तक बैचेन है, किन्तु यह भी धर्मध्यान होगा क्यों कि ऐसी भावना निर्विकल्प का कारण है।

इसी भावना से कर्मों की निर्जरा होती है। कर्मों में भी मोहनीय कर्म की निर्जरा मुख्य रूप से होती है। मोहनीय के क्षय होने से शेष तो हो ही जायेंगे। इतना ही पर्याप्त है। हमारे खरबूजा के उदाहरण को याद रखना।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

दमोह
12-5-18 "मोह से निर्मोह की यात्रा" प्रातः 9.20

जब मानसून आना होता है। तब आसमान में घटायें छा जाती है। बादल की टूकड़ी पीली-पीली काली-काली रहती है। किसान उसका निरीक्षण करता रहता है। कभी-कभी मानसून आ गया लगता है, पर बीच में ही भटक जाता है/अटक जाता है। कभी-कभी बादल हवा के झोंके से इधर-उधर चले जाते हैं। मानसुन स्थिर नही रहता-अस्थिर है।

कल कहा गया दमोह यहाँ से 25 किमी. है। गर्मी तेज है। हमने कहा- गर्मी का ठिकाना नहीं और ज्येष्ठ भी दो है। अभी वैशाख चल रहा है। इन लोगो ने दो बार का एक ही बार में चला दिया। ज्येष्ठ दो होने से ठण्डक भी मिल रही है। आगे का क्या होगा यह तो बड़े बाबा जानते है। जितने क्षण मिले है, उन्हें भगवान के स्मरण से सार्थक बनायें। "हम अभी भगवान नहीं बन सकते तो कोई बाधा नहीं जो भगवान बन चुके है; उन्हीं को अपने ध्यान का विषय बनायें।"

यह परिश्रम साध्य है-असाध्य नहीं। कई तरह के रोग होते हैं, कुछ असाध्य रोग जैसे होते है जिनकी चिकित्सा नहीं होती ऐसा नहीं दीर्घ साध्य की आवश्यकता होती है। मोह की चिकित्सा भी इसी तरह से होती है। दमोह वालो को मोह के बारे में क्या बतायें? संसारी प्राणी अनादि से इस मोह के चंगुल

में फंसा है।

धीरे-धीरे हमें किस-किस से हानि है और किस-किस से लाभ है यह समझ में आता है तो मोह पर प्रहार करते है। इस तरह एक दिन मोह से रहित हो निर्मोह हो जाते हैं। तालियाँ ज्यादा क्यों बजी? इसमें भी आप लोगों का मोह ही कारण है। लेकिन हमने निर्मोह की बात कह दी है। मोह कम नहीं हो सकता - ऐसा नहीं है यदि अच्छे से कमर कस ले तो मोह भी बिगड़ जायेगा।

मोह से घबड़ाने वाला कभी भी मोह को वशीभूत नहीं कर सकता है। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। जो साधु बड़े बाबा के यहाँ आते-जाते रहते हैं उन सभी के द्वारा प्रवचन तो आप लोगों को काफी मिलता रहता है। मोह को छोड़ निर्मोह होना ही हमारा लक्ष्य हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

अंशमूल "विद्यायतन विद्यापीठ का शिलान्यास" मध्याह्न 4.00

- हिन्दी माध्यम से ही होगा अध्ययन - संकल्प लें। अंग्रेजी विषय पढ़ सकते हैं पर उसे माध्यम नहीं बना सकते।
- मात्र इंजिनियर अथवा डाक्टर बनना ही सब कुछ नहीं, आपकी कला आपके जीवन को निखार सकती है। प्रयोग करें।
- अमाना में हुआ था द्रव्यसंग्रह का पद्यानुवाद।

[प्रवचन अमानसे]

नरसिंहगढ़

13-5-17 सावधानी हटी- दुर्घटना घटी प्रात: 9.20

ज्ञान धर्म में असावधानी से क्या हो जाता है अथवा उतावली से कैसे प्राण संकट में पड़ जाते है। बहुत तेज भूख लगी थी, इसलिये मित्र के घर चला गया था। मित्र यह कहकर बाहर चला गया कि मैं अभी आ रहा हूँ। उसने देखा-खाने की चीज थी सो खाली। लड्डू था हमारे ही लिये बनाया होगा। इसलिये उसने खा लिया। मित्र ने देखा पूछा क्यों तुमने लड्डू खा लिया। उसने कहा-हाँ। क्यों क्या हुआ?

कुछ नहीं इस पर से एक सर्प निकल गया था। अब क्या करें? मुख में जो था उसे तो थूक दिया। हाथ में था उसे फेंक दिया। पेट में जो था उसे उल्टी करके निकालना चाहा लेकिन नहीं निकल पा रहा है। वैद्य जी के पास गया, बचाओ-बचाओ। अरे! तुम्हारे नाखुन तो पीले नहीं नीले पड़ गये। इन लोगों को तो बस पीला-पीला (सोना) ही दिखता है। भले ही धतूरा ही क्यों न हो। जो कुछ भी देकर उसके जीवन की रक्षा कर दी।

अब ज्ञान होने के उपरान्त कभी पास भी नहीं जाता। असावधानी के कारण ऐसा हो गया था। अब देखो। ज्ञान महामद पियो अनादि, भूल आपको भ्रमत व्याधि.... सबकी कथा है ये, व्यथा हो गयी है। ज्ञान हो गया तो छोड़ने में क्या बाधा है। विश्वास नहीं होता है, इसलिये

ऐसी स्थिति बनी है।

जहाँ प्राण जाने की संभावना वहाँ तो विश्वास पर जहाँ सबकुछ ही चला जायेगा वहाँ विश्वास नहीं हो पाता है। अपराध में भी जब एक व्यक्ति कोई गलत कार्य करता है तो अपराध माना जाता है, पचासों व्यक्ति करने लग जाये तो...। चलन में आ जाता है, इसी को प्रचलन बोलते हैं। जब प्रचलन में आ जाये तो फिर पुलिस-राजा-महाराजा भी कुछ कर नहीं सकते। इसी प्रकार मोह की दशा है। आपसे मोह छोड़ने की बात कर रहे हैं।

वह व्यक्ति अच्छा है जिसने एक ही बार में छोड़कर रक्षा कर ली। आपकी रक्षा न ही भगवान कर सकते हैं, न ही हम। बोलो। हाथ जोड़ने से कुछ नहीं होत है। शब्द बुन्देलखण्डी आ गया तो आ गया। मैं क्या करूं। अब प्रयोग करना प्रारम्भ कर दो, प्रयोग करने से ही रक्षा हो सकती है, नहीं तो किसी प्रकार से रक्षा नहीं हो सकती। आज भी नहीं और कल भी नहीं। जिसने मोह को छोड़ दिया उस पर विश्वास नहीं तो कुछ नहीं होगा।

स्वप्न में भी राम कथा ही याद रहे। किन्तु आप लोग कथा तो राम की करते हो और रावण की व्यथा है। ज्यादा तो नहीं कहना चाहता। वह व्यक्ति बहुत समझदार था जिसने विश्वास किया। मृत्यु पर विश्वास जल्दी हो जाता है, पर मोह पर जल्दी विश्वास

नही हो पाता है।

बाद में जब ज्ञात हो जाता है तो सोचता है, हम मित्र किसे माने? क्यों की तुम भी तो कर रहे हो यह मन में भरा रहता है। दोष को दोष माने और पर को पर माने। पर के आश्रित न होकर के विश्वास होना चाहिए। अपने पर विश्वास करोगे तो बात समझ में आ सकती है। बड़े-बड़े सन्तो ने कहा- मोह की चपेट में मत आओ अन्यथा पीस जाओगे। इस बात को स्वीकारेंगे नहीं तो नशा का प्रभाव कम नही होगा। बढ़ता ही जायेगा।

ऐसा जबरदस्त मोह का नशा चढ़ा रखा है। उसके बाद भी रुकने का नाम नहीं लेते ही जा रहे हैं। हर काम में मोह करते हैं। मैं कहता हूं आप छोड़ नहीं सकते कम से कम उसे कम तो कर सकते है। ईमानदारी से धीरे-धीरे कम करें बेइमानी नहीं होना चाहिए। "बेइमानी करत जाय, ईमानदारी कहत तो हँसत जाय।" असम्भव नहीं है, कठिन है/साध्य है। एक साथ कह दे तो नहीकर सकते।

जैसे लगातार चलना है तो एक साथ नहीं कहते 10-20 किमी० का ये श्र०लोग बता देते है। जब मंजील पास आने को होती है तो ये लोग गाड़ी से उतरकर पैदल चलने लग जाते हैं। अभी सीख रहे हैं। इतना तो समझ में आ रहा है। आपको भी धीरे-धीरे मोह को कम

करना है।

मोह कम करने के लिए मुहूर्त मत देखो, न ही दद्दा की ओर देखो। समझ में भर आ जाये। यह नरसिंहगढ़ है, कौनसी बार आये? आप भी भूल जाते हैं और हमें तो याद रहता ही नहीं है। यहाँ फेक्ट्री के कारण लोग बाहर से आते रहते हैं और काम करते हैं। पहले की अपेक्षा काफी लोग आकर बस गये। मन्दिर भी बन गया है और भक्ति भी करते हैं।

व्यवस्थित कार्यक्रम है। यहाँ लोग आते तो हैं पर वे काम पुरा होने पर चले जायेंगे। तब यहाँ खाली हो जावेगा। अतः व्यवस्थित कार्य होगा तो अच्छा होगा फिर महाराज भी आ जायें तो और अच्छा है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

कोटियागढ़
14-3-18 "युक्ति के साथ हो शक्ति का प्रयोग" प्रातः 9.20

अभी आपके सामने एक 'युवा शक्ति' ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। [स्थानीय जैनेत्तर बन्धु ने हाथ एवं सिर से नारीयल फोड़ा] एक युक्ति होती है। उससे शक्ति ज्ञात होती है कि कितनी शक्ति है। युक्ति के साथ शक्ति का प्रयोग करने से कम समय में सर्वोपयोगी हो जाता है। वह शक्ति हजारों/लाखों के काम आ सकती है।

आपको अपना काम करना है तो युक्ति से करो। धर्म करना है, करते जाये कोई बाधा नहीं। भावना थे

हो कि दूसरे का कल्याण हो, दूसरे की भी उन्नति हो। महाराज ये समझ में नहीं आया भक्ति हम करें और कल्याण उसका हो।

आपका तो होगा ही, दूसरे का कल्याण उसमें हो जाये तो नुकसान क्या है? फायदा ही है। नारीयल तो एक ही चढ़ाया। आप दूसरे की उपेक्षा करोगे तो आपको भी कुछ नहीं मिलेगा। उन्होंने नारीयल फोड़ा तो पहले में कुछ नहीं मिला, दूसरे में गोला निकला। अर्थ स्पष्ट है, परिश्रम उतना ही हो रहा है किसी को कुछ नहीं मिलता और किसी को सब मिल जाता है। श्रम केवल शारीरिक ही नहीं बौद्धिक श्रम भी होता है।

आज धार्मिक हानि हो रही है। मेरा ही भला हो ऐसा न सोचकर सबका भला हो। मैं तो यहाँ नहीं आया था। भगवान जी मिले तो आ गया। इधर बकस्वाहा तक और उधर फुटेरा तक आये। इस तरफ एक बार आ रहे थे तो नदी चढ़ जाने के कारण केरवाना में ही रुक गये। जो बात है उसे सही-सही कहने में क्या बाधा है। इस बार 50 वर्ष में जो रुक गया था वह भी हो गया।

यहाँ के लोग आते तो रहते थे। इस प्रकार ये बुन्देलखण्ड है। केन्द्र से संबंध हो तो फिर दूर तक भी पहुँच जायें तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। एक-आध गाँव रह ही जाता है। यहाँ

के गाँवो में भी सात्विकता झलकती है।

अभी नारीयल फोड़ा गया। उसमें मुख्य दो चीज आपने देखी नरेटी एवं गोला। बाहर नरेटी कठोर होती है और भीतर कोमल एवं मीठा गोला रहता है। हमारा धर्म भी ऐसा ही है। इस काया से कठोर श्रम करेंगे तब भीतर का वह कोमल आत्म तत्व प्राप्त होगा। धर्म कोमल है तो कठोर भी है। भीतर से जो कोमल होगा वही सर्व जनता के लिए कुछ कर सकता है।

सबसे सम्बंध जुड़ना आवश्यक है। एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति से भी धर्म का अर्जन होता है। एक-दूसरे को हटाकर चलने से दांव-पेच होते हैं। जहाँ दांव-पेच होते है वहाँ आत्मा को तो भूल ही जाते है। नरेटी होना आवश्यक है तभी भीतरी आत्म तत्व की सुरक्षा हो सकती है। बंदर कभी भी नारीयल तोड़ नहीं सकता। तोड़ भी ले तो फोड़ नहीं सकता। मनुष्य ही है जो ये कार्य कर सकता है। मनुष्य का भी यदि भाग्य खराब हो तो भूसा ही रह जाता है।

हम जो भी धर्म-कर्म करते है उसमें हमारा भी एवं दूसरे का भी उद्धार निश्चित है। इसलिए हमेशा एक-दूसरे का सहयोग करते रहे। यह सनातन धर्म अनादि से चल रहा है इतना ही कहना है। आज यह अल्पकालीन है किन्तु पुरा बुन्देलखण्ड आया है।

भाग्योदय अलग से क्या जो आया है उसके भाग्य का उदय था तभी तो यहाँ आया है।

[राजस्थान से भी लोग थे निवेदन किया]

हम कहाँ से आये हैं ? पता है। हम भी कह सकते हैं कि हम राजस्थान से आये हैं। गुरुजी ने यही कहा था - चिंता मत करना जहाँ दुकान अच्छी चले वहाँ चले जाना। बुन्देलखण्ड में अच्छी दुकान चलेगी। हम तो उन्हीं की बात मानते हैं। सही दुकानदार तो वही है जो जहाँ दुकान चले वहीं अपनी दुकान खोले। यहाँ इतने ग्राहक आते हैं कि समझाना कठिन हो गया है और वहाँ समझाते - समझाते थक गये हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

- आचार्यश्री ने कहा वेदी के पास इतनी शान्ति एवं शीतलता है तो वेदी में कितनी शान्ति होगी।
- गुरुजी कहते थे - दार्शनिक / आध्यात्मिक ग्रन्थों के बाद भी चमत्कार तो प्रथमानुयोग से ही आता है। एकदम सुनते ही झट से स्थितिकरण होता है। सुनते ही क्षायिक सम्यग्दर्शन जैसा प्रगाढ़ विश्वास होता है। यह प्रथमानुयोग वैराग्य के लिए प्रेरणाप्रद होता है।
- साधना में निदान से बचना है। जीवन भर की साधना को यह निदान मिट्टी में मिला देता है। प्रथमानुयोग के ग्रन्थों से सीख मिलती है कि साधना करो पर कभी भी निदान मत करो।

बकस्वाहा,
15-4-18 "अर्थ से अनर्थ नहीं परमार्थ करो" प्रात: 9.20

हमेशा-हमेशा धरती की ही जीत हुयी है। जहाँ पर खड़े हो- वहीं पर बैठ जाइये। आँखो से नहीं सुनना, कानों से सुनना है। देव लोग भी तरसते रहते हैं धरती के पुतो के पास आने के लिए। धरती के पुत ये जानते है कि क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? क्या कर सकते है? यह सब धरती पर ही होता है। देवों में भी हलचल हो जाती है, यहाँ की घटना से। इतना अवश्य है कि इस प्रकार के लिए बहुत कम सीट हैं।

सामान्य नहीं जो विशेष होते हैं वे ही पहुँचते हैं। उनका इतना पुण्य होता है कि देव लोग भी पानी भरते हैं। जैसे आप लोग प्याऊ लगाते हो कि नहीं; गर्मी के दिनों में तथा अप्सरायें भी जहाँ झाड़ू लगाती हैं। सिंह एवं हीरण एक साथ बैठकर पानी पीते है। उसी के साथ घटित हो सकता है जिसके घट में दया का वास होता है। अभी ब्रह्मचारी लोग मेहनत कर रहे थे। पैसा आता तो है पर निकलता नहीं है क्यों कि आने के कई रास्ते होते हैं, पर निकालने का रास्ता नहीं होता।

वो रास्ता ब्र० लोगो आप बताया करो। आपको (लोगो को) ज्ञात नहीं है। ये नहीं बताते तो हम बैठ भर जाते हैं सब ठीक ठाक हो जाता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार दान अनिवार्य होता है। यहाँ घुट्टी में ही इस प्रकार के संस्कार दिये जाते हैं। दान देना है

पर जब कभी नहीं। इकट्ठा करते रहते हैं और समय आनेपर वह संचित धन दान में दे देते हैं।

आप लोग सुबह से शाम तक दुकान चलाते हो फिर रात्रि में एक-आध घण्टा देते हो। दिन भर में नोट भी-रेजगी भी सब कुछ जो भी आता जाता है डाल देते हो। फिर भीतर बैठकर एक-आध लाइट जलती रहती है और गड्डी बनाना प्रारम्भ करते हो। सही कह रहा हूँ ना। तो फिर हओ कहो। अब तो ठेठ बुंदेलखण्ड में आ ही गये। तो फिर अलग-अलग बंडल 5 का 10 का आदि बना लिया इसके उपरान्त इस तरह से कि नोटों को हवा भी न लग जाये गिनते हो।

इसी प्रकार दान देने वाला होता है लड़ियाँ बनाकर रख लेता है। अवसर आने पर देता है। "मोह से होकर नहीं- निर्मोही होने के लिए दान अनिवार्य है।" निर्मोही दोनों ही होते हैं- श्रावक भी साधु भी। साधु निर्मोही होते हैं अरे! ये तो साधु हैं इन्हें तो किसी से मतलब नहीं है। आप निर्मोही हो जाओगे तो सब ठीक ठाक हो जायेगा। पहले भी एक-दो बार इधर आना हुआ था। प्रायः कर हमारा तो स्वभाव ही है बिना कहे आने का और बिना बताये जाने का। हम निमन्त्रण नहीं मानते।

हमारी विधानसभा में ऐसा ही लिखा है। एक बार इधर से बड़े बाबा की तरफ जाना था तो अष्ट

समय बटियागढ़ नहीं आये। जंगल में ही मुकाम हुआ। चटाई बिछाकर ज्यों ही बैठे बहुत सारे लाल-लाल बिच्छु देखने में आ रहे थे। कुछ ही समय में वो सभी अपने स्थान पर चले गये और हम भी सामायिक करके लेट गये।

सुबह आगे की ओर बढ़ गये। हीरापुर से भी लोग आये हैं। कई हीरा होंगे वहाँ पर। हम भूलते नहीं जहाँ जाते हैं वहाँ के बारे में, आपके चेहरे को देखने से याद आ जाता है। इतना अवश्य है कि पहले आज जैसे टोपी वाले नहीं एक-आध बुढे-बाढे लोग आ जाते थे। कम व्यक्ति भी आ जाते थे तो भी हम स्वाध्याय प्रारम्भ कर देते थे। धीरे-धीरे संख्या बढ़ती जाती थी।

क्रमबद्ध स्वाध्याय होना चाहिए। क्रमबद्ध स्वाध्याय हो तो अर्थ सही-सही निकलता है नहीं तो गलत भी हो जाता है। स्वाध्याय करने से दान में / पूजा में उत्साह बढ़ने लगता है। जैसे-जैसे बोली खुलती है तो भगवान भी बोलने लग जाते हैं। उसके भीतर के भगवान उसे जगाते हैं। वह सोचने लगता है, इसमें कुछ नहीं रखा है। रखा तो है किन्तु बाद में सब समझ में आ जाता है।

जब सम्मेदशिखर जी की यात्रा पर जाते हैं। जैसे ही गन्धर्व नाला पहुँचते हैं फिर तो कम्बल भी भारी लगने लगता है। दूसरे को देना चाहते

है वह कहता है मेरा ही नहीं रख पा रहा हूँ। ऐसी ही दशा जो क्रमबद्ध स्वाध्याय करता है उसकी होती है।

वह समझ लेता है कि इस नश्वर माया में कुछ नहीं रखा है। आपसे पूछना चाहता हूँ कि जब सेलटैक्स अफसर आता है तो उसे गिनकर देते हो? ऐसे ही उठाकर दे देते हो। किसी से कहियो नहीं। इसलिए मोह को कभी पास में नहीं रखा करो। जहाँ दया होती है वहाँ मोह का नशा कम होने लग जाता है और भेद-विज्ञान झलकने लग जाता है। श्रद्धान और मजबूत होता जाता है।

श्रद्धान को मजबूत करने का यही तरीका है कि भार को कम करते जाओ - कम करते जाओ। "जो भार कम कर रहा है उसका आभार मानो।" उसकी अनुमोदना भी पुण्य देने वाली है। आपको प्रेरणा मिलेगी - हमें भी ऐसा करना है। ये तो मौका है - आप भी नौका में बैठ जाओ। यदि बाढ़ आ जायेगी तो उसमें बह जाओगे। मन कहता है अभी मत करो किन्तु भीतर से आत्मा कहती है इसी में तेरा भला है।

पंचमकाल है उसमें भी हुण्डावसर्पिणी काल है। इसमें नहीं देखने योग्य भी देख रहे हैं। परिणामों में बहुत विचित्रता होती है। आप लोग ऐसे भाव कर रहे हैं, इसमें भी सीखने योग्य है। एक-दूसरे का हाथ पकड़कर खेंचते हैं उन्हें बुद्धू कहा जाता है किन्तु

धार्मिकक्षेत्र में ऐसे ही भाव होने चाहिए।

अनर्थ से सदैव बचते रहें। अर्थ को अनर्थ में न लगाकर परमार्थ में लगा देवें। अपनी संतान को भी इसी प्रकार के संस्कार सौंपकर जा सके इसी भावना के साथ।

आहिंसा परमो धर्म की जय हो

हीरापुर

16-5-18 हीरे की प्राप्ति का साधन प्रातः १०..

आज यह हीरापुर नगर है। जब इस तरफ कई बार द्रोणगिरी एवं नैनागिरी प्रवास रहा, बीच में शाहगढ़ भी कितनी बार आये-गये पता नहीं। यहाँ से सीधे बकस्वाहा भी गये। इस प्रकार हीरापुर से परिचय काफी पुराना है। उस समय ये ईटों से बने मकान/भवन नहीं थे- कवेली वाले थे। लोग कहते थे महाराज थोड़े से झुक के आना। हम कुछ ज्यादा ही झुक जाते थे। कहीं लग नजाये अथवा इनको अन्तराय न हो जावे।

युग बदलता जा रहा है। अब हीरापुर की पहचान अलग से देनी होगी। ध्यान रखो युग भले ही बदल जाये/ साधन बदल जाये परन्तु जीवन के सिद्धान्त कभी भी बदलते नहीं। मुझे गाँवो पर ही विश्वास है, नगरों से तो आशा भी नहीं रखता। गाँव भी नगर जैसे हो जायेंगे तो अन्तर कैसे बचेगा। जो मूल सिद्धान्त है वे भी नहीं बचेंगे। आज गाँवों का भी खान-

पान, रहन-सहन बदल रहा है।

यह बड़ी चिंता का विषय है। पद्मपुराण का वह उदाहरण मैं आपके सामने रखता हूँ। राम-लक्ष्मण-सीता आदि जंगल में प्रवासकर रहे हैं। वहाँ वे क्या खाते होंगे। कुछ भी ऐसे नहीं खाते थे। बता देते हैं। एक दिन की बात है कहा गया सभी अपनी-अपनी दिशा में जाओ। सभी लोग अपनी-2 दिशा में चले गये (सीता कुटिया के भीतर चली गयी। जब सब लौटकर आ गये तो बताओ क्या-क्या लाये?

लक्ष्मण ने कहा हम तो बहुत ही अच्छी चीज ले आये। कितना भी हो आप लोग अन्य चीज से पहले इसे खाने को तैयार रहेंगे। हम तो सीताफल ले आये हैं। आप लोग जानते हो सीताफल क्या है? एक वर्ष में दो बार आता है। बहुत बड़े-बड़े बीज रहते हैं लेकिन गर्भ में मलाई अलग ही प्रकार की रहती है। गाँवों में यह परम्परा अभी भी जारी है। कलकत्ता-बम्बई-देहली क्या दूर-दूर तक यहीं से जाता है।

समझ में आ जाता है शहर वालों को कि गाँव वाले तो खाते ही रहते हैं। दूसरा नम्बर हनुमान का आया। उसने कहा हम तो विशेष फल लाये हैं। हनुमान तो हनुमान थे। सीता पर आपत्ती आती तो वह हनुमान

को याद करती।

वे इतने बलशाली, क्या खाते थे? उनका जीवन ही बता देता है। जो कोई भी हो एक ही बार में चपेट में आ जाओगे। वह कहता है आप सीताफल लाये है, हम तो रामफल लाये हैं रामफल। शहर वालों को नाम भी मालुम नहीं होगा। नारीयल से भी बड़ा फल होता है। आकार में तो सीताफल जैसा ही पर बीज एक-दो मात्र ही होते हैं। मलाई से पुरा भरा रहता है। स्वाद पुछो तो? पानी आ जात है। मुंह में आंखो में नहीं।

नही मिले तो अभी आंखो में पानी आ जात है। सीताफल हरीत वर्ण का रहता है, रामफल लाल-लाल रहता है। इसका सेवन कर लिया फिर रोटी मिले या न मिले। आज तो क्या हो रहा है? Fast-Food आ गया। सब जल्दी-जल्दी चाहिए तो मृत्यु भी जल्दी-जल्दी होती है। अकाल में चाहिए तो अकाल में ही मृत्यु भी आयेगी। इतनी सारी चीजे ले रहे हो उसमें क्या डला है? किसने बनाया? कैसे तैयार की? कुछ नहीं मालुम।

आप अपने बच्चों की ओर भी देखो। आपका जीवन तो अब ढलान की ओर है किन्तु उनका तो अभी प्रारम्भ ही हुआ है। गाँवों के लोग ही अब इस अभक्ष्य से समाज / राष्ट्र को बचायेंगे ऐसा मेरा विश्वास है, ऐसा

होगा तो राम-राज्य आ जायेगा।

आप लोग चाहते हो कि नहीं? तो पहले रावण-राज्य को हटाओ तभी राम-राज्य आयेगा। जो व्यक्ति खान-पान एवं रहन-सहन में सुधार करेगा वही भारत को अखण्ड बनाने में योगदान देगा। वही व्यक्ति संस्कृति एवं धर्म की रक्षा करेगा। बोलो क्या चाहते हो? अरे! नाड़ तो हिलाओ। हओ तो कह दो। बुन्देलखण्ड का महामंत्र है-हओ। ऊपर-ऊपर से नहीं कह रहे हो ना। आप लोगों के बीच रहकर अच्छा ही लगता है।

अच्छाई के लिए हओ कहो एवं बुराई के लिए ना-ना। इतना ही हम चाहते हैं। इस प्रकार सोच-समझकर चलेंगे तो भारत के पुराने दिन पुनः आ सकते हैं। यदि इसी तरह खसड़-फसड़ करेंगे तो खिचड़ी जीवन हो जायेगा। खिचड़ी तो फिर भी काम की होती है पर ऐसा जीवन किसी काम का नहीं है। तो इस उदाहरण से आप समझ गये होंगे कि Fast-food नहीं खाकर भी अपना जीवन चला सकते हैं या नहीं?

अच्छे ढंग से कहो। भारतीय आहार में देखो। हार्स पॉवर कहा है। पॉवर की तुलना हॉर्स से की है, Fast Food से नहीं। घोड़े को-हाथी को देखो क्या खाते हैं फिर भी कितनी ताकत है। इनसे

भी बढ़कर आगे का पॉवर बैल के पास है।

उसके माध्यम से धान इत्यादि की प्राप्ति होती है। गाय का पावर देखो। संसार में उसके बराबर कोई पावर नहीं। उसके दूध को अमृत तुल्य माना है। उससे सभी का पालन-पोषण होता है। अन्त-अन्त में भी उसी से तक्र-मट्ठा आदि मिल जाता है। यह सात्विक औषधी जैसे है, जो प्राणों को बनाये रखने के लिए आवश्यक है। इसे याद रखो।

शराब तो 24 घण्टे जहाँ चाहो वहाँ मिल जाती है किन्तु दूध तो पाने के लिए मंत्रजाप करना पड़ेगा। पाउडर का दूध मिलता है। सिन्थेटिक दूध मिलेगा। जब छोटे थे तो पाउडर हाथ में लेकर फूंक मारता, पाउडर के स्थान पर कबदार आ जाता है वैसे ही आज इस पाउडर के दूध का हाल है। इसी दूध की आज तो गंगा बह रही है। नेता लोग भी सोचें एक वो गंगा तो सूख रही है और इधर दूध की गंगा बह रही है। जितना चाहो उतना मिलेगा।

आलोचना तो नहीं करता। यहाँ तो हीरे की बात करना था। इतना अवश्य है इन्हीं सब बातों से हीरे की प्राप्ति होगी। हीरापुर नाम तभी सार्थक होगा। सुना है वैज्ञानिक लोग भी खोदा-खोदी कर रहे हैं। अनियत विहार चल रहा है। आप भी अब अभ्यस्त हो चुके हैं। छोटा सा यह वक्तव्य दैनन्दिनी जीवन में अवश्य प्रेरणा देगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

घुवारा
17-4-18 "यात्रा हो - भटकन नहीं" प्रातः१२.

वह लगभग ४० वर्ष पूर्व की बात है, यहाँ द्रोणगिरी में पंचकल्याणक - गजरथ महोत्सव होने जा रहा था। उस समय मैं कुण्डलपुर में था। एक पास ही के विद्वान थे। नाम तो मैं भूल रहा हूँ फिर भी अतुल जी-2 कहते थे। अब कॉफी पुराना हो चुका है। जनता भी पुरानी - नयी भी है। पंचकल्याणक होने के उपरान्त हम घुवारा में आ गये थे। यहाँ कितनी बार आये, हमें ज्ञात नहीं है, आपही ईमानदारी से सही-सही बता देना।

आप लोग कम बता देते हो तो गड़बड़ हो जाता है। उस समय जैसा उल्लास-प्रसन्नता-लगनशीलता थी वैसी ही आज भी है बल्कि अबतो संख्या की दृष्टि से बहुत बढ़ गये हैं। यहाँ शिक्षा के बहुत सारे क्षेत्र हैं। विद्यालय - महाविद्यालय संचालित कर रहे हैं। मैं यही कहना चाहता हूँ शिक्षा किसकी? और शिक्षा किसे दें? यह महत्त्वपूर्ण है। ये किसी को ज्ञात नहीं है। न ही शिक्षक इस बात को जानते हैं और न ही अभिभावक।

अभिभावक अभी भावुक हो रहे हैं। बादमें पछतायेंगे। उन्हें सोचना है शिक्षा में परिवर्तन आवश्यक है। जीवनोपयोगी शिक्षा होनी चाहिए। दो प्रकार से शिक्षा दी जाती है एक इस पार्थिव शरीर के आश्रित होती है तो दूसरी आत्मा के आश्रित। आत्मा की शिक्षा के लिए तो हमारे ऋषि-

मुनि - आचार्यों ने ध्यान दिया।

रही बात इस शिक्षा की। यह शिक्षा ऐसी हो जो हमें हमारा ज्ञान कराये। धर्म-अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थ का ज्ञान कराने वाली शिक्षा होनी चाहिए। मैं पहले भी इस विषय पर बहुत बार कह चुका हूं। अभी एक सज्जन बोले- महाराज! मैं बहुत दूर से आया हूं। तो मैं भी तो बहुत दूर से आ रहा हूं। आप लोग कसकर पकड़े हुये बैठे हैं कि मैं तो कुंवारा का हूं। यह तो बीच का एक स्टेशन मात्र है।

"ऐसी यात्रा को मैं यात्रा नहीं भटकन मानता हूं।" भटकने वाले को राह बता दें तो कैसा लगेगा? किन्तु आप उस राह को बहुत जल्दी भुला देते हैं। दुनिया में राह बताने वालों की कमी नहीं है। जो राह बतायी है उसकी ओर जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाना ही मोक्षमार्ग है। राग की शरण में जाने पर तीन काल में उद्धार नहीं हो सकता। वितराग को पहचान ले, उसी की भक्ति करें तो मैं अवश्य कह सकता हूं कि अवश्य कल्याण है।

इतना अवश्य है कि प्यास लगने पर जल्दी से पानी नहीं पीना चाहिए। पीने से पहले विचार अवश्य करना चाहिए कि यह पीने योग्य है या नहीं। अब ज्यादा तो नहीं कहना चाहता। अब ज्यादा दूर नहीं है मंजिल। बस इतै से 25 किमी. लगभग है। इतै से - मैं भी इतै

का / बुंदेलखण्ड का हूँ।

बुन्देलखण्ड की विशेषता है कि यहाँ श्रावकगण पुष्प प्रकीर्णक की भांति यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं। आप किसी भी गांव से / किधर से भी जाओ अत्तौं - अत्तौं, तिखौं - तिखौं हो ही जात हैं। मुकाम हो जाय (रात्रि विश्राम) तो फिर महाराज इतै चलो - उतै चलो कहते हैं, रात ही में जाय तो क्या करेंगे।

अपनी भूख को मिटाने का सभी पुरुषार्थ करते हैं। भगवान से प्रार्थना कर सकता हूँ, पूर्व कर्म का ही यह फल है। इससे भी ज्यादा निकटता हमें प्राप्त हो और हमारा भी हमेशा के लिए निस्तार हो जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण - "बात बड़ागांव की है। स्वाध्याय पूर्ण हुआ। जहाँ छोड़ा वहाँ ठप्पा लगाना था। पर किसी महाराज ने कहा आपको बने पढ़ना नहीं तो रहने दो। विहार भी होना था। आचार्य श्री ने तुरन्त कहा - नहीं! कर्तव्य क्या है इसे समझो। जैसे किसी डिपार्टमेन्ट के अधिकारी का तबादला अन्यत्र हो जाता है तो वे नये अधिकारी को पहले सब संभलाकर / बताकर जाते हैं। इसी तरह जो आगे पढ़ने वाले हैं उन्हें बताकर दिखायें कि यहाँ पर छोड़ा था। ऐसा नहीं कि ये उनकी समस्या है।"

कलहोड़ी
बड़ागांव (धसान)
18-5-18 "चटनी 22 परिषहों की" प्रात: 9.20

प्रतिदिन सुबह-शाम-मध्याह्न जिधर देखो उधर क्या हो रहा है। देखते-देखते वह भीड़ आ जाती है। ऐसी आ जाती है-ऐसी आ जाती है कि पुलिस भी उसमें डूब जाती है। अब यदि हमारे सामने-सामने यदि पुलिस डूब जाय तो अपराध तो हो रहा है। पुलिस कहती है हम डूबे नहीं हैं-तैर रहे हैं-तैर रहे हैं। वो भूल ही जाते हैं, हम काहे के लिए आये हैं। उनका गुस्सा ही शांत हो जाता है।

ऐसा ही वातावरण/माहौल बनाये रखना ताकि भविष्य में ज्यादा केस घटित न हो सके और थोड़ी सी शान्ति पुलिस को भी मिल जाये। वैसे पुलिस तो हमेशा शान्ति बनाये रखती है। आप भूल जाते हैं कि वे पुलिस वाले हैं। सोचते होंगे कि ये भी किसी कम्पनी के कपड़े पहनकर आ गये होंगे। किसी को कुछ नहीं दिखता बस एक ही निशाना, कैसे भी हो महाराज के पैर पकड़ लेना है। समस्या हमारी और बढ़ जाती है। शान्ति तो सबको मिलना ही चाहिए।

आप लोग भी इतनी गर्मी में दूर-दूर से आ जाते हैं, ये बात अलग है-वाहन से आ जाते हैं। कल नहीं परसों की बात है, एक बच्चा जिद्द करने लगा माँ हमें भी महाराज के साथ चलना है। माँ ने कहा-बेटा सड़क बहुत गर्म है नहीं चल पाओगे। नहीं हमें भी महाराज के साथ चलना है। अब दो-चार कदम ही चला कि पैर

चिनमिनाने लगे। माँ को बुला रहा था, चलता भी जा रहा था।

होनहार बालक है। संभालना तो आपको ही पड़ेगा। नहीं संभालते हो तो ये भी आप लोगों का अपराध है। उसमें छिपी हुयी शक्ति को ही दबा दिया आपने। महाराज के लिए तो कहते हो- ये तो सब जड़ की बात है किन्तु आप तो चेतन को ही उड़ा रहे हैं। आप लोगों के उत्साह को देखकर लगता है कि स्वर्ग भी इसके सामने फिके हो गये होंगे। स्वर्ग में चैन कहाँ है?

धरती पर उतरकर वे भी स्पर्धा कर रहे होंगे, आप लोगों के पुण्य से। आपके इस पुण्य को वे स्वर्ग में तो ले जा नहीं सकते। उनके पास बल है- ऋद्धि है- सिद्धि है पर आज तक ऐसा नहीं हुआ कि किसी मुनिराज को उठाकर स्वर्ग में ले गये हो। उनके द्वारा अपहरण तो होता है। वे वैक्रियक शरीर वाले है और यहाँ औदारिक काया है। इसलिये देवों के क्षेत्र में किसी भी प्रकार प्रवेश संभव नहीं।

वे संयम को चाहते तो है परन्तु संयम ग्रहण नहीं कर पाते। इसीलिये बार-बार वे धरती पर उतरकर अनुमोदना करते है, ताली बजाते है। वादन भी करते है और नृत्य भी करते हैं। कुछ लोग कह रहे थे महाराज इतनी गर्मी में क्यों विहार किया? ठण्ड में आ जाते तो ठीक होता। गर्मी भी परिषह और शीत भी परिषह है हमें दोनों को सहन करना है। यह हमारा कर्तव्य

है। — — — — — — — — — — — — —

— — जब आप लोग भी सहन करते हैं तो फिर हमें तो करना ही है। जैसे- गरिष्ट आहार के बाद लौंग इलायची खाते हो उसी प्रकार हम भी अपने मूलगुणों के साथ यह 22 परिषह की चटनी लेते रहते हैं। ताकि जो बचा हुआ है वह भी पच जाय। गर्मी में बचा ही नहीं तो पचेगा क्या? चौके से आते-आते ही पानी सूख जाता है। — — — —

— — — — — — — आज हीन संहनन होते हुये भी इस प्रकार की साधना कर रहे हैं। गृहस्थ हो या श्रमण देव-शास्त्र-गुरु के सान्निध्य में रहते हुये उस वितरागता की उपासना करते हैं। आज यदि कोई सर्वोत्कृष्ट साधना रह गयी तो वह एक मात्र वितराग की साधना ही रह गयी है। इस साधना को देखने से ही प्रसन्न बन जाता है। जो होनहार आत्मा है, उसकी शक्ति मालूम हो जाती है। जैसे- अग्नि पर राख की परत आ गयी भीतर वह अंगार सुलग रहा है बस थोड़ी सी फूंक मारने की जरूरत है। — — — — —

— — — — — — — फूंक मारते ही भीतर की सोयी चेतना जाग्रत हो उठेगी। इससे कर्म निर्जरा वो भी मोहनीय कर्म की निर्जरा होगी और आने वाले दिनों में मुक्ति का दरवाजा खुल सकेगा। हम भी उसके पात्र बन सकेंगे। हमारी साधना का भी यही उद्देश्य होना चाहिए। चाहे श्रमण हो या श्रावक लक्ष्य तो यही रहता है। भारत वालों को ज्यादा सौभाग्य मिला है। इतना ही कहकर आज का यह छोटा सा वक्तव्य

समाप्त करता हूँ।

यहाँ से पास ही में पपौरा जी क्षेत्र है। इस क्षेत्र पर मैं कितनी बार आया और गया आप लोगों को पता नहीं - हमें भी पता नहीं। महाराज हमारी उम्र में तो नहीं आये। ऐसा युवा लोग शिकायत करते हैं। मैं इसे शिकायत नहीं मानता, इसे भी धर्म ध्यान मानता हूँ। जो बुड्ढे-बाढ़े लोग थे वो तो चले गये। चले कहाँ गये वे भी ऊपर से देख रहे होंगे। यहाँ आकर बैठ भी गये होंगे और सुन भी रहे होंगे।

देवताओं की विक्रिया विचित्र होती है। इसी प्रकार आप लोगों का जीवन भी धर्म ध्यान पूर्ण हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

संस्मरण - घुवारा से पपौरा संघ को तीन बार में चलकर अक्षय तृतीया को पहुँचना था। अचानक वृद्ध महाराज के अन्तराय एवं भीषण गर्मी होने से आ० श्री ने कम चलने का निर्णय लिया। 5 किमी. पर रात्रि विश्राम हेतु रुके। उस ग्राम में एक ब्राह्मण किसान का घर था। दूसरे दिन दो बेटियों का विवाह होना था। लगन का दिन था फिर भी उसने अपना पूरा घर खोल दिया। एक-एक कमरा खोल कर सभी से निवेदन करने लगा आप यहीं रुकें। एक गाय और उसका बछड़ा भी बंधा था। आ० श्री स्वं पूरा संघ गाय के बाजु होल में रुका। पूरा परिवार अपने को धन्य मानने लगा। जैनेतर होने के बाद भी जैन से बढ़कर कर दिखाया।

समर्रा
19-5-18 "भरोसा करो कबूतर की तरह" प्रातः 9.20.

पेड़ पर शाम / संध्या के समय पर पक्षी आकर बैठ जाते हैं। [शान्ति हो तो शान्ति से बैठें। उनको सामने की जगह नहीं मिली तो शान्ति कहाँ से आये। हम अपनी ध्वनि प्रसारित कर रहे हैं आप कहीं भी खड़े हो या बैठ जाये, आवाज कानों तक तो पहुँच ही जायेगी।] वे सब पक्षी एक ही आसन में बैठ जाते हैं, न नीचे उतरते हैं और न ही ऊपर उड़ते हैं। बस विश्राम कर लेते हैं। सुबह होते ही अपनी-अपनी दिशा में उड़ जाते हैं।

एक वृद्ध पक्षी ने जवान पक्षी से कहा सबके साथ रहा करो। अलग से अपनी ही दिशा में रास्ता नहीं नापा करो। वह कहता है- हम जवान हैं, हम अपने से ले आयेंगे। पुराने में कुछ नहीं रखा। जवान को वृद्ध ने बहुत समझाया परन्तु जवान माने तब तो। पंखों का बल उसके पास था। जैसे आप लोग सड़क पर चलते हैं। सरकार ने सड़क तो बहुत अच्छी बना दी किन्तु पेट्रोल तो आपका ही है। फिर घासलेट से चलाओगे तो क्या होगा? वह युवा पक्षी भी उड़ गया।

विशाल आकाश में बहुत दूर पहुँच गया। तब जाकर कहीं पानी दिख रहा है ऐसा सोच धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। जवान लड़का होता है पहले तो पिताजी की बात नहीं मानता बाद में जब पानी सिर के ऊपर से जाने लगता है तो पुकारता है-पिताजी

आओ मुझे बचाओ।

वे कहते हैं काहे को लाने गया था, तुम्हें मना किया था न। वह कबूतर सोचता है कि अब तो नीचे गिरना निश्चित है- यम देवता तो जैसे साथ ही चल रहे हैं। उस अपार जल राशि में कुछ नहीं दिख रहा दूर एक निशानी दिखी। पंखों के बल से वहाँ पहुँचता है। नाव जैसा कुछ है। वहाँ पहले से ही प्रशिक्षित व्यक्ति है। उन्होंने धोती जैसा कपड़ा फैलारखा है।

उस कबूतर ने जान लिया कि ये मेरी रक्षा करने के लिए ही खड़े हैं। उन पर वह विश्वास करता है। वैसे भी वह देख चुका है कि गिरना तो है ही। थक भी गया था, कण्ठ भी सूख गया था, कुछ खाने के लिए भी आतुर था अतः पानी में गिरने की बजाय उस कपड़े पर जाकर गिरा। उन लोगों ने उस कबूतर को कुछ खिलाकर जीवित कर दिया।

संसारी प्राणी की भी दशा इस कबूतर की भांति है। वह दौड़ता - दौड़ता, पंख मारता आ रहा है। चारों ओर कोई ओर-छोर नहीं। मान लेता है। मान्यता उसने अपनी ऐसी ही बना ली है। कहते हैं न, मान्यता पर तो आसमान टिका है। खड़ा है। खड़े तो आप हैं वह तो शान्त है। अभी एक सज्जन

ने अच्छा कहा।

शान्ति रखो! अब शान्ति हो तो रखें। हम अशान्ति को छोड़ें तब तो शान्ति आये। अशान्ति के कारण को छोड़ दो तो शान्ति तो आपके पास ही है। आप सोचते हैं- क्या ~~मैं~~ शान्ति नहीं आयी तो ...। अशान्ति छोड़ दे फिर शान्ति नहीं मिली तो इसलिये अशान्ति को छोड़ते नहीं। कोई खरीद ले हमारी अशान्ति को। ध्यान रखो - आपकी अशान्ति को खरीदना तो दूर देखना भी कोई पसंद नहीं करेगा।

आप शान्ति को ही भगा देंगे तो क्या करेंगे। कबूतर ने सोचा निचे आ जाओ तो अच्छी बात है। बहुत दिन से कबूतरों! उड़ रहे हो। भरोसा है या नहीं कोई न कोई आ ही जायेगा। वह ढूंढता गया था। आप वहीं के वहीं खड़े हैं। वही पपौरा, वही टीकमगढ़, वही हीरापुर, वही बकस्वाहा है। फिर कहते हो महाराज वहां चलो। आप अशान्त हैं, हम तो इतै शान्त बैठे हैं।

भरोसा है ही नहीं आपको हमारे ऊपर। भरोसा हो तो अवश्य रक्षा हो जायेगी। उतै-उतै ही है। अनंत-काल से भागते-भागते आये हो, कहीं छोर नहीं मिला। भरोसा करो उस कबूतर की तरह, उसने विश्वास किया क्यों की वह भोला-भाला था। आप उसकी तरह भोले-भाले बन जांये तो कल्याण होने में देर नही लगेगी। जरूर

कल्याण होगा। [यहाँ भी जय बोलो]

प्रत्येक दिन आंगन भरा हुआ देखता हूँ, आज भी आंगन भरा हुआ है। घर में जगह कम हो तो आंगन में आ जाते हैं। अब आंगन को मत छोड़ना। देवशास्त्र गुरु की शरण में चले जाओ। उस कबूतर की तरह उनकी शरण में चले जायें तो निस्तार होना निश्चित है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

संस्मरण -

बात सम्मर्श ग्राम की है। यहाँ के कुयें में बिल्कुल भी पानी नहीं था। अभिषेक भी नलकूप के पानी से होता था। यहाँ के श्रावकों को चिन्ता हुयी आ० श्री का इतना बड़ा संघ आ रहा है उनकी चर्या हेतु पानी का प्रबन्ध कैसे होगा? स्थानीय पुजारी जी ने आ० श्री के कमण्डल का थोड़ा सा पानी लाकर कुयें में डाल दिया। इसे चमत्कार कहो या अतिशय कहो कि गुरुजी के आने के पूर्व ही कुयें में अप्रत्याशित जल आ गया साथ ही नलकूप का जलस्तर भी बढ़ गया। सभी श्रावकों ने इसी पानी से प्रभु का अभिषेक किया कुयें के जल से ही सभी घरों में चौके लगे। धन्य है ऐसे गुरुवर।

विशेष - विदेशी भाषा में पढ़ाना मतलब बच्चों को जबरदस्ती पानी में तैरने के बहाने सिर पकड़कर डुबाना है।

पपौरा जी (सिद्धक्षेत्र)
टीकमगढ़   पपौराजी [टी.]   मंगल प्रवेश
20-4-18   "टीकमगढ़ को मिला अनमोल मोती" प्रात: 9.20

आज का यह मंगल अवसर पूर्व में किये गये शुभ भाव का फल है। 27 नक्षत्र होते हैं, जो अपने-अपने समय पर फलते हैं किन्तु समुद्र में सीप जो उसके तल में रहती है, वे ऊपर की ओर आ जाते हैं और अपने मुख को खोल देते हैं। ऐसा लगता है, जैसे समुद्र की सतह पर सीप की दोनों पांखुड़ी आसमान की ओर देखती रहती है।

वे कहती हैं- हम रहते हैं समुद्र में, नमक के जल में किन्तु उस जल का अलग रूप नहीं बना सकते। स्वाती नक्षत्र में जब मेघ से जल की बूंदें झर जाती हैं। वे सारी बूंदें सीप अपने मुख में ले समुद्र के तल में चली जाती हैं। ध्यान रहे वे सीप के मुख में गयी बूंदें जल के रूप में न रहकर शुद्ध मोती के रूप में प्रकट होती हैं। वर्षा तो बहुत होती है, सीप भी नदियों में भी होते होंगे किन्तु नदियों के सीप में मोती नहीं।

सागर का जल चाहिए, सागर का जल भी नहीं मेघ से झरा जल चाहिए। वह भी जब कभी नहीं, स्वाती नक्षत्र में चाहिए। स्वाती नक्षत्र में भी अन्यत्र गिरता है तो खारा रहता है पर सीप के मुख में गिरता है तो मोती बन जाता है। बहुत लोगों ने प्रार्थना की थी/कर रहे हैं। काहे की प्रार्थना की थी? प्रतिभास्थली

की प्रार्थना की थी।

बहुत सोचने के उपरान्त कौनसी सीप का भाग्य है, क्या पता? जब मन में आ गया तो बहुत स्थानों से लोग निवेदन करने आये, उनको मैं भूल नहीं सकता लेकिन इस वर्ष प्रतिभा-स्थली की स्थापना हो जाये ऐसी भावना बहुत लोगों की थी, हमारी भी थी। हमने अपने संकेत को सर्वप्रथम आर्यिका आदर्शमती [माताजी] के पास भेजा। इस वर्ष कहीं न कहीं संभावना लगती है। अंत-अंत तक उनसे भी नहीं बताया था।

बहुत सारे लोग मांग कर रहे हैं। योग होने पर भी बहुत सारी बातें सोचनी पड़ती हैं। वह मात्र विद्यालय ही नहीं उसमें दूर-दूर से छात्रायें/कन्यायें आयेंगी, उनको जो पढ़ायेंगी वे शिक्षिकायें भी रहेंगी। सबसे उत्तम तो संस्कारित घराने से आयेंगी। घराने से मतलब पैसे वालों से नहीं, अभी तो वही चल रहा था सुन रहे हो कि नहीं। [हँसी]

हम तो चेतन की बात कर रहे हैं। ऐसे बच्चों का पालन उनका जीवन शुद्ध/संस्कारों से युक्त होना चाहिए। वे मात्र परिवार ग्राम-नगर के लिए ही नहीं देश के लिए भी संस्कारित होकर, उन्हें भी संस्कारित कर सकें इसी

लिए हमने संकेत दे दिया था। — — — — — —
— — — — — — — वहाँ पर शिक्षिका बन रही है। लगभग २ वर्ष में संकेत के अनुसार आर्यिका ने एक समूह तैयार किया है। विशेष बात यह है कि वे सारी की सारी शिक्षिकायें ठेठ बुन्देलखण्ड की है। ठेठ शब्द इसलिये कह रहा हूँ कि बुन्देलखण्ड का विस्तार काफी हो चुका है। उसमें ये इलाका आता है। रतें। बुंदेलखण्ड माना जाता है। — — — — — — — — — — —

— — हमने सोचा पूर्व में इस पपौरा क्षेत्र पर चातुर्मास किया था फिर समाज ने एक आदर्श गौशाला की भी यहाँ स्थापना की। अन्यत्र भी जहाँ गौशाला है वहाँ प्रतिभास्थली की स्थापना की, सोचा क्यों न पपौरा जी को भी यह अवसर मिल जाये। अभी एक और रहस्य है। खोलना तो नहीं चाहता किन्तु इतना अवश्य है कि दो प्रतिभास्थली की स्थापना संभव है। दूसरी प्रतिभास्थली कहाँ होगी ये नहीं बता सकता। — — — — — — — —

— — — आज का यह उत्साह देखा। उत्साह तो पहले से ही था बस भीतर से बाहर आ गया। हमने सोचा- अवसर का लाभ लिया जाये। दुकानदार अच्छे ग्राहक की तलाश में तो रहता ही है। और अच्छे दाम में अपना माल बेच देता है। यहाँ बेचने की बात ही नहीं, मुंह-मांगा मिलता है। आपके सौभाग्य की बात है। सौ-सौ के लिए सौदा नहीं होता किन्तु यह आज पपौरा जी के लिये दे

दिया है।

अगली प्रतिभास्थली कहाँ होगी, उसकी प्रतीक्षा करो। जहाँ की जनता में सात्विकता / संस्कारिता होती है उसका विचार किया जाता है। विचार यही तो है ही। [लोगों की भावना] अभी प्रतिभास्थली खोलना बंद नहीं चालु हुआ है। आप लोग दो कन्याओं के लिये एक साथ दो वर ढूढते हो तो कुछ लगता तो होगा। महराज आंखे खुल जाती है।

ये कार्य उससे भी बढ़कर है। आर्यिका हो या प्रतिभास्थली की सदस्यायें (शिक्षिकायें) हो सब पुरे से लगी हुयी है। उन्हें भी यही कह रखा है कि प्रतिभास्थली एक है। हम जबलपुर के है - नहीं, हम डोंगरगढ़ के है - नहीं, हम रामटेक के है - नहीं और हम पपौरा के भी नहीं। हम तो अपने कार्य के प्रति कटिबद्ध है। और आगे भी रहेंगे। ये आपको भी ध्यान रखना है। यदि यहाँ प्रतिभास्थली खुल जाती है तो बंद यहाँ कि नहीं होगी। यहाँ रहेगी अवश्य किन्तु उसकी नियमावली ही ऐसी बनी है।

वह पुरे भारतवर्ष के लिए है, व्यापक रूप से उसमें दिया है। उसी प्रकार से छात्राओं का निर्माण करना, उनकी सम्पूर्ण गतिविधीयाँ भी अलग प्रकार से है। हथकरघा आदि भी है। नारी जगत के विषय में सक्रियता बनी रहे। इन सब बातों को देखकर हमने उन लोगों को

संकेत दिया था।

वे यहाँ पर आयी थी परन्तु हमने आपको संकेत नहीं किया था। यदि आप एक वर्ष बचाना चाहते है तो जल्दी-जल्दी इसी वर्ष संभतीकरण प्रारम्भ कर दो। यह तो कमेटी पर आधारित है। यदि कमेटी चाहे तो 3-4 महिने के भीतर परिश्रम करके छात्राओं का परीक्षण आदि कर सकते है पर पहले पूछना जरूरी है। बिना पूछे बारात को बुलाया नहीं जाता।

यहाँ की कमेटी से पूछना जरूरी है। 32 वर्ष बाद महाराज आये हैं। 3-4 महिने के भीतर वैकल्पिक रूप से विद्यालय का रूप ले लो, ये हमारी भावना है। एक वर्ष बच जायेगा। [हम सब जैसा आप कहेंगे वैसा ही करेंगे] उपदेश को ही जो आदेश मानता है मैं उसे अच्छा मानता हूँ। ये कार्य बहुत कठीन है परन्तु अब भार कंधो पर ले लिया तो बैठना नहीं, खेंचकर ले जायेंगे। हमारा आशिर्वाद तो है ही, आप तैयार रहते है तो। हमें आशिर्वाद सोच-समझकर देना पड़ता है।

आप पर मुझे संदेह नहीं हैं, समाज के अनुसार देखता हूँ तो ये कार्य बहुत छोटा है। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि दिन-दुनी, रात-चौगुनी यह कार्य हो जाये, ऐसा हमारा भाव है। आप लोग भी अपनी तरफ से आर्यिका के पास संकेत दे सकते हैं। भेज सकते हैं। आप जायेंगे तभी वह हाँ कह सकती है क्योंकि हमारे हाँ

कहने से भी ज्यादा कठिन है।

हमारे मुख से एक बार शब्द निकलने के उपरान्त वापिस लेना अच्छा नहीं लगता है। ये कार्य अच्छा किया है, इतना कह सकते हैं। जो नियमावली है उसी अनुसार करेंगे तो कोई परेशानी नहीं, छात्रायें/शिक्षिकायें सब व्यवस्थित हो जायेगी। जो उत्साह दिख रहा है वह ऊपर से नहीं, भीतर से हो।

पहले यहाँ हमारी वाचना भी, गर्मी भी और चातुर्मास भी एक साथ हुआ था। भावना रखो। अड़ोस-पड़ोस का भी ध्यान रखा करो। पहले से कहेंगे तो हैरान कर देंगे। बोलियाँ तो सबमें बैठना चाहिए। जैसा जिसका भाग्य, मना नहीं करते। अति उत्साह ठीक नहीं। अभी जो थाली में परोसा है वह गरिष्ठ है। इसे पचाने के लिए शक्ति चाहिए। कहीं मंदाग्नि हो जाये तो सब गड़बड़ हो जायेगा।

आज गुरुवार-पंचमी बहुत शुभ दिन है। समाज की एकता के बिना ये कार्य संभव नहीं। सभी लोग मिलकर उत्साह के साथ इस पवित्र कार्य को करेंगे। ऐसा हमारा कहना है। इतना ही है - यह मांगलिक कार्य प्रारम्भ हो गया है। आप लोगों की भक्ति-श्रद्धा-निष्ठा और कार्य के प्रति जागृति बढ़ती ही चली जाये ऐसी प्रभु से प्रार्थना करता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

21-5-78 "मात्सर्य भाव नहीं, वात्सल्य भाव हो" प्रातः 9.20

मन में एक बात उठती है, आपके सामने रखना चाहता हूँ। चक्रवर्ती के पास विक्रिया करने की शक्ति रहती है। उस विक्रिया के माध्यम से वे अनेकों भोगों को संतुष्ट करते हैं अन्यथा अपने आपको वे कभी भी अनुग्रह नहीं कर पाते। मैंने सोचा यदि इस प्रकार है तो मानो मुनि महाराज का संघ आ गया, वे विक्रिया करके एक महाराज को न पड़गा कर पूरे के पूरे संघ को पड़गाहन कर लें।

हम पूछना चाहते हैं श्रावकों से, क्या आपको ये पसंद आयेगा? बोलो सही-सही। डरने की क्या बात है। तो वो भी सोचता होगा कि मैं ही कैसे सारे के सारे का पड़गाहन कर लूं। अनेकों भोगों के भावों का क्या होगा? वे मेरा विरोध तो नहीं कर पायेंगे परन्तु मेरा भी यह कर्तव्य बनता है कि मैं एक में ही संतुष्टि कर लूं। कोई कहे महाराज ये तो हमारे कर्म के उदय से होता है। बिल्कुल ठीक बात है परन्तु दाता के सात गुण बताये उसमें एक गुण अमात्सर्य भी है।

साधर्मी से मात्सर्य कैसे वह तो वात्सल्य गुण रखता है। इस प्रकार वह दूसरे के बारे में भी सोचता है और सोचना चाहिए। मोक्षमार्ग में भावों का खेल है। सुन रहे हैं आप लोग (हाँ जी) मोक्षमार्ग भाव प्रधान है द्रव्य का खेल तो उसके लिए निमित्त है। "अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा" बोलते हैं।

ये मात्र शब्द है।

द्रव्य जो भी हो अपनी कूवत के अनुसार [कूवत बुंदेलखण्डी शब्द है] शक्ति के अनुसार चलाता है और भीतर के भावों को बढ़ाता है। उस भाव के कारण ही कर्मों की निर्जरा होती है। अन्यत्र पढ़ा था चक्रवर्ती के विषय में, उसे भी रखना चाहता हूँ। ये तो अपनी तरफ से रखा। वह विक्रिया से सबको नहीं पड़गाहेगा। महाराज यदि मनःपर्यय ज्ञानधारी भी क्यों न हो तो उस समय वे अपने ज्ञान का उपयोग नहीं करेंगे।

संभव है यह भरतेश वैभव में आया है। महाकाव्य के माध्यम से यह बताया कि वह चक्रवर्ती विक्रिया करके एक साथ कई जिनबिम्बों का अभिषेक करता है। ये बहुत अच्छा लगा। विषयों में तो विक्रिया करता ही है किन्तु पुण्य कार्य में भी इस प्रकार कर अपना पुण्य कई गुना करता है। यहाँ सहस्रकूट बनने जा रहा है। ऐसी शक्ति है उसके पास कि एक साथ एक हजार आठ भगवान का अभिषेक कर सकता है।

"इस प्रकार ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ मान का कारण होती है तो ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ कर्मों की निर्जरा का भी कारण बन सकती है।" एक बात कहूँ आपके यहाँ चार हजार घर है किसी ने ९ किसी ने ८ किसी ने ११ प्रतिमा ले ली। मेरा ये कहना है कि जो ९ अथवा ८, ११ आदि प्रतिमा लिया है वह

अपनी ओर से एक प्रतिमा उनको दे सकता है, जिन्होंनें एक भी नहीं दी। — — — — — — — — — — — : — वह उन्हें कोफर में नहीं उतारता के साथ दे सकता है और इसके लिए जो कुछ भी राशि वह ले सकता है। इस प्रकार से 20-20 भी प्रतिमा भी है वे भी दे सकते हैं। देना चाहिए कि नहीं? [देना चाहिए] धर्म का प्रभाव बढ़ाने के लिए अड़ोस-पड़ोस को भी देखना चाहिए ये प्रभावना अंग है। — — — — — — — — — क्योंकि श्रावक जब भी पूजा करता है अपने परिवार को भी बुलाता है, साथ ले जाता है। देव लोग भी सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, तत्त्वज्ञान, अहिंसा धर्म की प्रभावना के लिए भी दूसरे को सहयोग करने का भाव कर लेते हैं। इस प्रकार से देवता लोग भी पुण्य अर्जन करते हैं फिर मनुष्यों की तो बात ही क्या? आप लोगों को भी ज्ञात तो था ही महाराज आ रहे हैं इसलिये खूब आ रहे थे-जा रहे थे। हमें वो भी ध्यान आ रहा है। — — — —

— — — — — — — प्रासंगिक है इसलिए बता देता हूँ। सुबह 4 बजे ही दोनों तरफ पंक्तिबद्ध खड़े हो जाते हैं, कहीं महाराज चले न जाये। हाथों में कलशा, उस पर तश्तरी एवं उस पर दिपक जला हुआ लेकर खड़े हैं। उन्हें भी ज्ञात है कि 30-35 वर्ष बाद गुरुजी आ रहे हैं। इस तरह से प्रतिक्षारत पंक्तिबद्ध खड़े हमने देखे हैं। आप तो फिर भी पैर पकड़ने के लिए दूरते हैं, उनके लिये कोई पुलिस की जरूरत नहीं पड़ती है।

आप सोचते हैं - महाराज हमारे लिए पुलिस चाहिये ताकि पुलिस पास आयेगी, उन्हें भी धर्म ध्यान का अवसर मिले।

अव्यवस्था को देखकर हमे लगा कुई लोग इस तरह इसमें भी धर्म ध्यान कर लेते हैं। भावों का खेल है इसमें दरिद्रता न आये। इन भावों से राजा भी एक पल में रंक और रंक भी राजा हो सकता है। ये भावना हमेशा- हमेशा बनी रहे। पाप हो या पुण्य का उदय हो सबमें इसी तरह के भाव हो। पाप-पुण्य के मांहि ......उपजे विनशे थिर नाहिं" यह हिन्दी की पंक्तियाँ है, प्रकृत में भी आती है।

ये सब पाप पुण्य का खेल है। पुराने पुण्य से धार्मिक वातावरण मिलता है परन्तु पलटने में देर नहीं लगती। बहुत जल्दी-जल्दी पलट सकता है। हमारा कर्त्तव्य होता है हमेशा-हमेशा अपने छह आवश्यकों को करने का उद्यम करें। ये परिणाम ऐसे होते हैं एक समय में ऊपर से नीचे पटक सकते हैं। पुराण ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि विषयों में कैसे पतन हो जाता है। बड़े-बड़े हाथी भी बह जाते हैं। वैभवशाली चक्रवर्ती भी नरक चले गये। इस बात को कभी भूलना नहीं चाहिए।

वे तो मुक्ति को प्राप्त होते हैं हाँ! साधना करते हैं तो मुक्ति को प्राप्त होते हैं परन्तु भोगों में लीन हो जाये तो नरक की भी यात्रा करते हो इसीलिए भोगेश्वरी को नरकेश्वरी कहा।

नरकों में भी तो नेता होते हैं। ---------
---------- यहाँ पर ही नेता हो ऐसा नहीं है, वोटिंग तो यहीं पर होती है, उसके उपरान्त वहाँ राज्य मिल जाता है। सागरोपम आयु तक वहाँ नेता बना रह सकता है। इसलिये कोई नेता बन जाये तो... नेता चुनना एवं नेता बनाना दोनों में अन्तर है। इसलिये बहुत सोच समझकर कार्य करना चाहिए। चक्रवर्ती बना नहीं जाता चक्रवर्ती बनाया जाता है।

---------- पुण्य से उस चक्रवर्ती पद का दुरुपयोग कर लो तो सुभौम चक्रवर्ती की तरह सप्तम नरक भी चला जाता है। ये पुराण ग्रन्थों से पता चलता है। इसलिए जबतक बुद्धि ठिकाने पर है, इन्द्रियाँ काबू में हैं पुण्य कार्य कर लो। अपनी सम्पदा को पंचेन्द्रिय के विषयों में खर्च करेंगे तो वही फल मिलेगा जो सुभौम चक्रवर्ती को मिला। इसलिये अर्थ का सोच समझकर उपयोग करें, अर्थ का अपव्यय न करो। सोचकर अर्थ का उपयोग करने से अर्थ का कई गुना अर्थ बढ़ जाता है। ये हमारी बैंकिंग प्रणाली है। इसके माध्यम से कई गुणित प्राप्त हो सकता है। ---------

---------- घबराने की जरूरत नहीं, आपको ही अपना मिलेगा। आपका कमाया दूसरे को नहीं मिलेगा। कम-बेसी भी नहीं होगा। वह तो बढ़ता ही जायेगा, बांटने पर भी खाली नहीं होगा। जैसे- चक्रवर्ती की 9 निधियाँ बांटने पर भी बढ़ती जाती है। साता के पुण्य से बढ़ता ही जाता

है, वटवृक्ष की भांति।

जैसे वटवृक्ष की शाखायें फैलती ही जाती है पता तक नहीं चलता कि मूल जड़ कौनसी है। कर्म का भी ऐसा ही स्वभाव है। कर्म सिद्धान्त से उदास नहीं होना चाहिए न ही इसका अविनय करके बैठना यह अज्ञान है। धार्मिक व्यक्तियों के प्रति सदैव तत्पर रहें। पहले से ही जो धर्मात्मा है उसे सहयोग / सहकार देने की आवश्यकता है। हमारे भीतर के धार्मिक भाव की यह पहचान है। हम कितने सावधान हैं? सत्कार्य करने में। सत्कर्म करने से दूसरे का लाभ नहीं स्वयं का ही लाभ है। दूसरे के निमित्त से हमारा ही भला है।

हमें अपने घमण्ड को बचाकर यह सत्कर्म करना चाहिए। मद हो जाये तो अंधा बनने में देर नहीं होती। कहते हैं न- इनकी तो बुद्धि ही पलट गयी- कुछ सूझत नहीं है। आँखों में मल आ जाने पर कुछ नहीं दिखता। वृद्ध तो ठीक जवानी में यदि मद आ गया तो धरती ही नहीं दिखती आसमान पर ही पैर पड़ने लग जाते हैं। गिरने के बाद होश-हवास ही नहीं। मैं भी न गिरूं तथा दूसरे भी न गिरें ये धर्म-ध्यान है।

आप लोगों का यह धर्म ध्यान बढ़ता ही रहे। कई लोग आते हैं, जवाब देना मुश्किल रहता है। महाराज हम ललितपुर से हैं, गुरुवर हमारी भी आस है और ललितपुर भी ---(पास है) बोलो। होता तो

है। सबको मिले ऐसी भावना रहे।

मिलता तो अपने-अपने भाग्य से है। महाराज को ऋद्धि मिल जाये। आप लोगों की भावना तो अच्छी है। हम ऋद्धि चाहते तो नहीं हैं, वैसे भी आज ऋद्धिधारी का दर्शन ही दुर्लभ है। पुण्य भी आवश्यक है। सच्चे देव शास्त्र गुरु की उपासना वालों को भी ऋद्धि मिले ये आवश्यक नहीं है। हमें मिले एवं सबको मिलता रहे ये ही भावना श्रेष्ठ है। इसी से धार्मिक वातावरण का संरक्षण संभव है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हैं

संस्मरण –

"गुरुजी की संलेखना के समय 3 वर्ष का अकाल पड़ा था। सूखा था। भीषण गर्मी – ज्येष्ठ का महिना था। सुबह से 7 बजे ही 12 बजे जैसा लगने लगता था। रेत का कण आकर शरीर से टकराता तो ऐसा लगता था मानो भाड़ में से उचटकर ही आया हो। आहार लेकर आते-आते ही पानी सूख जाता था। कहाँ चला गया पता नहीं चलता था। लेना भी सोचसमझकर करते थे। उसमें भी प्राणांत होने का खतरा रहता था। ऐसे विषम समय में गुरुजी ने एक-एक क्षण समता परिणाम के साथ कारे और उत्तम संलेखना को प्राप्त किया।" उत्तरपुराण की कक्षा में

पपौरा जी 20-4-18

२२-५-१८ "चेतन धन का संरक्षण" प्रात:९.२०

कल नहीं परसों जो बात कही थी आज के दिन उसका प्रारम्भ होने जा रहा है। यह भी याद रखें गत साल प्रतिभा प्रतिक्षा की बात इन्दौर नगर के उपनगर उदयनगर में हुयी थी। वहाँ पंचकल्याणक के लिए समयसागरजी एवं ५-५ महाराज को भेजा था। पंचकल्याणक के उपरान्त जो राशि बच जायेगी, छात्राओं के लिए ऐसा स्थान बनाना चाहते हैं जिसमें रहकर छात्रायें संस्कारों के साथ लौकिक अध्ययन भी कर सकें।

पंचकल्याणक के बाद कार्य प्रारम्भ हो गया किन्तु विलम्ब हो रहा था। किस कारण से विलम्ब हो रहा है पता नहीं। बाद में पता चला जो स्थान है इसकी अपेक्षा। प्रतिभास्थली के लिए ही उपयोग किया जायेगा। इसलिये नहीं कहा था। मैं यहाँ बैठा था, वहाँ कार्य होना है, होने में कोई बाधा भी नहीं है। जब सभी लोग संकल्प ले चुके हैं तो फिर कार्य के होने में क्या बाधा? कल नहीं परसों कहा था, पहले से कहने में गड़बड़ियाँ हो जाती हैं।

वहाँ पर ३-५ माला का भवन बनकर तैयार हो चुका है। जैसे यहाँ पर प्रतिभास्थली की स्थापना वैसे ही वहाँ पर भी प्रारम्भ होगी। वहाँ आर्यिका तो है ही, एक साथ इसी समय वहाँ भी प्रारम्भ हो जायेगा। अभी आप सभी को शिक्षिका ने अवगत कराया कि ४० से भी अधिक

बहनें जो लौकिक अध्ययन करके आयी। — — — —

— — — — — — चूंकि शिक्षा के क्षेत्र में क्या-क्या कमियाँ रहती हैं उसका निकटता से अध्ययन किया। ऐसी ही बहनों का हमारे पास आना हुआ। आने का भाव है तो हमारे पास भी प्रबन्ध है। यदि आप सभी अपने विचारों में स्थिरता को लिये हैं तो हमारे पास भी भिन्न-भिन्न योजनाओं को पूर्ण करने हेतु लक्ष्य है। समाज से निकलकर उन्होंने यह कार्य किया। — — —

— — — — — — इस प्रकार जैसे आप धन का संरक्षण करते हैं, हमने भी इस धन का संरक्षण किया। और उन्हें इस तरह का रूप दिया। आगे की शिक्षा-प्रशिक्षण उन्हें प्राप्त हो इस हेतु इन्दौर भेजा। आर्यिका तो वहाँ थी ही, समाज ने भी इस [illegible] कार्य को बहुत अच्छे ढंग से हाथ में लिया। 80 [illegible]पर लगभग 100 बहनों की सम्पूर्ण व्यवस्था करना। जो उच्च शिक्षा में उपाधियों के साथ थी इन सभी का संरक्षण किया। सभी प्रकार का प्रबन्ध निराकुलता के साथ किया। — — — — — — — — — —

— प्रतिभा-प्रतीक्षा नाम तो था ही। प्रतीक्षा पहले से जुड़ा है, थोड़ी प्रतीक्षा और करो। हमने सोचा एक वर्ष बच जाये तो इस अच्छा ढंग से उपयोग कर लिया जावे। बाद में क्यों पूछ रहे हैं, जिसके भाग्य में होगा उसके लिए मिल जायेगा। इस प्रकार इस समय यहाँ भी घोषणा हो गयी होगी, नहीं तो मध्याह्न में हो जायेगी। जिसके बारे में विचार किया जाता है।

के बारे में सोचा जाता है।

कहाँ करना और कब करना इन दोनों ही प्रश्न पर विचार किया गया फिर जिसका जैसा भाग्य होगा तब खुलेगा। ललीतपुर वाले - गुनावाले - भी - मुंगावली वाले भी लगे है। मुंगावली तो हम आज तक गये ही नहीं। शब्द कठीन सा लगता है हम तो उकावली बोल देते हैं। सभी लोग आते हैं। छात्रायें संस्कारित हो इसका विशेष रूप से प्रचार-प्रसार कीजियेगा। योग से प्रासाद (भवन) भी तैयार हो गया, थोड़ा बहुत काम है वो भी पूरा हो जायेगा।

जैसे यहाँ सभा वैसे वहाँ भी चल रही होगी, उसमें घोषणा हो गयी होगी। वैसे देखा जाये तो कुछ समय पूर्व भी कुछ गतिविधियों के बारे में कहा था क्योंकि आज शिक्षा का सही रूप से सम्पादन होना कठीन है। महानगरों में तो शिक्षा का उद्देश्य ही दूर हो गया। इसी उद्देश्य के लिए सर्वप्रथम जबलपुर में 250 छात्राओं के साथ प्रारम्भ हुआ। वहीं से मैं आया हूँ। उसी समय इन्दौर के लिए भी आर्यिका को संकेत किया, आगे देख लेंगे क्या होगा?

ताकि भर्तीकरण का कार्य प्रारम्भ एक साथ दोनों स्थानों पर हो जाये। अभी मंच पर कहा - पहली कन्या कौन होगी? तो मैं बता दूँ प्रतिभास्थली में भर्तीकरण के लिए योग्यता का होना जरूरी है। वह मात्र शिक्षिकायें

ही कर सकती हैं, किसी की सुनवाई नहीं।

अतः किसी से कहियो नहीं।

वह जो कहा था प्रवेश की दृष्टि से कहा था। इतना ही नहीं यह कार्य बहुत कठिन है। आज की शिक्षा प्रणाली को हटाकर पुनः भारतीय शिक्षा प्रणाली की स्थापना करना ठीक वैसे ही है जैसे नदी के वेग को [मोड़ना] बदल देना। नदी के रुख को बदल देना कठिन है मोड़ना सरल है। हमें उसे थोड़ा मोड़ रहे हैं ताकि अतीत की उस प्रणाली को पुनः स्थापित किया जा सके।

ध्यान रखें एक साथ यह कार्य सम्भव नहीं। पानी को यदि रोकना चाहते हैं तो उस पर बाँध बनाते हैं। बाँध बनाने पर भी पानी रुकता नहीं वह ऊपर की ओर बढ़ता है। भारत की शिक्षा प्रणाली की यही दशा हो गयी, विदेशी शिक्षा प्रणाली आ गयी। आजादी के 70 वर्ष हो गये तो भी वही विदेशी शिक्षा प्रणाली चल रही है। अब विद्वानों / वैज्ञानिकों के भी विचारों में आने लगा है कि किसी भी प्रकार शिक्षा प्रणाली को बदलना अनिवार्य है।

यदि आप चाहते हैं तो इतिहास को पढ़ना अनिवार्य है। अर्थ का उपार्जन एवं परमार्थ का अर्जन भी उस शिक्षा में सारी बातें होती हैं। आज केवल विदेश पर ही आधारित हो गये हैं। जब प्रतिभास्थली खुल ही रही थी तो भाषा की बात आयी। मन में आया हिन्दी / संस्कृत ही होगी किन्तु भिन्न थी। मैं मौन रहा। कोई भी कार्य

जल्दबाजी में नहीं करना चाहिए।

प्रथम चरण में आवासीय विद्यालय में संस्कारों के साथ शिक्षा होगी। प्रथम चरण में तो वह English माध्यम से चला। हमने सोचा मोड़ आवश्यक है। उस मोड़ में हमारे समर्थक हो ऐसा कोई आवश्यक नहीं। अभिभावक ही असमर्थक होंगे। हमें कोई बाधा नहीं, आज से ही प्रारम्भ होगा। हिन्दी माध्यम से अध्ययन-अध्यापन की शुरुआत म०प्र० से ही हो। सुनते हैं उस समय भी तालियाँ बजी पर वे दूसरी प्रकार की तालियाँ थीं।

यह भी चर्चा आने लगी इनके पास अन्त विदेशी English भाषा नहीं है सो हिन्दी माध्यम रखा है। हमने सोचा - हमें तो भोजन करना है इधर-उधर की बातों से कोई मतलब नहीं। कुछ भी हो हमने तो परिवर्तन कर दिया। उसी समय म०प्र० की राजधानी भोपाल में अटल जी के नाम से हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना हो गयी। महाराज आपने क्या यह स्वप्न देखा था? आज सरकार भी स्वीकार रही है।

यदि अभिभावक कन्यायें नहीं देंगे तो आप संस्कारों के साथ कैसे तैयार करेंगे। किन्तु अभिभावकों को भी समझ में आ गया, आप कुछ भी पढ़ाओ हमें तो संस्कारों के साथ पढ़ाना है। शिवराज जी हमेशा कहते हैं - अन्य प्रांतों से भी आवाज आने लगी है-

बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ।

तो क्या बेटे को नहीं पढ़ाना चाहिए? बेटी आती भी है और जाती भी है इससे वह दोनों कुलों का उद्धार करती है। फिर हम तो लक्ष्मी के साथ सरस्वती की संयोजना कर रहे हैं। ताकि दोनों बहनें (सरस्वती एवं लक्ष्मी) मिलकर इनकी बुद्धि को ठीक-ठाक कर दें। यह कार्य यहाँ होने जा रहा है। विज्ञान के अनुसार भी शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन होना चाहिये। आकर पूछते हैं। हमारा कुछ नहीं कहना बस इतिहास (माइथोलॉजी) को देखो।

विश्व का नहीं भारत का इतिहास चाहिए। उसे पढ़कर परिवर्तन करने में सक्षम हो कुछ भी कहो अब पुरानी गलती को नहीं दोहरायेंगे। उस पीड़ा की आवाज तेज होने लगी है। किसी को बुलाना है तो नाम की जरूरत नहीं आपका शब्द / ध्वनी वहाँ तक जायेगी काम हो जायेगा। हम अपनी ध्वनी भेजने के योग्य हो गये हैं। इतना अवश्य कहना चाहता हूँ यदि भारतीय इतिहास का अध्ययन नहीं तो बेटा- बेटी हाथ से निकल जायेंगे। यदि हाथ से निकालना चाहते हैं तो प्रतिभा स्थली की कोई आवश्यकता नहीं।

खोलना चाहते हैं तो इतिहास बचाना जरूरी है। यदि भाषा नहीं- इतिहास नहीं बचेगा तो शब्द भी नहीं बच पायेगा। ऐसी गहन पंक्तियाँ विद्वानों ने लिख

ही है कि राष्ट्र संरक्षण के लिए मातृभाषा/निजभाषा की आवश्यकता है।

उसी भाषा में शिक्षा प्रणाली हो तभी भीतरी भाव भी उत्पन्न होंगे। संकल्प शक्ति मजबूत बनेगी। इतना ही कहना चाहता हूँ आप ये कार्य बुद्धिपूर्वक एवं पूर्ण स्वविपूर्वक करें। छोटे-छोटे बच्चे संकल्प लेते हैं। खान-पान को सुधारने के लिये तब बड़ी प्रसन्नता होती है। कल चौके में एक बच्चे ने फास्टफूड का त्याग किया, हमने कहा Fast Food का तो त्याग करो और Past Food को अपनाओ।

पाक शास्त्र ही रह गये हैं जब से भारत का विभाजन हुआ है तब से पाक ही चला गया। पाव रोटी जानते हो क्या होती है जो हाथ या बेलन से न बनाई हो पांव से बनायी हो वह पाव रोटी होती है। छन्ना का प्रयोग नहीं, कब की बनी पता ही नहीं। बासी घर में नहीं खाते फिर वह क्यों खा रहे हो?

अच्छे ढंग से छओ कहो। समय हो रहा है। जब तक बुद्धि तैयार नहीं तब तक समय क्या करेगा? हाथ में घड़ी काहे के लाने बांध रखी है? समय का ध्यान रखो। अमृत तत्त्व है समय उसे देखो यही समय सार है। कहना तो नहीं चाहता था पर आप लोगों का भाग्य है। आज रविवार भी है।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

२३-५-१४ "भावना अथवा ध्यान रूपी जैक" प्रातः १.२०

आप लोगो को ज्ञात होगा, पढ़ा होगा, सुना होगा, नहीं है तो अब सुनो ! जब लोड होता है, जिसको ट्रक बोलते है। जो किन्नर होता है वह चाक में कहाँ गड़बड़ी है देखता है तो वह उस लोड में से जैक निकालता है। उसको पहले लगाता है अर्थात स्थिर करता है एक पटिया पर रखकर व्यवस्थित करता है। बाद में एक रॉड (सरिया) के माध्यम से उसे घुमाना प्रारम्भ कर देता है।

चार-पाँच बार घुमाते ही, वह लोड जिसमें कितना टन भरा है, पता नहीं धीरे-धीरे ऊपर उठने लगता है। एक व्यक्ति है, बिल्कुल दुबला-पतला। आपको पता है उस जैक की क्या विशेषता है? उसको जहाँ रोका वहीं रुक जाता है। नीचे की ओर नहीं आता। पुनः घुमाना चालु तो नीचे नहीं ऊपर ही जाता है। इस प्रकार से उसे जोभीकार्य करना था कर लिया। अब पुनः जो कार्य करना है उसे चालु कर दिया।

उतावली करने वाले कुछ जल्दी बाजी करते है परन्तु जैक कहता है, मैं जल्दी नहीं करता। आप सुन रहे हो। [हओ] सही है तो अच्छे से हओ कहने में क्या बाधा है। स्वीकृति होनी चाहिए। भारको ऊपर ले जाने की जो गति थी उसी अनुपात से वह ऊपर से नीचे भी आता है। मैं सोचता रहा - देखातो

था ही।

उसका प्रशिक्षण तो देखो। लोड़ टनोटन है और एक छोटा सा है। बस स्थिर रहता है। जिस अनुपात से चढ़ा उसी अनुपात से नीचे आता है। आधा सेमी. भी बचा है तो आप जल्दी से नीचे नहीं ला सकते और वह अपने क्रम से ही गिरता है और आप हैं बैठे-बैठे ऊंघने लग जाते हैं। अच्छे से बिठाओ इस शरीर को एक जो जैसे बिठाते हो। इससे बहुत बड़ा पाठ मिलता है।

एक क्या है? घुमावदार होता है। चूड़ी बोलते हैं। घुमाते हैं तो चढ़ता-उतरता है। माइण्ड में भी स्क्रू ढीला हो जाये तो कसा जाता है। एक बार कसने पर वैसे की वैसे खड़ा रहता है। जिस स्क्रू पर रोक दिया वहीं रुकेगा नीचे नहीं आ सकता। यही पद्धति है। पद्धति के बिना गाड़ी नीचे आ जायेगी-पलट जायेगी। आप एकदम पटक देते हैं। उसको कैसे प्रशिक्षण दिया गया है, देखो तो सही। हाँ Risk तो रहता है। ज्यादा समय एक पर नहीं रखते। जल्दी-जल्दी वापस ले आते हैं।

परिधि तक तो रखते हैं, परिधि के बाहर ज्यादा समय नहीं, टूटने की संभावना रहती है। इस उदाहरण से हमने यही समझा कि भावना अथवा ध्यान से भावों को उठाते जाये-3 किन्तु उसकी एक सीमा रहती है। वह कहता है हमें अब उठाओ नहीं बैठाओ। बिठाओ नहीं लेटाओ। कमर में दर्द हो रही है। ऐं

स्थिति में भावों को चढ़ाने की आवश्यकता होती है।

यदि उतारना पड़े तो आचार्यों ने जेक की व्यवस्था कर रखी है। सुन रहे हो [हाँ] ऐसी प्रवृति होनी चाहिए कि स्फूर्ति आ जाये। जेक की तरह भावों को जब नीचे उतारते है तो उसमें भी संयम की आवश्यकता होती है। छठे गुणस्थान में असंयम नहीं है, प्रमाद है। आप लोगों की स्थिति ऐसी की हमेशा असंयम ही बना रहता है। चाहे दर्शन कर रहे हो, पूजन/अभिषेक/स्तुति कर रहे हो।

आपकी परिधी जीवन के कार्य काल में अप्रमत अवस्था तक नहीं क्यों कि वैसी संरचना नहीं हुयी है। दो प्रकार की कील लगाई जाती है एक स्क्रू (चूड़ीदार) दूसरी दबाने वाली। दो तरह के ढक्कन जैसे होते है - एक घूमावदार होता है दूसरा दबाने वाला। महाराज कहते है जिस गति से उठाया उसी गति से आना है। नीचे आने का मतलब ही संकल्प से हारना है। जल्दबाजी नहीं करना। यदि मुनिराज और नीचे आ जाये तो पंचम गुणस्थान हो जायेगा और नीचे तो संयमासंयम भी नहीं रहेगा असंयम मे, और नीचे तो मिश्र और नीचे तो सासादन/लोटा ही दो तो मिथ्यात्व में भी आ सकता है/आता है।

महाराज हमें वाचना सुनाओ। ये हमने थोड़ी सी बात रख दी। आपके भाव इतने भारी की जब गिरते है तो स्वयं को भी नहीं संभाल पाते है। और बातें करते है- संयम की।

"कहने की बात ही नहीं-करने की बात होती है।"

"आत्मा की बात नहीं-आत्मा से बात की जाती है।" बातें तो लम्बी-चौड़ी हो गयी। हमसे क्या बात करते हो, अपने आप से बात करो। मन से कह दो। दिखा दो उसे। अभी उसे हमारे स्वरूप के बारे में ज्ञात नहीं। उठ जाऊंगा तो देख लेना। मन भी पहला कहता है- उठने की बात करता है, उठता नहीं। इसीलिये मन आप पर हावी हो जाता है। संभालने की बात है अपने आप को, दूसरे को नहीं।

इस जैक के माध्यम से आपको अवगत कराया। कर्मकाण्ड इत्यादि में लिखा है- छठवां गुणस्थान गिरने की अपेक्षा से ही है। दूसरा भी गिरने के कारण होता है। आप ही देख लो। बाजार में भाव गिरते हैं तो क्या हालत होती है। आप कहते हैं- भैया! अब तो ताला लगा दो। इतने में तो सोचना ही नहीं। 0 का एक ही हो गया। प्रमाद आने पर भी ऐसा ही होता है। कोई भी इससे बच नहीं सकता। तीर्थंकर भी नहीं/भगवान भी नहीं। पर वे जैक की व्यवस्था रखते हैं।

नीचे आते हैं, पुनः ऊपर उठ जाते हैं। इस प्रकार अपने परिणामों को संभाल सकते हैं। ग्रन्थ पढ़ने मात्र से भावों के संभालने की प्रक्रिया नहीं। जिन्होंने समझा उन्हें देखकर परिणामों को जैक की तरह रोक देता है। यह प्रक्रिया अन्तिम समय तक जारी रखते हैं। धन्य हैं वे जिन्होंने

उस आन्तरिक वैभव की प्राप्ति कर ली। — — — — —

— — — — — ज्यादा कहना तो ठीक नहीं। जो दिया है वह भी गरिष्ठ है। भोजन में गरिष्ठ कितना लेते हो? बोलो ना? घी चम्मच से थोड़ा ला, यदि छोटा बच्चा हो तो छोटी चम्मच (परी बोलते है उसे) रहती है। इसलिये गरिष्ठ भोजन लेने के लिये भूख की भी आवश्यकता होती है। उसी प्रकार अर्हं - अर्हं भावों को प्राप्त करने हेतु भी भूख की आवश्यकता / प्रयोग की जरूरत होती है। आप लोगों ने वाचना की याचना की है। — — — —

— — — — — — स्वाध्याय तो एक घण्टा करते हो, सामायिक भी किया करो। हमारे लिए नहीं - आपही को उसकी आमदनी होगी। आधा घण्टा स्वाध्याय तो एक घण्टा सामायिक होनी चाहिए फिर देखो लहर कैसी आती है। क्या करें महाराज सामायिक में बैठते हैं तो निद्रा देवी आ जाती है। गरिष्ठ है इसलिए तो। शरीर शून्य हो जाय कोई बात नहीं पर स्वयं को शून्य नहीं करना, जागृत रखना है। ये अभ्यास करना चाहें तो कर सकते हैं। — — — — —

— — — — आपकी वाचना के साथ इसका सम्बंध है, क्यों कि एक-दूसरे के साथ सम्बंध होता है तभी पचता है, इसलिये हमने वाचना के साथ सामायिक का सम्बन्ध बता दिया। करना चाहो तो कर लेना, नहीं तो उसी थाली में रहने देना। जब भूख खुल जायेगी तो स्वयं ले लेंगे। — — — —

— — — — — — अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

२५-५-१८ "टेबलेट निरोग होने की" प्रातः ९.२०

कल हमने कहा था वाचना की मांग आप लोगों ने की थी। की थी मतलब प्रतिदिन कर ही रहे हैं। भावना से सब लोग एक-एक समय में जुड़ ही रहे हैं। उसी का सार आप तक पहुँचा रहा हूँ। आप जाग्रत होंगे तो उपचार संभव होगा। उपचार का अर्थ सेवा भी और उपचार का अर्थ मुख्य नहीं (गौण) ये तो उपचार से है। अभी उपचार का अर्थ सेवा से लेते हैं।

जो हमारे लिए मारक तत्व होता है, हम जानते हैं और उससे बचते हैं। मारक तत्व अपना कार्य करे लेकिन हमारे अन्दर उसका प्रभाव न पड़े ये भी होता है। ये तो सब लोग जानते हैं विष के द्वारा मरण होता है जीवन का संवेदन संबंध समाप्त (गायब) हो जाता है। यदि संवेदन बना रहता है तो भी वह गाफिल हो जाता है। इसी को मारक तत्व बोलते हैं। आचार्यों ने इसे बनाने का उपाय भी बताया।

हम समझकर प्रयोग करें तो बच सकते हैं। धतूरा जीवन (प्राणों) को हर लेता है। धतूरा खाया - समझ लो गया। उपचार करने के पूर्व ही मरण हो जाता है। किन्तु वैद्य जी लोग उन धतूरे के बीजों को ले आते हैं और रोग को ठीक करने के काम ले लेते हैं। रोगी तो यही समझता है

कि रोग विष के कारण है।

विषाक्त फोड़ा हो गया है फिर धतूरा स्वयं विष है। मारक तत्व है इसे कैसे काम में ले सकते हैं। ये खाने की चीज तो है नहीं। वैद्य जी लोग इसको भी खिला देते हैं और आप दाम भी देते हो। हमारा भी ऐसा ही है। त्याग भी करना पड़ेगा और हमारी बात भी माननी पड़ेगी। मंजूर है? मन से - वचन से - तन से - धन से मंजूर है? धन कई प्रकार के हुआ करते हैं। [चेतन-अचेतन]

तो वैद्य जी कहते हैं, तुम्हारा रोग असाध्य नहीं। जैसा मैं कहूँगा वैसा परहेज करना पड़ेगा। जो आप कहो - जितना आप कहो - बस रोग ठीक हो जाये। सर्वप्रथम हमारा कहना है - आत्मा अजर-अमर है यह धारणा में पक्का कर लो। रोग अलग वस्तु है, आत्मा अलग। आत्मा कभी मर नहीं सकती। मैं मर न जाऊं - 3 यही रटता रहता है। "आत्मा कभी मरती नहीं" यह टेबलेट तो सुबह - मध्याह्न - शाम तीनों समय पहले लेना अनिवार्य है। ये तो मुख्य कार्य है।

ले सकते हो? हाँ महाराज! हमें इस रोग से बचना है। विरोधी तत्त्व से विष दूर होता है, यह एकान्त नहीं। उसी के समकक्ष विष भी विष को दूर कर देता है, विष को जला देता है। ऐसे भावों से हम कर सकते हैं। तो वैद्य जी धतूरे के बीजों को ले आते हैं। गौ-मूत्र से उनको धोना प्रारम्भ कर देते हैं। धोते - धोते विष दूर तो नहीं पर मारक

तत्त्व कम हो जाता है।

अब मरण की बात भूल जाओ अब तो रोग का मरण होगा, आत्मा का मरण होता ही नहीं। सब विषाक्त मैटेरियल बाहर कर देगा। उसने एक माह तक सेवन किया और स्वस्थ हो गया। पृच्छा-आपने कौनसी औषधी दी थी? धतूरे के बीज दिये थे। है धतूरे के बीज! घबराओ नहीं अब वह जहर नहीं औषध का रूप ले लिया है। उसे मंत्रो द्वारा मंत्रित/शोधित किया गया है।

औषध अपने आप ही नहीं बनती। साधना - आस्था और विवेक इन तीनों के मिलने से विष की भी मारक शक्ति को कम कर दिया जाता है। वह विष था पर उसे भी भोजन (खुराक) की संज्ञा दी जा सकती है। औषध बन गया। अच्छी-अच्छी चीज खाने के उपरान्त भी दुबले पतले होते जाते है, ये हमारे ही परिणामों का प्रभाव है। अज्ञान दशा में हम राग-द्वेष द्वारा कर्म बंध कर लेते है किन्तु भगवान की भक्ति रूपी धतूरे के बीजों को उन्हें काट भी सकते हैं।

कुछ लोगो का कहना है महाराज ये तो राग है, राग होते हुये भी भगवान से अनुराग है। ये ऐसा अनुराग की धतूरे के बीजों की तरह सब साफ हो जाता है। रोग तो ठीक होगा ही भव रोग भी ठीक होगा। अनंत

काल से जहर चढ़ा है।

जहर ही जहर को मारता है, गर्मी ही गर्मी को मारती है, कांटा ही कांटे को निकालता है। हमने तो उनका कांटा ही निकाल दिया। अबकी बार तो भगवान की कृपा हो गयी। पैर लंगड़ाता था अब तो वह दूर हो गया। सुन रहे हो? हओ। बुंदेलखण्ड में 'हओ' आस्था का प्रतीक है। यह हमें पॉजेटिव Thinking की ओर ले जाता है। ना कहना Negetive Thinking है वह गड़बड़ है।

हमें विधी परक अर्थ निकालना है। विधी बहुत बलवान है। किसी से भी संबंध रखें तो विधीत्व को छोड़ें नहीं। दूसरे से बचना चाहते हैं, पर उसे भी बचाया जा सकता है। इसको भी दिमाग में रखें। उसका स्वभाव और मेरा स्वभाव एक है। धतूरे से भी किसी को बचाया जा सकता है। ये कुशल वैद्य का ही काम है। वर्षों लगते हैं ऐसी औषध बनाने में। दुकानदार सब समझता है, कैसा भी ग्राहक हो हम इसकी जेब से निकलवा लेंगे।

ग्राहक कहता है, हमने भी बहुत से दुकानदार देखें है। ऐसी दुकान लाकर आपके सामने रख देंगे। सारे ग्राहक चले जायेंगे। आप एक ही भाव रखा करो। ग्राहकों को बढ़ाने का उपक्रम किया करो। उनकी दुकान तो बहुत चलती है। चलती नहीं चलाते हैं। जो घातक है, वह

भी जनक/संरक्षक बन जाता है।

इस प्रकार कम समय में दवाई की पुड़िया दे दी है। ये ध्यान रखना - जहाँ कहीं भी इस पुड़िया को खोलना नहीं - हाथ नहीं लगाना। ऐसे करके खोलना और ले लेना ऊपर से पानी पी लेना। काम हो जायेगा। जहर खिलाया गया - घबराओ नहीं। कर्म बांधा है - कोई बात नहीं। रागियों के बीच भी राग को हटाने का उपक्रम किया जा सकता है। करना चाहिये।

ये ही तो काम है। परन्तु मेरे द्वारा दिया गया धतूरा ही लेना और किसी के द्वारा नहीं लेना। दवाई बनाना बहुत कठिन होता है, लेना बहुत आसान है। ये भी नहीं हो तो हम क्या करें। ये तो बहुत कड़वा है। आपने आज तक मीठा ही मीठा समझकर खाया था। इसे एक बार लेओ सब निकल जायेगा। लड्डू खाना चाहते हो पहले हमारी पुड़िया खाओ। हमने सोचा मीठा मिलेगा। हाँ! मिलेगा परन्तु पहले जो खा लिया उसे बाहर निकालो फिर खिलायेंगे।

आपको मन - वचन - काय (तन) से करना पड़ेगा, नहीं निकालोगे तो कान भी पकड़ेंगे। "हओ।" ऐसई - ऐसई तो नहीं (हओ) इसमें भी हओ। इस प्रकार जो व्यक्ति राग को केवल बंध का ही कारण मानता है, कारण है पर निकालने में भी कारण है। शुभ राग / प्रशस्त राग इसी का नाम है। आचार्यों

ने भक्ति की संज्ञा दी है।

भक्ति कई प्रकार से होती है। भगवान के सामने ही भक्ति हो ऐसा नहीं है। उद्देश्य मात्र यही हो मोह को कम करना है। कम करते-करते ही वह एकदम कम होगा। एक साथ न कभी कम हुआ है और न होगा। उस मोह को उखाड़ने की यही प्रक्रिया आगम में बतायी है। बस आपको बुद्धिपूर्वक (मन-वचन-काय) सेवन करना है उस धतुरे का। प्रभु से प्रार्थना करता हूँ जो पहले धतुरा खा लिया है वह बाहर निकल जाये।

(अहिंसा परमो धर्म की जय।)

25-5-18 "फार्मूला चिड़चिड़ाहट से बचने का" प्रातः 9.20

जब हम तीर्थंकर के जीवन की ओर दृष्टिपात करते हैं तो एक अलग ही व्यक्तित्व रहता है उनका। ऐसा व्यक्तित्व मात्र उन्हीं का रहता है और किसी का नहीं रहता किन्तु उनकी चर्या-परिचर्या के बारे में सोचते हैं तो थोड़ा सा विकल्प हो जाता है, वह विकल्प यह है ज्ञानध्यान तपो रक्तस, तपस्वी स प्रशस्यते..... ज्ञान और ध्यान में लीन रहना लक्षण बताया है। ज्ञान तप अर्थात स्वाध्याय और ध्यान तप तो स्पष्ट है ही अथवा ज्ञान-ध्यान और तप में लीन रहते हैं।

दो अर्थ निकलते हैं।

विकल्प ये रहता है उनका ध्यान कैसा-स्वाध्याय कैसे पालती मारकर बैठ जायें एक जगह फिर विहार क्यों करते हैं। आप कहीं भी जाना चाहते हैं तो उससे पूर्व धारणा/मानसिकता बनाते हो या

नहीं।

तो पूछना चाहूँगा अपना नगर छोड़कर बाहर काहे को जाते हो? थोड़े से दिन के लिए क्यों गये? महाराज बोरीयत हो जाते हैं। बोरी में बन्द कर दें, कब तक रहेगा। उसी प्रकार अच्छे-अच्छे, बड़े-बड़े नगरों में रहने वाले भी थोड़ी सी हवा खा आयें, अभी तक हवा खाते थे। प्रसन्नता आती है तो क्या अभी तक अप्रसन्न थे। ये सब प्रश्न हैं, बिना पूछे भी उठते हैं।

तो महाराज के बारे में कह रहा हूँ। तीर्थंकर होने पर भी उन्होंने विहार किया। इससे समझ में ये आता है कि एक स्थान पर रहना कठिन होता है। मुक्त हो जायें तभी एक जगह रह सकते हैं उससे पूर्व तो पेन्डुलम की भांति रहते हैं। आजकल पेन्डुलम वाली घड़ियाँ बंद हो गयी। घड़ी बंद हो जाये तभी वह रुकता है अन्यथा इधर से उधर, उधर से इधर निरन्तर टुं-टुं करता रहता है। एक स्थान पर रहना उसे पसंद नहीं, रह ही नहीं सकता।

उसी प्रकार आज लोग थोड़ी सी हवा खाने बाहर चले जाते हैं। कब आओगे? यह प्रश्न ठीक नहीं। इसलिये की अभी गये ही नहीं। प्रश्न ठीक है क्यों की आपको बंधन में बांध लिया है। यदि विवाह कर लिया है तो ज्यादा आ-जा नहीं सकते। टहलने के लिए यही एक स्थान बना लो, खम्भे की परिक्रमा जैसे। कमजोरी है

यह हमें ज्ञात हो जाता है तो भी विहार करते हैं।
आहार के लिये गये। कहाँ? अयोध्या से हस्तिनापुर तक पहुँच जाते हैं। एक ही स्थान पर रहे ऐसे अपवाद वाले भी वासुपूज्य भगवान की तरह हैं, जिनके पांचों कल्याणक चम्पापुर में ही - बाहर गये ही नहीं। या तो वे स्थिर चित्त वाले थे या फिर जानते थे 84 लाख योनियों में भटक कर आ गये अब कहाँ जाना है। इसका रहस्य तो जब वे मिलेंगे तब ही पूछेंगे।
क्या कारण है कि बाहर गये ही नहीं? या तो जनता ने बांध लिया हो तो उनका व्यक्तित्व ही ऐसा कि बंधने वाले थे ही नहीं। वहाँ की जनता - स्थान से लगाव हो सो बंध गये हो। इतना अवश्य है कि छद्मस्थ अवस्था में एक ही कार्य करना सम्भव नहीं - दुरुह है। इस विषय को राजवार्तिककार अकलंक देव ने एक प्रश्न के माध्यम से उठाया। जब ध्यान से कर्म निर्जरा होती है तो फिर ध्यान ही करो अन्य छः आवश्यक की जरूरत क्या? वो भी तीर्थंकर के लिए भी छः आवश्यक की व्यवस्था समझ में नहीं आता?
उत्तर दिया कि मैं मानता हूँ कि ध्यान से कर्म निर्जरा है। तीर्थंकर तो तीनज्ञान पहले से दीक्षित होते ही मनःपर्ययज्ञान भी हो जाता है किन्तु इससे कार्य होने वाला नहीं। जैसे भोजन करते हैं - भोजन एक ही स्थान पर रह नहीं सकता, पाचन नहीं होगा। आंतों में सक्रियता जरूरी है तभी

पाचन होगा अन्यथा नहीं होगा।

उपयोग का भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतर होना अनिवार्य है चाहे वह श्रुतकेवली भी क्यों न हो। अन्तर्मुहूर्त से अधिक छद्मस्थ अवस्था में कोई भी चाहे तीर्थंकर भी क्यों न हो उपयोग को स्थिर नहीं रख सकते। यह आत्मा की एक कमजोरी है। तीर्थंकर को भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का विकल्प होता होगा। कब - किस प्रकार - किस वस्तु को लेकर होता होगा ये सब विषय अध्ययन के लिए है।

समझ में आ जायेगा कि हम कितने कमजोर हैं। मौन लेने के लिए भी कमजोरी नहीं शक्ति चाहिए। अरे! ये पुराने मित्र आ गये अब मौन तोड़ूँ नहीं तो ये समझेंगे हमें देखकर मौन ले लिया। इस प्रकार थोड़ा सा भी विकल्प होगा। "जितने बंधन होते हैं उतने ही विकल्प होता है। नियम लेते ही एक सैकेण्ड बाद तोड़ने का विकल्प आने लगता है। अन्यथा नहीं लेना - विवाह होने के उपरान्त ही स्वदारसंतोष चालु हो जाती है। [हँसकर]

दो उपयोग हैं कैसे एक साथ रह सकते हैं। कभी इधर तो कभी उधर। छोड़ने के भाव - भागने के भाव होने लगते हैं। होते हैं कि नहीं? [हाँ] सोचना अलग और अनुभव करना अलग है। रुकना कठिन है और

रोकना तो और अधिक कठिन।

रोकने पर तनाव बढ़ने लग जाता है। तनाव जानते हो आप? टेंशन। हम चाहते नहीं अतः टेंशन होता है। टेंशन ऐसा वर्तुल की तरह है कि गोल-गोल उसी परीधि में घुमता रहता है उससे ऊपर नहीं उठ पाता है। तनाव बढ़ता जाता है उसको सहन करना बहुत कठिन होता है। इन सबको अपनी साधना से कम कर सकते हो कमही नहीं खतम कर सकते हो। पुरुषार्थ जरूरी है।

महाराज हम उसे उखाड़ नहीं सकते? ऐसे व्यक्ति को चिड़चिड़ाहट होती है। जानते हो चिड़चिड़ाहट कब होती है? जब मनोनुकूल नहीं होता। आप शांत तो सामने वाला भी शान्त हो जाता है। तो सहन करना चाहिए। कर्म का उदय है ऐसा मानकर सहन करें कभी चिड़चिड़ाहट नहीं होगी। जो चिड़चिड़ाहट नहीं करेगा मानो पास (उत्तीर्ण) हो गया। उनको तो कुछ भी कहो- गुस्सा नहीं आता भीतर से आता होगा। नहीं उन्होंने समझ लिया है यदि चिड़चिड़ाहट करेंगे तो और कर्म बन्ध होगा।

ऐसा सोचकर कर्म को शान्ति से सहन करो। अकेले बैठे-बैठे भी चिड़चिड़ाहट होने लगती है। होती है कि नहीं? यदि मन के अनुरूप कार्य नहीं होता तो। हे भगवान यहाँ क्यों पटक दिया? उठा लें। करे आप फल देय अन्य तो.... । छोटा बच्चा है।

गोद में लिया पिताजी ने आज्ञा मिनिट भी नहीं कि लघुशंका कर दी- पटक देता है पर माँ जानती है संयम रखती है ये अभी बालक है करना था कर दिया।

"कर्म सिद्धान्त पर ध्यान रखने वाला चिड़चिड़ाहट से दूर रहता है।" कर्म का उदय है। कब तक? जब तक सत्ता में पड़ा है, चलता रहेगा। तीर्थंकर के भी जो कर्म बंधा था आगत कर्म उदय में आकर जा रहा है यही मोक्षमार्ग में स्थिरता का सूत्र है। वह अपना कर्तव्य कर रहा है मुझे कुछ नहीं करना है। इस प्रकार की धारणा नहीं तो सबसे ज्यादा चिड़-चिड़ाहट होने लगती है।

मोहमार्ग में भी और मोक्षमार्ग में भी दोनों में चिड़चिड़ाहट होती है। अन्तर इतना ही है कि मोहमार्ग में वह चिड़चिड़ाहट खुल जाती है जबकि मोक्षमार्ग में वह भीतर रहती है। भूख लगती है तो केवल मिठाई-मिठाई नहीं खाई जाती। पहलवान भी क्यों न हो वह भी घी-घी नहीं उसके साथ कुछ और भी आवश्यक है।

इसी प्रकार केवल ध्यान के द्वारा कर्म निर्जरा नहीं किया जा सकता। तीर्थंकर पूर्व कोटि वर्ष तक विहार करते रहते हैं। आहार आदि भी करते रहते हैं। वे किसी से बोलते नहीं किन्तु भीतर सब चलता रहता है। जैसे आप लोग तस्तरी से वाष्प को ढक देते हैं परन्तु भीतर ही

भीतर वह पक रहा होता है।

आवाज आदि से पहचान में आ जाता है। इसलिए प्रत्येक मुनिमहाराज के लिये छः आवश्यक अनिवार्य है। उनको कह दिया आपको एक स्थान पर नहीं रहना जब कि गृहस्थ से कहा तुमको एक ही स्थान पर रहना है। तुमने घर बसा लिया है। हाँ बीच-बीच में जा सकते हो। कहाँ? कुण्डलपुर-द्रोणगिरी - नैनागिरी - पपौराजी।

मुनिराज तो जब चाहे जिधर चाहे जा सकते हैं। बस रात्रि में अथवा ध्यान के समय नहीं। आपको भी यदि मोह को छोड़ दे तो कर सकते है। पहले पूछ लेना। आपने प्रतिज्ञा ली है इनको जीवन पर्यन्त हम निभायेंगे। और हमको ये निभायेंगे। आपका अनुबन्ध है। यह अनुबन्ध आपका सहर्ष धर्मध्यान पूर्वक पूर्ण हो मैं भगवान से ऐसी प्रार्थना करता हूँ।

आजकल अनुबन्ध टिकता नहीं, क्यों? थोड़ी सी कोई बात चिड़चिड़ाहट आ जाती है। बस हम स्वतंत्र है। ऐसा गृहस्थ में नहीं होता। हाँ हम पूर्ण स्वतंत्र है। आये भी बिना अनुबन्ध के - जा भी बिना अनुबन्ध के सकते हैं। आगये महाराज! अब बिना कहे जाना नहीं। हमने आपको सिद्धान्त का स्वरूप बताने का प्रयास किया। इसप्रकार

से मुनिराज भी किसी स्थान से मोह किये बिना 6 आवश्यक करते हुये आना-जाना करते हैं।

संक्षेप से ये बात कही। एक मात्र ध्यान ही नहीं 5-5 आवश्यक और भी बताये हैं। घी को रक्त आदि में परिवर्तित करने के लिए रोटी-दाल-भात आदि भी जरूरी होते हैं। मुनिराज को तो जो मिला है ले लेते हैं, परन्तु आपको यदि नमक नहीं मिले तो दिमाग में नमक घुस जाता है। आचार्यों ने कहा कोई बात नहीं खाइये पर रात में नहीं दिन में ही खाइये।

नीरस नहीं खा सकते कोई बात नहीं लेकिन शरीर का ध्यान रखकर खाइये - जीव्हा को नियन्त्रण में रखकर खाइये अन्यथा आप खाई में गिर जाओगे। फिर भोजन कम दवाई ज्यादा खाओगे और वह दवाई आपको ही खा जायेगी। इस प्रकार ध्यान के साथ-साथ आवश्यक का भी ध्यान रखें। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ।

गर्मी भी तेज है। गरिष्ठ भी है। इसे पचाना भी आवश्यक है। नहीं पसन्द तो बता दो। जो अनावश्यक है उसे मत अपनाओ। एक बात ये भी कुछ लोग कहते हैं- पंचायत कर रहे हो, तो

पंचायत हरेक व्यक्ति न करें।

पंचायत पांच के बीच ही न हो सारी जनता के लिए हो। जनता के भले के लिए हो। पंचवर्षीय योजना न बनाये तथा न ही प्रपंच करें। प्रपंच में दुनिया की बात होती है दुनिया के लिए नहीं। इसीलिये आचार्यों ने जो आवश्यक बताये वे ही करें। मुनिराज जी को भी यदि आवश्यक नहीं तो नमोऽस्तु कैसे करेंगे?

छः आवश्यक से अपने आप ही सब ठीक ठाक हो जायेगा। चाहे पंचम काल हो या चतुर्थ काल हो एक मात्र यही रास्ता है। आप लोगों के लिए भी 6 आवश्यक बताये हैं। आपके अणुव्रत होते हैं, मुनिमहाराज के महाव्रतों का पालन होता है। दुनिया की पंचायत नहीं करना ये उपदेश दे दिया, इसी से आपका जीवन सुधरेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विशेष - "क्षत्रिय ही मोक्ष पुरुषार्थ का अधिकारी है- बनिया नहीं। वह तो नाप-तौल में ही अटका रहता है और यह कुछ नहीं कुद जाता है। ध्यान की योग्यता भी उसी के पास है। जो गलती करता है क्षत्रिय उसे दण्ड भी देता है। अतः आ०श्री ने कहा - राम ने रावण को कृष्ण ने कंस को मारा नहीं दण्ड दिया है। यह उनका कर्त्तव्य है।"

26-5-18 "याद रखें संकल्प को" प्रातः9.20

हम ये नहीं जान पाते कि द्रव्य क्या है और भाव क्या है? हमारे प्रत्येक भाव प्रणाली के स्वरूप से द्रव्य का स्वरूप समझ सकते हैं किन्तु भाव के बिना द्रव्य नहीं हो सकता। भाव के अनुरूप ही द्रव्य हो ये भी नियम नहीं बना सकते। कई बार जिन शब्दो के माध्यम से बोलना चाहते हैं/भावाभिव्यक्ति करना चाहते हैं, उन भावों के अनुरूप शब्दों का उच्चारण नहीं होता है।

संभव है शरीर की प्रकृति आत्मा में अर्थात भावों में नही आ सकती। इसी से कहते है शरीर और आत्मा अलग-अलग है। द्रव्य शरीर है तो भाव आत्मा। आत्मा देखने में नही आती। लक्षण से तो पहचान सकते है। इसी पहचान से नही दिखने वाले उस आत्म तत्त्व पर विश्वास करते हैं। उसे शरीर से पृथक देखने का अभ्यास करते हैं। जब एकाग्रता हो जाती है तो महसूस करते हैं अथवा नियोग (शर्व में) से करते हैं।

हम इससे बोलते थे/देखते थे इत्यादि। अब शरीर नही है भाव तत्व विद्यमान है। आचार्य कहते है ये तो पहले भी नहीं था न ही अभी है और न ही होगा। ऐसा गाढ़ श्रद्धान बनाइये। इसकी प्रक्रिया बहुत सूक्ष्म है, हर एक इसे प्राप्त नहीं कर सकता है। दीपक जल रहा है। यह कहना आपकी गलत धारणा का प्रतीक है। दीपक

नहीं उसमें रहने वाली तेल-बाती जल रही है। — — — —
— — — — — — — — — — — — — — जब वह मंद पड़ती है तो दिपक को नहीं तेल-बाती को पुनः डालते हैं। दीपक के आधार पर तेल-बाती जल रही है, इसी प्रकार आयु कर्म है तब तक यह दीपक बोलता है/संवेदन करता है। नजर आता है आयुकर्म पूर्ण तो खेल खत्म। जब पैसे लेकर मेला जाते हैं। वहाँ से सामान आदि खरीदकर लौटते है। किसी ने पूछा - क्यों कैसा लगा मेला? बहुत अच्छा। तो वह कहता है वापस क्यों आ आये? — — — — — —
— — — — — — — — — — — — — — आपके ताली बजाने एवं हँसने से समझ में आ रहा है कि आपको बात पूरी समझ में आ रही है। मैं भी भीतर हूँ और आप भी शरीर के भीतर है फिर भी दोनों के सम्पर्क सूत्र लगे हैं। इसी को बोलते है बाती-तेल का संबंध। हम भावों को प्रेषण कर रहे हैं। अब आपमें चाहे छोटा हो या बड़ा, पढ़ा हो या अपढ़ सभी इसे समझ रहे हैं। अभिव्यक्त करो या न करो पर आंखों से सब समझ में आ रहा है ऐसा लगता है। — — — — — — — — — — — — — —
— — — — इतना ही समोशरण में भी होता है। तीर्थंकर हो या केवली भगवान वे भी आत्मा को दिखा नहीं सकते। दिखा भी पर आपके देखने में आये ये कोई नियम नहीं है। तो आपका मुख बता रहा है कि पैसा समाप्त हो गया है, मेला पूर्ण हो गया। अब पुनः कमाना होगा तभी कुछ अर्जित

होगा।

देव पर्याय को बहुत अच्छा मानते हो। ध्यान रखना वहाँ इस प्रकार तालियाँ नहीं बजती। वहाँ तो Computer से सब पहले से Feeding है। बजती रहती है। आपके पास पुरुषार्थ है - भावाभिव्यक्ति है। यह इसी पर्याय में संभव है। हीरे की भांति है यह पर्याय। हीरा तो हीरा होता है।

महाराज! आज सालगिरह है ऐसा आकर हमसे कहते हैं। बारात निकली थी वैसे बुढ़ापे में भी मेंहदी लगाकर हमारे पास आते हैं। 50 वीं सालगिरह है। आप ही बताओ ये कौनसी सालगिरह है। आदर्श विवाह वालों को तो फिर भी आशीर्वाद दें दें पर इनको क्या कहें। हमने सोचा इनको 50 वर्ष तक धर्म-ध्यान पूर्वक निभाया। माता-पिता की भावनाओं को सार्थक किया इस अपेक्षा से सराहनीय है परन्तु 50 वर्ष पूर्व जो भाव थे वो आज नहीं कर सकते हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द ने हम लोगों से कहा कि अपने वैराग्य को दृढ़ रखने के लिए अपनी दीक्षा तिथी को सदैव याद रखें। उसी प्रकार आप भी अपनी सालगिरह को याद रखो। किन्तु वह भी धर्म-ध्यान का हेतु हो। "हर कब होगा ये महत्वपूर्ण नहीं, क्यों होगा ये महत्वपूर्ण है।" भावों का यही महत्व है। इसीलिये संतों ने विवाह को मांगलिक कहा है। जब इसको

देखते हैं तो जीवन पर्यन्त निभाने के लिये कहा है।

संकल्प पर ही आधारित होता है। धार्मिक अनुष्ठान आदि करते हुये ही इस प्रकार कर सकते हैं। जीवन जोखिमदार रहता है। महाराज! हम क्या बतायें न ही रो सकते हैं और न ही हँस सकते हैं। फिर भी बाजार में आना-जाना होता है कि नहीं? तालमेल बनाकर चलते हो। कर्म तेल बाती की भांति है और भाव जलने की भांति उपादान है। भाव नहीं तो क्रिया का कोई अर्थ नहीं किन्तु क्रिया हो भाव के अनुरूप ही हो ऐसा कोई नियम नहीं है।

भावों को पकड़करके संकल्प को याद रखें। तिथी-काल आदि को भी इसीलिये याद रखना आवश्यक होता हैं। अच्छे कार्यों हेतु तो ये अनिवार्य है। ये अलग बात है कि 100 नं० नहीं उत्तीर्ण हेतु तो 33 में भी हो जाते हैं किन्तु उस ओर नहीं देखना है। कृपांक की ओर तो देखना ही नहीं है। अन्यथा दोबारा कृपा नहीं होगी। अपने पर कृपा करो तो बहुत अच्छा होगा। मेहनत करो। अपने पर कृपा तो बार-बार करना है जब तक वह तिथी पूर्ण न हो।

जैसे प्रारम्भ तिथी होती है वैसे ही अन्त तिथी भी होती है। जाने की प्रतिज्ञा और करनी होगी। क्यों कि स्वर्गों में जो गये हुये हैं वो भी आपकी पर्याय पाने के लिये तरस रहे हैं और आप

देव पर्याय हेतु तरस रहे हैं।

नरकाया को सुरपति तरसे---
सौधर्मेन्द्र भी इस पर्याय को पाना चाहता है। अभी तो हमें फिर से एक जन्म और लेना होगा। इसलिये आयु कर्म का बंध तो करना ही होगा। यदि जन्म-मरण के चक्कर से छूटना चाहते हो तो अपने एक-एक क्षण को सार्थक करना ही होगा। जो अच्छे संकल्प लेता है उन्हें बार-बार याद रखता है। वह विचार करता है कि हमने सबके सामने मन को दृढ़ करके संकल्प लिया था।

विधिवत् लिया था। यद्वा-तद्वा नहीं लिया था। ये सब उसको प्रेरित करते रहते हैं। मैंने इतना कर लिया, अभी इतना और करना बाकी है। ध्यान रखें- सबके लिये तीन ही घण्टे का पेपर होता है। सही विद्यार्थी इसी के अनुसार वर्गीकरण करता है। वह पहले ध्यान से देखता है कि कौनसा प्रश्न कितने गुण का है। इसी प्रकार से सबको जीवन मिला है, किसी को 50 वर्ष तो किसी को 90 वर्ष का।

होश-हवाश ही नहीं तो क्या होगा? कमाओ-कमाओ। यह प्रश्न ही नहीं है। ऐसे में सभी फेल हो जायेंगे। अनिवार्य है ही नहीं कि इतना कमाओ। और मनुष्य जीवन के मौलिक क्षणों को गमाओ। सुन रहे हो कि नहीं? [हाँ] इससे आपको नं०

नहीं मिलेगो।

आयु कर्म तो घट रहा है फिर कहते हैं महाराज वर्षगांठ है। गांठ से एक वर्ष कम और हो गया, बढ़ा नहीं है। नाती से भी छोटा हो रहा है। फिर भी अपने आपको बड़ा कह रहे हो। धन्य हो। कितनी आयु है- पता नहीं। जाने की तैयारी है। ब्याज के दिन बचे हैं। थोड़े बहुत रह गये हैं। "अपने लिये तो कुछ किया ही नहीं, पुरा जीवन पर में बिता दिया।" ऐसे दयनीय वचन वही कहता है जिसने जीवनको समझा नहीं।

वह कहता है अपने लिए करना चाहे दुनिया रोये या धोये। ऐसा विद्यार्थी समय नहीं देखता लिखता ही जाता है। घण्टी लगते ही छोड़ देता है। मांगता नहीं कहता है नं. तो देने ही होंगे। इसी तरह से मनुष्य जीवन भावों पर आधारित है, भावों को जितना सुदृढ़ उतने ही नम्बर मिलते है। नम्बर तो देने ही होंगे, गड़बड़ लगता है तो पुनर्मुल्यांकन कराकर सब ठीक ठाक कर देता है।

ये आत्म विश्वास की बात है। हमें मालुम है प्रश्न का उत्तर कैसे लिखा है? इतना होता है तभी मनुष्य जीवन में मुक्ति मिलती है। समय आपका हो गया है। जीवन का भी समय आ रहा है- बांधना चाहो तो बांध लो। मनुष्य जीवन को अनुमानपूर्वक सम्पन्न करता है जब कि भविष्य वर्तमान पर आधारित रहता है इसलिए वर्तमान को सार्थक करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

27-5-18 "कैसे लायें व्रतों में धार" प्रातः 9.20

लगभग एक सप्ताह काल व्यतीत हो गया है, हो रहा है, आगे भी होगा। हो रहा है। हुआ उसके लिए तालियाँ नहीं बजी होगा उसके लिये बजायी। इसलिये कि संसारी प्राणी को भविष्य की बड़ी चिंता है। एक उदाहरण के माध्यम से संक्षेप में किन्तु समझ में आ जाये बात को रखता हूँ। संवेदित हो तो इससे सीखो एवं जहाँ कहीं भी प्रयोग कर सकते हैं।

कोई भी शस्त्र को धारदार बनाना होता है तो उसको सान पर चढ़ाना होता है। सान पर चढ़ाकर धार लाने वाला जागरूकता के साथ धार लाता है। वह कहता है आपका काम नहीं, आप शस्त्र मेरे हाथ में दे दो। हाँ! आपका सहयोग अपेक्षित है। सामने बैठ जाओ जैसे आप लोग बैठे हो। अब सान को चालु करता है और रस्सी के दोनों किनारे (छुड़डे) उसके हाथ में दे देता है और जैसे दही का मंथन करते हैं, वैसे प्रारम्भ कर देता है।

वह सान घुमने लगी, थोड़ी ही देर में वह औजार को हाथ में लेकर दबाने लग जाता है। यद्वा-तद्वा नहीं दबाता। जब दबाना प्रारम्भ करता है तो सामने वाले के पसीना आने लगता है। समझ में आ रहा है। (हाँ) दबायेंगे तभी तो तीखापन आयेगा। इर्द-गिर्द जो अनावश्यक मोटापन है वह बाहर निकल रहा है। आधा घंटा लगा वह व्यक्ति पसीना-पसीना हो गया। बीच-

बीच में जब दबाता था तो शस्त्र में से चमक (अंगार जैसी) और धुआँ भी निकलता। ये ही धार की पहचान है।

लाल-लाल हो जाता है वह शस्त्र। सामान्य से चला रहा है तब ये चमक नहीं जब दबाता है तभी बिजली जैसी निकलती है। वह कहता है रोको नहीं। मैं लगातार नहीं दबा रहा बीच-बीच में दबाता हूं। ताकि औजार में धार आ जाये। धार चाहते है तो इतना परिश्रम करना होगा। जल्दी दबाओ ताकि जल्दी धार आ जाये- ऐसा भी नहीं कर सकते। ये खेल नहीं है। रख को देखना पड़ता है। वह संवेदनशील है, अंगुलियाँ भी रहती है।

बीच-बीच में सावधानी से दबाता है यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। महाराज! आपने इस सभा को यह उदाहरण देकर क्या कहना चाहते हैं। उदाहरण वह होता है जहाँ हम जाना चाहते है वहाँ आपके ध्यान को जाना ही पड़ेगा। यह उदाहरण इसलिए दिया कि "व्रत आदि का पालन करते है किन्तु जब निर्विकल्प होता है तब धार आती है।" यह हमेशा नहीं आती। इसी को परम सामायिक, शुद्धोपयोग, निर्विकल्पपना, यथाख्यात आदि नाम से कहते है।

जिसके पास व्रत/संयम होता है उसी को धार आती है। असंयम होकर करोगे तो न ही सान घूमेगी, न ही शस्त्र पर धार आ सकती है। जब आप सब्जी

बंधारते हैं।

बंधारना यह बुन्देलखण्डी शब्द है। [मारवाड़ी] काटा-पीटी नहीं बंधारना अथवा सुधारना बोलते हैं। तो रसोई वालो! सुनो आप जितना निर्विकल्प होते चले जायेंगे, राग-द्वेष को हटाते चले जायेंगे तभी यह कार्य सिद्ध होगा। व्रत लेना आवश्यक है। केवल हो-हल्ला से कुछ नहीं होगा। निर्विकल्प हेतु व्रत (संयम लेना जरूरी है। अच्छे-अच्छे व्यक्ति भी उस शस्त्र को पकड़ने से डरते हैं।

असावधानी हुयी कि अंगुलियाँ गई, हाथ भी कट सकता है। "मन वचन काय को अन्यत्र से हटाकर एक स्थान पर लाने का नाम व्रत-संयम है।" यद्वा-तद्वा करोगे तो अनर्थदण्ड का दोष लगेगा। जिसका कोई अर्थ अथवा प्रयोजन नहीं वह अनर्थ दण्ड कहलाता है। त. सू. में कन्दर्प-कौत्कुच्य आदि पांच कारण बताये जिससे वह अनर्थदण्ड बन जाता है। दण्ड इसलिये कहा क्यों कि ये आत्मा को दण्डित करते हैं, उससे छुटना व्रत कहलाता है।

श्रावक व्रत लेता है, समय मिलता है तो कुछ बातें आ जाती हैं पर मुख्य कार्य नहीं छोड़ता है। आप लोगों की अंगुली कट न जाये, इसलिये आपसे यह कहा। कटने पर फिर आहारादि भी नहीं दे पाओगे। व्रतों के प्रति प्रमाद-रहित एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहना जरूरी है। विकथा- आलोचना ये सब दुर्ध्यान हैं, अतः

इनसे बचना अनिवार्य है। — — — — — — — —

— — — — — उनकी दुकान ज्यादा - हमारी दुकान तो चलती है परन्तु उनसे भी ज्यादा चले ऐसा भाव प्रभु के सामने अर्घ्य चढ़ाते समय भी कर लेता है। यह शुद्ध रौद्रध्यान है। "पर के हित में सोचना धर्मध्यान है।" इसे हमेशा याद रखें। लिख लो तो अच्छा है। दुकान पर पहले लिखते हो कि नहीं? हम तो फिर भी पहले माल देते हैं फिर बाद में पैसे लेते हैं। आप माल भी नहीं देते और पैसे भी लिख देते हो ताकि न्यायालय में जा सको। — — —

— — — — — — — इसी लिये ध्यानपूर्वक काम करना है। तभी असंख्यात गुणी निर्जरा होगी। कौनसे कर्मो की निर्जरा होगी - पुण्य कर्मों की निर्जरा नहीं होती। आप लोगों को स्वाध्याय में समझाते हैं - पाप की निर्जरा तो सभी करते हैं पुण्य की निर्जरा करो तो जानें। और आपसे हओ कहलवाते हैं। "पुण्य हो तो निर्जरा करो।" पहले पाप कर्मों की ही निर्जरा होती है। — — — — — —

— — — — — — पूरी की पूरी कड़वी चीज खा रखी है तो डकार मीठी आयेगी क्या? खट्टी डकार आने पर मुखाकृति कैसी होती है। पुण्य की निर्जरा नहीं करना है। सब को कह देना - जो नहीं आये हैं उनको। टीकमगढ़ में चार हजार घर हैं। व्रतों से पाप की ही निर्जरा होती है, पुण्य की निर्जरा नहीं। आपसे पूछता हूँ पहले घातिया कर्म नष्ट होते हैं या अघातिया? चारों घातिया कर्म पाप ही हैं। यहाँ

शिविर लगता है।

तो कोई भी पुण्य कर्म का बंध करके तो दिखायें। पुण्य कर्म की निर्जरा कहीं भी नहीं आया गोम्मटसार आदि ग्रन्थों में भी नहीं। आप यदि पढ़ें हों तो हमें बता देना। ग्रन्थों में ऐसा कहीं नहीं आया है। यदि इस प्रकार के ग्रन्थ हों तो उन्हें कभी नहीं पढ़ना चाहिये। पहले पाप कर्म की ही निर्जरा होती है बाद में पुण्य का प्रसंग आता है। वर्तमान में तो पाप की निर्जरा एवं पुण्य का बंध होता ही जायेगा। 10 वें गुणस्थान से ऊपर केवल साता का ही बंध होगा।

यूं कहना चाहिये अनुभाग की अपेक्षा जैसे-जैसे पाप कर्म की निर्जरा वैसे-वैसे चतुःस्थानीय पुण्य का बंध होता चला जाता है। जो सही नहीं कह रहा तो उसकी बात मात्र बातें रह जाती हैं। ऐसी बातों में नहीं आओ। आप अपनी दुकान पर सामने वाले का भाव नहीं रखते जो बाजार का भाव है वह रखते हैं। इसलिए सदैव व्रत-अनुष्ठान-पूजा-जाप करते रहें। दुकान पे नहीं मन्दिर में बैठो।

गर्मी हो या सर्दी पापकर्मों की निर्जरा सदैव बढ़ाते जायें। तो पुण्य अपने आप ही बढ़ेगा। उसकी निर्जरा कब होगी? ऐसी शंका न करें। अपथ्य से बचने के लिए दवाई खाई जाती है अब दवाई के लिए कुछ खाने की जरूरत नहीं होती। हमारे सान के उदाहरण

को याद रखेंगे।

हमेशा धार नहीं, जिस समय दबाया जाता है उसी समय धार होती है। गर्मी हो या सर्दी जिस प्रकार आप ग्राहक को पटा लेते हैं, उसी प्रकार यहाँ हैं। स्वाध्याय करते-करते वर्षों हो गये पर ये ध्यान रखना एक भी पुण्य कर्म की निर्जरा नहीं होती। 148 कर्म प्रकृतियों में से कौनसे पुण्य कर्म की निर्जरा हमें बता देना। हमारे पास कोई नहीं आता, शायद डरता हो। आपके पास आ सकता है। निकालकर देख लेना गोम्मटसार आदि ग्रन्थों में।

आप सभी का कर्त्तव्य है कि इस प्रकार का स्वाध्याय करना चाहिये, जिससे सामने वाला गाफिल न हो। जो हजारों को गाफिल कर दें, मैं उसे प्रवचन नहीं कहता वह तो महान् अनर्थ दण्ड है। आप बचेंगे नहीं तो सामने वाले का नुकसान हो या न हो आपका (बोलने वाले का) पतन पक्का है। विपरित तत्त्व से कभी निर्जरा नहीं होती। जो पाप के साथ-साथ पुण्य की भी निर्जरा बताता है तो मालुम होता है कि अभी उसका ज्ञान ही अधुरा है। इतना ही पर्याप्त है, यह छोटा सा वक्तव्य आपके सामने रखा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

- प्रथमानुयोग के कथानकों से मन की विशुद्धि स्वयमेव ही बढ़ती जाती है। ऐसा लगता है कि कथानक के बीच में ही वैराग्य हो जायेगा। [आ.श्री द्वारा उत्तरपुराण की कक्षा में]

28-5-18 "आओ समझें काल को" प्रातः 9.20

वैसे ही समय कम पड़ जाता है, उसमें से भी आप और लो लेते हैं, फिर भी हम उसी में से निकालकर [बचाकर] काम कर लेते हैं। कोई भी कार्य होता है तो अनेक कारण अपेक्षित होते हैं। अनेक का मतलब जिनसे होना हो वह एवं जिससे होना हो वह भी, ये सब मिलकर अनेक कारण हो जाते हैं। बीज बोया है और वह अंकुरित होना है। इसके लिए खाद-पानी डाल दिया। किसान सही समय पर यह कार्य करता है।

बात किसान की हो रही है, और तालियाँ यहाँ बज गयी। आगे भी अभी कह रहे हैं। उसका एक लड़का था। वह ज्यादा पढ़ा-लिखा था अतः उसने गणित लगाया। जो बीज अंकुरित होने वाला था उसे देखूं। वह गया खोदा-देखा। अंकुरित नहीं हुआ है। इस तरह चार-पांच बार देखा पर अंकुरित नहीं हुआ। पिताजी को बताया। पिताजी ने कहा चलो देखते हैं वे अंकुरित क्यों नहीं हो रहे हैं। बेटा - वो तो मैं प्रतिदिन देख कर के आ रहा हूं। (हँसी)

रोज खोद-खोदकर देखा अभी एक भी अंकुरित नहीं हुआ। पिताजी ने सिर पर हाथ रख लिया। बोले हमने पढ़ा-लिखा बना दिया किन्तु हिसाब-किताब लगाने से पौधा अंकुरित नहीं होता है। उसके लिए जो समय अपेक्षित है वह देना ही होगा।

गणित नहीं चलता। ——— ——— ——— ———

——— ——— ——— 8 दिन में इतना तो एक दिन में इतना तो हो ही जायेगा। समष्टि से कार्य होगा। जल्दी न करीयो अन्यथा "न भूतो न भविष्यति"। जो बीच में ताली बजायी थी, ये उसी का उत्तर है। [छओ] सभी भूल गये मात्र एक ने ही [छओ] याद रखा। क्या हुआ? काल तो मिल गया किन्तु आठ दिन जब तक पूर्ण न हो तब तक खोलकर देखो नहीं। ——— ———

——— ——— ——— तब जाकर कार्य होता है। किन्तु ध्यान रखो पानी-हवा-खाद न देओ तो काल के माध्यम से भी वह कार्य नहीं होगा। सुन रहे हो? कुछ लोग रट लगाते हैं कि सबरी की तरह हमारा भी काल आने वाला है। उसके जीवन में कभी कार्य निष्पादित ही नहीं होगा। अकेले काल के द्वारा भी कार्य नहीं और केवल खाद-पानी-हवा-बीज से भी कार्य नहीं होता सबकी समष्टि चाहिए। ——— ——— ———

——— ——— ——— 8 दिन तो लग गये पर कार्य नहीं हुआ। इसलिये लगातार 8 दिन चाहिये। इन दिनों में उसे थोड़ा भी हवा-पानी नहीं लगना चाहिये। इसीलिये किसान को देखा होगा वह बीज बोने के उपरान्त एक पटीया लेता है बैलों के द्वारा उसे खींचता है। पटीया पर स्वयं खड़ा हो जाता है ताकि बीज पर मिट्टी आ जाती है, उसे धूप-पक्षी आदि से भी बचाता है। आंखों का ऑपरेशन

होने के बाद कैसे होता है?

देख सकता है पर डॉ० साहब कहते है अभी 8 दिन आंखों पर ये हरी पट्टी बांधनी है। बीच-बीच में देखेंगे तो गड़बड़ी आ सकती है। जैसे लगातार 8 दिन पट्टी हटाते नहीं वैसे ही इसमें होता है। प्रत्येक कार्य के लिए केवल काल ही नहीं - उद्यम [क्षम] तथा अन्य साधनों की भी जरूरत होती है। आप लोग केवल घड़ी ही देखते रहते हैं।

तभी तो कह रहे थे महाराज 3 वर्ष बाद आये हो। कम भी होंगे तो हम पूर्ण कर देंगे। वो कैसे? हमारा गणित भी देखो। ज्योतिष अनुसार प्रति 3 वर्ष में एक माह अधिमास होता है। एक-एक अधिमास को मिला दो तो पूर्ण हो जायेगा। आप भी द्विपायन मुनि की तरह भूल गये हो। जल्दी नहीं किया करो। हमने सुना है - पता नहीं है अधिमास की तरह क्षयमास भी होता है।

तिथी का क्षय तो सुना है/पढ़ा है पर मास का क्षय नहीं देखा। लेकिन वार कभी भी न ही बढ़ा है तथा न ही घटा है। वार घट जायेगा तो आपके बाजार का ही एक दिन घट जायेगा। तिथी घट-बढ़ सकती है। फिर ये हुण्डावसर्पिणी काल है। न होने योग्य भी हो जाता है वैसे ही क्षयमास भी होता होगा। महत्त्वपूर्ण बिन्दु ये है कि
८ काल के बिना कार्य नहीं होता किन्तु काल के द्वारा भी

कार्य नहीं होता।

उसके लिए साधकतम विभक्ति का प्रयोग नहीं किया। उपादान कारण भी ध्यान में रखो। साथ ही खाद पानी आदि भी चाहिए। योग्यता का होना पहले आवश्यक है। इन सबके साथ काल भी आपेक्षित है। काल का अनुग्रह बताते हुये आचार्य उमास्वामी महाराज ने त॰सू॰ में कहा – वर्तनापरत्वापरत्वे ...... । आपके लिए सारी की सारी चीजें परिवर्तित होकर चलती जाती है। अब कार्य करते जाओ और काल की ओर मत देखो।

आप तो बस हो गयी सामायिक घड़ी पर नजर रहती है। ऐसा भी कर सकते हो एक माला १२ मिनिट में अतः ५ माला करेंगे तब पूरी सामायिक होगी। इसमें काल का अभाव नहीं कह रहे हैं, क्योंकि प्रत्येक कार्य में काल तो आपेक्षित है ही। अध्यात्म ग्रन्थों में (समयसार, प्रवचनसार – पंचास्तिकाय आदि) आचार्य कुन्दकुन्द की टिकाओं में कई जगह "कालद्रव्य हेय" कहा। आत्मद्रव्य से हटकर अन्य परद्रव्य सविकल्प ही हैं, वे निर्विकल्पता से दूर ले जायेंगे। इसलिये काल के द्वारा न कहकर काल में अपना कार्य करना चाहिए।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

पपौरा जी सिद्धक्षेत्र

23-5-18 "और संघ को गुरुकुल बना ही दिया" प्रातः 8.50

आज का यह मंगल अवसर, गुरुओं की कृपा जिसे बोलना चाहिये उसी से मिला है। गुरुजी ने अन्त समय में सल्लेखना के समय, प्रतिज्ञा लेने से पूर्व हमने कहा - आगे क्या करना है? उन्होंने कहा - करना कुछ नहीं, जिसका पुण्य तेज हो उसे आशीर्वाद देना, उसे उत्साहित करना। जहाँ की भावना बलवती हो, वहाँ जाकर कार्य करना। जैसे समुद्र से मेघ उठते अवश्य हैं पर कहाँ पर बरसना है, वहीं जाकर बरसते हैं।

आप देखते रहो कि कहाँ बरसेंगे। मोर भी गर्जना सुनते रहते हैं कि अब बरसने वाले हैं। आज का यह मांगलिक कार्य सम्पन्न हुआ। आप लोगों की भावना / रुचि को देखकर लगता है - जिसमें हम लोगों को आये मात्र एक सप्ताह ही हुआ है पर आप तो सम्पूर्ण करने को कटिबद्ध हो गये हैं। वैसे छोटा सा स्थान लगता है परन्तु छोटा कितना भी हो गहरा कितना है? उसी के आधार पर माप निकाला जाता है।

"भावों की गहराई प्रथम आवश्यक होती है।" यह पपौरा जी क्षेत्र है। वर्षों पूर्व यहाँ पर चातुर्मास हुआ था, आज उसका स्मरण ताजा हो रहा है। और भी बहुत स्थानों से मांग थी। सब स्थानों की मांग को पूर्ण तो नहीं कर सकते लेकिन पूर्ण हो ऐसी भावना है - उनको भी आशीर्वाद है। ऐसा

सोच तो सकते ही हैं।

इसी तिथी - इसी वार और इसी शुभ समय में, इसी तरह की सभा के साथ इन्दौर में भी आर्यिका के सान्निध्य में इसी तरह से शिलान्यास का कार्यक्रम होने जा रहा है। वे लोग यहाँ की याद; यहाँ के लोग वहाँ की याद कर रहे हैं और भगवान जो सब कुछ देख रहे हैं, वे सबको इनका कार्य आनंद से सम्पन्न हो, ऐसा आशीर्वाद दे रहे हैं।

गुरुजी ने कहा था - संघ को गुरुकुल बनाना है। ये बुन्देलखण्ड है जहाँ से द्रव्य भी मिलता है और भाव भी मिलता है। दोनों से [द्रव्य एवं भावों] से यह बुन्देलखण्ड सम्पन्न है। गुरुजी का यह वरदान मिला है, उसी का यह परिणाम है। जिन्होंने वर्षों तक कई संघों में अध्ययन-अध्यापन कराया है। जिनपर ऐसे निर्दोष गुरु की कृपा होती है उन्हीं के लिए यह बरसता है। मांगलिक कार्य तभी सम्पन्न हो पाते हैं। चातक की तरह देखते रहते हैं।

कब यह धरती खरीदी पता नहीं, वर्षों से यह प्रतिक्षारत थी। आप लोगों ने अपने भावों के साथ जो कुछ था उसे अर्पित कर दिया। एक साथ जैसे मानो बादलों ने वर्षा दिया हो। आज यह [illegible] एवं विद्यालय का प्रारम्भिक कार्य सम्पन्न होने जा रहा है। 3-114

का दिन भी बहुत मांगलिक है।

पूर्णातिथी पूर्णिमा का दिन है। रविवार है। ऐसी तिथी की अतिथीयों को भी झलक होती है। 5-6 महाराज जो पीछे रह गये थे वे भी आ गये। यदि हम भी उनके साथ रूक जाते तो यह कार्य नहीं हो पाता। अब वे भी आकर इस कार्यक्रम में सम्मलित हो गये। भावों में कभी भी दरिद्रता नहीं लाना चाहिए। द्रव्य की दरिद्रता कभी भी दरिद्रता नहीं मानी जाती।

उस व्यक्ति के भावों को पहचाने। भावों के द्वारा ही एक बुढ़िया की कुटिया गजब कर गयी। बड़े-बड़े सेठ साहूकार वह कार्य नहीं कर पाये। उतै ही बैठ जाओ। इसलिए बुन्देलखण्ड को देखते ही लगता है यहाँ के लोग किस प्रकार द्रव्य एवं भावों से सम्मलित है। इसलिए इतै आ जाओ। इतै का नजारा देख लो। यहाँ पर बड़े बाबा है। एक से एक क्षेत्र है। पपौरा जैसे पास-पास में अनेक क्षेत्र है। प्रत्येक व्यक्ति यात्रा करके/भक्ति करके अपने कर्त्तव्य में जुड़ जाता है।

यहाँ के लोगों में उदारता के साथ जो धनराशि दी है वह सम्पूर्ण भारत वर्ष के लिए गौरव का विषय है। बड़े बाबा का काम था तब लोगों ने सोचा कैसे होगा? इतना बड़ा कभी अनुमान लगाया जा सकता है। जैन समाज कितना जाग्रत

है। एक-एक कर जोड़ता है और जरूरत आने पर एक साथ बरसा देता है।

करोड़ो रुपये आने लगे। कमेटी वाले थक जायें किन्तु जनता कभी भी यहाँ की थकी नहीं है। इसी प्रकार से यहाँ पर किया गया। स्थानीय कमेटी ने तत्परता से कार्य किया। आज का सिलसिला नहीं यह वर्षों से चला आ रहा है उसी का परिणाम है। आज जो शिलान्यास हुआ, उसी तरह से इसके माध्यम से युग के संस्कारों को हम आगे बढ़ाते चले जायेंगे।

इस कार्य को देखकर लगता है कि जैन समाज का सहयोग मिले या न मिले क्यों कि सहयोग बहुत दूर से मिल रहा है। जो स्वर्ग में गये वो वहाँ पर बैठे नहीं-वहीं से काम कर रहे हैं। ऊपर से वर्षा करते रहते हैं। देवावि-तस्स पणमंति जस्स धम्मे सया मणो ---। देव लोग भी ऐसे लोगों को सहलाते रहते हैं जिनका मन परोपकार/दया धर्म में लगा है। उन्हें उत्साहित कर अहिंसा धर्म की प्रभावना करते रहते हैं।

तो एक हफ्ते के भीतर ही यह कार्य हो गया। यहाँ आसपास छोटे-छोटे गाँव हैं, वे सब नगर से जुड़े हैं। नगर में 4-5 हजार घर हैं। दक्षिण में 3-4 हजार घर मामूली बात है। वहाँ भी किसान एवं व्यापारी वर्ग है। यहां के लोगों ने बेड़ा उठाया है, वहाँ भी काफी काम हो रहा है। इन दोनों शिलान्यास में उत्साह के साथ आप

लोग आगे आये। — — —

— — — और भी आगे आते रहें। अभी तो मंगलाचरण हुआ है। कलशी तो पूरी भरी ही है, अंगुली से एक-आध बिंदु भर मारा है। भीतर कितना है पता नहीं। भावों से ही वह बाहर आयेगा। प्रतिभा-स्थली की लड़कियाँ भी उपस्थित हैं। विशेषकर पूर्व-पीठिका का कार्य है। वे ही संभालने वाली हैं। समय पर वस्त्रों का परिवर्तन भी होगा। अभी तो इन्दौर में थी, वहीं पर जो अध्ययन / गतिविधियाँ आदि सीखना था वह सब पूर्ण किया। — — —

— — — एक-आध महिने में उन सबसे निवृत्त हो जायेगी। और इस मंगलाचरण को आगे बढ़ायेगी। ऐसा संकेत मिला है। इन्दौर में भी शिलान्यास उसमें भी पूर्व-पीठिका का ही कार्य है। वह भी पूर्ण रूप से तैयार है, उन्हीं में से यहाँ भी आयी हैं। शिक्षिकाओं के साथ छात्राओं की भर्ती भी हो रही है। लगभग १०८ से अधिक आवेदन आ गये। ५४ की भर्ती भी अच्छा ५ और ४ = ९ अखण्ड संख्या के साथ पहली किश्त है। — — —

— — — मुझे जहाँ तक स्मरण है, पहली बार जबलपुर में ४० छात्राओं के साथ शुरुआत हुयी थी। यहाँ तो १०० से पार हो गयी। इन लोगों को छात्रायें कौन देगा? ऐसा भी प्रश्न उठा था। बुन्देलखण्ड तो है ही देगा। बुन्देलखण्ड में निमन्त्रण आवश्यक नहीं। बुलौवा-

चलौवा नहीं।

अपना रिश्ता निकाल ही लेता है। अगर नहीं होता है तो नया रिश्ता बना देता है। यह प्रसिद्धि है। उसी का उपयोग हम भी कर लेते हैं। दुकान कहाँ खोलना यह सोचना पड़ता है। अन्यत्र उधार की बात यहाँ तो नकद-नकद प्राप्त होता है। पूर्व पीठिका आ गयी। आपने जो एकत्रित किया है उसे (भावों को) पुरा का पुरा छात्राओं में कुडेलने (उडेलने) के लिए तैयार रहें। उन्हें अपनी क्षमता से तैयार करेंगे।

समय हो रहा है। अभी आगे का शेष कार्यक्रम रह गया है। ये सब गुरुदेव की कृपा से हो रहा हैं, हम तो आपकी ही तरह लाभ ले रहे हैं। वे गंगा का काम कर रहे हैं और हम उससे नहर का काम करने का प्रयास कर रहे हैं। आप सभी तो खुश हो ही रहे हैं, हमें कितनी खुशी हो रही होगी, आप सब लोग समझते ही होंगे। हम कभी फल की इच्छा नहीं करते परन्तु फिर भी वो तो मिलेगा ही। निदान कभी भी नहीं करना है। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आपका उत्साह - आपकी भावना - आपकी प्रवृत्ति दिन दुनी और रात चौगुनी इसी तरह बढ़ती रहें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

Note → अकाल में मरण होता है, ऐसा नहीं, अकाल में जन्म मात्र होता है। जैसे - श्री कृष्ण का सात माह में ही जन्म, जब की वे महापुरुष थे। [उत्तरपुराण की कथा में]

30-5-18 आओ बना लें ज्ञान को बर्फ जैसा सघन प्रात: 9.20

अब-जब अपने अस्तित्व को हम अस्वीकार करेंगे तब-तब धर्म का अन्त होता है। अपना अस्तित्व नहीं है, ऐसा होता नहीं। शास्त्रों का उल्लेख है कि धीरे-धीरे प्रलय की ओर ही जा रहे हैं। अग्नि क्या वस्तु है? कोई भी पदार्थ अग्नि के सामने बच नहीं पायेगा। सबको जला देती है। चाहे लकड़ी हो-लोहा हो या पत्थर हो या हीरा भी क्यों नहीं उसे भी जला देती है। सोने को भी जला देती। सबको भस्म बना देती है।

इसका नाम अग्नि है किन्तु एक को जला नहीं पाती। वह कौन है? [आत्मा] आत्मा तो कहीं दिखती नहीं। दूसरा पदार्थ बतायें? उसके द्वारा जिसका जल गरम नहीं होता उसका नाम बर्फ है। बर्फ को आग पर भी रखो तो भी गरम नहीं होता। पानी हो जाना अलग वस्तु है क्यों कि अग्नि के बिना भी बर्फ पानी हो जाती है। बर्फ को आज तक किसी ने गरम नहीं किया और एक आप हैं जो बर्फ की सिल्ली पर बैठने के उपरान्त भी गरम हो जाते हैं।

क्यों, ऐसा ही है न? [हँसी] इसके बारे में जब सोचा जाता है तो स्वभाव क्या है पता चल जाता है। बर्फ जल का ही परिणमन है किन्तु जल को गरम किया जा सकता है, बर्फ को नहीं क्यों कि उसका घनत्व इतना अधिक है कि अग्नि भी हाथ जोड़कर

रवड़ी हो जाती है।

वह कहती है- हमारे बस की बात नहीं है। दुनिया के सारे के सारे लोग इन पदार्थों से ज्ञान प्राप्त करने में लगे हुये हैं किन्तु जिनका ज्ञान वितराग विज्ञान को प्राप्त करने में लग गया उन्हें अब कोई भी पिघला नहीं सकता। यह ध्रुव सत्य है, इसे स्वीकार करना ही होगा। जो पंचेन्द्रिय के विषयों से प्रभावित नहीं उसे दुनिया का कोई भी पदार्थ रागी बना नहीं सकता।

प्रत्येक पदार्थ स्वभाव एवं विभाव दोनों रूप परिणमन कर सकता है। कोई भी पदार्थ जब स्वभाव निष्ठ हो जाता है तो दूसरे का अब उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ऐसा आगम का उल्लेख है। आयु कर्म कभी मिटता नहीं, स्वभाव में रहता है। आयु कर्म को भोगना ही पड़ता है। प्रमाद की भूमिका से ऊपर अप्रमत अवस्था में आयु कर्म की उदीरणा नहीं होती है। इस अवस्था में उपसर्ग नहीं होता।

उपसर्ग जब भी होता है, प्रमाद में ही होता है। आप इसे अच्छे से समझ लें 7वें गुणस्थान से आयुकर्म की उदीरणा रुक जाती है। ये सिद्धान्त का पक्ष है। ये भावों का खेल है। अप्रमत अवस्था वाला कभी भी राग-द्वेष नहीं करेगा। बंध होना अलग वस्तु है और राग-द्वेष होना अलग वस्तु है। उदीरणा नहीं है। उदय तो चलता रहता है किन्तु उदीरणा नहीं होगी। जब

रूप हो जाना उदीरणा है।

उदय में बर्फ की भाँति बना रहेगा। धीरे-धीरे कमी तो हो रही है, किन्तु वह समाप्त नहीं हो सकता। इस प्रकार आचार्यों ने ऐसे सिद्धान्त बनाये, जिनपर दृष्टिपात करने से साहस बढ़ जाता है। भय कर्म की उदीरणा भी रुक जाती है। उसके पास इतना साहस आ जाता है तथा उसकी धारणा पक्की हो जाती है कि आत्मा कभी मरती नहीं। अप्रमत्त अवस्था में प्रकारान्तर से भी आयुकर्म की उदीरणा नहीं।

प्रमाद की भूमिका तक ही यह सब कार्यक्रम चलता रहता है। असाता कर्म की उदीरणा भी यहीं तक, ऊपर तो साता का ही बंध होगा। प्रमाद रहित अवस्था में आयु कर्म का बंध नहीं-निष्ठापक हो सकता है अर्थात् शुरुआत नहीं कर सकता पहले से हो गया है उसे पूर्ण कर सकता है। परिणामों पर जब ध्यान जाता है तो पिघलाने का साधन ही नहीं मिलता। शास्त्र स्वाध्याय करना चाहिए परन्तु प्रमाद की भूमिका को भी देखने का प्रयास करें।

प्रमाद करेंगे तो इन सबको प्राप्त नहीं कर पायेंगे। बैठे-बैठे ही ध्यान उस ओर चला जाता है फिर कोन आ गया तो कहना क्या? मुनिम जी क्या हुआ? बोलते क्यों नहीं, बताओ ना? सुनने में तो यूं आया था, बम्बई में भाव बढ़ गया। मुनिम जी कहते हैं-

भाव बढ़ा नहीं - नीचे चला गया।
Low Blood Pressure
हो गया। क्या बतायें, बताने की बात ही नहीं रही।
साहस ही नहीं हो पा रहा है। सब कुछ उलट गया
है। परिणामों में कितनी शांति होती है, उल्लास ही
नहीं रहा। शरीर है तो नोकर्म है। आत्मा के भाव अलग
होते हैं। खून का संचार तो है किन्तु सेठ जी के भावों
में अन्तर क्यों आ गया।
भाव बढ़ जाता है तो उल्लास
आ जाता है। अब तो एक सिद्धचक्र विधान और
रचवाना है। इसबार द्रव्य भी अच्छी हो, चाहे
जितना भी खर्च आवे। 10-20 लाख कमायें एक-
आध लाख खर्च किये रहते मैं मक्खी भी नहीं उड़
पाती बाकी सब बैंक में सुरक्षित हो गये। बैंक में
सुरक्षित का मतलब जानते हो? (हँसी) आप लोग सब
हँसी रहते हो कभी नाना को भी याद कर लिया करो।
इहलोक एवं परलोक भय होता है।
भरत चक्रवर्ती से पूछ लेना। बड़े
लोगों का भय भी बड़ा होता है। मुख से "तथास्तु" कहते
हुये "व्यथास्तु" भी रह सकते हैं। क्यों ठीक कह रहे हैं?
अब ठीक ही है। भावों से सब पता चल जाता है महाराज
आपका आशीर्वाद थोड़ा कमजोर रह गया हमें बलजोर
वाला आशीर्वाद दे दें। सब ठीक हो जायेगा। ये बताओ -

आपके भावों में अन्तर क्यों आ गया। "आत्मा जब शरीर से पृथक् है तो फिर शरीर का ये रंग-रोगन क्यों?" भावों पर आधारित है इसलिये जो कहा उसे प्रयोग करें-प्रमाद न करें। डरना नहीं और दूसरों को डराना भी नहीं। जो व्यक्ति डराता है, वह व्यक्ति स्वयं डरपोक होता है। सर्प को डराना है- मैं बुद्धा हूं लकड़ी लेकर क्यों जाते हो? हे सर्प! देख मेरी ओर मत आना नहीं तो....। वो यदि जरा सा फुस कर दे तो लकड़ी छोड़कर भाग जाता है।

इसी तरह आकस्मिक भय भी है। भय को छोड़ो- अभय दो। भगवान अभयदान करते हैं। वे स्वयं डरते नहीं और न ही किसी को डराते हैं। आप सदैव डराने में ही लगे रहते हैं। संसारी प्राणी डरता-डराता है। मरता-मरवाता है। मरवाना भी नहीं। बात एक ही है। भीतर कषाय चल रही है। मरने-मारने को तैयार हो जाता है। इसी का नाम असंयम है।

संयमी कभी किसी को मारना नहीं चाहता, मरना भी नहीं चाहेगा। संयम ग्रहण से मरने-मारने के भाव ही समाप्त हो जाते हैं। इसी को अभयदान कहते हैं। आप अभयदान तो संयम के भाव कर सकते हैं। वर्तमान में प्रयोग करना चाहिए। ग्रन्थों के माध्यम से पढ़ने पर एवं गुरुओं से सुनने पर जीव मात्र को बचाने के भाव हो सकते हैं। शरीर बिल्कुल दुबला-पतला

भी क्यों न हो फिर भी वह पालन कर सकता है।

मरणासन्न है। क्षीणकाया वाला है वह भी भेदविज्ञान से शरीर तो जाना ही है। हमेशा-हमेशा के लिए छूट जाये अतः किसी भी जीव को मारना नहीं और मरने का भाव भी नहीं करना। वह अपने स्वभाव के बारे में विश्वास करता है। शरीर के लिए दुख अथवा शोक नहीं करता। दुनिया में कुछ भी घटित होता हो, विवेकी उन सबसे अप्रभावित रहता है।

स्वभाव निष्ठ रहने में ही यह सम्भव है। जल तरल है - बर्फ बनने पर सघन हो जाता है। जल से पेड़-पौधों का भी सिंचन किया जाता है और बर्फ की छोटी सी डली भी किसी को चोट पहुँचा सकती है। उससे चोट न पहुँचे ऐसे भावों का नाम ही संयम है। ऐसे ही भाव सबके हो इसी भाव से -

अहिंसा परमो धर्मकी जय हो

विशेष - ० व्यंग्यात्मक शब्दों का प्रयोग न करें, इससे स्थितिकरण कर सकते हैं।

० ये सब गाड़ियाँ मेरी है - मैंने तुम्हें चलाने को दी है।

० खाया है उसे पचाने के लिए जुगाली करने की जरूरत है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	28/01/2018	लक्ष्य को याद दिलाती बिम्ब स्थापना	रूआ बांधा	3
2.	29/01/2018	परिणामों पर दृष्टि रखता मंगल	उरला (मंगलम्)	6
3.	30/01/2018	एक-दूसरे को जोड़ते हैं जिनालय	मालवीय रोड़, रायपुर	7
4.	31/01/2018	पारलौकिक उड़ान	लाभाण्डी-रायपुर	9
5.	01/02/2018	भारतीय लोह विज्ञान		12
6.	01/02/2018	आओ करें निर्वाह परम्परा का		19
7.	02/02/2018	एक ही राह- बस संयम की		22
8.	03/02/2018	कृषि विश्व विद्यालय : मूल से दूर		28
9.	04/02/2018	आओ उतारें भीतरी एक्सरा		29
10.	05/02/2018	हम भी करें अपूर्व की प्राप्ति		32
11.	06/02/2018	मूल में भूल		35
12.	07/02/2018	आओ जानें-कहाँ रहता है मन?		40
13.	09/02/2018	मनमाना न करें- महामना बनें		45
14.	18/02/2018	रवि कभी छुट्टी नहीं मनाता	नेवरा-तिल्द	49
15.	20/02/2018	शिक्षा देती चावल की मीले	भाटापारा	50
16.	22/02/2018	कहानी दाँतो की	बिलासपुर	52
17.	23/02/2018	पहुँच गये श्री जी विहार करते हुए		55
18.	23/02/2018	आओ देखें थर्मामीटर भीतर का		57
19.	24/02/2018	शिखर शुद्धि - भाव पवित्रता का साधन		64
20.	24/02/2018	वातानुकूल वस्त्र हों - बातानुकूल नहीं		66
21.	25/02/2018	साधना का कलशा		73
22.	02/03/2018	कंटक दूर करता अमरकंटक	अमरकंटक	75
23.	03/03/2018	अमरकंटक में लगता सहज ध्यान		78
24.	04/03/2018	रविवारीय प्रवचनांश		79
25.	05/03/2018	प्रकृति अस्थिर हो मन नहीं		81
26.	06/03/2018	सत्य की अवधारणा		82

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
27.	07/03/2018	छोटे लोग- बड़ी भावना	अमरकंटक	84
28.	08/03/2018	कैसी करनी करें?		87
29.	09/03/2018	लक्ष्मी का दान	करंजिया	90
30.	10/03/2018	गौ रक्षा करता गोरखपुर	गोरखपुर	96
31.	11/03/2018	आस्था गाँवों की	गाडासरई	99
32.	12/03/2018	विद्यालय बड़ा (महा) है पर विद्यार्थी नहीं	डिण्डोरी कॉलेज	100
33.	13/03/2018	आओ उड़ायें पतंग	डिण्डोरी	101
34.	14/03/2018	भाग्य को फाड़ती फटी जीन्स		105
35.	15/03/2018	उत्साह हो - उत्सुकता नहीं		111
36.	16/03/2018	लोड ज्यादा हो तो क्या करें?		115
37.	17/03/2018	मत छोड़ो राग-द्वेष रूपी लार		119
38.	17/03/2018	तिगड्डा से चतुर्मुखी		124
39.	18/03/2018	काष्ठ बनें - कंकड़ नहीं		126
40.	18/03/2018	महापात्र के सान्निध्य में हुआ पात्र-चयन		128
41.	19/03/2018	आओ हँसायें भारत माता को		131
42.	21/03/2018	हओ कहना है आशा सम्यक्त्व		138
43.	22/03/2018	शिक्षा देता चश्मा		142
44.	22/03/2018	संगम मिले देवशास्त्र गुरु का		147
45.	23/03/2018	प्रवाह से आती उज्जवलता		150
46.	23/03/2018	हवा बनो- ध्वजा नहीं		154
47.	24/03/2018	बीज बोओ मिट्टी में, पत्थर पर नहीं		156
48.	25/03/2018	जेल महानिदेशक, जेल निरीक्षक (जेलर), जेल मंत्री एवं वित्तमंत्री से वार्ता		159
49.	26/03/2018	क्यों नहीं जला दीपक		166
50.	27/03/2018	विवेक हीना पशुभिः समाना		170
51.	29/03/2018	शरीर है तो दिगम्बर कैसे?		174
52.	30/03/2018	अब सम्यग्दर्शन पोथी में ही नहीं, जीवन्त दिखेगा	साकेत नगर	177
53.	31/03/2018	गुरूवाणी - गरम हो तो भी - कल्याणी	नुनखान	179
54.	01/04/2018	वास्तविक खुराक	अमेरा	182

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
55.	02/04/2018	संकल्प हो नदी जैसा	शाहपुर	184
56.	03/04/2018	भारती है तारती - उसी की उतारें आरती	देवरी	186
57.	04/04/2018	कुण्ड़म से बना मैत्री-कुण्ड़	कुंडम	188
58.	05/04/2018	किलाबंदी हो - बाईपास नहीं	पड़रिया	190
59.	06/04/2018	कर्त्तव्य ही सच्ची पूजा	रांझी	192
60.	07/04/2018	अपव्यय से बचना है - दान	बेलखाडू	194
61.	08/04/2018	मत घुसाओ लोभतंत्र को लोकतंत्र में	कटंगी	198
62.	09/04/2018	भक्ति करें वीतराग की	सिंग्रामपुर	201
63.	10/04/2018	श्रद्धान से अनुभव तक की यात्रा	जबेरा	203
64.	11/04/2018	कमाई का साधन है- शुभ निमित्त	नोहटा	206
65.	12/04/2018	मोह से निर्मोह की यात्रा	दमोह	210
66.	13/04/2018	सावधानी हटी-दुर्घटना घटी	नरसिंहगढ़	212
67.	14/04/2018	युक्ति के साथ हो शक्ति का प्रयोग	बटियागढ़	215
68.	15/04/2018	अर्थ से अनर्थ नहीं, परमार्थ करो	बकस्वाहा	219
69.	16/04/2018	हीरे की प्राप्ति का साधन	हीरापुर	223
70.	17/04/2018	यात्रा हो -भटकन नहीं	घुवारा	228
71.	18/04/2018	चटनी 22 परिषहों की	फलहोड़ी बड़ागाँव(धसान)	231
72.	19/04/2018	भरोसा करो कबूतर की तरह	समर्रा	235
73.	20/04/2018	पपौरा जी(टीकमगढ़)को मिला अनमोल मोती	टीकमगढ़	239
74.	21/04/2018	मात्सर्य भाव नहीं, वात्सल्य भाव हो		245
75.	22/04/2018	चेतन धन का संरक्षण		252
76.	23/04/2018	भावना अथवा ध्यान रूपी जैक		259
77.	24/04/2018	टेबलेट निरोग होने की		264
78.	25/04/2018	फार्मूला चिड़चिड़ाहट से बचने का		269
79.	26/04/2018	याद रखें संकल्प को		278
80.	27/04/2018	कैसे लायें व्रतो में धार		284
81.	28/04/2018	आओं समझे काल को		290
82.	29/04/2018	और संघ को गुरुकुल बना ही दिया		294
83	30/04/2018	आओ बना लें ज्ञान को बर्फ जैसा सघन		300